पद्मावत भाषा

यह प्रसिद्ध कहानी राजारत्नसेन और पद्मावतकी है

जिसको

परम सुजान सकलगुणनिधान परमतत्त्व विलासी समदृष्टि प्रकाशी मलिक मुहम्मद जायसीने देशभाषामें शेरशाह बादशाह देहलीके वक्तमें जगत्के उपकारार्थ ज्ञानमार्ग आदेश निर्म्माण करके संसारको असत्य और परमेश्वरको सत्य दिखाया कहनेको कहानी है परन्तु महासुखदानी है उसीका उल्था लाला रघुबरदयालने बड़ेगौरसे उर्दूसे देवनागरी में करके गूढ़ शब्दोंका अर्थ ठीक २ वास्ते जानने गुणग्राहकों के किया

वाजपेयि पण्डित रामरत्नके प्रबन्धसे

तीसरीवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
फरवरी सन् १८९२ ई० ॥
१७ जुज ५ वर्क़

मिताक्षरासटीकका विज्ञापन ॥

संसारमें मर्यादा स्थितरखनेके अभिप्राय और सर्वसाधारण के उप-
कार दृष्टिसे भगवान् याज्ञवल्क्यने अनेकप्राचीन आचार्यों और महर्षियों
के मतलेकर मिताक्षरा नामक धर्मशास्त्र " आचार " " व्यवहार " और
" प्रायश्चित्त " नामक तीनभागोंमें निर्माणकियाथा। यह " याज्ञवल्क्य
स्मृति " भारतवासी मात्र चतुर्वर्णों का मुख्य धर्मशास्त्रहै और इसी के
अनुसार यहांके निवासियोंके धर्मसम्बन्धी समस्तकार्य होते चलेआतेहैं॥

"आचाराध्याय" नामक प्रथमखण्ड में गर्भाधानसेलेकर मरणपर्यन्त
के समस्त संस्कार चतुर्वर्णों और विविध जातियोंकी उत्पत्ति ब्राह्मण आ-
दि चतुर्वर्णों और ब्रह्मचर्यादि चतुराश्रमोंके धर्माचरण, साधारण शिक्षा,
आठप्रकारके विवाहोंके लक्षण--भक्ष्याभक्ष्य पदार्थोंका विवेक, दान लेने
देनेकी विधि, सर्वप्रकारके श्राद्धोंका निर्णय, नवग्रहोंकीशांति राजाओं के
धर्म आचारादि अनेक विषय विस्तारपूर्वक वर्णन कियेगये हैं ॥

" व्यवहारकाण्ड " में न्यायसभानिरूपण, सबप्रकारके दीवानी और
फौजदारी मुक़द्दमोंके निर्णय करने की विधि, भूमि सम्बन्धी झगड़ों का
विस्तार, ऋणलेने, देने, गिरवीरखने और व्याजलगानेकी विधि धरोहर
का विवाद, साक्षियोंके सत्यासत्य का विचार और दण्ड, दस्तावेजों का
विचार, खरे, खोटे और कमतौल वस्तुओंका विचार, विष देनेवाले का
विचार, नातेदारीका वृत्तान्त, हिस्सा बांटकी विधि, संस्कारविहीन भाई
बहिनों के संस्कारके अधिकार और औरविधि, १२ प्रकारके पुत्रोंका व-
र्णन, वारिस होनेका विचार, दत्तकलेने की विधि, स्त्रीधन और कन्याधन
का निर्णय, सीमा के झगड़ों का निपटारा, पशुव्यतिक्रमविचार, परधन,
परस्त्रीहरण आदि का विचार, देय अदेय दानों का विचार, वस्तु क्रय
विक्रय विचार, सेवाधर्म विचार, राजसम्बन्धी गूढ़संवित समय संकेतों
के व्यतिक्रमका विचार, वेतन, मजूरी, किराया आदि विषयक झगड़ोंका
विचार, जुवारीआदि दुराचारियोंका विचार, गाली-गलौज तथा मार-पी-
टका विचार, चोर, डाकू, लुटेरे आदिकोंका विचार और नाना अपराधों
और कुकर्मों तथा राजाश्रय नानाव्यवहारोंका अतिविस्तारपूर्वक वर्णनहै॥

प्रायश्चित्तकाण्डमें जलदान प्रकार व अशौचसूलक दिनावधि कथन

अथ पद्मावत ॥

अस्तुतिखण्ड ॥

चौपाई ॥

सुमिरों[1] आदि[2] एक करतारू[3]। जें जिवदीन्ह कीन्ह संसारू ॥
कीन्हेसिप्रथम[4]ज्योतिपरकाशू[5]।कीन्हेसितिनाहिंप्रीतिकैलाशू[6]॥
कीन्हेसिअग्नि[7]पवन[8]जलखेहा[9]।कीन्हेसि बहुतेरँग औरेहा[10]॥
कीन्हेसिधरती[11]स्वर्ग[12]पतारू।कीन्हेसिबरणबरण[13]अवतारू[14]॥
कीन्हेसिदिनादिनेश[15]शशि[16]राती।कीन्हेसिनखततरायन[17]पाती॥
कीन्हेसि धूपसेव[18]औ छांहा। कीन्हेसि मेघ[19]बीज[20]तेहिमांहा॥
कीन्हेसिसप्त[21]मही[22]ब्रह्मंडा[23]। कीन्हेसि भवनचौदहोखंडा[24]॥

दो० कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाजन काहि।
पहिले ताकर नाउँलै कथा करों अवगाहि[25]॥

कीन्हेसि सात समंदर पारा। कीन्हेसि मेरु[26] खखंड[27]पहारा॥
कीन्हेसि नदी नार औझरना। कीन्हेसिमगरमच्छबहुबरना[28]॥
कीन्हेसि सीप मोति तहँभरे। कीन्हेसि बहुते नग निरमरे[29]॥

याद करना १ सबसे पहिले २ परमेश्वर ३ पहिले ४ उजियारा ५ नाम पहाड़ तथा स्वर्गलोक ६ आग ७ हवा ८ माटी ९ चित्रकारी १० ज़मीन ११—२२ आसमान १२—२३ रंग बरंग १३ पैदाइश १४ सूर्य्य १५ चाँद १६ छोटेनखत १७ जाड़ा १८ बादल १९ बिजुली २० सात २१ सातपरदा आसमान सातपरदा ज़मीन २४ शुरू २५ बीहड़ २६ राहमुश्किल २७ क़िस्म २८ जवाहिरसाफ़ २९ ॥

कीन्हेसि वनखँड[1] औ जड़मूरी। कीन्हेसि तरवर[2] तार खजूरी ॥
कीन्हेसि सावज[3] आरण[4] रहैं। कीन्हेसि पंख उड़ैं जहँ चहैं ॥
कीन्हेसि बरण[5] श्वेत[6] औ श्यामा। कीन्हेसि भूख नींद बिशरामा[7] ॥
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू। कीन्हेसि बहु औषध[8] बहु रोगू ॥
दो० निमिष[9] न लाग करत वह सबै कीन्ह पल एक।
गगन[10] अंतरिक्ष[11] राखा बाज[12] खंभ बिन टेक ॥
कीन्हेसि अगर कस्तूरी[13] बीना[14]। कीन्हेसि भीमसेन[15] औ चीना[16] ॥
कीन्हेसि नाग[17] जो मुख विष[18] बसा। कीन्हेसि मंत्र हरे जेहि डसा ॥
कीन्हेसि अमृत[19] जिये जो पाई। कीन्हेसि बिष[20] मीच[21] जेहि खाई ॥
कीन्हेसि ऊख मीठ रस भरी। कीन्हेसि करू बेल बहु फुरी ॥
कीन्हेसि मधु[22] लावे लै माखी। कीन्हेसि भँवर पंख[23] औ पाखी ॥
कीन्हेसि लोवा[24] अंदूर चांटी[25]। कीन्हेसि बहुत रहहिं घन मांटी ॥
कीन्हेसि राक्षस[26] भूत परेता। कीन्हेसि भूकस[27] देव दयंता[28] ॥
दो० कीन्हेसि सहस[29] अठारह बरण बरण[30] उपराज।
भुक्ति दिहिस पुनि सबन कहँ सकल[31] साज ना साज ॥
कीन्हेसि मानुष[32] दिहिसि बड़ाई। कीन्हेसि अन्न भुक्ति[33] तहँ पाई ॥
कीन्हेसि राजा भोज जहि राजू। कीन्हेसि हस्ति[34] घोर तहँ साजू[35] ॥
कीन्हेसि तेहि कहँ बहुत बिरासू[36]। कीन्हेसि कोइ ठाकुर[37] कोइ दासू[38] ॥
कीन्हेसि द्रव्य[39] गर्ब[40] जेहि होई। कीन्हेसि लोभ[41] अघाइ न कोई ॥
कीन्हेसि जियन[42] सदा सब चहा। कीन्हेसि मीच[43] न कोई रहा ॥
कीन्हेसि सुख औ कोटि अनंदू[44]। कीन्हेसि दुख चिन्ता[45] औ दंदू[46] ॥

जंगल १ पेड़ २ जंगली जानवर ३ जंगल ४ रंग ५ सफेद—सियाह ६ आराम ७ इलाज ८ पलक मारने में ९ आसमान १० बीचोबीच ११ नाम जानवर परिन्द १२ मुश्क १३ क़िस्म काफ़ूर १४ १५—१६ सांप १७ ज़हर १८—२० जिसके पीने से मुरदा जिन्दा हो जाय १९ मौत २१ शहद २२ उड़नेवाले जानवर २३ लोंवड़ी २४ चींवटी २५ शैतान की क़िस्म २६—२७—२८ हज़ार २९ तरह तरह की पैदाइश ३० सब ३१ आदमी ३२ रोज़ी ३३ हाथी ३४ सामान ३५ आराम ३६ मालिक ३७ गुलाम ३८ दौलत ३९ ग़रूर ४० लालच ४१ जीना ४२ मौत ४३ खुशी ४४ फ़िकिर ४५ ग़म ४६ ॥

कीन्हेसिकोइभिखारि[1]कोइधनी[2]।कीन्हेसिसंपति[3]बिपति[4]पुनिघनो[5]॥
दो० कीन्हेसि कोइनिमरोसी[6] कीन्हेसि कोइ बरियार[7]।
छारहि[8] ते सब कीन्हेसि पुनि[9] कीन्हेसि सबछार ॥
धनपति[10] वही जेहेक[11] संसारू। सबैदेइनित[12] घटनभँडारू[13] ॥
जानवंत[14] जगत[15] हस्ति[16] औचांटा[17]।सबकहँभुक्त[18] रातिदिनबांटा॥
ताकरदृष्टि[19] जो सब उपराहीं। मित्र[20] शत्रु[21] कोइबिसरेनाहीं॥
पंख पतंग न बिसरे कोई। परगट[22] गुप्त[23] जहांलगहोई॥
भोग भुक्त[24] बहुभांति[25] उपाई। सबै खवाइ आप नहिं खाई॥
ताकर वही जो खाना पीना। सब कहँ देइ भुक्त औ चैना॥
सबै आश[26] ताकर हरिखांसा। बहुनकाहुकी आशनिरासा[27]॥
दो० युग युग देतघटा नहिं उभय[28] हाथ असकीन्ह।
औ जोदीन्ह जगत महँ सो सब ताकर दीन्ह ॥
आदि[29] एकबरणों[30] सोराजा। आदि[31] नअंतराजजेहिछाजा॥
सदा सरबदा[32] राज सो करै। और जेहि चहै राज तेहिदरै॥
छत्रहि[33] अछत[34] निछत्रहिछावा। दूसरनाहिंजो सरबर[35] पावा॥
परबत[36] ढहिदेखत सबलोगू। चांटहि[37] कराहिहस्त[38] सरयोगू॥
बज्रहि[39] तिनकहि मार उड़ाई। तिनै बज्र[40] करि देइ बड़ाई॥
ताकर कीन्ह न जानै कोई। करैसोइ जोमन चिन्तन होई॥
काहू भोगभुक्ति[41] सुख सारा। काहू भूँख बहुत दुख मारा॥
दो० सबै नास्त[42] वह इस्थिर[43] ऐसो साज जेहिकेर।
एक साजी[44] औ भाजी चहै सवारै फेर॥

ग़रीब १ अमीर२ दौलत३ दुख४ बहुत५ कमज़ोर ६ ज़ोरवाला ७ माटी ८ फिरि९ दौलतमन्द १० जिसका ११ हमेशा १२ ख़ज़ाना १३ जहांतक १४ दुनिया १५ हाथी १६ चींवटी १७ खुराक १८—२४निगाह१९ दोस्त २० दुश्मन२१ ज़ाहिर २२ छिपा२३ बहुत तरह पैदाकिया २५ उम्मैद२६ नाउम्मैद २७ दोनों२८ सबसे पहिले २९ बयानकरना ३० अव्वल नाआख़िर ३१ हमेशा ३२ छत्रधारी ३३ बिदूनछत्र ३४ बराबरी ३५ पहाड़ ३६ चूंटी ३७ हाथी ३८ पत्थर ३९—४० रोज़ी ४१ नाश होनेवाला ४२ क़ायम ४३ बनाना और बिगाड़ना ४४ ॥

अलख[१] अरूपअवरनसोकर्त्ता । वह सबसों सबवह सोंबर्त्ता[२] ॥
प्रकट[३] गुप्त[४] सो सर्वव्यापी[५] । धर्मी चीन्ह न चीन्हे पापी ॥
ना वह पूत नहिंपिता न माता । नावहकुटुम्ब नकोइसंगनाता ॥
जना[६] नकाहि न कोइवै जना[७] । जहँलगसबताकी सिरजना[८] ॥
वै सब कीन्ह जहां लग कोई । वह नहिं कीन्ह काहुकर होई ॥
हति[९] पहिले औ अबहै सोई । पुनि सो रहै रहै नहिं कोई ॥
और जो होय सोबावरअन्धा । दिनदुइ चारिमरै करधन्धा ॥

दो० जो वह चहा सो कीन्हेसि करै जो चाहै कीन्ह ।
बरजनहार[१०] न कोई सबै चाहि जेउ दीन्ह ॥

बिन बुधि[११] चहिजोकरहोज्ञानू । जसपुराणमहिं लिखाबखानू ॥
जीव नाहिं पै जिये गुसाईं । कर[१२] नाहीं पै करै सवाई[१३] ॥
जीभ नाहिं पै सब कुछ बोला । तन नाहीं सब ठाहर[१४] डोला ॥
श्रवण[१५] नाहिं पै सबकुछ सुना । हिया[१६] नाहिं पै सबकुछ गुना ॥
नयन[१७] नाहिं पैसबकुछ देखा । कौनभांति[१८] असजायबिशेखा ॥
ना कोई है वह की रूपा । ना वहसोंकोइआहिअनूपा[१९] ॥
ना वहठाउँ[२०] नवह बिनठाऊँ । रूपरेख बिन निरमल[२१] नाऊँ ॥

दो० नावह मिला न बेहरा[२२] ऐसो रहा भरिपूर ।
दृष्टवन्त[२३] कहँ नेरे अंधहि मूरुख[२४] दूर ॥

और जो दीन्हेसि रतन[२५] अमोला । ताकरमर्म[२६] नजानैभोला ॥
दीन्हेसिरसना[२७] औरसभोगू । दीन्हेसिदशन[२८] जोबिहँसे[२९] योगू ॥
दीन्हेसिजगदेखनकहँनयना[३०] । दीन्हेसिश्रवण[३१] सुनेकहँबयना[३२] ॥
दीन्हेसिकण्ठ बोलजेहिमाहां । दीन्हेसिकरपल्लव[३३] बरबाहां ॥

जिसको कोई न देखसके१ नज़दीक२ ज़ाहिर३ छिपा४ सबचीज़में बिराजमान और सब चीज़ उसमें मौजूद५ पैदाहोना ६—७ पैदाइश८ पहिले था ९ मना करनेवाला १० अक़िल११ हाथ१२ सब१३ जगह१४ कान१५ दिल१६ आँख१७ कौनतरह १८ मुक़ाबिल जिसका कोई नहीं १९ जगह २० पाकसाफ़ २१ अलग २२ देखनेवाला २३ नादान २४ जवाहिर२५ भेद २६ जीभ२७ दाँत २८ हँसनेके लिये२९ आँख३० कान ३१ आवाज़३२ हाथ की अंगुली वो हथेली ३३ ॥

दीन्हेसि चरण[1] अनूप[2] चलाहीं । सो जानै जेहि दीन्हेसि नाहीं ॥
योवन[3] मरम[4] जानि पै बूढ़ा । मिला न तरुण[5] या जग ढूंढ़ा ॥
सुख कर मरम न जानै राजा । दुखी जानि जाकहँ दुख बाजा ॥
दो० काया का मरम जानि पै रोगी भोगी रहै निचन्त[9] ।
सब कर मरम[10] गुसाईं[11] जानै जो घटघट रहै तन्त ॥
अति अपार[12] करता कर करना । बरणन[13] कोई पावै बरना[13] ॥
सात स्वर्ग[14] जो कागद करै । धरती[15] समन्दर मस[16] भरै ॥
जानवन्त जग साखा बन ढांखा । जानवन्त केश[17] रदनों[18] पंख पांखा
जानवन्त खेह[19] रेह[20] दुनयाई । मेघ[21] बूंद औ गगन[22] तराई[23] ॥
सब लिखनी की लिख संसारा । लिखि न जाय गति समुद्र अपारा ॥
एतो कीन्ह सब गुण प्रकटा[24] । अबहुँ समुद्र महँ बूंद न घटा ॥
ऐसो जानि मन गर्ब[25] न होय । गर्ब[26] करै मन बावर सोय ॥
दो० बड़ गुणवंत गुसाईं[27] चही सँवारी बेग[28] ।
औ अस गुणी सवांरी जो गुण चही अनेग[29] ॥
कीन्हेसि पुरुष[30] एक निरमरा[31] । नाम मुहम्मद पूनों[32] करा ॥
प्रथम[33] ज्योति बिधि[34] ताकी साजी । औ तेहि प्रीति[35] सृष्टि[36] उपराजी ॥
दीपक[37] लेस जगत[38] कहँ दीन्हा । भा निरमल[39] जग[40] मारग[41] चीन्हा ॥
जो न होत अस पुरुष उज्यारा । सूझि न परत पंथ[42] अँधियारा ॥
दूसरे ठाउँ[43] दीवी लिखी । वही धर्मी जो पाढ़त सीखी ॥
जेहि न लीन्ह जन्म सो नाउँ । ताकहँ दीन्ह नरक महँ ठाउँ[44] ॥
जग[45] बसीठ दई वै कीन्ही । दुइ जग[46] तरा नाउँ तेहि लीन्ही ॥
दो० गुण अवगुण[47] बिधि[48] पूंछत होय लेख[49] औ जोख ।

पैर१ जिसकी मिसाल न हो२ जवानी३—५ क़दर४ भेद६—८—१० बदन९ बेफ़िकिर८ ईश्वर११ जिसका पारावार न हो१२ बयान करना१३ आसमान१४ ज़मीन१५ सियाही१६ बाल१७ दांत१८ बालू१९ माटी२० बादल२१ आसमान२२ नखत२३ ज़ाहिर करना२४ ग़रूर२५—२६ ईश्वर२७ जल्द२८ बहुत२९ शख्स३० पाक३१ चौदहीं रात का चाँद३२ पहिले३३ ईश्वर३४ मुहब्बत३५ दुनिया पैदा की३६ चिराग़३७ दुनिया३८ पाक३९ संसार४० राह४१—४२ जगह४३—४४ दुनिया का क़ासिद४५ दोनों जहान४६ पाप और पुण्य४७ ईश्वर४८ हिसाब४९ ॥

वेहिं विनवव आगे होय करै जगत[1] कर मोख[2] ॥
चार मीत[3] जो मुहम्मद ठाउँ[4] । जेहि कदीन्ह जग[5] निरमल[6] नाउँ ॥
अबूबक्र सद्दीक़ सयाने । पहिले सिदक़दीन वहि आने ॥
पुनि सो उमर खिताब सुहाये । भा जग[7] अदल[8] दीन जो आये ॥
पुनि उसमान वड़ पण्डित गुनी । लिखा पुराण जो आयत सुनी ॥
चौथे अली सिंह[9] वरियारू[10] । सौंहिं[11] ना कोइ रहा जुझारू[12] ॥
चारयो एक मते[13] एक बाना । एक पंथ[14] औ एक संघाना ॥
वचन[15] एक जो सुनाय हिं सांचा । वही पुराण दुहूं जग[16] बांचा[17] ॥
दो० जो पुराण विधि[18] पठवा सोई पढ़ति ग्रंथ[19] ।
और जो भूली आवत सो सुन लागै पंथ[20] ॥
शेरशाह देहली सुलतान । चारहु खंड[21] तपी जस भानू[22] ॥
ओही छाज छाति औ पाटा[23] । सब राजैं भुइँ धरा लिलाटा[24] ॥
जात शूर[25] औ खांड़े शूरा[26] । औ बुधवन्त सबै गुण पूरा ॥
शूर[27] नवाई नवखँड[28] वहे । सातद्वीप[29] दुनी सब नये ॥
तहँ लग राज खड्ग[30] करि लीन्हा । इसकंदर[31] जुलकरनयन जो कीन्हा ॥
हाथ सुलेमान[32] केर अँगूठी । जग[33] कहँ दान[34] दीन्ह भरि मूठी ॥
औ अति गरू भूमिपति[35] भारी । टेक भूमि[36] सब सृष्टि[37] सँभारी ॥
दो० देहि अशीश मुहम्मद करहु युग युग राज ।
बादशाह तुम जगत[38] के जग[39] तुम्हार मुहताज ॥
वरनों[40] शूर[41] भूमिपति[42] राजा । भूमि[43] न भार सहै जो साजा ॥
हय मय सयन[44] चलय जग[45] पूरी । परवत[46] टूटि उड़हिं होय धूरी ॥

दुनिया १ वन्द से छोड़ाना २ दोस्त ३ जगह ४ दुनिया ५ पवित्र ६ संसार ७ न्याव ८ शेर ९ ज़बरदस्त १० सामना करनेवाला ११ लड़नेवाला १२ **एकसलाह** १३ राह १४ वात १५ दुनिया १६ पढ़ना १७ ईश्वर १८ किताब १९ राह २० तरफ़ २१ सूर्य्य २२ तख़्त २३ माथा २४ पठान २५ तलवार बहादुर २६ **बहादुर** २७ सारी दुनिया २८ मुल्क २९ तलवार ३० नाम बादशाह ३१—३२ दुनिया ३३ खैरात ३४ बादशाह ३५ ज़मीन ३६ दुनिया ३७—३८—३९ तारीफ़ करना ४० बहादुर ४१ चान्द शाह ४२ ज़मीन ४३ घोड़ेसे भरीहुई फौज ४४ दुनिया ४५ पहाड़ ४६ ॥

परीरेणु[1] होय रविहीं[2] ग्रासा। मानुष पेखलोहिं फिरि बासा॥
भुइँउड़ अंतरिक्ष[3] गईमृतमंडा[4]। ऊपर होय छावा महिमंडा[5]॥
डोलै गगन[6] इन्द्रडर काँपा। बासुकि[7] जाय पतालहिंचाँपा॥
मेरु[8] धसमसे समुद्र सुखाई। बनखँड[9] टूटिखेह[10] मिलिजाई॥
अगलहिंकहँ पानीगाहिबाँटा। पिछलेहिंकहँनहिंकाँदू[11] आँटा॥
दो० जोगढ़[12] नयनहिं[13] काहू चलतहोय सबचर।
जोवहचढ़ैभूमिपति[14] शेरशाह जगसूर[15]॥
अदल[16] कहौंप्रथमैं[17] जसहोय। चाँटा[18] चलत नदुखवै कोय॥
नौशेरवां[19] जो आदिल[20] कहा। शाहअदल[21] सर[22] सौंहिंनरहा॥
अदल[23] जोकीन्हउमर[24] कीनाईं। भई यहां सगरी दुनयाईं॥
परी नाथ[25] कोइ छुवै न पारा। मारग[26] मानुषसे उजियारा॥
गऊसिंह[27] रेंगहिं एक बाटा[28]। दोनों पानिपियैं एक घाटा॥
नीर[29] क्षीर छानै दरबारा। दूध पानि सबकरै निरारा[30]॥
धर्म न्याव चलै सत[31] भाषा। दूबर[32] बरी एक सम[33] राखा॥
दो० सबै पृथिवी अशीशै जोरि जोरिकै हाथ।
गङ्गयमुनजौलहिजलतौलहिअमरनाथ[34]॥
पुनिरुपवंत[35] बखानौं[36] काहा। जानवन्तजगत[37] सबैमुखजाहा॥
शशि[38] चौदहजोदई[39] सँवारा। तबहूँ जाहि रूप उजियारा॥
पापजायजो दरशन दीशा। जग[40] जुहारके देत अशीशा॥
जैसो भानु[41] जग[42] ऊपरतपा। सबै रूप वह आगे छिपा॥
असभाशूर[43] पुरुष[44] निरमरा[45]। शूर[46] जाहि दशआकर[47] करा॥

धूर१ सूर्य्य २ बीच ३ आसमान ४-६ ज़मीन ५ नाम राजासाँपोंका ७ पहाड़ ८ जंगल ९ राख १० चहला ११ क़िला १२ टूटना १३ बादशाह १४ दुनियाकासूर्य १५ न्याव १६ पहिले १७ चूंटी १८ नामबादशाह १९ न्यावकरनेवाला २० न्याव २१-२३ बराबर २२ नामख़लीफ़ा २४ नाथना २५ राह २६-२८ शेर २७ दूधपानी २९ अलग ३० सच्चा ३१ ज़बरदस्त ३२ बराबर ३३ हमेशाज़िंदा ३४ खूबसूरत ३५ बयानकरना ३६ दुनिया ३७—४० चांद ३८ ईश्वर ३९ सूर्य ४१ संसार ४२ बहादुर ४३—४६ मर्द ४४ पाकसाफ़ ४५ दशगना ४७ ॥

सोहिंदृष्टि[१] की हेर[२] न जाई । जेहिदेखा सो रहा शिरनाई ॥
रूपसवाई दिन दिन चढ़ा । विधि[३] सुरूप जग[४] ऊपरगढ़ा ॥
दो० रूपवन्त[५] मनमाथे चन्द्रघाट वह बाढ़ि ।
मेदन[६] दरशलुभानीअस्तुति[७] बिनवैठाढ़ि ॥
पुनि दातार[८] दई[९] जग[१०] कीन्हा । असजग[११] दाननकाहू दीन्हा ॥
वलि[१२] औविक्रम[१३] दानि[१४] वड़कहे।हातिमकरण[१५] बतागीअहे ॥
शेरशाह सरपोंच[१६] न कोऊ । समुद्र सुमेर[१७] भँडारी दोऊ ॥
दान डाँग[१८] बाजै दरबारा । कीरत[१९] गई समुन्दर पारा ॥
कंचन[२०] परशशूर[२१] जग[२२] भयो । दारिदभाग दशन्तर[२३] गयो ॥
जो कोइ जाय एक बेर माँगा । जन्मनहोय न भँखा नाँगा ॥
दशअश्वमेध[२४] जगत[२५] जोकीन्हा। दानपुण्यसर[२६] सौहिं नकीन्हा ॥
दो० ऐसोदानिजग[२७] उपजा[२८] शेरशाहसुलतान ।
नाअसभयो न होयना कोई दयअरुदान ॥

तारीफसय्यदअशरफजहांगीरकी ॥

सय्यद अशरफ़पीर पियारा । जेहिमोहिंपंथ[२९] दीन्हउजियारा ॥
लेसाहिये[३०] प्रेम करि दिया । उठीज्योतिभानिरमल[३१] हिया[३२] ॥
मारग[३३] होतजो अँधेरा सूझा । भाउजेर सब जाना बूझा ॥
खारसमुद्र पाप मोर मेला । वोहित[३४] धर्म लीन्ह कै चेला ॥
उन मोर कर[३५] बूड़ि कै गहा । पायो तीर[३६] घाट जो अहा ॥
जाके ऐसो होय कँधारा[३७] । तुरत बेगि[३८] सो पावै पारा ॥
दस्तगीर गाढ़े के साथे । वह अवगाहिदीन्हजेहिहाथे ॥
दो० जहांगीर वयविष्टी निहकलंक जस चाँद ।
वयमखदूम जगत[३९] के हो वह घरकी बाँद ॥

सूर्यानिगाह १ देखना २ ईश्वर ३ खूबसूरत ५ आदमी ६ तारीफ ७ दानदेनेवाला ८ ईश्वर ९ नामराजा १२—१३ दानदेनेवाला १४ नामसखी १५ बराबर १६ पहाड़कानाम १७ नगाड़ा १८ नेकनामी १९ पारसपत्थर २० बहादुर २१ नामजगह २३ घोड़ाकीयज्ञ २४ बराबर २६ पैदाहुआ २८ राह २९—३३ दिल ३०—३२ पाक ३१ नाव ३४ हाथ ३५ किनारा ३६ मल्लाह ३७ जल्द ३८ दुनिया ४—१०—११—२२—२५—२७—३९ ॥

तारीफ सय्यदअशरफजहांगीरकेबेटेकी ॥

उनकर रतन[1] एक निरमरा[2]। हाजी शेख सभा गुण भरा ॥
तेहिघर दुइ दीपक उजियारे। पंथ[3] दये कहँ दई सँवारे ॥
शेख मुहम्मद पून्यों[4] करा। शेखकमाल जगत[5] निरमरा[6] ॥
दोउ अचल ध्रुव[7] डोलैं नाहीं। मेरुख[8] खण्ड न भवा पराहीं ॥
दीन्हरूप अरु ज्योति गुसाईं। कीन्हखम्भ दुइजग[9] की ताईं ॥
दोऊ खम्भ टेके सब मही। दोनोंके भार सृष्टि[10] सबरही ॥
जिन दरशन औ परशनपाया। पापहरानिरमल[11] भइकाया[12] ॥

दो० मुहम्मद तहांनिचंतपंथ[13] जिन्ह सँगमुरशदपीर।
भहिरीनाव औखेवक[14] बेगि[15] लागिसो तीर[16] ॥

गुरु मुहदी खेवक[17] मैं सेवा। चली उताहल जेहिके खेवा ॥
अगुवा भयो शेख बुरहानू। पंथ[18] लाय म्वहिं दीन्होंज्ञानू ॥
अलहदाद भलतिन्हकर गुरू। दीन दुनी रोशन सुर्खुरू ॥
सैद मुहम्मदके वै चेला। सिद्ध[19] पुरुषसंगम[20] जिनखेला ॥
दानयाल गुरुपंथ[21] लखाई। हज़रतख्वाजाखिज़िरतेहिंपाई ॥
भये प्रसन्न[22] वै हज़रत ख्वाजे। ए मेरे जियें सय्यद राजे ॥
वै सेवन मैं पाय करेते। अखरी जीभ प्रेम कबबरते ॥

दो० वे सुगुरू हौं चेला नित[23] बिनवों भा चेर।
उन हुत देखी पाउँ दरश गुसाईं[24] केर ॥

एक नयन[25] कबि मुहम्मदकने। सोई बिमोहा[26] जें कबि सुने ॥
चांदजैसोजग[27] बिधि[28] अवतारा[29]। दीन्हकलंककीन्ह उजियारा ॥
जग[30] सूझा एके नयनाहां[31]। उआसुक[32] जसनखतनमाहां ॥
जौलहिअंबहि[33] डाभ[34] नहोय। तौलहिसुगंध[35] बसायनकोय ॥

जवाहिर १ साफ २—११ राह ३—१३ चांद ४ संसार ५ पाकसाफ ६ नामसितारा७ बीहड़ ८ दुनिया जहान ९—१० बदन १२ मल्लाह १४ जल्द १५ किनारा १६ नाव खेनेवाला १७ राह १८—२१ मर्द कामिल १९ सतसंगत २० खुश २२ हमेशा विनती करना २३ ईश्वर २४ आंखें २५—३१ मोहजाना २६ दुनिया २७ ईश्वर२८ पैदाकिया २९ संसार ३० नामसितारा ३२ आंब ३३ दाग ३४ खशबू ३५ ॥

कीन्हि समुद्र जो पानी खारा । तौ अतिभयो असूभि अपारा[१] ॥
जो सुमेरु[२] त्रिशूल बिनाशा । भा कंचनगढ़[३] लागअकाशा ॥
जो लहिघरी कलंक[४] नहिं परा । कांच होय नहिं कंचन[५] करा ॥
दो० एकनयन[६] जस दरपण[७] औ निरमल[८] तेहि भाव ।
सब रुपवंती[९] पाउँ गहि मुख जोवन[१०] की चाव ॥
चार मीत[११] कवि मुहम्मद पाये । जोरि मिताई[१२] सर पहुँचाये ॥
यूसुफ़मलिकपण्डितबहुज्ञानी । पहिली बात भेद उन जानी ॥
पुनि सलारकादम मतिमाहां । खांड़े[१३] शूर उभानत[१४] बाहां ॥
मियां सलोनी सिंह[१५] वरयारू । बीरकहत रणखड्ग[१६] जुझारू ॥
शेख़बड़ीबड़िसिद्धि[१७] बखाना[१८] । के अदेश सिद्धि बड़ बाना ॥
चारयो चतुरदशा[१९] गुण पढ़े । औसिंह[२०] योगगुसाईं[२१] गढ़े ॥
वृक्ष[२२] होय जो चन्दन पासा । चन्दनहोय विविधतेहिबासा ॥
दो० मुहम्मद चारयोमीत[२३] मिलि भयेजो एकैचित्त ।
यहजग[२४] साथ जो बैठे वहजग[२५] बिछुरन कित्त ॥
जायसनगर धर्म अस्थानू[२६] । तहांजायकबिकीन्ह बखानू[२७] ॥
औ विनती[२८] पण्डितनसोभजा । टूटिसंवार[२९] मेरु बहु सजा ॥
हौं पण्डितन केर पछलगा । कछुकहिचलातबलडांडगा[३०] ॥
हिय[३१] भंडारंग अहै जो पूँजी । खोली जीभ तारकी कूँजी ॥
रतन[३२] पदारथ बोले बोला । सुरस[३३] प्रेममधु[३४] भरीअमोला ॥
जेहिकीबोल बिरहकी घाया । कहँतेहि भूख कहांतेहिमाया ॥
फेरै भेव[३५] रहै भा तपा[३६] । धूर लपेटा मानिक[३७] छपा ॥

जिसका किनारा नहो १. नामपहाड़जिसको महादेवजीने त्रिशूलसे खोदाथा २ सोने का क़िला ३ दाग़ ४ सोना ख़ालिस ५ आँख ६ आईना ७ पाकसाफ़ ८ ख़ूबसूरत ९ मुंह देखना१० दोस्त ११ दोस्ती १२ तलवार बहादुर १३ बलन्दहाथ १४ शेर ज़बरदस्त १५ तलवार १६ मर्दकामिल १७ मशहूर १८ चौदहोंविद्याके जाननेवाले १९ शेर २० ईश्वर २१ पेड़ २२ यार२३ दुनिया २४—२५ मकान २६ बयानकरना २७ आजज़ो २८ सब तरह आरास्ता २९ ढोलबजायके ३० दिल ३१ जवाहिर ३२ मीठे मुहब्बतके भरे हुये ३३ शराब ३४ मूरतबदले हुये ३५ तपकरनेवाले ३६ मोती वग़ैरह ३७ ॥

दो० मुहम्मद कबि जो प्रेमकी नातन रक्त[१]नमांस।
जेमुखदेखा सो हँसा सुनि तेहि आये आंस॥

सन[२]नवसै सत्ताइस अहै। कथा अरम्भ[२]बैनकबि कहै॥
सिंहल द्वीप पद्मिनी रानी। रतनसेन चित्तौरगढ़ आनी॥
अलाउद्दीन देहली सुल्तानू। राघव[३] चेतन कीन्ह बखानू[४]॥
सुना शाहगढ़[५] छेंका आई। हिन्दू तुरकहिं भई लड़ाई॥
आदि[६] अन्त जस कथा अहै। लिखि भाषा चौपाई कहै॥
कबि ब्यास रस कँवला पूरी। दूरहिं नेरे नेरे दूरी॥
नेरे दूर फूल जस कांटा। दूर जो नेरे जस गुड़ चांटा[७]॥

दो० भवँरआय बनखण्ड[८] सों लेइ कमलकी बास।
दादुर[९] बास न पावै फूलहि जो आछी पास॥

सिंहल द्वीप कथा अब गाऊँ। औसुपद्मिनी बरणि[१०]सुनाऊँ॥
निरमल[११]दरपण[१२]भांतिबिशेखा। जिन्हजसरूपसोतैसोदेखा॥
धनिसोद्वीप जिन्हदीपक बारे। औसुपद्मिनी जोदई[१३]सँवारे॥
सात द्वीप बरणे[१४] सब लोगू। एकौ द्वीप न वहिसर[१५]योगू॥
दया दीन नहिंतस उजियारा। सरनद्वीप सर होय न पारा॥
जम्बू द्वीप कहूँ तस नाईं। लङ्कद्वीप सरपोच[१६]न भाईं॥
द्वीपगुस सहल आरणपरा। द्वीपमहो सिंहल बाँस हरा॥

दो० सब संसार औ पृथिवी आये सातो द्वीप।
एक द्वीप नहिं आतिम सिंहलद्वीप समीप॥

गन्ध्रबसेन सुगन्ध नरेशू[१७]। सो राजा वह ताकर देशू॥
लंका सुना जो रावण राजू। तेहु जाहि बर ताकर साजू॥
छप्पनकोटि कटक[१८]दलसाजा। सबै क्षत्रपति औ गढ़राजा॥
सोरह सहस[१९]घोड़घुड़शारा[२०]। श्याम[२१]करणजसबांकतुषारा॥

खून१ शुरूकरना२ नामभाट३ बयानकरना४ क़िला५ अव्वलसे आख़िरतक६ चींटी७ जंगल ८ मेढक ९ तारीफ़ करना१० साफ़ ११ शीशाकी तरह१२ ईश्वर १३ बयान १४ बराबर १५ [illegible] १६ राजा १७ फ़ौज १८ हज़ार १९ अस्तबल २० घोड़ेकी जात २१॥

सात सहस[1] हस्ती[2] सिंहली । इमि[3] कैलास[4] ऐरापति[5] बली ॥
अश्वपतिक[6] शिरमौर कहावे । गजपतीक[7] आँकुशगज[8] नावे॥
नरपतीक[9] कहँ और नरिन्दू[10] । भूपतीक[11] जग[12] दूसरइन्दू[13] ॥
दो० ऐसो चक्कवे[14] राजा चहूँ[15] खण्ड भू होय ।
सबै आय शिरनावहीं सरवर[16] करीनकोय ॥
जोहि द्वीप नेरे भा जाय । जनु कैलास[17] तीरभा आय ॥
गहन[18] अँबराउँ[19] लागचहुँपासा। उठीभूमि[20] हतिलागिअकासा ॥
तरवर[21] सबैमलयगिरि[22] लाये । भइजगछांहिरयनि[23] कैआये॥
मिली सुमेर[24] सुहाई छाहां । जेठ जाड़लागय तेहि माहां ॥
वही छाहिं रयनि[25] कै आवै । हरियर सबै अकास देखावै ॥
पन्थक[26] जोपहुँचे सहि घामू । दुखबिसरेसुखहोयबिश्रामू[27] ॥
जिन्ह वहपाई छाहिं अनूपा[28] । फिरिन आयसही यहिधूपा ॥
दो० असअँबराउँ[29] सघनघनबरणि[30] नपारौंअन्त ।
फरी फली छयों ऋतु जानहु सदा बसन्त ॥
फरे अम्बअति सघनसुहाये । औजसफरीअधिक[31] शिरनाये॥
कटहर डार पेड़ सो पाके । बड़हरसो अनप अति ताके ॥
खिरनी पाकर खांड़असमीठी । जामुनपाक भँवरअस दीठी ॥
तरवर फरे फरे खरहरे । फरे जानि इन्द्रासन परे ॥
पुनिमहुवाचुवअधिक[32] मिठासू।मधु[33] जसमीठपुहुप[34] जसबासू ॥
और खजहजा[35] उन्हकरनाउँ । देखा सब रानी अँबराउँ[36] ॥
लागि सबैजस अमृत शाखा । रहै लुभाय सोई जो चाखा ॥
दो० लवँग सुपारी जायफल सब फल फरे अपूर ।

हज़ार १ हाथी २ बराबर ३ नाम पहाड़ ४ नाम हाथी राजा इन्द्र ५ घोड़े सवार ६ हाथी सवार ७ हाथी ८ राजा ९—१०—११ दुनिया १२ राजा इन्द्र १३ चक्रवर्ती १४ तमाम दुनिया १५ बराबर १६ नाम पहाड़ १७ गुंजान १८ बाग़ १९—२९ ज़मीन २० पेड़ २१ चन्दन २२ रात्रि २३—२५ पहाड़ २४ मुसाफ़िर २६ आराम २७ बेमिसाल २८ बयान ३० बहुत ३१-३२ शहद ३३ फूल ३४ नाम मेवा ३५ बाग़ ३६ ॥

आस पास घन[१] ईमली औ घन[२] तार खजूर ॥

बसहिं पंख[३] बोलहिं बहु भाखा । करहिं हुलास[४] देखिके शाखा ॥
भोरहोत बासहिं चहि चुहीं[५] । बोलहिं पांडुक[६] एकै तुहीं ॥
सारो[७] सुआ[८] जो रहचहिंकरहीं । करहिं परेवा और करोरहीं ॥
पिव पिवकर जो लागपपीहा । तुही तुहीकर गड़रू[१०] केहा ॥
कुहू कुहू कर कोयल राखा । औबिहँगराज[११] बोलबहुभाखा ॥
दही दही करि महरि पुकारा । हारिल अपनी बोली हारा ॥
कुहकहिं मोर सुहावन लागा । होय कुराहर बोलहिं कागा ॥

दो० जानवन्त पक्षी बनके फिरि बैठे अँबराउँ[१२] ।
अपनी अपनी भाषना लीन्हदई[१३] करनाउँ ॥

पैग[१४] पैग[१५] पर कुँवा बावरी । साजी बैठक[१६] औ पावरी[१७] ॥
और कुंड बहु ठावहिं[१८] ठाऊँ[१९] । सब तीरथ औ तेहिके नाऊँ ॥
मठ मंडप चहुँ पास सँवारे । तपी[२०] जपी[२१] सबआसनमारे ॥
कोइसुऋषेश्वरकोइसंन्यासी[२२] । कोई रामयती[२३] कोईमिशवासी[२४] ॥
कोईब्रह्मचर्य्य[२५] पथ[२६] लागे । कोइसोदिगम्बर[२७] अचिह्न[२८] नागे ॥
कोइसुमहेश्वर[२९] योगी[३०] यती[३१] । कोइ एक परखै देवी सती ॥
कोइसरस्वती[३२] संतकोइयोगी[३३] ।कोइनिरास[३४] पथबैठिवियोगी[३५] ॥

दो० सेवरा[३६] खेवना[३७] बानप्रस्थी[३८] शिषसाधक[३९] अवधूत[४०] ।
आसन मारे बैठि सब पांच आत्मा भूत ॥

मानसरोवर[४१] बरणों[४२] काहा । भरासमुद्रअस अतिअवगाहा[४३] ॥
जल मोती अस निरमल[४४] तासू।अमृतबरण[४५] कपूर सुबासू[४६] ॥
लंकद्वीपकी शिला अनाई । बांधा सरवर[४७] घाट बनाई ॥

गुंजान १—२ चिड़ियाँ३—४खुशी करना ४ नाम चिड़ियाँ ५—६ सारस ७ तोता८ नाम चिड़ियाँ ९—१० दहियड़ ११ बाग़ १२ ईश्वर १३ क़दम १४—१५ बैठक १६ ज़ीना १७ जगह १८—१९ तपकरनेवाले २० जपकरनेवाले २१ क़िस्म योगियोंकी २२ २३—२४—२५—२७—२८ राह २६ क़िस्म योगी २९—३०—३१—३२—३३—३४ ३५—३६—३७—३८—३९—४० नाम तालाब ४१ तारीफ़ ४२ बहुत गहिरा ४३

खाड खण्ड सीढ़ी भुइँ घेरे । उतराहिं चढ़ाहिं लोग चहुँ फेरे ॥
फूला कमल रहा कै राता[1] । सहस[2] सहस पक्षिन[3] के छाता ॥
उलटहिं सीप मोति उतराहीं । चुनहिं हंस औ केलि कराहीं ॥
खनि पतार पानी तहँ काढ़ा । क्षीरसमुद्र निकस तहँ ठाढ़ा ॥

दो० ऊपर पाल चहूंदिश[4] अमृत फल सब रूख ।
देखि रूप सरवर[5] का गइ पियास औ भूख ॥

पानि भरी आवहिं पनिहारीं । रूपस्वरूप पद्मिनी नारीं ॥
पद्मगन्ध[6] तिन अङ्ग[7] बसाहीं । भवँर लागि तिन सङ्ग फिराहीं ॥
लङ्क[8] सिंहिनी सारँग[9] नयनी[10] । हंसगामिनी[11] कोकिलबयनी[12] ॥
आवहिं झुण्ड सो पांतिहि पांती । गवन[13] सुहाय सुभांतिहि[14] भांती ॥
कनक[15] कलश[16] मुखचंद दिपाहीं[17] । रहस[18] केलि से आवहिं जाहीं ॥
जासों वै हेरैं[19] चख[20] नारी । बांके नयन[21] जनु हनहिं कटारी ॥
केश[22] मेघवर शिरता पाहीं । चमकहिं दशन[23] बीजु[24] कीनाईं ॥

दो० माथे कनक[25] गागरी आवहिं रूप अनूप[26] ।
जेहि की ये पनिहारी तौ रानी केहि रूप ॥

तालतलावा बरणि[27] न जाहीं । सूझै वारपार कुछ नाहीं ॥
फूली कुमुदि[28] केति[29] उजियारे । मानहुँ उये गगन[30] महँ तारे ॥
उतरहिं मेघ चढ़हिं ले पानी । चमकहिं मच्छ बीजु[31] की बानी ॥
तैरहिं पंख[32] सुसङ्गहि सङ्गा । श्वेत[33] पीत[34] राती[35] बहु रंगा ॥
चकई चकवा केलि कराहीं । निशा[36] बिछोह दिनहिं मिलि जाहीं ॥
करलहिं सारस करहिं हुलासा । जीवन मरन सु एकहिं पासा ॥
कम्पासो[37] डहनक[38] बक[39] लेदी[40] । रहीं अपूर मीन[41] जल भेदी ॥

सुर्ख १ हज़ार २ चिड़ियाँ ३ चारोंतरफ़ ४ नामतालाब ५ कमलकीखुशबू ६ बदन ७ कमरशेरनीकी तरह ८ हिरण ९ आँख १० चाल ११ आवाज़ १२ चलना १३ तरह १४ सोना १५ घड़ा १६ चमकना १७ खुशीमें उछलती कूदती १८ देखना १९ आँख २०—२१ बाल २२ दाँत २३ बिजुली २४-२१ सोना २५ बेमिसाल २६ तारीफ़करना २७ कोकाबेली २८ नामनखत २९ आसमान ३० चिड़ियां ३२ सफ़ेद ३३ पीली ३४ लाल ३५ रात्रि ३६ नामजानवरोंकेहैं मछलीपकड़कर खाजानेवाले ३७-३८-३९-४० मछली ४१ ॥

दो० नगअमोल तेहिताल‌हि दिनहिंबराहिंजसदीप।
जो मरजिया होयतेहि सोपावे वह सीप ॥

आसपासबहु अमृत बारी[1]। फरीं अपूर होय रखवारी ॥
नारँग नींबू तुरँज जँभीरा। औ बदाम बहु बेद अँजीरा ॥
गुलगुल तुरंज सदा फरफरे। नारँग अति राती[2] रस भरे ॥
किसमिससेव फरे नौ बाता। दाड़िम[3] दाख देखि मनराता[4] ॥
लाग सुहाई हरफ़ा रयौरी। उनयरहीं केला की घौरी ॥
फरीतूत कमरख औ न्योजी[5]। राय करौंदा बेर चिरौंजी ॥
सुगन्धराव छुहारा दीठे[6]। और खजहजा[7] खाटे मीठे ॥

दो० पानि देहिं खण्डवानी[8] कुवहिं खांड़ नाहिं मेल।
लागी घरीं रहँटकी सींचहिं अमृत बेल ॥

पुनि फुलवारि लाग चहुँपासा। वृक्ष[9] बेदहिचन्दन भइबासा ॥
बहुत फूल फूली घन बेली। क्योंड़ा चम्पा गोंद चमेली ॥
सुरँग गुलाल कदम औ गूजा। सुगँध बकौरी गन्धब्र पूजा ॥
जाही जूही बगचन लावा। पुहुप[10] सुदरसनलागसुहावा ॥
नागेसर सदबर्ग[11] हवारी। औ शिंगारहार फुलवारी ॥
सुमन ज़र्द बहु खिली सेवती। रूपमंजरी और मालती ॥
बोलसिरी बेली औ करना। सबै फूल फूले बहु बरना[12] ॥

दो० तेहि शिर फूल चढ़हिं वै जेहि माथे मनभाग।
आछेन्ह सदा सुगन्धबहै जनु बसंत औ फाग ॥

सिंहलनगर दीख पुनि बसा। धनिराजा असजाकर दसा ॥
ऊँची पँवरी[13] ऊँच उड़ासा[14]। जनु कैलास इन्द्रकर बासा ॥
राउ रंक सब घर घर सुखी। जो देखे सो हँसता मुखी ॥
रचि रचि साजे चन्दन चूरा। मोती अगर[15] मेद करपूरा ॥
सब चौपारहिं चन्दन खँभा। वाहिं राजा तब बैठो सभा ॥

बाग़ीचा १ लाल २-४ अनार ३ नाम मेवा ५ देखना ६ खजूर ७ माली ८ पेड़ ९ फूल १० गेंदा ११ रंगबरंग १२ ज़ीना १३ महल १४ केसर १५ ॥

जनु सभा देवतहिं की जुरी । परी दृष्टि[१] इन्द्रासन पुरी ॥
सबै गुणी औ पण्डित ज्ञाता । संस्कृत[२] सबके मुख राता[३] ॥
दो० अलखहिं[४] पन्थ सँवारैं जनुशिवलोक अनूप[५] ।
घरघरनारिपद्मिनीमोहहिं सबअप्सरन[६]केरूप॥
पुनि देखी सिंहलकी बाटा[७] ।नवोनिद्धि[८] लक्ष्मी सबहाटा[९] ॥
कनक[१०]हाट[११]सबकुहकाहिं[१२]लीपी। बैठिमहाजनसिंहलद्वीपी ॥
रचीहतोड़ा[१३] रूप न ढारे। चित्र[१४]कटावअनेक[१५]सँवारे[१६] ॥
सोनरूप भल भयो पसारा। धवल[१७]शिरीपोतहिं घरबारा॥
रतन[१८]पदारथमाणिक[१९]मोती। हीरा लाल सँवारे जोती ॥
औ कपूर बेना कस्तूरी[२०] । चन्दन अगर रहा भरिपूरी ॥
जिनयहिहाट[२१]नलीन्हबिसाहा[२२]।तिनकहँआनहाट[२३]कितलाहा[२४]।
दो० कोई करै बिसाहना[२५] काहू केर बिकाय ।
कोई चलै लाभ[२६] सों कोई मूर गँवाय ॥
पुनि सुशृँगार हाट[२७] भलदेखा। किये शृँगार बैठितहँ वेश्या[२८] ॥
मुख बीरी शिरचीरकुसुम्भी। काननकनक[२९] जड़ाऊखुम्भी[३०] ॥
हाथबीन सुनिमृगा[३१] भुलाहीं। नरमोहहिंसुनि पैग[३२] नजाहीं॥
भौंहधनुषतेहिनयन[३३] अहेरी[३४] । मारहिं बाणसान सों हेरी[३५] ॥
अलक[३६]कपोल[३७]डोलहँसदेहीं। लाय कटाक्ष मारजनु लेहीं ॥
कुच[३८]कंचुक[३९]जानहिंजग[४०]सारे। अंचलदीन्हसुभावहिंटारे ॥
केते खेलार हार तेहि पांसा। हाथझारिउठिचले निरासा॥
दो० चेटक[४१] लायहराहिंमन जबलहिंहै गँठिफेंट ।
सांट[४२]नाटपुनिभईबटाऊ[४३]नापहिंचाननभेंट॥

निगाह १ संस्कृतज़बानके सबबोलनेवाले २ लाल ३ ईश्वरकीराह ४ बेमिसाल ५ स्वर्ग की औरतें ६ राह ७ दुनियाकीदौलत ८ बाज़ार ९-११-२१-२३-२७ सोना १०-२९ केसर १२ दमनी १३ मुसव्वरी १४ बहुत १५ आरास्ता १६ चूना १७ जवाहिर १८ मूंगा १९ मुश्क२० मोललेना २२ फ़ायदा २४—२६ खरीदारी२५ तवायफ २८ बाल ३० हिरण ३१ कदम ३२ आंख ३३ शिकारी ३४ देखना ३५ बाल ३६ गाल ३७ छाती ३८ अंगिया ३९ संसार४० जादू ४१ मुफलिस ४२ मुसाफ़िर ४३ ॥

लैके फूल बैठि फुलहारी[१] । पान अपूरब धरे सँवारी ॥
सोंधा[२] सबै बैठिले कांधे । भल कपूर खरेरी[३] बांधे ॥
कतहूँ पण्डित पढ़ैं पुराना । धर्मपंथ[४] करकराहिंबखाना[५] ॥
कतहूँ कथा कहै कुछकोई । कतहूँ नाचकूद भलहोई ॥
कतहुँ चरहटा[६] पंखीलावा । कतहूँ पाखँड नाचनचावा ॥
कतहूँ नाद[७] शब्द[८] होभला । कतहूँ नाटक[९] चेटक[१०] कला ॥
कतहुँ काहुठग विद्यालाय । कतहूँ मानुष लीन्हबोराय ॥

दो० चरपत[११] चोर दूत[१२] गठछोरामिलेरहहिंलेहिपांच ।
जोबहुभांतिसजग[१३] भाअगमनगठ[१४] ताकरपैबांच ॥

पुनि आई सिंहल गढ़पासा । काबरणों[१५] जनुलाग अकासा ॥
तरहिं[१६] करहिंबासुकि[१७] कीपीठी । ऊपर इन्द्रलोकपर दीठी[१८] ॥
पराखोह[१९] चहुँदिशि[२०] सबबांका । कांपैजांघ जायनहिं झांका ॥
अगम[२१] असूझदेखिडरखाये । परे सुसप्त[७] पतारहिं जाये ॥
नव[९] पवँरी[२२] बांकी नवखण्डा । नवो जो चढ़ै जाय ब्रह्मण्डा ॥
कंचन कोट[२३] जड़े नगशीशा । नखतहिंभरीबीज[२४] पुनिदीशा ॥
लङ्काजाहि ऊँचगढ़[२५] ताका । निरखि[२६] नजाय दृष्टि[२७] मनथाका ॥

दो० हिय[२८] नसमायदृष्टि[२९] नहिंपहुँचैजानहिंठाढ़सुमेर[३०] ।
कहँलग कहोंउँचाई कहँलग बरणों[३१] फेर ॥

ततगढ़बणिज[३२] चलैजगसूरू । नाहित होयबाजि[३३] रथचूरू ॥
पँवरी[३४] नवों बज्र[३५] की साजे । सहस[३६] सहस[३७] तहँबैठेपाजे[३८] ॥
फिरैंपांच कुतवार सुभँवरी । कँपै पाउँ चापत वे पँवरी[३९] ॥
पँवरिहिं[४०] पँवरि[४१] सिंह[४२] गढ़गाढ़े । डरपहिंराय[४३] देखितहँठाढ़े ॥

माली १ हलवाई २ लड्डू ३ राह ४ बयानकरना ५ बाज़ार६ गाना७ आवाज ८ करनाटक ९ जादू १० मक्कार ११ चुगुल १२ होशियार १३ गांठो १४ तारीफ़ १५ जड़ १६ नामसांप १७ देखना १८—२६ खाई १९ चारोंतरफ़ २० मुश्क़िल २१ सीढ़ी २२ सोनेकाक़िला २३ बिज़ुली २४ क़िला २५ नज़र २७ दिल २८ निगाह २९ नामपहाड़ ३० तारीफ़३१ सौदागर ३२ घोड़ा ३३ मकान ३४ पत्थर ३५ हज़ार३६—३७ पियादा

बहु बनाव वे नाहर[1] गढ़े । जनुगाजहिं चाहहिं शिरचढ़े ॥
टारहिं पूँछ पसारैं जीहा । कुंजर[2] डरहिं कि गंजरलीहा ॥
कनक शिलागढ़ सीढ़ी लाई । जगमगाहिं गढ़[4] ऊपर ताईं ॥

दो० ‖ नवौंखण्ड नवपँवरी[5] औतहँ बज्र[6] केवार ।
चार बसेरे[7] सो चढ़ै सत[8] सो उतरै पार ॥

नव[9] पँवरीपर दसौं[10] दुवारा । तेहिपर बाजिरहा घरियारा ॥
घड़ीसो बैठि गिनै घरियारी । भरी सु अपनी अपनी बारी ॥
जोहि घड़ी पूजे वह मारा । घड़ी घड़ी घरियार पुकारा ॥
पराजोडांड़[11] जगत[12] सबडांड़ा । कानिचिंत[13] माटीकरभांड़ा[14] ॥
तुम तेहि चाक चढ़ेहो कांची । अबहिं नफिरी नथिरह्वै बांची ॥
घड़ीजोभरीघटी तुमआऊ[15] । कानिचिन्त[16] सोवेजोबटाऊ[17] ॥
पहरहिपहरगजरनित[18] होई । हिया न सोगा जागन सोई ॥

दो० मुहम्मदज्यों जलभरत रहँटघड़ीकी रीति ।
घड़ीजोआईज्योंभरी ढरीजन्म गा बीति ॥

गढ़परनीर[19] क्षीर[20] दुइनदी । पानि भरैं जैसे दुरपदी ॥
और कुण्ड एक मोती चूरू । पानी अमृत कीच कपूरू ॥
वहां का पानी राजा पिया । वृद्ध[21] होय नहिंजबलगजिया ॥
कंचनवृक्ष[22] एक तेहिपासा । जसकलपतरु[23] इन्द्र कैलासा ॥
मूल[24] पतारस्वर्ग[25] वहशाखा । अमरबेलि कोपाव कोचाखा ॥
चन्द्रपात[26] औफूल तराई[27] । होय उजियार नगरजहँताईं ॥
वैफल पावै तप करि कोई । वृद्धखाय नव यौवन[28] होई ॥

दो० राजाभये भिखारी सुनि वह अमृत भोग ।
जेंपावासोअमर[29] भानकुछव्याधिनहिंरोग ॥

शेर १ हाथीमस्त २सोना ३ क़िला ४ मकान ५ पत्थर ६ मुकाम ७ सचाई ८ नव मकान तथा आंख कान नाक मुंह गुदा लिंग नवइंद्री वदनकोट दशवांदरवाज़ा तथा ब्रह्मागढ़१० घाटा ११ दुनिया १२ गाफ़िल१३—१६ आदमी १४ उमर १५ मुसाफ़िर १७ हमेशा १८ पानी १९ दूध २० बूढ़ा २१ सोनेकापेड़ २२ नामदरख़्त जो स्वर्गलोक में है २३ जड़ २४ आसमान २५ पत्ता २६ नखत २७ नवजवान २८ हमेशा २९ ॥

गढ़[१] पर बसहिंचार[४] गढ़पती ।अश्वप[२] गजप[३] भुवप[४] नरपती[५] ॥
सबकधौरहर[६] सोने साजा । औ अपने अपने घर राजा ॥
रूपवन्त[७] धनवन्त[८] सभागी[९] । परस[१०] पषाणपवँर[११] तेहिलागी ॥
भोग परास[१२] सदा सबमाना । दुख चिन्ता कोई नहिंजाना ॥
मँदिर मँदिर सबके चौपारी । बैठिकुँवर सबखेलहिं सारी[१३] ॥
पांसा ढरहिं खेल भल होई । स्वर्ग वान सर पुजन[१४] कोई ॥
भाटबरन[१५] कहिंकीरति[१६] भली । पावहिं हस्ति[१७] घोड़ सिंहली ॥

दो० मँदिरमँदिर सबकीफुलवारी चोवाचन्दनबास ।
निशि[१८] दिनरहै बसन्तवहँ छहऋतुबारहमास ॥

पुनि चलि देखा राजदुवारा । मानुषफिरहिंपायनहिंबारा[१९] ॥
हस्ति[२०] सिंहली बांधे बारा[२१] । जनुसजीव[२२] सबठाढ़ पहारा ॥
कवन्योश्वेत[२३] पीत[२४] रतनारे[२५] । कवन्योहरे धम[२६] असकारे ॥
बरन[२७] बरनगगन[२८] जसमेघा । उठहिंगगन[२९] बैठिजनुठेघा[३०] ॥
सिंहल के बरने[३१] सिंहले । इकइक चाहसो इकइकबले ॥
गिरि[३२] पहाड़परबतकहिपेलहिं । वृक्षउचारिझारिमुखमेलहिं ॥
मत्त[३३] मतंगसबगरजहिंबांधे । निशि[३४] दिनरहहिंमहावतकांधे ॥

दो० धरती[३५] भार अँगोही पांव धरत उठ हाल ।
कुर्महि[३६] टूटिभुइँफाटीतेहिहस्तिहि[३७] कीचाल ॥

पुनिबांधे उजियार तुरंगा[३८] । काबरणों[३९] जस उनके रंगा ॥
लेल[४०] समन्द[४१] चालजगजाने।हांसल[४२] बोर[४३] क्याहिबखाने[४४] ॥
परी[४५] कुरँग[४६] महो[४७] बहुभांती।करर[४८] कोकलाह[४९] बलाह[५०] सुपांती ॥

क़िला १ घोड़ेकासवार २ हाथीसवार ३ ज़मीनकामालिक ४ राजा ५ महल६ खूबसूरत ७ दौलतमन्द ८ नसीबवर ६ पारस पत्थर १० दरवाज़ा ११—२१ हँसीख़ुशी १२ चौसर १३ बराबरी१५ तारीफ़ १५ नेकनामी १६ हाथी१७—२० राति १८ दख़ल१६ जानदार २२ सफ़ेद २३ ज़र्द २४ लाल २५ धुवां २६ रंगबरंग २७ आसमान २८—२६ पहाड़ ३०—३२ बयानकरना ३१ मस्त ३३ रात्रि ३४ ज़मीन ३५ कछुवा ३६ हाथी ३७ घोड़ा ३८ तारीफ़ ३६ नामज़ातवारंगघोड़ोंके ४०—४१—४२—४३ बयानकरना ४४ नाम

तीख[१] तुखार[२] चांद औ बांके। तड़पहिंतबहिंबाजि[३] बिनहांके॥
मनते अगमन[४] डोलहिंबागा। देतउसास गगन[५] शिरलागा॥
पावहिं सांससमुदपर धावहिं। बूड़ि नपांव पारहै आवहिं॥
थिरनरहैं रिस लोह चवाहीं। भाजहिंपूँछ शीश उपराहीं[६]॥
दो० अस तुखार[७] सब देखे जनु मनके रथवाहि[८]।
नयन[९] पलक पहुँचावहीं जहँपहुँचाकोइचाहि॥
राज सभा सब देखे बैठे। इन्द्रसभा जनुपरगइ डीठे[१०]॥
धनि राजा अससभा सँवारी। जानहुँ फूलिरही फुलवारी॥
मुकुटबन्द सब बैठे राजा। दर[११] निशानसबजेहिकेसाजा॥
रूपवन्त[१२] मनदिपै लिलाटा[१३]। माथे छात बैठि सब राजा॥
जानो कमल सरोवर[१४] फूले। सभाकि रूप देखि मन भूले॥
पान कपूर मेद[१५] कस्तूरी[१६]। सुगन्धबासभरिरही अपूरी॥
मांझ[१७] ऊँच इन्द्रासन साजा। गन्ध्रबसेन बैठि तहँ राजा॥
दो० छत्र गगन[१८] लगताकर सूर्य्य दिपै[१९] तस आप।
सभा कमल जनु बिगसी[२०] माथे बड़परताप॥
साजा राजमँदिर कैलाशू। सोनेका सब भूमि[२१] अकाशू॥
सातखण्ड धवराहर[२२] साजा। वही सँवारसकै अस राजा॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा। औनगलायस्वर्ग[२३] लयलावा॥
जानवन्त सबै उरेह[२४] उरेहे। भांति[२५] भांतिनगलागउबेहे॥
भाकटाव सबआनहु भांती[२६]। चित्र[२७] कटावसोपांतहिपांती॥
लागखंभमणि[२८] माणिकजड़े। निशि[२९] दिनरहैं दीपजनु बरे॥
देखि धौरहर[३०] कर उजियारा। छिपगयेचांद सूर्य्य औतारा॥
दो० साजीसाजबैकुण्ठजस तससाजीखँडसात।

तेज़ १ घोड़ा २—३—७ पहिले ४ आसमान ५ शिर उठाये हुये ६ गाड़ीवान ८ आँख ९ निगाह १० फ़ौज ११ ख़ूबसूरत १२ माथा १३ तालाब १४ केसर १५ मुश्क १६ बीचोंबीच १७ आसमान १८—२३ चमकना १९ खिलना २० ज़मीन २१ महल २२ मुसव्वरी २४ तरह बतरह २५—२६ तसवीर २७ जवाहिरात २८ रात २९ मकान ३० ॥

बीहर[1] बीहर भाव तस खंडखंड ऊपर जात ॥

बरणों[2] राज मँदिर रनिवासू । अप्सरहिं[3] मराजान कैलासू ॥
सोरह सहस[4] पद्मिनी रानी । एक एकते रूप बखानी ॥
अतिस्वरूपऔअतिसुकुमारी । पान फूलकी रहहिंअधारी[5] ॥
तेहि ऊपर चम्पावति रानी । महा स्वरूप पाट परधानी[6] ॥
पाट[7] बैठिरहि किये शिंगारू । सब रानी वहँ करहिं जुहारू ॥
नित[8] नव रंग अङ्कमा सोई । प्रथमैबयस न शिरपर कोई ॥
सिंहलद्वीप महँ जेती रानी । तिनमहँकनक[10] सुबारहबानी[9] ॥

दो० कुँवरबतीसो लक्षणी अस सबमांह अनूप[11] ।
जानवन्त सिंहल द्विपी सबै बखानी[12] रूप ॥

चम्पावत जो रूपमन माहां । पद्मावतिकीज्योति कि छाहां ॥
भइ चाहै असकथा जो होनी । मेटिनजाय लिखीजसहोनी ॥
सिंहलद्वीप भयो तबनाऊँ । जोअस दियाबरातेहिठाऊँ[13] ॥
प्रथम[14] सोज्योतिगगन[15] निरमई । पुनिसुपितासाथे मनभई ॥
पुनिवहज्योतिमातघट[16] आई । तिनाहिंउदर[17] आदरबहुपाई ॥
जस अवधान[18] परकै मासू । दिनादिनहिये होयपरकासू[19] ॥
जस अंचल महँ छिपयेदिया । तस उजियारदिखावैहिया[20] ॥

दो० सोने मन्दिर सँवारा औ चन्दन सब लीप ।
दियाजोमनाशिवलोकमहँ उपजा[21] सिंहलद्वीप ॥

भे दशमास पूरि भइ घरी । पद्मावति कन्या अवतरी[22] ॥
जानो सूर्य्य किरण हतगाढ़ी । सूरज किरण घाट वह बाढ़ी ॥
भानिशि[23] महँदिनकरपरकाशू[24] । सबउजियारभयो कैलाशू ॥
इतनी रूप मूर्त्ति परगटी[25] । पून्योशशि[26] सुखीन[27] कैघटी ॥

अलग १ बयानकरना २ स्वर्गकीऔरत ३ हज़ार ४ सहारा वा ख़ुराक ५ महारानी ६ तख़्त ७ हमेशा ८ पहिलीउमर ९ सोना ख़ालिस १० बेमिसाल ११ बयानकरना १२ जगह १३ पहिले १४ आसमान १५ पेट १६—१७ हमल १८ रोशनो १९ दिल २० पैदाहोना २१-२२ राति २३ उजियारा २४ ज़ाहिरहोना २५ पूर्णमासीकाचाँद २६ पतला २७ ॥

घटतहि घटत अमावस भये। दिनदुइ लाजगाड भुइँ गये॥
पुनि जो उठी दुइज ह्वै उये। शशिनिकलंकबिधिहि[1] निरमये॥
पद्मगन्ध[2] बेधा जग बासा। भँवर पतंग भ्रमै चहुँपासा॥
दो० इतनी रूपभई कन्या जेहि स्वरूप नहिं कोय।
धन सुदेश रुपवंता जहां जन्म अस होय॥
भई छठिरात छठी सुखमानी। रहस कूदसो रयन[3] बिहानी॥
भा विहान पण्डित सब आये। काढ़िपुराण जन्म अरथाये॥
उत्तम[4] घड़ी जन्मभा तासू। चाँदउआ भुइँ दिपाअकासू॥
कन्याराशि उदय जग[5] किया। पद्मावती नाम जस दिया॥
सूर[6] पुरुषसों भयो गुरेरा[7]। किरणयाम उपजा[8] जगहीरा॥
तेहिते अधिक[9] पदारथकरा। रतनज्योतिउपजा[10] निरमरा[11]॥
सिंहलद्वीप भयो अवतारू[12]। जम्बूद्वीप जाय जमवारू[13]॥
दो० रामाआयअयोध्याउपजे[14] लषणवतीसोसंग।
राजाराउ रूप सब भूलेदीपक जैसो पतंग॥
आय जन्मपत्री जो लिखी। दै आशीश फिरे ज्योतिषी॥
पांच बरषमहँ भई जो बारी। दीन्ह पुराण पढ़ै वै सारी॥
भइ पद्मावति पण्डित गुनी। चहूँ खण्डके राजहिं सुनी॥
सिंहलद्वीप राज घर बारी। महास्वरूपदई[15] अवतारी[16]॥
इक पद्मिनि औ पण्डित पढ़े। वहि कहँयोग गुसाईं[17] गढ़े॥
जाकहँ लिखीलक्ष[18] असहोनी। सोअसपावपढ़ीऔलोनी[19]॥
सप्तद्वीप[20] के बर जो आवहिं। उत्तरपावहिंफिराफिरजावहिं॥
दो० राजाकहैगर्व[21] कियेहौं इन्द्र शिवलोक।
कोसरवर[22] है मोसों कासोंकरों बिरोक[23]॥
बारह[12] बरष माहँ भइ रानी। राजैं सुना संयोग सयानी॥

ब्रह्मा १ कमलकी खुशबू २ राति ३ अच्छी ४ दुनिया ५ सूर्य्य ६ मुलाक़ात ७ पैदाहोना ८—१०—१२—१४ बहुत ९ पाक ११ मरना १३ ईश्वर १५—१७ पैदाकिया १६ रेखा १८ ख़ूबसूरत १९ सातोंमुल्क २० ग़रूर २१ बराबर २२ टीका विवाहका २३॥

सात खण्ड धवराहर[1] तासू। सोपद्मिनि कहँ दीन्हउडासू[2] ॥
औ दीन्हीं सँग सखी सहेली। जोसंगकरैं रहस रस केली ॥
सबै नवल[3] पीसंग नसोई। कमल पासजनुबिगसीकोई[4] ॥
सुआ एक पद्मावति ठाऊँ[5]। महा पण्डित हीरामणिनाऊँ ॥
दई[6] दीन्ह पंख[7] असजोती। नयन[8] रतनमुखमाणिक[9] मोती ॥
कंचनबरन[10] सुआअतिलोना[11]। मानोमिलासुहागहिसोना ॥

दो० रहहिंएक संगदोऊ पढ़ैं शास्त्र औ बेद।
पढ़नाशीश[12] डुलावहीसुनतलागतसभेद ॥

भई अनंत पद्मावतिबारी। रचिरचिबिधि[13] सबकलासँवारी ॥
जग[14] बेधातेहि अंगसुबासा। भँवरआय लुब्धे[15] चहुँपासा ॥
बेनी[16] नाग मलयगिरि[17] पीठी। शशि[18] माथेहोयदूइजपैठी ॥
भौंहैं धनुष साधि शर[19] फेरे। नयन[20] कुरंग[21] भूल जनुहेरे ॥
नासिक[22] कीर[23] कमलमुखसोहा। पद्मिनिरूपदेखि जग[24] मोहा ॥
माणिक[25] अधर[26] दशन[27] जनुहीरा। हियहुलसै[28] कुच[29] कनक[30] जंभीरा ॥
केहरि लंक[31] गवन गज[32] हरी। सुरनर देखि माथभुइँधरी ॥

दो० जग[33] कोउदृष्टि[34] नआवैअप्सरन[35] होयअकाश।
योगीयती संन्यासी तप साधहिं तेहि आश ॥

राजैं सुना दृष्टि[36] भइआना। बुधि[37] जोदेसँगसुआ[38] सयाना ॥
भयो रजायसु[39] मारहिंसुआ[40]। सबरे सुना चाँद जहँउआ ॥
शत्रु[41] सुआ[42] के नाऊ बारी। सुनिधाये जसधाय मँजारी[43] ॥
तब लग रानीसुआ[44] छिपावा। जबलगआवमँजारि[45] नपावा ॥
पिता[46] कि आयसु[47] माथेमोरे। कहोजायबिनवै[48] करजोरे[49] ॥

महल १ मकान २ कुआरी ३ फूलनाकोकाबेलोका ४ जगह ५ ईश्वर ६ जानवर७ आँख ८—२० मूंगा ९—२५ सोनेकारंग १० खूबसूरत ११शिर१२ ब्रह्मा १३ दुनिया १४ ३३ गूंजना १५ चोटी १६ चन्दन १७ चाँद १८ तीर १९ हरिण २१ नाक २२ तोता २३ ३८—४०—४२—४४ संसार २४ होंठ २६ दाँत २७ खुशहोना २८ छाती२९ सोना ३० चीताकीकमर३१ चालहाथी औरसिंहको तरह ३२ निगाह ३४—३६ इन्द्रलोककीपरी ३५

पंखनकोई होय सुजान[1] । जानै भुक्ति[2] किजानिउड़ान ॥
सुआ[3] जोपढ़ैपढ़ायेबयना[4] । तेहिकतबध[5] जेहिहियेननयना[6] ॥
दो० माणिक[7] मोतीदेखावह हिये[8] नज्ञानकरलेय ।
दाड़िम[9] दाख[10] छांड़िकै आंबठौर फर लेय ॥

चेतो फिरी उतर[11] अस पावा । बिनवासुये हिये[12] डरखावा ॥
रानी तुम युग युग सुख पाऊ । हो अज्ञा[13] बनबासकहँजाऊ ॥
मोतीजो मलीन होय कला । पुनिसोपानिकहाँनिरमला[14] ॥
ठाकुर अन्त चहो जेहिमारा । तेहि सेवककहिकहां उबारा ॥
जेहिघरकाल मँजारी[15] नाचा । पंखहि[16] नाउँजीवनाहिंबांचा ॥
मैं तुम राज बहुत सुख देखा । जो पूँछहिदियेजायनलेखा[17] ॥
जोइच्छा[18] मनकीन्ह सुजेंवा । यह पछतावचल्योंबिनसेंवा ॥
दो० मारै सोई निसोगा[19] डरै न अपनी दोस[20] ।
केला अकेलकरै का जो भयो बेर[21] परोस ॥

रानी उतर[22] दीन्हकै मया[23] । जोजिव जायरहैकिमिकया[24] ॥
हीरामणि तू प्राण परेवा[25] । धोखनलाग करत तेहि सेवा ॥
तुहिंसेवा बिछुरननहिं आँखौं । पींजर हिये[26] घालिकै राखौं ॥
हौं मानुष तू पंख[27] पियारा । धर्म प्रीति तहां को मारा ॥
काप्रीति तनहमाहँ बिलाय । सोईप्रीति जियसाथजोजाय ॥
प्रीतिं भारलीहिये[28] न शोचू । वही पन्थ भल होयकि पोचू ॥
प्रीतिपहाड़ भारजो कांधा । कितितेहिछूटलाय जिव बांधा ॥
दो० सुआ[29] नरहै खुरक[30] जी अबहुँ कालसो आव ।
शत्रु[31] अहै जेहि करिया[32] कहूँसो बूड़ी नाव ॥

अक़िलमंद १ खाना २ तोता ३ बोली ४ मारना ५ आँख ६ मोती ७ दिल ८ अनार ९ अंगूर १० जवाब ११ दिल १२ परवानगी १३ साफ़ १४ बिलार १५ जानवरपरिन्दा १६ हिसाब १७ जोमनने चाहा सो खाना खाया १८ बेग़म १९ पाप २० बेरीकापेड़ २१ जवाब २२ मेहरबानी २३ बदन २४ जानवरपरिन्द २५—२७ दिल २६—२८ तोता २९ अंदेशाभरा हुआ ३० दुश्मन ३१ मल्लाह ३२ ॥

खण्डतीसरास्नानखण्डपद्मावत ॥

एक दिवस[1] कवन्योतहँआय । मानसरोवर[2] चली अन्हाय ॥
पद्मावति सब सखी बुलाई । जनुफुलवारसबै चलिआई ॥
कोइचम्पा[3] कोइगोंद[4] सहेली । कोइसुकेत[5] करुणा[6] रसबेली[7] ॥
कोइसुगुलाल[8] सुदरशन[9] राती । कोइबकाउ[10] कोइबकचन[11] भांती ॥
कोइसो बोलसर[12] पुहपावती[13] । कोइजाहीजूही[14] सेवती[15] ॥
कोइसुवन[16] जर्द ज्यों केसर[17] । कोइशिंगारहार[18] नागेसर[19] ॥
कोईकूजा[20] सतबर्ग[21] चँबेली[22] । कोइकदम[23] सुरसरसबेली ॥

दो० चलींसबैमालती[24] संगहि फूलेकमल कुमोद[25] ।
बेधरही गुण गन्धरब बास बरमला मोद ॥

खेलत मानसरोवर[26] गई । जाय पाल[27] पर ठाढ़ी भई ॥
देखि सरोवर[28] हँसली केली । पद्मावति सों कहहिं सहेली ॥
एरानी मन देखु बिचारी । यहि नैहर रहना दिन चारी ॥
जबलग अहे पिताकर[29] राजू । खेलिलेहु जो खेलहि आजू ॥
पुनिसासुरहमगवनब[30] काली । कितहमकितयहसरवर[31] पाली[32] ॥
कितआवनपुनि आपनहाथा । कितमिलकेआवबएकसाथा ॥
सासुननँद बोलहि जियलेहीं । दारुण[33] ससुर ननिसरेदेहीं ॥

दो० पीउ पियारसब ऊपर सो पुनिकरै व्रह काहि ।
तेहिसुखराखहिकीदुख वहकसजन्मनिबाहि ॥

सरवर[34] तीर पद्मिनी आई । खोपा[35] छोड़ि केशबिखराई ॥
शशि[36] मुखअंग[37] मलीगर[38] रानी । तामहँभ्रापलीन्हअरधानी ॥
उनई घटा पराजग[39] छाहां । शशि[40] कीशरणलीन्हजनुराहां ॥
छिपिगयेदिनभानु[41] कीदसा । तेहिनिशि[42] नखतचांदपरगसा[43] ॥

दिन १ नाम तालाब २ नामफूल ३—४—५—६—७—८—९—१०—११—१२—१३ १४—१५—१६ ज़ाफ़रान १७ नामफूल १८—१९—२०—२१—२२—२३—२४ काकाबेली २५ नामतालाब २६ किनारा २७—३२ तालाब २८—३१—३४ बाप २९ गाना ३० मुशकिल ३३

भूल चकोर दृष्टि[1] तेहिलावा। मेघघटामहँ चन्द दिखावा॥
दशन[2] दामिनी[3] कोकिलभाखैं[4]। भौंहैं धनुष[5] गगन[6] लैराखैं॥
नयन[7] खँजनदुइ केल करेहीं। कुच[8] नारँगमधुकर[9] रसलेहीं॥
दो० सरोवर[10] रूपविमोहा हिये[11] हिलोर करले।
पाउँ छुवे मग[12] पाउँ तन मन लहरें दे॥
धरीतीर सब कंचुक[13] सारी। सरवर[14] महँपैठीं सबबारी[15]॥
पानी तीर जानि सब बेलैं। हुलसहिं[16] करहिंकामकीकेलैं॥
करल[17] केश[18] विषहर[19] बिषभरे। लहरेंलेहिं कमलमुख धरे॥
नवल वसन्त सँवारे करी[20]। होयप्रकट[21] जानहु रस भरी॥
उठीकोपजसदाड़िम[22] दाखा[23]। भई अतन्त प्रेमकी शाखा॥
सरवर[24] नहिं समाय संसारा। चांद नहाय बैठिलिये तारा॥
धनसोनीर[25] शशि[26] तरई[27] उई। अबकितदृष्टि[28] कमलओकोई[29]॥
दो० चकई बिछुर पुकारी कहां मिलहो नांह।
एकचन्दनिशि[30] स्वर्ग[31] महँदिनदूसरजलमांह॥
लागीं केलकरैं मँझ[32] नीरा[33]। हंस लजाय बैठिकै तीरा[34]॥
पद्मावतिकौतुक[35] कहँराखे। तुमहिंशशि[36] होहितरायन[37] हिंराखे।
बाद मेलके खेल पसारा। हार देव जो खेलत हारा॥
सँवरहिं सांवर गोरहिं गोरी। आपनआपनलीन्हसुजोरी॥
बूझौ खेलखेलौ एकसाथा। हारिन होय पराये हाथा॥
आजहिंखेल बहुरि कित होय। खेलगई कित खेलै कोय॥
धनि सो खेल खेल रस प्रेमा। रवताई[38] औरकुशल[39] क्षेमा॥
दो० मुहम्मदबारजो प्रेमकी ज्योंभावे त्योंखेल।
तेलहिं फूलहिं बासज्यों होयफुलायल तेल॥

निगाह१—२८दांत २ बिजुली ३ कोकिलाकीसी बोली ४ कमान५ आसमान ६—३१ आंख ७ छाती ८—१३ भंवर ९ तालाब १०—१४—२४ दिल ११ शायद १२ लड़की १५ फूलहोना १६ मुलायम १७ बाल१८ सांप१९ कली २० ज़ाहिर २१ अनार २२ अंगूर २३ पानी २५—३६ चाँद २६—३६नखत २७ कोकावली २८ राति ३० बीच ३२ किनारा ३४ तमाशा ३५ नखत ३७ ठकुराई ३८ खैरियत ३९ ॥

सखी एक तैं खेलन जाना। भई अचेत[1] मनहारगँवाना॥
कमलडारगहि भईबिकरारा[2]। कासों पुकारों आपन हारा॥
कितखेले आयों एक साथा। हार गँवाय चल्योंले हाथा॥
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौनउतर[3] पावब पैसारू॥
नयन[4] सीप आंशु तस भरे। जानहु मोति गिरहिं सबढरे॥
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौनपानीजेहिपवन[5] नहिंहिला॥
हार गँवाय सो ऐसे रोवा। हेरे[6] हेराय लेब जो खोवा॥

दो० लागीं सबमिलि हेरी[7] बूड़ बूड़ यक साथ।
कोई उठी मोतीले काहू घोंघा हाथ॥

कहा मानसर[8] चहा सुपाई। पारस रूप यहां लगि आई॥
भानिरमल[9] तेहिपायन परशे। पावा रूप रूप के दरशे॥
मली[10] समीर बास तनआई। भाशीतल[11] तनतपनबुझाई॥
नाजानोंकौनपवन[12] लेआवा। पुण्यदशा भइ पाप गँवावा॥
ततछन हार बेगि[13] उतराना। पावासखहिं चन्दविहसाना॥
विकसा[14] कमलदेखिशशि[15] रेखा। भईतेहिऊप जहां जोदेखा॥
पावा रूप रूप जस चहा। शशि[16] मुखसबदरपनह्वैरहा॥

दो० नयन[17] जोदेखेकमलभये निरमल[18] नीर[19] शरीर[20]।
हरत[21] जोदेखेहँसभये दशन[22] जोति नग हीर॥

पद्मावति तहँ खेल दुलारी। सुआ[23] मँदिरमहँदेखिमँजारी[24]॥
कहेसि चलों जौलहतनपांखा। जिवले उडा ताक बनढांखा॥
जायपराबन[25] खंडजिवलीन्हा। मिलेपंख[26] बहुआदरकीन्हा॥
आन धरी आगे फरशाखा। भुक्ति[27] नमिटीजबलहिराखा॥
पाय भुक्ति[28] सुख मनमें भयो। दुखजोअहा बिसर सबगयो॥

बेहोश १ बेकरार २ जवाब ३ आँख ४—१७ हवा ५—१२ ढूंढ़ना ६—७ नाम तालाब ८ पाक ९—१८ चन्दन १० ठंढा ११ जल्द १३ फूलना १४ चाँद १५—१६ पानी १९ बदन २० हाथ २१ दाँत २२ तोता २३ बिल्ली २४ जंगल २५ उड़नेवाले जानवर हमजिन्स २६ खुराक जंगली २७—२८॥

ए गुसाईं[1] तू ऐसो विधाता । जानवंतजिवसबकाभुक[2] दाता ॥
पाथर महँ नहिं पतंगविसारा । जहँ तहँ सँवर दीन्हतुइँचारा ॥

दो० तौलहि साग विछोहकर भोजन पड़ा न पेट ।
पुनि विसरा भा सँवरना जनु सपने भइभेंट[3] ॥

पद्मावति पहँआय भँडारी[4] । कहिसिमँदिरमहँ परीमँजारी[5] ॥
सुआ[6] जोउतर देतअहापूँछा । उड़गा पिंजर न बोलै छूँछा ॥
रानीसुना जो सुखसब गयो । जनुनिशि[7] परीअस्तदिनभयो ॥
गहने गही चन्दकी किरा । आंशुगगन[8] जसनखताहिंभरा ॥
टूटिवार सरवर[10] बह लागे । कमलबूड़ि मधुकर[11] उड़भागे ॥
यहिविधिआंशूनखतहोचुये । गगन[12] छांड़सरवर[13] महँउये ॥
झरहिंचुवहिंमोतिनकीमाला । अवस[14] केतबांधाचहुपाला[15] ॥

दो० उड़गा सोठा[16] कहँ बसा खोज सखीसोतास ।
वहहैधर्ती[17] की स्वर्ग[18] का पवन[19] नपावैबास ॥

चहूँ पास समझावहिं सखी । कहांसु अब पावेगा पखी ॥
जबलाहिंपिंजरअहा परेवा[20] । अहा बांधकीन्हेसि नितसेवा ॥
तेहि बन घन जो छूटेपावा । पुनिफिरबाँद[21] होयकितआवा ॥
वै उड़ान फुरहरी खाई । जो भा पंख पांख तनलाई ॥
पिंजर जेहक सौंप तेहिगयो । जो जाकर सो ताकर भयो ॥
दशवाटैं[22] जेहि पिंजरमाहां । कैसे बांच मँजारी[23] पाहां ॥
येधर्त्ती अस केतन लीले । अश्वपति[24] गजपतिबहुघरकीले ॥

दो० जहँ न राति नहिं दिवस[25] है तहांनपाननखान ।
तेहि बनसोठा[26] कै बसा फेरि मिलावै आन ॥

सुवैं[27] तहांदिनदश कलकाटी । आयो व्याध[28] ढका लैठाटी ॥

ईश्वर १ रोजी देनेवाला सबका २ मुलाक़ात ३ रसोईं बरदार ४ बिलारी ५—२३ तोता ६—१६ जवाब ७ राति ८ आसमान ९—१२—१८ तालाब १०—१३ भँवर ११ रंज १४ चारोंतरफ़ १५ ज़मीन १७ हवा १९ उड़नेवाला जानवर २० ताबेदार वा क़ैदी २१ दशराह तथा इन्द्री बदनके सराय २२ घोड़े का सवार २४ दिन २५ तोता २६—२७ बहेलिया २८ ॥

पैग[1] पैग भुइँ चापत आवा। पंखहि[2] देखि सबै डरखावा॥
देखोकुछ अचरज अनभला[3]। तरवर[4] एक आवत होचला॥
यह बन रहत गये हमआऊ[5]। तरवर[6] चलत न देखाकाऊ॥
आजजोतरवर[7] चलभलनाहीं। आवहु यह बनछांड़पराहीं[8]॥
वैतो उडैं और बन ताका। पण्डितसुआ[9] भूलमनथाका॥
शाखा देखि राज जनु पावा। बैठिनिचिंत[10] चलावहआवा॥

दो० पांच[11] बाण कर खोंचा लासा भरे सो पांच।
पांखभरा तन उरझा कित मारेबिनबांच॥

बन्दभा[12] सुआ[13] करतसुखकेली। चूर[14] पांख मेलेसि घरठेली[15]॥
तहँवां बहुत पंख[16] खरभरैं। आप आप महँ रोदन करैं॥
बिष[17] दाना कित होय अँगूरे। जहँ भामरन डहन[18] धरचूरे॥
जो न होत चारा की आसा। कित चिड़हार ढकतलैलासा॥
येबिष[19] चारा सबबिधि ठगी। ओभा काल हाथ लै लगी॥
यहिं झूठी माया मन भूला। चूरी[20] पांख जैसो तन फूला॥
यहि मन कठिन मरैनहिंमारा। काल[21] न देख देखिपैचारा॥

दो० हमतोबुद्धि[22] गँवाई बिष[23] चारा असखाय।
तूसोठा[24] पण्डितहता तूकितभा निठुराय[25]॥

सुवैं[26] कहा हमहूँ असभूले। टूटिहिंडोल गर्ब[27] जेहिभूले॥
केला के बन लीन्ह बसेरा। पड़ा साथ तन बैरी केरा॥
सुख[28] कुरवार फरेरी खाना। बिष[29] भाजोहिब्याध[30] तुलाना॥
काहेक भोग[31] वृक्ष अस फरा। अड़ा लाय पंखहिं कहँ हरा॥
सखीनिचिंत[32] जोखधनकरना। यह निचिंत[33] आगेहै मरना॥
भूले हमहुँ गर्ब[34] तेहि माहां। सो बिगरा पावा जहँ पाहां॥

क़दम बाक़दम १ उड़नेवाले जानवर २—१६ बुरा ३ पेड़ ४—६—७ उमर ५ भागना ८ तोता ६—१३—२४—२६ग़ाफिल १० कंपा ११ क़ैद १२ बाज़ू को तोड़के १४ झोरी १५ ज़हर १७—१६—२३ बाज़ू१८ परमड़ोरके२० मोत२१ अक़िल २२ बेदर्द २५ ग़रूर २७—३४खुशी २८ ज़हर २६ बहेलिया ३० पेड़खानेका ३१ ग़ाफ़िल ३२—३३॥

होयनिचिन्त[1] बैठि तेहि अड़ा। तब जाना खोंचाहिय[2] गड़ा॥

दो॰ चरतनखुरक[3] कीन जब तबरे चरासुखसोय।
अब जो फांद परागैं[4] तब रोये का होय॥

सुनिकै उतर[5] आंशु पुनि पोछे। कोन पंख बांधी बुध[6] ओछे॥
पंखिन जोबुधि होयउजियारी। पढ़ासुआ[8] कितधरैमँजारी[10]॥
कित तीतरबन जीभ उघेला। सुक्कि हँकारफांदगयें[11] मेला॥
तादिन व्याध[12] भयो जिवलेवा। उठी पांख भानाउँ परेवा[13]॥
भई व्याध[14] तृष्णा[15] सुख खाधा। सूझी भुक्ति[16] नसूझै व्याधू[17]॥
हमहिं लोभ वह मेला जारी। हमहिं गर्व[18] वह चाहैमारी॥
हमनिंचि[19] तवहआवछिपाना। कौन व्याध[20] है दोष[21] अमाना[22]॥

दो॰ सोअवगुण[23] कितकीजिये जिवदीजे जेहिकाज।
अबकहना कुछ नाहीं मष्ट[24] भले पक्षिराज[25]॥

चित्रसेन चित्तौर गढ़ राजा। कइगढ़कोटिचित्र[26] सम[27] साजा॥
तेहिकुल रतनसेन उजियारा। धनिजननी जन्मीअसबारा[28]॥
पण्डित गुण सामुद्रिक देखहिं। देखिरूप औलगन विशेषहिं॥
रतनसेन यहिकुल निरमरा[29]। रतन ज्योति मन माथे परा॥
पदक[30] पदारथलिखीसोजोरी। चांद सूर्य्यजसहोय अंजोरी[31]॥
जसमालतीकहँ भँवरवियोगी[32]। तस वह लागहोय यहयोगी॥
सिंहलद्वीप जाय वह पावा। सिद्धहोय चित्तौर लै आवा॥

दो॰ भोग भोज[33] जसमानी बिक्रम[34] शाकाकीन्ह।
परखरतन जो पारखी सबैलिखनलिखदीन्ह॥

चित्तौर गढ़ कर एक बँजारा। सिंहल द्वीप चला व्योपारा॥

ग़ाफ़िल १ दिल २ अंदेशा फ़िकिर ३ गरदन ४—११ जवाब ५ अक़िल ६—८ उड़नेवालेजानवर९—१३ तोता८ बिल्ली १० गरदन ११ चिड़ीमार १२—१४ दुनियांकी हवा हवस १५ रोज़ी१६बहेलिया १७—२० ग़ऱूर १८ ग़ाफ़िल १९ कसूर २१ नादानी २२ बुरा काम २३ चुप २४उड़नेवाले जानवरों के राजा २५ तसवीर २६ बराबर २७ लड़का २८ पाक २९ लालजवाहिर ३० रोशनी ३१ दुखी३२ नामराजा३३ राजाबिक्रमादित्य ३४॥

ब्राह्मणहुतएकनिपट[1]भिखारी। सोपुनिचला चलतब्योपारी॥
ऋण[2] काहू कर लीन्हेसिकाढ़े। मग[3] तेहिगयेहोय कछु बाढ़े॥
मारग[4] कठिन[5] बहुत दुखभये। नांघ समुद्र द्वीप वह गये॥
देखिहाट[6] कुछ सूझै न ओरा। सबै बहुत कुछ देखिन थोरा॥
पैसुठ ऊँच नीच तेहिकेरा। धनी[7] पाव निधनी[8] मुखहेरा[9]॥
लाख करोरहि बस्तु बिकाई। सहसन[10] केर नकोउओनाई॥

दो॰ सबहिंलीन्हबिसहना औघर कीन्हबहोर[11]।
ब्राह्मण तहां लेका गांठ सांठ[12] सुठथोर॥

झुरीठाढ़ हौं काहेक आवा। बनज[13] नमिलारहापछतावा॥
लाभ[14] जानि आयोंयह हाटा[15]। मूरगँवाय चल्योंयह बाटा[16]॥
का मैं मरन सिखावन सिखी। आयों मरैमीच[17] हत लिखी॥
आपनचलतसोकीन्हाज्ञानी[18]। लाभ[19] नदेखिमूरभइहानी[20]॥
का मैं बोआ जन्म ओ भूँजी। खोय चल्यों घरहूँ की पूँजी॥
जेहि ब्योहरिया कर ब्योहारू। कालै देब जो छेकहि[21] बारू॥
घर कैसे पैठब मैं छूँछे। कौन उतर[22] देहौं तेहि पूँछे॥

दो॰ साथचलासत[23] बिचला भये बिचसमुद्रपहार।
आशानिराशाहीं फिरों तूबिधि[24] देहि उधार॥

तबहींब्याध[25] सुआ[26] लैआवा। कंचनबरन[27] अनूप[28] सुहावा॥
बेंचै लाग हाट[29] लै ओही। मोल रतनमाणिक[30] जेहिहोई॥
सुअहिं[31] कापूँछपतंग[32] मँडारें। चलन देख आछे मन मारें॥
ब्राह्मणआय सुआ[33] सों पूँछा। वह गुणवन्तकिनिरगुणछूँछा॥
कहुपंखी[34] जो गुणतोहिपाहां। गुण न छिपाये हृदये[35] माहां॥
हम तुम ज़ात ब्राह्मण दोऊ। ज़ात ज़ात पूँछै सब कोऊ॥

बहुत ग़रीब १ क़र्ज़ २ शायद वा कदाचित् ३ राह४—१६मुश्किल५ बाज़ार ६—१५ दौलतवाला७ बेदौलत८ देखना ९ हज़ार १० लौटना ११ बेपूंजी१२ माल १३ फ़ायदा १४ मौत १७ होशियारी १८ फ़ायदा १९ नुक़सान २० रोकना दरवाज़ाका २१ जवाब २२ ईमान २३ ब्रह्मा २४ बहेलिया २५ तोता २६—३१—३३—३४ सोने का रंग २७ बेमिसाल २८ बाज़ार २९ जवाहिरात ३० उड़नेवाले जानवर ३२ दिल ३५ ॥

पण्डित हौ तो सुनावहु वेदू। बिन पूँछे पाई नहिं भेदू॥

दो० हौंब्राह्मण औ पण्डितकहि आपनगुण सोय।
पढ़ेके आगे जो पढ़ै दून लाभ[1] तेहि होय॥

तबगुण मोहिं अहा हो देवा। जब पिंजर हुत छूटपरेवा[2]॥
अवगुणकौनजोबंद[3]यजमाना। घाल मँजूसा[4] बेचै आना॥
पण्डितहोयसोहाट[5] नहिंचढ़ा। चहौं बिकाय भूलगा पढ़ा॥
दुइ मारग[6] देखौं यह हाटा[7]। दई चलावै वोहि केहिबाटा[8]॥
रोवत रकत[9] भयोमुखराता[10]। तनभा पियर कहौंका बाता॥
राती[11] श्याम[12] कण्ठदुइग्रीवां[13]। तेहिदुइफन्द डरों सठजीवां॥
अबहूँ कण्ठ फन्दके चीन्हा। दुहूँके फन्दचाहै का कीन्हा॥

दो० पढ़िगुण देखा बहुत मैं है आगे डरसोय।
धुन्धजगत[14]सबजानकैभूलरहाबुधि[15]खोय॥

सुनिब्राह्मणबिनवा[16] चिरहारू[17]। करिपंखहि[18] कहँमया[19] नमारू॥
कतयेनिठुर[20]जिवबधेसि[21] परावा। हत्याकेर न तोहिं डेरावा॥
कहेसिपंख[22] का दोष[23] जनावा। निठुर[24] सोईसोपरमस[25] खावा॥
उनहिं रोय जानिके रोना। तहूँनतजाहिं[26] भोग सुखसोना॥
औ जानहिं तनहोययहनासू। पोषै मांस पराये मांसू॥
जोनहोहिंअसपरमँस[27] खाधू। कितपंखन[28] कहँ धरैबियाधू[29]॥
जोरिब्याध[30] पंखनि[31] नितधरै। सोनिचिन्त[32] मनलोभ[33] नकरै॥

दो०॥ ब्राह्मणसुआ[34] बेसाहा सुनिमत वेदगरंथ[35]।
मिलाआयसोसाथिन्नकहँ भाचितोरकीपंथ[36]॥

तबलगचित्रसेन शिवसाजा[37]। रतनसेन चित्तौर भा राजा॥
आय बात तेहि आगे चली। राज बणिज[38] आयेसिंहली॥

फ़ायदा१ जानवरपरिन्द२ क़ैद३ संदूक़४ बाज़ार५—७राह६—८ खूनह लाल१०—११ काला १२ गला १३ दुनियां १४ अक़िल १५ खुशामद १६ चिड़ीमार १७ उड़नेवालेजा-नवर १८—२२—२५—२८—३१ मेहरबानी १९ बेदर्द २०—२४ मारडालना २१ पाप २३ परायामांस खानेवाले २५- २७ छोड़ना २६ बहेलिया २९—३० ग़ाफ़िल ३२ लालच ३३ तोता ३४ पोथी ३५ राह ३६ मरना ३७ सोदागर ३८॥

हैं गज[1] मोति भरी सब सीपी। और बस्तु बहु सिंहलदीपी॥
ब्राह्मण एक सुआ लैआवा। कंचन[2] बरण अनूप सुहावा॥
राती[3] श्याम कण्ठ दुइ कांठा। राती डहन लिखा सबपाठा॥
औ दुइ नयन[4] सुहावन राता[5]। राती[6] ठोर अमी[7] रसबाता॥
मस्तक टीका कांध जनेऊ। कबिब्यास पण्डित सहदेऊ॥
दो० बोल अर्थसों बोली सुनत शीश[8] सब डोल।
राज मँदिरमहँ चाही असवहसुआ अमोल॥
भयो रजायसु[9] जन[10] दौड़ाये। ब्राह्मण सुआ बेगि[11] लै आये॥
बिप्र[12] अशीश बिनत औधारा। सुआजीवनहिं करोंनिरारा[13]॥
पै यह पेट महा बिश्वासी[14]। जेंसबनावा तपी[15] सँन्यासी॥
दारे[16] सेज जहां कुछ नाहीं। भुइँ पर रही लायगैं बाहीं॥
अन्धहिरही जोदेखन नयना[17]। गूँगरही मुख और नबयना[18]॥
बहिररहीजोश्रवण[19] नहिं सुना। पैयह पेटन रहै निरगुना[20]॥
कइ कइफेरा नित[21] यह दोषै। बारहिंबार[22] फिरै संतोषै॥
दो० सो मोहिं लिये मँगावै लावै भूँख पियास।
जो न होत असन[23] बैरी केहिकाहूकी आस॥
सुऐं अशीश दीन्ह बड़ साजू। बड़ परताप अखंडित[24] राजू॥
भागवन्ताबिधि[25] बुधि[26] अवतारा[27]। जहांभागतहँरूपजोहारा[28]।
कोइकेहिपासआशकेगवना[29]। जोनिराशदृढ़[30] आसनमवना[31]॥
कोइबिन पूँछे बोल जो बोला। होय बोल माटी के मोला॥
पढ़िगुणिजितनेपण्डितमतिभेऊ। पूँछे बात कहै सहदेऊ[32]॥
गुणी न कोई आप सराहा[33]। जोसो बिकायज्ञानसो जाहा॥
जबलगगुण प्रकट[34] नहिंहोय। तबलग मर्म[35] नजानै कोय॥

हाथी १ सोना २ लाल वा काला ३ आँख ४—१७ लाल५ लालचोंच६ अमृत७ शिर ८ हुक्म ९ नौकरलोग १० जल्द ११ ब्राह्मण १२ अलग १३ ज़बरदस्त १४ तप करनेवाले १५ औरत१६ आवाज़ १८ कान १९ नादान २० हमेशा २१ दरवाज़ा२२ पेट २३ हमेशा राज क़ायम २४ ब्रह्मा २५ अक़िल २६ पैदा करना २७ देखना २८ जाना २९ मज़बूत ३० चुप ३१ राजा युधिष्ठिरकेभाई ३२ तारीफ़ ३३ ज़ाहिर ३४ भेद ३५॥

दो० चतुर[1] वेदहों पण्डित हीरामन मोहिं नाउँ।
पद्मावतिसों मेरदों[2] सेवकरों तेहिठाउँ[3] ॥

रतनसेन हीरामन लीना। एकलाख ब्राह्मण कहँ दीन्हा ॥
विप्र[4]अशीशजोकीन्हपयाना[5]। सुआजोराजमँदिरमहँआना ॥
वरणों[6]काहि सुआ की भाखा। दीन्ह सुनाउँ हीरामन राखा ॥
जो वोलै राजा मुखजोवा[7]। जानौ मोतिन हार पिरोवा ॥
जो वोलै सव माणिक मूँगा। नाहित मवन[8] बांधकै गूँगा ॥
जनुहि मारमुख अमृत मेला। गुरुकै आप कीन्हजग चेला ॥
सूर्य्य चाँद की कथा कहा। प्रेमकी कहनलाय चितगहा ॥

दो० जोजो सुनै धुनै शिर राजा प्रीतिहोय अगाह।
असगुणवन्तनाहिंभलसोठा[10]वावरकीजेकाह॥

दिन दशपांच तहां जो भये। राजा कतहुँ अहेरे[11] गये ॥
नागवती रुपवन्ती रानी। सब रनवास पाटपरधानी[12] ॥
कियशृंगारकर[13]दरपनलीन्हा। दरपनदेखिगर्व[14]जेहिकीन्हा ॥
बोलहुसुआ पियारे नाहा[15]। मोरे रूप कोउ जग[16] माहा ॥
हँसत सुआ पुनि आयसुनारी। दीन्हकसौटी औ पनवारी[17] ॥
सुआ बानि[18] तोरीकससोना। सिंहलद्वीप तोरकस लोना[19] ॥
कौन दृष्टि[20] तोरे रुपमनी। वहिंहौंलोन[21] कि वै पद्मिनी ॥

दो० जोनकहेसि सत[22]सोठा[23]तोहिराजाकी आन[24]।
है कोई यह जग महँ मोरे रूप समान[25] ॥

सँवरिरूप पद्मावति केरा। हँसा सुआ रानी मुख हेरा[26] ॥
जेहिसरवर[27]महँ हंसनआवा। बगुला तहँ जलहंस कहावा ॥
दईकीन्हअसजगत[28]अनूपा[29]। एक एकते आगर रूपा ॥

चारोंवेद१ मुलाक़ात २ जगह३ ब्राह्मण४ कूच५ तारीफ़६ देखना७ चुप८ दुनियां ९ तोता१०—२३ शिकार ११ महारानी १२ हाथ १३ ग़रूर १४ ख़ाविन्द १५ संसार १६ चुनौटी १७ आवाज़ १८ ख़ूबसूरत १९—२१ निगाह २० सच २२ क़सम २४ बराबर२५ देखना २६ तालाब २७ दुनियां २८ बेमिसाल २९ ॥

कै मन गर्ब[1] न छाजा काहू। चाँदघटा और लाग्योराहू ॥
लोन[2] बिलोन तहां को कहै। लोनी[3] सोइ कंथ[4] जेहिचहै ॥
काहि पूँछ सिंहलकी नारी। दिनाहिंनपूजैनिशि[5] अँधियारी॥
कनक[6] सुगन्धसुतेहिंकीकाया[7]। जहां माथ काबरणों पाया॥

दो० गढ़ी सुसोने सोंधी भरे सो रूपे भाग।
सुनत रोष[8] भइरानी हिये[9] लोनअसलाग॥

जो यह सुआ मँदिर महँ अहै। कोन होय राजा सों कहै॥
सुनि राजा पुनिहोयबियोगी[10]। छांड़े राज चलै होय योगी॥
बिषराखे नहिं होत अँगूरू। शब्द[11] न दे बहुर हम चूरू॥
धाय[12] दामिनी[13] बेगि[14] हँकारी[15]।वहसौंपाहिय[16] रिसनसँभारी॥
देखोयह सोठा[17] हैमुँडचाला[18]। भयो न ताकर जाकर पाला॥
मुखकी आनि पेटबश आना। तेहिअवगुणदसहाटबिकाना॥
पंख न राखी होय कुभाखी। लेतहँमारिजहांनहिंसाखी[19]॥

दो० जेहि दिनका मैं डरतहौं रयनि[20] छिपानोसूर[21]।
सो लैदे कमल[22] कहँ मोकहँ होय मयूर[23]॥

धाय[24] सुआ ले मारे गई। समुझि ज्ञानहिरदे[25] मतभई॥
सुआ सुराजा करि बिशरामे[26]। मारन जायचहैजेहिस्वामे[27]॥
यह पण्डित खण्डित बैरागू। दोष[28] ताहिजेहिसूझिनआगू॥
जो तिरिया[29] के काजनजाना। परैधोख पाछे पछताना॥
नागमती नागिन बुध[30] ताऊ। सुआमयूर[31] होयनहिं काऊ॥
जोनहिंकंथ[32] कीआयसु[33] माहां। कौन भरोस नारि[34] कीबाहां॥
मग[35] यहि खोजहोयतसआय। तुरी[36] रोगहरि[37] माथेजाय॥

दो० दुइसो छिपाये नाछिपे इकहत्या अरु पाप।

ग़रूर १ ख़ूबसूरत या बदसूरत २ ख़ूबसूरत ३ ख़ाविन्द ४ राति ५—२० सोना ६ बदन ७ गुस्सा ८ दिल ९—१६—२५ दुखी१० आवाज़ ११ लौंड़ी१२ –२४ बिजुली १३ जल्द १४ बोलाया १५ तोता १७ बदराह १८ गवाह १९ सूर्य २१ पद्मावति २२ मोर

अन्तहि करहिंविनाशयह मैं साखी दै आप ॥

राखासुआ धाय[1] मति साजा । भयोखोज तस आयोराजा ॥
रानी उतर मान[2] सों दीन्हा । पण्डितसुआमँजारी[3] लीन्हा॥
मैं पूँछयो सिंहल पद्मिनी । उतर[4] दीन्हतुम्हकोनागिनी ॥
का तोर पुरुष रयनि[5] कर राऊ । उल्लुनजानिदिवस[6] करभाऊ॥
वैजसादिन तूनिशि[7] अँधियारी । जहांबसन्तकरीलको बारी[8] ॥
का वह पंख[9] कूट[10] मुहँ कूटे । अस बड़बोलजीभमुखछोटे ॥
ज़हर चुवै जो जो कहि बाता । असहत्यारालियेमुखराता[11] ॥

दो० माथेनहिं बैसारी[12] जो शठ सुआ सलोन[13] ।
कानटूटि जेहिआभरण[14] कालेकरब सुसोन ॥

राजा सुनिबियोग[15] तसमाना । जैसेहिय[16] बिक्रम[17] पछिताना॥
वह हीरामन पण्डित सुआ । जो बोलै मुख अमृत चुवा ॥
पण्डितदुखखण्डितनिरदोखा । पण्डितहिये[18] परैनहिंधोखा॥
पण्डित केर जीभ मुख शोधे । पण्डितबात न कहैंबियोधे[19] ॥
पण्डितसुमतिदैपन्थहि[20] लावा।जोकुपंथ[21] तेहिपँडितनभावा॥
पण्डितराती[22] वदन सरेखा । जो हत्यार रुहर[23] पै देखा ॥
की प्रान घट आनहि मती[24] । की जलिहोहिं सुआसँगसती॥

दो० जन जानहुकियेअवगुण मँदिर होयसुखराज ।
आयसु[25] मेटकन्त[26] के काकरभयनअकाज ॥

चांद जैस धन[27] उजेर अहे । भा पिउ रोष गहन असगहे ॥
परम सुहाग निवाहन पारी । भाव[28] धाग सेवा जवहारी ॥
इतनक दोष[29] वीरजपिउरूठा । जोपिउ आपन कहैसुझूठा ॥
ऐसे गर्व[30] नहिं भूलै कोई । जेहिं डर बहुत पियारोसोई ॥

लौंडी १ जवाब ग़रूर से २ बिल्ली ३ जवाब ४ राति ५—७ दिन ६ बाग़ीचा ८ उड़नेवाले जानवर ९ ज़हर१० लाल११ बैठालना१२ खूबसूरत १३ ज़ेवर १४ दुख १५ दिल१६—१८ राजाविक्रमादित्य१७ बेहूदा १९ राह२० बदराह २१ लालमुंह२२ खून २३ नागमती रानी २४ हुक्म२५ खाविन्द २६ रानी २७ छोड़ना २८ क़सूर २९ ग़रूर३० ॥

रानी आय धाय[1] के पासा । सुआ भवा सेमर की आसा ॥
पराप्रीति कंचन[2] महँ सीसा । बिथरत्न मिलै श्याम[3] पैदीसा॥
कहां सुनार पास जेहि जाऊँ । दे सुहाग करै इक ठाऊँ[4] ॥
दो० मैंपिय प्रीति भरोसे गर्ब[5] कीन्ह जिव माहँ ।
तेहिरिस हों परहेली[6] नगररोष की नाहँ[7] ॥
उतर[8] धाय[9] तबदीन्ह रिसाई ।रिसआपहिंबुधि[10] अवरहिंखाई॥
मैं जो कहा रिसकरहुनबाला[11] ।कोनगयोयहिरिसकरघाला[12] ॥
बिरस बिरोध रसहि पै होई । रिस मारै तेहि मार न कोई ॥
तुइ रिस भरी न देखेसि आगू । रिस महँ काकहँ भयोसुहागू ॥
जेहि रिस तेहिरस जागनजाई । बरस हरदि[13] होय पीराई ॥
जेहिके रिस मिलाय रस दीजै । सोरस तज रिसकोहनकीजै ॥
कंत[14] सुहाग की पाई साधा । पावै सो जो वहीं चितबांधा॥
दो० रहै जो पियकी आयसु[15] औ बरती होय हीन ।
निरमल[16] देखै चांदजस जन्म नहोयमलीन[17] ॥
जुवाहार मन समुझी रानी । सुआ दीन्ह राजाकहँआनी ॥
नागमती हों गर्ब[18] न लीन्हा । कंथ[19] तुम्हारमर्म[20] पियलीन्हा ॥
सेवा करै जो बारहमासा । अतन किअवगुणकरैनियासा[21] ॥
जो तुम देइ नायके ग्रीवा[22] । छांड़हि नाहिं बिन मारेजीवा ॥
मिलतहिमहँजनअहोनिरारे[23] । तुमसो अहोअदेश[24] पियारे ॥
मैं जाना तुम मोहे माहां । देखों ताक तो हो सबमाहां ॥
का रानी का चेरी कोई । जेहिकहँ मया[25] करैभल सोई ॥
दो० तुम सों कोई न जीता हारा बिक्रम[26] भोज[27] ।
पहिले आपहिं खोयकर करै तुम्हारा खोज ॥

लौंड़ी १—६ सोना २ खाविन्द३—७—१४—१६जगह४ अहंकार५ दूर६ जवाब ८ अक़िल १० औरत ११ ख़राब १२ हलदी १३ हुक्म १५ पाकसाफ़ १६ मैला १७ ग़रूर १८ भेद २० ख्याल २१ गरदन २२ अलग २३ सारा जहान २४ महब्बत २५ राजा

राजैं कहा सत्य कहु सुआ। बिनसतकस जससेमरभुआ॥
हो सुख राती[1] कहो सतबाता। जहां सत्य तहँ धर्म सँघाता॥
बांधी सृष्टि[2] अहै सत केरी। लक्ष्मी अहै सत्य की चेरी॥
सत्य जहां साहस सिधि[3] पावा। औ सतबादी[4] पुरुष[5] कहावा॥
सत कहि सती सँवारै सरा। आगलायचहुँदिशि[6] सतजरा॥
दुइजग[7] तरा सत्य जें राखा। औरपियार दीन्हसतभाखा[8]॥
सो सतछांड़ि जोधर्मबिनाशा[9]। कामतिकीन्हहिये[10] सतनाशा॥

दो० तुमसयान औपण्डित असत[11] न भाषों काउ।
सत्य कहो मोसों वह काकर अपनाउ[12]॥

सत्य कहत राजा जिव जाउ। पै मुखअसत[13] नभाषौंकाउ॥
हौं लियसत्य निसरयों यहिंते। सिंहलद्वीप राजघर जेहिंते॥
पद्मावत राजा की बारी[14]। पद्मगन्ध[15] शशि[16] दईसँवारी॥
शशि[17] मुखअंग[18] मलयगिरि[19] रानी। कनक[20] सुगन्धहिद्वादश[21] बानी॥
है पद्मिन जो सिंहलमाहां। सुगँधस्वरूपसो वहकीछाहां॥
हीरामन हौं तिहके परेवा[22]। कांठा फूटि करत तेहिसेवा॥
औ पायों मानुष की भाखा[23]। नाहींतो पंख[24] मुठभर पांखा॥

दो० जबलहिंजियों रातदिन सँवरोंमरों वहीलैनाउँ।
मुखराता[25] तनहरिहरकीन्हादुहूँजगत[26] लैजाउँ॥

हीरामन जो कमल बखाना[27]। सुनि राजा होय भवँरभुलाना॥
आगे आव पंख[28] उजियारे। कहै सुदीप पतंग किय मारे॥
रहाजोकनक[29] सुबासकेठाउँ[30]। कस न होय हीरामन नाउँ॥
को राजा कस दीप अतंगू। जेहिरेसुनत मन भयो पतंगू॥
सुनिसुसमुद्रचख[31] भयेकलकला[32]। कमलावाहिभवँरहोयमिला

लाल १ दुनियां २—२६ कामिल ३ सचबोलनेवाला ४ मर्द ५ चारोंतरफ़ ६ दोनों जहान ७ बोलो ८ नाग ६ दिल १० झूंठ ११-१३ क़सूर १२ लड़की १४ कमलकी खुशबू १५ चाँद १६—१७बदन १८ चन्दन १६ सोना २०—२८ ख़ालिस २१ उड़नेवाले जानवर २२—२४—२८ आवाज़ २३ लाल २५ बयानकरना २७ जगह ३० आंख ३१ नाम जानवर ३२ ।

कहौंसुगंधधनि[1] कसनिरमली[2]। भाअलि[3] संगकिअबहींकली॥
औकहुतहांजोपद्मिनी लोनी[4]। घरघर सबके होहिंजसहोनी॥
दो० सबै बखान[5] तहां कर कहत सो मोसों आव।
चहौं दीप वहदेखा सुनत उठा तस चाव॥
का राजा हौं बरनौं[6] तासू। सिंहलद्वीप अहै कैलासू॥
जोगा तहां भुलाना सोय। गये युगबीत न बहुरा कोय॥
घर घर पद्मिन छत्तिस जाती। सदा बसंतदिवस[7] अरुराती॥
जेहिं जेहिंबरन[8] फूलफुलवारी। तेहिंतेहिंबरन[9] सुगन्धसुनारी॥
गन्ध्रपसेन तहां बड़ राजा। अप्सरहिं[10] माहिंइन्द्रासनसाजा॥
सो पद्मावत ताकी बारी[11]। औसब द्वीपमाहिं उजियारी॥
चहूँखण्ड[12] के बर जो आहीं। गर्बहिं[13] राजा बोलहिं नाहीं॥
दो० उदित सूर[14] जसदेखी चांद छिपैजेहिधूप।
ऐसे सबै जाहिं छिप पद्मावत की रूप॥
सुनिरबि[15] नाउँरतन[16] भाराता[17]। पण्डितवही फेर कहु बाता॥
तुइ सुरङ्ग मूरत वह कही। चितमहँ लाग चित्र[18] कैरही॥
जनुहोय सूर्य्य आय मन बसे। सब घटपूर हिये[19] परगसे[20]॥
अबहूँ सूर्य्य चांदवहछाया। जलबिनमीन[21] रक्तबिनकाया[22]॥
करन[23] करानभाप्रेमअँगूरू।जोशशि[24] स्वर्ग[25] चढ़ौंहोयसूरू[26]॥
सहस[27] किरान रूपमन भूला। जहँजहँदृष्टि[28] कमलजनुफूला॥
तहां भँवर जहँ कमलागन्धी। भइशशि[29] राहुकेरऋणबन्धी॥
दो० तीन लोक खण्ड चौदह सबैपरै मोहिं सूझ।
प्रेमछोड़िकुछ औरनहिं लुनाजोदेखौंमनबूझ॥
प्रेम सुनत मनभूल नराजा। कठिनप्रेमशिरदियतेहिछाजा॥

पद्मावत १ पाक साफ़ २ भँवर ३ खूब सूरत ४ तारीफ़ ५—६ दिन ७ रंग ८—९ इंद्रलोककी परी १० लड़की ११ चारोंतरफ़ १२ ग़रूर १३ सूर्य १४—१५—२६ राजारतन सेन १६ दीवाना १७ तसवीर १८ दिल १९ खिलना २० मछली २१ बदन २२ नसनस में २३ चाँद २४—२९ आसमान २५ हज़ारज्योति तथा पद्मावत २७ निगाह २८॥

प्रेम फन्द जो पड़ा न छूटा। जीव दीन्हपै फांद न छूटा॥
गिरगिट[1] छन्द धरै दुखतीता[2]। खनहोपीत[3] राति[4] खन सीता[5]॥
जानिपुछार[6] जोभयवनवासी। रोवँरोवँपरी फांदन[7] कोआसी॥
पांख फरेरा सोई फांदू। उड़ नसकहिं उरझेभये बांदू॥
मेउँमेउँनिशि[8] दिन चिल्लाय। वही रोष[9] नागिन धरखाय॥
पांडुक[10] सुआकण्ठवहचीन्हा। ज्यहिंगें पराचाहिजिवदीन्हा॥
दो० तीतर गयें[11] जो फाँदहै नितहि[12] पुकारै दोष।
मुक्ति[13] हँकार[14] फांदगें[15] मेले कितमारेपुनमोष[16]॥
राजा लीन्ह ऊबके श्वासा। ऐसे बोलनहिंबोलनिरासा[17]॥
पहिलप्रेमहैकठिन[18] दुहेला[19]। दोजग[20] तराप्रेम जेहिखेला॥
दुखभीतर प्रेम मधु[21] राखा। किंचन मरन चहै सोचाखा॥
जेहिं नहिंशीश[22] प्रेमपथ[23] लावा। सोपृथ्वी[24] महँकाहेकआवा॥
अबमैंपीय प्रेमपथ[25] मेला। पायन ठेल राख कै चेला॥
प्रेमबारसो[26] कहै जो देखा। जें न देखिका जानिबिशेखा॥
तवलगदुखप्रीतमनहिंभेटा[27]। मिलातोगाजरमक[28] दुखमेटा॥
दो० जसअनूपतुइबरणी[29] नख[30] शिखबरण[31] शिंगार।
है मोहिं आश मिलन की जो पुरवै करतार[32]॥

खण्डसातवां शृंगारखण्ड पद्मावत॥

का शिंगार वह वरणों[33] राजा। वहक शिंगार वहीपै छाजा॥
प्रथम[34] शीश[35] कस्तूरी[36] केशा[37]। बलि[38] बासुकि[39] कोऔरनरेशा[40]॥
भँवरकेश[41] वहमालतिरानी। विषहर[42] लरहिंलेहिंअरघानी[43]॥
वेनी[44] छोरि झारजो वारा। स्वर्ग[45] पताल होय अँधियारा॥

रंग १ गर्म २ पीला ३ लाल ४ सफ़ेद ५ मोर ६ प्रेमकाफन्दा ७ रात ८ गुस्सा ९ कुमरी १० गरदन ११–१५ हमेशा १२ चुप १३ बोलाना १४ नजात १६ नाउम्मेद १७ मुशकिल १८ भारी १९ दोनों जहान २० शराब २१ शिर २२–३५ राह२३–२५ज़मीन२४ दरवाज़ा २६ मुलाक़ात २७ बहुतदिन २८ बयानकरना २९ नाखूनसे शिरकी चोटीतक ३० तारीफ़ ३१–३३ ईश्वर ३२ पहिले ३४ मुशक ३६ बाल ३७–४१ न्योछावर ३८ नामसांप ३९ आदमी ४० सांप ४२ खुशबू ४३ चोटी ४४ आसमान ४५॥

कोमल[1] कुटिल[2] केश[3] नगकारे[4]। लहरे भरी भुअंग[5] बैसारे॥
बेधीजानि मलयागिरि[6] बासा। शीश[7] चढ़ीलोटहिं चहुँपासा॥
घुंघुरवार अलकैं[8] बिष[9] भरे। संकर[10] प्रेम ज्योंगयें[11] परे॥
दो० असफँदवारकेशवै[12] राजा पराशीश[13] गैं[14] फांद।
अष्टोकलीनाग[15] सब डरकेभये केश[16] केबांद[17]॥
बरनों[18] मांगशीश[19] उपराहीं। सेंदुर अभैचढ़ा जेहि नाहीं॥
बिन सेंदुर अस जानहिं दिया। उजेरपंथ[20] रयनि[21] महँकिया॥
कंचन[22] रेख कसौटी कसी। जनुघनमँहदामिनि[23] परगसी[24]॥
सूर्य्यकिरणजनुगगन[25] बिशेखी। यमुनामांझसरस्वती देखी॥
खांड़े धार रुधिर[26] जनु भरा। कँरवट[27] ले बेनी[28] पर धरा॥
तेहि पर पूर धरे जो मोती। यमुन मांझ गङ्गाकी सोती॥
कँरवट[29] तपा[30] लीन्हहोय चूरू। मग[31] सुरुधिर[32] लेदेइसेंदूरू॥
दो० कनक[33] द्वादश[34] बानिहोय चही सुहाग वहमांग।
सेवाकरहिंनखतशशि[35] तरई[36] उवैंगगन[37] तससांग॥
कहौंलिलाट[38] दुइजकीजोती। दुइजहिंज्योतिकहांजग[39] ओती॥
सहस[40] किरणिजोसूर्य्यदिपाये। देखिलिलाट[41] सोउछिपजाये॥
का शिरबरणों[42] दिपै मयंकू[43]। चांदकलंकी[44] वहनिकलंक॥
आवचांद पुनि राहु गरासा। वहबिनराहुसदा परकासा[45]॥
तेहिलिलाट[46] परतिलकजोबैठा। दुइजपासजानहुँध्रुव[47] दीठा॥
कनक[48] पाट जनु बैठो राजा। सबैसिंगार अस्त्र[49] लैसाजा॥
वह आगे थिर[50] रहै न कोऊ। वहकाकहिंअसजुरासँजोऊ[51]॥
दो० खड्गधनुष औ चक्रबान दुइजगमारननाउँ।

मुलायम १ पेचदार २ बाल ३—८ साँप ४—५ चन्दन ६ शिर ७ ज़हर ८ जंजीर १०गरदन ११ बाल १२—१६ शिर १३—१९—३८—४१—४६ गरदन १४ नामसाँप १५ गुलाम १७ तारीफ़ १८—४२ राह २० रात २१ सोना २२—३३—४८ बिजुली २३ चमक २४ आसमान २५—३७ खून २६—३२ लौटके २७ चोटी २८ नाम जगह जहाँशिर कटातेहैं २९ फ़क़ीर ३० शायद ३१ ख़ालिस ३४ चाँद ३५ नखत ३६ दुनियां ३९ ह- [illegible] ४७ हथ्यार ४९ कायम ५० मिलना५१ ॥

मुनिके परामुरक्षके राजा मो कहँ भये यकठाउँ ॥

भौंह श्याम[१] धनुष[२] जनुताना। जासोंहेर[३] मारि बिष बाना॥
ओहि धनुष वह भौंहै चढ़ा। कें हत्यार काल[४] अस गढ़ा॥
ओहि धनुष कृष्ण पै अहा। ओहीधनुष राघव कर[५] गहा॥
ओहि धनुष रावण संहारा[६]। ओही धनुष कंसासुर मारा॥
ओहि धनुष बेधा हत राहू। मारा वही सहस्राबाहू[७]॥
ओहिधनुषमैंउपनहिचीन्हा धानिक[८]आपपनच[९]जग[१०]कीन्हा॥
वहिभौंहहिशर[११]कोइनजीता। अप्सरहिं[१२] छिपीछिपी गोपिता[१३]॥

दो० भौंहँधनुष धन धानक[१४] दूसर सर[१५] न कराय।
गगन[१६] धनुष उगवै लाजहि सो छिप जाय॥

नयन[१७] बानसर[१८] पचन कोऊ। जनुसमुद्र अस उलटहिंदोऊ॥
राती[१९] कमलकरहिंअलभवां[२०]। गुंजहिंमातनकरहिंअपसवां॥
उठहितुरंग[२१] लेहिंनाहिंबागा। जानौंउलटगगन[२२] कहँलाग॥
पवन झकोरें देहिं हिलोरा। स्वर्ग[२३] लायभुइँ लाय बहोरा॥
जग[२४] डोलैडोलतनयना[२५] हां। उलट औडार चहै पलमाहां॥
जबहिं फिराये कड्गन बूरा। असवै भौंह भँवरकी जोरा॥
समुद्रहिलोरकराहिंजनुभूले। खंजन[२६] लराहिंमिरग[२७] बनभूले॥

दो० भरे समुद्र असनयन[२८] दुइ माणिक[२९] भरे तरङ्ग[३०]।
आवहिंतीर[३१] जाहिंफिर काल भँवर तेहि सङ्ग॥

बरुनी[३२] कावरणौं[३३] इम[३४] बनी। साधे बान जानु वहिं अनी[३५]॥
जुरी राम रावणकी सैना[३६]। बीच समुद्र भये वह नयना॥
वारहि पार नयावर सांधे। जासों हेर[३७] लाग बिय बांधे॥
उन्हबानहिं असकौननमारा। बेधरहा सगरा संसारा॥

सियाह १ कमान २ देखना ३ मौत ४ हाथ ५ मारडालना ६ नामराजा ७ तीरंदाज़ ८ निशाना ९ दुनियां १० बान ११ इंद्रलोककीपरी १२ गोपी १३ पद्मावततीरंदाज़ १४ बराबर १५ आसमान १६ आँख १७ बराबर १८ लाल १९ भँवर २० घोड़ा २१ आसमान २२—२३ दुनियां २४ आँख २५—२८ ममोला २६ हिरन २७ जवाहिर २९ लहर ३० किनारा ३१ पलक ३२ तारीफ़ ३३ इमतरह ३४ फ़ौज ३५—३६देखना३७॥

गगन[१]नखतजसजाहिंनागिने। वै सब बान वही के हने ॥
धरती बान बेध सब राखे। शाखा ठाढ़ वही सब शाखे ॥
रोवँ रोवँ मानुष तन ढाढ़े। सूतहिं सूत बेध[२] अस गाढ़े ॥
दो० बरुनि[३] बान जस उपनहिं बेधी रन बन ढंख।
सो जेहितन सब रोवां पंखहि[४] तन सब पंख ॥
नासक[५]खर्ग[६] देवोंकेहियोगू[७]। खर्ग[८]खीन[९] वह बदन सँयोगू ॥
नासक[१०] देखिलजान्योसुआ। शूक[११] आय बेसरहोय उआ ॥
सुआजोपियरहीरामनलाजा। और भावका बरणों[१२] राजा ॥
सुआसुनाककठोर[१३]नवारी[१४]।वहकोमल[१५]तिलपुहुप[१६]सँवारी ॥
पुहुप[१७]सुगन्धकरहिसबआसा। मग[१८]हरकायलेइ[१९]हमपासा ॥
अधर[२०]दशन[२१]परनासक[२२]शोभा।दाड़िम[२३]देखिसुआमनलोभा॥
खंजन[२४]वेहिदिश[२५]केलिकराहीं। वेहिंवहरसकोपावकोउनाहीं॥
दो० देखिअमीरस[२६]आधरन्ह[२७]भयोनासका[२८]कीर[२९]।
पवन[३०] बासपहुँचावे आश्रमछाड़न तीर[३१] ॥
अधर[३२] सुरंग अमीरसभरे। बिम्ब[३३] सुरंगलाजबनफरे ॥
फूल दुपहरी जानहु राता[३४]। फूल झरहिं जोजो कहिबाता ॥
हीरालीन्हसुबिद्रुम[३५] धारा। बिहँसत[३६]जगत[३७]होयउजियारा॥
भइमजीठ[३८] बातहिंरंगलागें। कुसुमरंगथिर[३९] रहैन आगें ॥
वहिकेअधर[४०] अमी[४१]भरराखे। अबहिंअछूतिनकाहूचाखे ॥
मुखतंबोल[४२] धारनहिंरसा। केहिमुखयोगसोअमृतबसा ॥
राताजगत देखरँगराती[४३]। रुधिर[४४]भरीआछहिंबिहँसाती[४५] ॥
दो० अमीअधर[४६]असराजासबजग[४७] आसकरेइ।

आसमान १ सूराख २ पलक ३ जानवर परिन्द ४ नाक ५ तलवार ६ बराबरी ७ तलवार ८ पतली ९ नाक १० नामनखत ११ बयान करना १२ सख़्त १३ टेढ़ी १४ मुलायम १५ फूल १६—१७ शायद १८ बोलाना १९ होंठ २० दाँत २१ नाक २२ अनार २३ ममोला २४ तरफ़ २५ अमृत २६ होंठ २७ नाक २८ तोता २९ हवा ३० किनारा ३१ होंठ ३२ कन्दरू ३३ लाल ३४ मूंगा ३५ हँसना ३६ दुनियां ३७ लाख ३८ क़ायम

कहिकाकमलविकासा[१] कोमधुकर[२] रसलेइ ॥

दशन[३] चौक वैठे जनुहीरा। औबिचबिचरँगश्याम[४]गँभीरा॥
जनुभादौंनिशि[५]दामिनि[६]दीसी[७]। चमकउठै तस तहीं बतीसी॥
वहसो ज्योति हीरा उपराहीं। हीरावेहिसों तेहि परछाहीं॥
जेहिदिनदशन[८]ज्योतिनिरमई[९]। वहुतेंज्योति ज्योतिदामई॥
रवि[१०]शशि[११]नखतदीन्हवहज्योती।रतन[१२]पदारथमाणिकमोती॥
जेहिंतेहिंविहँसि[१३]सभामंहँहँसी। तहँतहँछिटकज्योतिपरकसी[१४]॥
दामिनि[१५]चमकनसरबरि[१६]पूजा। पुनिवहज्योतिहोयकोदूजा॥
दो० वेहँसतहँसतदशन[१७]तसचमकीपाहन[१८]उठीछुर्क[१९]।
दाड़िम[२०] सर[२१] जो नकैसका फाटयो हिया दर्क॥

रसना[२२]कहौं जोकहि रसबाता। अमृतबचनसुनतमनराता॥
हरीशिशिर[२३]चातक[२४] कोकिला। वीनबंशिवेबैन[२५]जेहिमिला॥
चातक[२६]कोकिलरमहिंजोनाहीं।सुनिवैबयन[२७]लाजछिपजाहीं॥
भरैप्रेम मधु[२८] बोलहिं बोला। सुनै सो मातघूमके डोला॥
चतुर[२९]वेदमति सब वह पाहां। ऋगयजुसामअथर्वणमाहां॥
इकइक बोल अर्थ जोगुना। इन्द्र मोहि ब्रह्माशिरधुना॥
भागवतभर्थ[३०]पिङ्गलऔगीता।अर्थजोजेहिपण्डितनहिंजीता॥
दो० भावसती[३१]औब्याकरनसुनीपिङ्गलपाठपुराण।
वेदभेदसों बातकहि जनुलागैं हिये[३२]बाण॥

पुनिवरनौं[३३]का सुरंगकपोला[३४]। इकनारंगकेदो कियेमोला॥
पुहुप[३५] पंगरस अमृतसांधे। कैअस सुरंगखरोरा[३६]बांधे॥
तेहिकपोल[३७] बायेंतिलपरा। जोतिलदेखिसोतिलतिलजरा॥
जनुघुँघुचीवह तिलकरमुहां[३८]। बिरहबान सांधो सामहां॥

खिलना १ भँवरा२ दाँत ३-८—१७ वहुत काला ४ राति ५ बिजुली६—१५ देख पड़ना७ बनाईगई ९ सूर्य १० चाँद ११ जवाहिरात १२ हँसना १३ उजियारा १४ बराबर १६ पत्थर १८ लूक १९ अनार २० बराबरी २१ जीभ २२ दूरकरना जरदीका २३ पपीहा २४—२६ आवाज़ २५—२७ शराब २८ चार २९ महाभारत पुराण ३० पोथी ३१ दिल ३२ बखानकरना ३३ गाल ३४ फूल ३५ लड्डू ३६ गाल ३७ कालामुंह ३८ ॥

अगिनबानातिलजानहुँसूझा। इक कटाक्ष लाखदुइ जूझा[1] ॥
सो तिलकाल मेटनहिंगयो। अब वहकाल काल जग भयो ॥
देखत नयन[2] परी परछाहीं। तेहिते रात[3] श्याम[4] उपराहीं ॥
दो० सोतिलदेखिकपोल[5] परगगन[6] रहाध्रुव गाड़।
खनहिंउठै खनबूड़ै डोलैनहिं तिलछाड़ ॥
श्रवण[7] सीपदुइदीपसँवारे। कुण्डल कनक[8] रचेउजियारे ॥
मणिकुण्डलचमकहिंअतिलोने[10]। जनुकौंधालवकहिंदुइकोने॥
दोउदिशचाँदसूर्यचमकाहीं। नखतहँभरीनिरखि[11] नहिंजाहीं॥
तेहिपर खूँट[12] दीप दुइ बारे। दुइ ध्रुव[13] दुहूँ खूँट बैसारे ॥
पहिरे खूटी[14] सिंहलद्वीपी। जानहु भरे कहजही सीपी ॥
खनखन जोहिचीरशिरगहा[15]। कांपतबीज[16] धौल[17] दिशि[18] रहा ॥
डरहिं देव लोक सिंहला। पड़ैन बीज[19] टूटितेहि कला ॥
दो० करहिं नखत सब सेवा श्रवण[20] दीन्ह असदोउ।
चांद सूर्य अस कहें और जगत[21] का कोउ ॥
बरणों[22] ग्रीव[23] कोंब[24] कीरीसा। कंचन[25] तारजनुलाग्योसीसा॥
कूंदे[26] फेर जानुगेंय[27] गाढ़े। हरी पुछार[28] ठगे जनु ठाढ़े ॥
जनुहिये[29] काढ़िपरेवा[30] ठाढ़ा। तेहितेअधिक[31] भावगये[32] बाढ़ा॥
चाकचढ़ाय सांचजनुकीन्हा। बाग तुरंग[33] जानुगहिलीन्हा ॥
गयेमयूर[34] तमचोर[35] जोहारा। उन्हें पुकारे सांझ सकारा ॥
पुनितेहिठाउँ[36] परीत्रिय रेखा। घूँट जो पीक लीक तसदेखा॥
धनवहग्रीव[37] दीन्हबिधि[38] भाउ। वहिंकाकहिं लेकरेमिराउ[39] ॥
दो० कण्ठश्री[40] मुक्तावनमाला[41] सोहैआभरन[42] ग्रीव[43]।
को होय हारकण्ठलागे कै तप साधा जीव ॥

दुनिया १–२१ आँख २ लाल ३ सियाह ४ गाल ५ आसमान ६ नामनखत ७–१३ कान ८ सोना ९ खूबसूरत १० देखना ११ बालो १२–१४ खैंचना १५ बिजुली १६–१९ सफ़ेद १७ तरफ़ १८ कान २० तारीफ़ २२ गरदन २३–२७–३२–३९–४३ कलंगी २४ सोना २५ खरादी २६ मोर २८ दिल २९ कबूतर ३० बहुत ३१ घोड़ा ३३ मोर ३४ मुरगा

कनक[१] दण्ड दुइ भुजा कलाई। जानहु फेर कँडेरे[२] भाई ॥
कदल गाभकी जानौ जोरी। औ राती[३] वहकमलहथोरी ॥
जानौ रक्त[४] हथौरी बूड़ी। रवि[५] प्रभात[६] तात[७] वै जूड़ी ॥
हिया[८] काढ़िजनुलीन्हेसिहाथा। रुधिर[९] भरीअँगुरीतहिसाथा ॥
औ पहिरे नगजड़ी अँगूठी। जग[१०] बिनजीवजीववहमूठी ॥
बाहूँ कङ्गन ताड़[११] सलोने[१२]। डोलतबाहुभावगतलोने[१३] ॥
जानो गति बेरन[१४] देखराय। बाहुँ डुलाय जीवले जाय ॥
दो० भुजउपमा[१५] पौ[१६] नारीन[१७] पूजीखीन[१८] भईतेहिचिन्त[१९]।
ठावहिं[२०] ठावँबेध[२१] भइ हृदय[२२] ऊबसांसले निन्त ॥
हिया[२३] थारकुच[२४] कंचन[२५] लाडू। कनक[२६] कचरे उठकै चाडू ॥
बेधे[२७] भँवर कंट[२८] केतकी। चाहैं बेध[२९] कीन्ह कंचुकी[३०] ॥
कुन्दन बेल साज जनु गूँदे[३१]। अमृत भरे रतन दुइ मूँदे ॥
यौवन बाण लेहिं नहिं बागा। चाहहिंहुलसहिये[३२] मेंलागा ॥
अगिन बाण दुइ जानों सांधे। जग[३३] बेधे जोहोहिं न बांधे ॥
उतंग जंभीर[३४] होय रखवारी। छुइ कोसकै राजाकी बारी[३५] ॥
दाड़िम[३६] दाख[३७] फरीअबचाखा। असनारंगवेहिंकाकहिराखा ॥
दो० राजा बहुत मुये तप लायलाय भुइँ माथ।
काहू छूय न पारी गये मरोरत हाथ ॥
पेट पतरि जनु चन्दन लावा। कहकहकेसर[३८] बरण[३९] सुहावा ॥
क्षीर[४०] अहार न कर सुकमारा। पान फूल लेरहै अधारा ॥
श्याम भुअंगिनि[४१] रोमावली। नाभी निकसकमलकहँचली ॥
आय दोहों नारंग बिच भये। देखि मयूर ठमक रहिगये ॥
आय जुरी भँवरन की पांती। चन्दन गाभ बास की माती ॥

सोना १ खरादी २ लाल ३ लोहू ४ सूर्य ५ भोर ६ गर्म ७ दिल ८—२२ खून ९ दुनियाँ १० नामज़ेवर ११ खूबसूरत १२—१३ तवायफ़ १४ बराबरी १५—१७ कमल की नाल १६ पतली १८ सोच १९ जगह २० छेद २१ छाती २३—२४ सोना २५—२६ सूराख २७ नोकछातीकेदंडीकी २८ सूराख २९ अँगिया ३० पोशाक ३१ दिल ३२ दुनियाँ ३३ नीबू ३४ बेटी ३५ अनार ३६ अंगूर ३७ खुशबू ३८ रंग ३९ दूध ४० कालीनागिनि ४१॥

गइ कालिन्दी[1] बिरह सताई। चलपरागअरबल[2] बिच आई॥
नाभी कुंड सो बानारसी। सौंह[3] कोहोयमीच[4] तेहिलिखी॥
दो० शिरकँरवटतनकाशी लैलैबहुतसीझ तेहिआश।
बहुत धूम[5] घूँट मैं देखी उतर[6] नदेइ निराश[7]॥
चोंटी पीठ लीन्ह वै पाछें। जनुपहिरचलीअप्सरा[8] काछें[9]॥
मलयागिरि[10] की पीठि सँवारे। बेनी[11] नाग चढ़ा जनु कारे॥
लहरैं देत पीठ जनु चढ़ा। चीर उढ़ावा केंचुल मढ़ा॥
वेहिकाकहँअसबेनी[12] कीन्हीं। चन्दनबासभुअंगहि[13] लीन्हीं॥
कृष्णकरा[14] चढ़ा वह माथे। तब सो छूटि अबछूटननाथे॥
कारे कमल गहे[15] मुख देखा। शशि[16] पीछेजनु राहुबिशेखा॥
को देखै पावै वह नागू। सो देखै माथे मन भागू॥
दो०. पन्नग[17] जोपंकज[18] मुखगहे[19] खंजन[20] तेहिशिरबैठ।
छात सिंहासन राजधन ताकहँ होइ जो दीठ॥
लंक[21] खीन[22] असआहिनकाहू। केहरि[23] कहूँन वह सरताहू॥
बसा[24] लंक[25] पखनीजगझीनी[26]। तेहिते अधिक[27] लंक[28] वहखीनी[29]॥
परहँस[30] पिवर भये तहँ बसा[31]। लिये डंख मानुष कहँ डसा॥
मानहुँ नलिन[32] खंड दुइ भये। दुहुँबिचलंक[33] तार रहिगये॥
हिये[34] सोमड़परचलीवहनागा। पैगदेत कितसहसक[35] लागा॥
छुद्रघण्ट[36] मोहहिं नरराजा। इन्द्रअखाड़आय[37] जनुबाजा॥
नाभ बीन गहे[38] कामिनी। लाकहिं सबै राग रागिनी॥
दो० सिंह[39] न जीता लंक[40] शर हारलीन्ह बनबास।
तेहि रिस रक्तापिये मानुषखाय मारके मांस॥
नाभीकुण्डसो मलयसमीरू[41]। समुद्रभँवरजसभवैगँभीरू[42]॥

यमुना १ नाममुक़ाम २ बराबर ३ मौत ४ धुआँ ५ जवाब ६ नाउम्मेद ७ इन्द्रपरी ८ धोती ९ चन्दन १० चोटी ११ चोटी १२ काला नाग १३—१४ पकड़ना १५—१६ चाँद १६ साँप १७ कमल १८ ममोला २० कमर २१—२५—२८—३३—४० पतली २२ चीता २३—३९ भँवरा २४—३१ बहुतपतली २६ बहुत २७ बारीक २९ डाह ३० कोकाबेली ३२ छाती ३४ डर ३५ करधनी ३६ नामबाजा ३७ पकड़ेहुये ३८ चन्दनकीहवा ४१ गहिरा ४२॥

बहुते भँवर बौंडर भये। पहुँच नसके स्वर्ग[1] कहँगये ॥
चन्दनमांझ कुरंगिन खोजू[2]। वेहिंको पावको राजा भोजू ॥
को वह लागहि बंचल सींझा। काकहिं लिखी ऐसको रीझा ॥
सोहै कमल सुगन्ध शरीरू। समुद्र लहर सोहै तनचीरू ॥
झूलहि रतन पाटके झोंपा[3]। साज मदन[4] वहिकाकहँकोपा ॥
अबहिं सो अहै कमलकीकरी। नजनों कौन भँवर कहँ धरी ॥

दो० वेधरही जग बासना निरमल[5] मेद[6] सुगन्ध।
तेहिअरघानभँवरसबलुब्धेतजहिं[7] नदियेबन्ध॥

बरणों[8] तम्ब[9] लंक[10] कीशोभा। औगज[11] गवनदेखसबलोभा ॥
जुरे जंघ शोभा अति पाये। केला खंभ फेर जनु लाये ॥
कमलचरणअतिरात[12] बिशेखी। रहैपाट[13] परभूमि[14] न देखी ॥
देवता हाथ हाथ पग[15] लेहीं। जहँ पगपरै शीश[16] तहँ देहीं ॥
माथे भागन कोउ अस पावा। चरणकमललैशीश[17] चढ़ावा ॥
चौरा चांद सूर्य्य उजियारा। पायल बीच करहिंझनकारा ॥
अनवटबिछियानखततराईं[18]। पहुँच सकै को पांइन ताईं ॥

दो० बरन शिंगारनजान्यो नखशिख जैसअभोग।
तस जग[19] कछून पायोंउपमा[20] देउवहयोग ॥

सुनिके राजा गयो मुरझाय। जानो लहर सूर्य्य के पाय ॥
प्रेम घाव दुख जानि न कोई। जेहि लागै जानै पै सोई ॥
परा सुप्रेम समुद्र अपारा। लहरहिंलहरहोयबिसभारा[21] ॥
बिरह भँवर होय भांवर देय। खनं खन जीव हिलोरहिंलेय ॥
कितहिंनिसांस[22] बूड़िजिवजाइ। कितहिं उठैनिसांस[23] बौराइ ॥
कितहिंपीत[24] खनहोमुखसेता[25]। कितहिंचेत[26] खनहोयअचेता[27] ॥

आसमान १ हिरनके पाँवका निशान २ लहँगा ३ कामदेव ४ पाक साफ़ ५ केसर ६ छोड़ना ७ तारीफ़करना ८ चुतर ९ कमर १० हाथी ११ बहुतलाल १२ तख़्त १३ ज़मीन १४ क़दम १५ शिर १६—१७ छोटेनखत १८ दुनियां १९ मिसाल २० बेक़रार २१ बेदम २२—२३ पीला २४ सफ़ेद २५ होश २६ बेहोश २७ ॥

कठिन मरनते प्रेम ब्यवस्था। नान जिये नजाय अवस्था[1]॥

दो॰ जनु लें हारहिं लीन्ह जिव हरहिं त्रासहि[2] ताहि।
इतना बोलत आव मुख करैं त्राहि त्राहि॥

जहँलग कुटुम्ब लोगऔ नेगी। राजाराय आय सब बेगी[3]॥
ज्ञानवन्त गुणी कारणी आये। ओझा वैद्य सयान बुलाये॥
चरचहिं चेष्टा[4] परखहिं नारी। नेर[5] नाहिं औषधि तहिंबारी॥
है राजा लक्ष्मण के करा[6]। शक्ती बान मोहहै परा॥
तहँसोराम हनुमन्त बलदौरी। कोलै आव सजीवन मूरी॥
बिनय करहिंजेतो गढ़पती[7]। काजीव कीन्ह कौनमतमती॥
कहोसोपियर काहिपुनिखांगा। समुद्रसुमेरुऔरतुमहिंमांगा॥

दो॰ धावन[8] तहां पठावैं देहिं लाख दशरोक[9]।
होय सो बेलजेहिबारी आनहिंसबै बरोक[10]॥

जो भाचेत उठा बैरागा। बावरजनो सोय उठि जागा॥
आयजगत[11] बालक जसरोवा। उठा रोय हा ज्ञान सो खोवा॥
हौंतो अहा अमर[12] पुर जहां। यहां मरन पुर आयों कहां॥
कैं उपकार[13] मरन पर कीन्हा। सुक्ति[14] जगायजीवहरलीन्हा॥
सोवत रहा जहां सुख साखा। कसनतहांसोवताबिधि[15] राखा॥
अबजिव वहां यहां तन सूना। कबलगरहयहिप्रानबहूना[16]॥
जो जिव घटै कालके हाथा। कठिन नेक पै जीवन साथा॥

दो॰ उठहिंहाथतन सरवर[17] हिया[18] कमल तेहिमाहिं।
नयनहिं[19] जानहुनेरे कर[20] पहुँचत अवगाहिं[21]॥

सबहिं कहामन समझोराजा। काल[22] सेतेकुछजूझ[23] नछाजा॥
तासों जूझ[24] जातजो जीता। जातनकृष्णतजहिं[25] गोपिता॥
उनहिं नेह[26] काहू से कीजे। नाउँ मेटि काहे जिव दीजे॥

हाल १ दुखदेना २ जल्द ३-१० चेहरेको हालत ४ नज़दीक ५ मानिन्द ६ राजा ७ दूत ८ नक़द ९ दुनियां ११ वैकुंठ १२ अहसान १३ चुपचाप १४ ईश्वर १५ अलग १६ तालाब १७ दिल १८ आँख १९ हाथ २० गहरा २१ मौत २२ लड़ाई २३-२४ छोड़ना २५ मुहब्बत २६॥

पहिलहिं सुख नेह[1] जब जोरा । पुनिहोकठिन[2] निबाहतओरा ॥
रहत हाथ तन जैसे शरीरू[3] । पहुँचनजाय परातस फेरू ॥
गगन[4] दृष्टि[5] सो जाई पहुँचा । प्रेमअदृष्टि[6] गगन[7] ते ऊँचा ॥
ध्रुव[8] ते ऊँच प्रेम ध्रुव[9] उआ । शिर दै पाउँ दिये सो छुआ ॥
दो० तुम राजा औ सुखिया करो राज सुख भोग ।
यहरे पंथ[10] सोपहुँचै सहैजो दुःख बियोग[11] ॥
सुवैं कहा मन समझो राजा । करतप्रीति कठिन[12] है काजा ॥
तुमहिं अबहिंजेई घर पोई । कमलनभेटहिं[13] भेटहिंकोई[14] ॥
जानहि भँवरजोतेहिपँथ[15] लूटै । जीव देहि औ दिये न छूटै ॥
कठिन[16] आहसिंहलकरसाजू । पाई नाहिंजो भाकै[17] साजू ॥
वहपंथ[18] जायजोहोयउदासी[19] । योगीयती[20] औतपी[21] संन्यासी[22] ॥
भोग किये पायत वह भोगू । तज[23] सोभोगकोइकरतनयोगू ॥
तुम राजा चाहो सुख पावा । योगहिभोग करतनहिं भावा ॥
दो० साधन[24] सिद्धन पाई जौलौं साधिन तप्प ।
सोपै जानहिंबापुरो शीश[25] जो करनहिं कल्प ॥
का भाखे कहानी कथा । निकसै घीव नबिनदधि मथा ॥
जो लह आप हेराय न कोई । तौलहि हेरत पावन सोई ॥
प्रेमपहाड़कठिन[26] बिधि[27] गढ़ा । सोपै जाय शीश[28] सों चढ़ा ॥
पंथ[29] सूरि नगर उठाअँगूरू । चोर चढ़ाकै चढ़ि मंसूरू[30] ॥
तुइँ राजाका पहिरेसि कंथा[31] । तोरेघराहिमांझ[32] दश[10] पंथा[33] ॥
कामक्रोध[34] तृष्णा[35] मनमाया । पांचौचोर नछांडहिं काया[36] ॥
नव सेंधैं[37] गढ़[38] केमँझियारा[39] । घरमूसहिंनिशि[40] केउजियारा ॥

मुहब्बत १ मुशकिल२ बदन ३ आसमान ४ निगाह ५ अदेख ६ आसमान ७ नाम नक्षत ८—९ राह १० विरह ११ मुशकिल १२ मुलाक़ात १३ कोकाबेली १४ राह १५ मुशकिल १६ लड़ाई १७ राह १८ क़िसिमफ़क़ीर १९ —२०—२१—२२ छोड़ना २३ फ़क़ीर २४ शिर २५ मुशकिल २६ ईश्वर २७ शिर २८ राहसूरीकी २९ नामफ़क़ीर ३० गुदड़ी ३१ बीच ३२ राह तथा नाक कान आँख मुहँ गुदा लिंग३३ गुस्सा ३४ हवस३५ बदन ३६ सुराख़ ३७ क़िला ३८ दरमियान ३९ रात ४० ॥

दो० अबहूँ जागि अयानी[1] होत आवनिशि[2] भोर ।
पुनि कुछ हाथ न लागै मूसजायँ जब चोर ॥
सुनिसोबात राजा मन जागा । पलकनमारिटकटका लागा ॥
नयन[3] हिं ढुरहिं मोतिऔसूँगा । जस गुड़ खाय रहाकै गूँगा ॥
हिय[4]कीज्योति दीपवह सूझा । यह जो दीप अँधेरा बूझा ॥
उलटि दृष्टि[5] माया सो रूठी । पलक नफिरी जानकै झूठी ॥
जोपै नाहीं इस्थिर दसा । जग उजारिका कीजे बसा ॥
गुरू बिरह चिनगी पै मेला । जोसुलगाय लिये सो चेला ॥
अबकी पतङ्ग[6] भृङ्ग[7] की करा[8] । भँवर होउँ जेहि कारन जरा ॥
दो० फूल फूल फिर पूँछौं जो पूँछौं वह केत[9] ।
तनन्यौछावरकैमिलौंज्योंमधुकर[10] जिउदेत ॥
हिन्दूमीत[11] बहुत समझावा । मान न राजा गवन भुलावा ॥
उपजैप्रेमपीर जेहि आये । परबुधि[12] होतअधिक[13] सोआये ॥
अमृत बात कहत बिष जाना । प्रेमको बचन[14] मीठ कै माना ॥
जो वह बिषे मारिकै खाय । पूँछौ ताही प्रेम मिठाय ॥
पूँछौ बात भरथरहि[15] जाय । अमृतराज तजो[16] बिषखाय ॥
औ महेश[17] बड़ सिद्ध कहावा । उनहूँ बिषे कण्ठ पै लावा ॥
होतउयोरबि[18] किरणनिकासा । हनुमन्तहोयको देइसुआसा ॥
दो० तुम सब सिद्धि मनावहु होयगणेश सिधिलेहु ।
चेला कौन चलावै तुलै गुरू जेहि भेहु ॥
तजा[19] राजराजाभा योगी । कर[20] किंकरीतनकियोबियोगी[21] ॥
तन बिसम्भर[22] मनबावरलटा । उरझा प्रेमपरी शिर जटा ॥
चन्द्रबदन[23] औ चन्दनदेहा । भस्मचढ़ायकीन्हतनखेहा[24] ॥

नादान १ रात २ आँख ३ दिल ४ नज़र ५ परवाना ६ नामकीड़ा ७ मानिन्द ८ केतकी ९ भँवरा १० दोस्त ११ नसीहत १२ बहुत १३ बात १४ राजाभरथरी १५ छोड़ना १६ महादेवजी १७ सूर्य्य १८ छोड़ना १९ हाथ २० दुखी २१ बक़रार २२ मुँह २३ राख २४ ॥

मेखल[1] सिंहे चक्र ढिंढारे । लीन्ह हाथ तिरशूलसँभारे ॥
कंथा[2] पहिर दण्ड कर[3] गहा[4] । सिद्धि[5] होयकहँगोरख[6] कहा ॥
मुद्रा[7] श्रवण[8] कण्ठ[9] जपमाला । कर[10] उहियांकांधसिंह[11] छाला ॥
पांवर[12] पायलीन्ह शिर छाता । खप्पर लीन्ह भेष[13] कैराता[14] ॥
दो० चला भक्ति[15] मांगनेकहँ साजकिया तप योग ।
सिद्धि[16] होयपद्मावतपायेहृदय[17] जबकिबियोग[18] ॥
गणिक[19] कहहिंकरगवननआजू ।दिनलैचलाहिंहोथसिध[20] काजू ॥
प्रेमलुब्ध[21] दिनघड़ी न देखा । तबदेखी जब होय सरेखा[22] ॥
जेहितनप्रेम कहां तेहि मांसू । काया[23] रक्तननयनहि आंसू ॥
पण्डितभुलाननजानहिचालू । जीवलेत दिन पूँछन कालू ॥
सती कि बौरी पूँछै पांड़े । औ घर बैठि नसैतैं भांड़े ॥
मरिजो चलै गङ्गा गति लेइ । तेहि दिन कहां घड़ी को देइ ॥
मैं घर बार कहां कर पावा । घरकाया[24] पुनिअन्त[25] परावा ॥
दो० होरे परवेरू पंखी जेहि बन मोर निबाहि ।
खेलचलातेहिबनकहँ तुमअपने घरजाहि ॥
चहुँदिश[26] आनसोडौंडीफेरी । भइ कटकाई[27] राजा केरी ॥
जानवन्तअहहिसकल[28] दरकाना[29] । सांभरलेहुदूरहै जाना ॥
सिंहलद्वीप जायसब चाहा । मोलन पावब जहां बिसाहा ॥
सबनिबहै पुनिआपनसांठी[30] । सांठी[31] बिनसोरहँ मुखमाठी ॥
राजा चला साज कै योगू । साजो बेग[32] चलैं सबलोगू ॥
गर्ब[33] जोचढ़ीतुरी[34] केपीठी । अबभुइँचलहुस्वर्ग[35] सोडीठी[36] ॥
मंत्रा[37] लीन्ह होहुसंगलागू । गुदरजाय सबहो यह आगू ॥
दो० कानिचिन्त[38] रेमनैं अपनी चिन्ता[39] आछ ॥

मस्लारायी १ गुदड़ी २ हाथ ३ पकड़ना ४ पूराहोना ५ नामफ़क़ीरकामिल ६बाला ७ कान ८ गरदन ९ सुमिरनी १० चीतेकीखाल ११ खड़ाऊँ १२ सूरत १३ लाल १४कामिल १५—१६ दिल १७ हुक्म १८ नजूमी १९ पूरा २० दीवाना २१ होशियार २२बदन २३ २४ आखिर २५ चारोंतरफ़ २६ फ़ौज २७ सब २८ अरकानदौलत २९ पूंजी ३०—३१ जल्द ३२ गरूर ३३ घोड़ा ३४ आसमान ३५ निगाह ३६ सलाह ३७ ग़ाफ़िल ३८ फ़िकिर ३९ ॥

लेह सजग[1] भा आगमन[2] पुनि पछतास न पाछ ॥
बिनवै[3] रतनसेन की माया। माथेछात पाट[4] नित[5] पाया ॥
बर्षहिंनवनिधि[6] लक्ष पियारी। राजछांड़ि जनहोहिं भिखारी ॥
नित[7] चन्दन लागैजेहि देहा। सो तनदेखि भरबअबखेहा[8] ॥
सब दिनरहे करत तुम भोगू। सो कैसे साधब तप योगू ॥
कैसे धूप सहब बिन छाहाँ। कैसे नींद पड़ै भुइँ माहाँ ॥
कैसे ओढ़ब कांथर कंथा[9]। कैसे पांय चलब भुइ पंथा[10] ॥
कैसेसहब खनहि खन भूखा। कैसे खाब करकटा[11] सूखा ॥
दो० राज पाट[12] दर[13] पुरुष सब तुमहीं सों उजियार।
बैठिभोग रस माहिंके नचल तेहि अँधियार ॥
मोहिं यहलोभ सुनावन माया। काकर सुख काकर यहकाया ॥
जोनियान[14] तन होइयहछारा[15]। माटी पोष मरै को भारा ॥
का भूलौं यहि चन्दन चोवा। बैरी जहां अंग के रोंवा ॥
हाथपांय श्रवण[16] औ आंखी। येसबभरहिंआयपुनिसाखी[17] ॥
सूति[18] सूतितनबोलहिंदोखा[19]। कहोकहँहो यहगतिमोखा[20] ॥
जो भलहोत राज औ भोगू। गोपिचन्द[21] नहिंसाधतयोगू ॥
उन्हें सृष्टि[22] जो देख परेवा। तजा[23] राज कजरी बनसेवा ॥
दो० देखिअन्त[24] असहोयहि गुरूदीन्ह उपदेश।
सिंहलद्वीपजाब मैं मातातुमसोंमोरअँदेश[25] ॥
रोवहिं नागमती रनवासू। कै तुम कन्त[26] दीन्हबनबासू ॥
अबको हमहिं कोहिभोगिनी। हमहूँसाथ होयहहिं योगिनी ॥
की हम लावहु आपनसाथा। की अब मार चलहु सेंहाथा ॥
तुम अस बिछुड़े पीव पिरीता। जहँवां राम तहां संगसीता ॥

होशियार १ पहिले २ अरज़करना ३ तख़्त ४ हमेशा ५ सबदुनियांकी दौलत ६ हमेशा ७ राख़ ८—१५ गुदड़ी ९ राह १० टुकड़ा रोटी ११ तख़्त १२ फ़ौज १३ आखिर १४ कान १६ गवाही १७ सुराख़ १८ पाप १९ नजात २० नामराजा २१ संसार २२ छोड़ना २३ आख़िर २४ सलाम २५ ख़ाविन्द २६ ॥

जबलहिजिवसँगछांड़िनकाया[१] । करिहौं सेव पखारहुँ[२] पाया ॥
भली पद्मिनी रूप अनूपा[३] । हमते कोइ न आगरि[४] रूपा ॥
सोहिंभलीपुरुषन[५] की दीठी[६] । जहँ जानातहँ दीन्ह न पीठी ॥
दो० दीन्हअशीशनबैसिलितुममाथेनित[७] छात ।
राजकरो चित्तौरगढ़ राखोपिय अहिवात ॥
तुमतिरिया[८] मतिहीनतुम्हारी । मूरुख सोइ मता घर नारी ॥
राघव जो सीता संग लाई । रावणहरी कौन सिधि[९] पाई ॥
यह संसार स्वप्न जस हेरा[१०] । अन्त[११] न आपनकोकहिकेरा ॥
राजाभरथरिहिंनहिंसुनीअयानी[१२] । जेहिके घरसोरहसैरानी ॥
कुच[१३] लीन्हें तरवा सहराई । भा योगी कोउ संग न लाई ॥
योगी काहि भोग से काजू । चहीन मेहरी चहै न राजू ॥
जूड़ि करकटा[१४] पैभीखहिचाहा । योगी तात[१५] भात सों काहा ॥
दो० कहा न मानीराजा तजी[१६] सवाई[१७] भीर ।
चला छांड़िके रोवतफिरके दीन्हन धीर[१८] ॥
रोवत माता फिरै न बारा[१९] । रतनचलाजग[२०] भाअँधियारा ॥
बार[२१] मोर जियावर[२२] रता । सो लैचला सुआ[२३] परबता ॥
रोवहिं रानी तजहिं[२४] पराना । फोरहिंवरी[२५] करहिंखरिहाना ॥
चूरहिंगेंअभरन[२६] उर[२७] हारू । अब काकहँ हमकरबसिंगारू ॥
जाकहँ कही रहसिके पीव । सोई चला काकर यह जीव ॥
मरीचहहिं पै मरै न पावहिं । उठै आग सबलोग बुझावहिं ॥
घड़ी एक सुठ भयो अँदूरा[२८] । पुनि पाछे बीताहोय रूरा[२९] ॥
दो० टूटिमने नव[९] मोती फूट मने दस[१०] कांच ।
लीन्हसमेटसबैआभरन[३०] होयगादुखकरनांच ॥

बदन १ धोना २ बेमिसाल ३ खूबसूरत ४ मर्द ५ देखना ६ हमेशा ७ औरत ८ कजान ९ देखना १० आखिर ११ नादान १२ छातीकीदंडी १३ ठंढीरोटीकाटुकड़ा १४ मांगे १५ छोड़ना १६ सब १७ धीरज १८ लड़का १९—२१ दुनियां २० ज़िन्दगीका सबब २२ लेना २३ छोड़ना २४ चूड़ी २५ गरदनकेज़ेवर २६ छाती २७ शोर २८—२९ ज़ेवर ३० ॥

निकसा राजा सुनके पूरे[१] । छांड़ि नगर मेला होयदूरे ॥
राय[२] रांग सबभये बियोगी[३] । सोरह सहस[४] कुँवरभये योगी ॥
माया मोह हरी सैंहाथा । देखि न बूझनियान[५] न साथा ॥
छांड़हिं लोगकुटुम्ब सबकोऊ । भयेनिराशदुखसुखतज[६] दोऊ॥
सँवरहिं राजा सोइ अकेला[७] । जेहिरे पन्थ[८] खेलेहोय चेला ॥
नगर नगर औ गांवहिंगांवां । छांड़ चला सब ठांवहिं[९] ठांवां ॥
काकर गढ़ काकर मठ माया । ताकरसब जाकरजिवकाया[१०] ॥
दो० चलाकटक[११] योगिनके करके गेरुवा भेस ।
कोसबीस[२०] चारहुं[१२] दिश जानहुँफूला टेस[१३] ॥
आगेसगुन सगुन[१४] यहिंतका । दहीमाँझ रूपे[१५] करटका ॥
भरेकलश तरुनी[१६] चलिआई । दही लिये ग्वालन गुहराई ॥
मालिन आय मौर ले गाथे । खंजन[१७] बैठ नागके माथे ॥
दाहिन मिरग[१८] आयगाधायें । प्रतीहार[१९] बोला घर बायें ॥
बिरष[२०] सवरियादाहिनबोला । बायेंदिश[२१] गीदर[२२] नहिंडोला॥
बायें अकाशी[२३] धूरे आये । लोबा[२४] दरश आयदेखराये ॥
बायें कुररी[२५] दाहिन कोचा[२६] । पहुँचीभुक्ति[२७] जैसमनरोचा[२८] ॥
दो० जाकहँसगुनहोहिंअसऔगवनै[२९] जेहिआस ।
अष्टो[३०] महासिद्धिपंथहि[३१] जसकबिकहाब्यास ॥
भयोपयान[३२] चला तब राजा । शंखनाद[३३] योगिनकरबाजा ॥
कहिनआजकुछथोर पयाना[३४] । काल्ह पयान[३५] दूरहै जाना ॥
वहमिलान[३६] जो पहुँचैकोई । तबहमकहबपुरुष[३७] भलसोई ॥
हैआगे परबत की बाटैं[३८] । बिषम[३९] पहाड़अगम[४०] सठघाटैं॥

शेर १ राजाके भाई २ दुखी ३ हजार ४ आख़िर ५ छोड़ना ६ परमेश्वर७ राह८ जगह ९ बदन १० फ़ौज ११ चारोंतरफ़ १२ टेसू १३ नजूमी १४ रूपिया दहीमेंरखके १५ जवान औरत १६ ममोला १७ हिरन १८ तीतर १९ सांड़ २० तरफ़ २१ सियार २२ चील्ह २३ लोंबड़ी २४ कौवा २५ उल्लू २६ रोज़ी २७ चाहना २८ जाना २९ कामिल ३० राह ३१ कूच ३२ शंखकीआवाज़ ३३ कूच तथा मौतकादिन ३४ कूच दूर तथा क़यामतकादिन३५मिलना३६ जवाँमर्द३७ राह३८ टेढ़ा ३९ जहांकोईनपहुँचसकै४० ॥

चितचित्रकोह नदी औ नारा । ठांवहिं[1] ठांव वैठि बटपारा[2] ॥
हनुमत[3] केर सुनतपुनि हांका । वहिको पारहोयको थाका ॥
अस मन जानि सँभारहु आगू । अगवा[4] केर होहुपछलागू ॥

दो० करहिंपयान[5] भोरउठिनितहिं[6] कोसदशजाहिं ।
पंथी[7] पंथा[8] जो चलहिं तेकितरहैं औठाहिं ॥

करहुदृष्टि थिर[10] होयबटाऊ[11] । आगूदेखि धरहु भुइँ पांऊ ॥
जोगिऔबाट[12] भुइँपरीभुलाय । कीमरिपंथ[13] चले न जाय ॥
पांयन पहिरलेहु सबपँवरी[14] । कांट न चुभै न गड़ै अँकरोरी ॥
परीआय अबबनखंड[15] माहां । डंडा[16] कारन बीच निबाहां ॥
सघन[17] ढांखबनचहुँदिश[18] फूला । बहुदुखमिलै वहांकरभूला ॥
झांखरजहांसु छांड़हु पंथा[19] । हिलगमकोयनफारहुकंथा[20] ॥
दहिनेबिदर[21] चँदेरी[22] बायें । वहिकहँहोबबाट[23] दुइठायें[24] ॥

दो० एकबाटगईसिंहल[25] दूसर[26] लंक[27] समीप[28] ।
हैआगेपंथ[29] दोवनहिंगवनब[30] कोहिद्वीप ॥

ततखन बोलासुआ सरेखा[31] । अगवा[32] सोईपंथजेहिंदेखा ॥
सोकाउड़ै न जेहि तन पांख । लैसोपलाशहि[33] बोलै शाखू ॥
जस अंधा आँधीकर संगी । पंथ[34] न पावहोय सहलंगी[35] ॥
सुनिमति[36] काजचहसिजोसाजा । बीजा[37] नगरबिजैगिररांजा ॥
पूंछा जहां कुंड औ गोला । तजि[38] बायें अंध्यार[39] खटोला ॥
दखिन दाहिने रहैतिलंगा[40] । उत्तरमांझहोयकरहा[41] कटंगा ॥
मांझरतन[42] पुरसोंह दुवारा । झारखंडवे बायें पहारा ॥

जगह १ राहलूटनेवाले २ बंदर ३ गुरू ४ कूच ५ हररोज़ ६ राहचलनेवाले ७ राह ८ निबाह ९ क़ायम १० मुसाफ़िर ११ राहबतानेवाला १२ राह १३ खड़ाऊँ १४ जंगल १५ नामजगह १६ गुंजान १७ चारोंतरफ़ १८ राह १९ गुदड़ी २० नाममुल्क २१—२२ राह २३ जगह २४ राह २५ नाममुल्क तथास्वर्ग २६ नाममुल्क तथा नरक २७ बराबर २८ राह २९ जाना ३० तोता होशियार ३१ राहबतानेवाला ३२ नामदरख़्त ३३ राह ३४ [illegible] ३५ मलाह ३६ नाममुल्क ३७ छोड़ना ३८ नाममुक़ाम [illegible] योगकीक्रिया ३९—४०—४१ नाममुल्क तथा मुक़ाम मतलब ४२ ॥

दो० आगें बाउँउड़ीसा[1] बायें देहिसु बाट[2]।
दहिनावरत लायके उतरसमुद्रकीघाट॥

होत पयान[3] जाय दिनकेरा[4]। सिरगारन[5] महिं कीन्ह बसेरा॥
कुश सांठर भइ सुरि[6] सपेती। करवट[7] आयबनी भुइँसेती॥
क्यामिलीजस भूमि[8] गलीजा। चलिदसकोसओसतनभीजा॥
ठांव[9] ठांव सब सोवहिं चेला। राजा[10] जागै आप अकेला॥
जेहिके हिये[11] प्रेम रँग जामा। कातेहि नींदभूँखबिशरामा[12]॥
बन अँध्यार रयनि[13] अँध्यारी। भादौं बरन भयोअतिभारी॥
किंगरी[14] गहे हाथ बैरागी। पांचतन्त[15] धुनिओहीलागी॥

दो० नयन[16] लाग तेहिमारग[17] पद्मावतजेहिदीप।
जैसे स्वांति बूँदकहँ बन चातक[18] जलसीप॥

मासक[19] लागचलततेहिबाटा[20]। उतरेजाय समुद्र की घाटा॥
रतनसेन भा योगी यती। सुनि भेटै आवा गजपती[21]॥
योगी आप कटक[22] सबचेला। कौनद्वीप कहँजाहहिखेला[23]॥
भलीआय सब माया[24] कीजै। पहुनाई[25] कहँआयसु[26] दीजै॥
सुनहुगजपती[27] उतर[28] हमारा। हम तुम एकै भाव निरारा॥
सो तेहिकहँ जेहिमहँ यहभावा। जोनिराश[29] तेहिलाड़नसावा[30]॥
यहीबहुत जो बोहित[31] पाऊँ। तुमते सिंहलद्वीप सिधाऊँ॥

दो० जहांमोहिं निजजानाकटक[32] हौं लिये बार[33]।
जोरेजियों तौलौफिरों मरौंतो वहकी बार[34]॥

गजपति[35] कहीशीश[36] बरमांगा। इतनी बोल न होइहै खांगा॥
यहि सब देउँ आन पै गढ़ी। फूलसोई जोमहेश्वर[37] चढ़ी॥

नाममुल्क १ राह २ कूच ३ शामकेवक्त ४ जंगलतथाक़बरिस्तान ५ तोशकऔरलिहाफ़ ६ तकिया ७ ज़मीन ८ जगह ९ रतनसेन मुराद परमेश्वर १० दिल ११ आराम १२ रात १३ नाम बाजा १४ पाँच तार १५ आँख १६ राह १७ पपीहा १८ एक महीना १९ रास्ता २० नाम राजा २१ फ़ौज २२ जाना २३ मेहरबानी २४ ज़्याफ़त २५ हुक्म २६ नामराजा २७ जवाब २८ नाउम्मेद २९ नुक़्सान ३० नाव ३१ फ़ौज ३२ दरवाज़ा ३३—३४ नाम राजा ३५ शिर ३६ महादेवजी ३७॥

पै गुसाईं सो एक नखाती[1] । मारग[2] कठिन[3] जावकेहिभांती[4] ॥
सात समुद्र असूझ अपारा । मारहिं मगरमच्छ घड़ियारा ॥
उठै हिलोर न जाय सँभारी । भागहि[5] कोइनिबहै ब्योपारी ॥
तुम सुखिया अपने घर राजा । एतेदुख जो सहो केहिकाजा ॥
सिंहलद्वीप जाय सो कोई । हाथ लेहैं आपन जिव होई ॥
दो० खारि[6] क्षीर[7] दधि[8] उदधि[9] सुरा[10] जलपुनिकिल[11] किलाकूत[12] ।
कोचढ़ि नांघ समुद्रये सातों है काकर असपूत ॥
गजपतियहिमनसकती[13] सेवा । पैजेहि प्रेम कहां तेहि जीवा ॥
जो पहिले शिरदेपग[14] धरिये । मुये केरका मीच[15] करीये ॥
सुखसंकलपदुखसांभर[16] लीन्हा । तौपयान[17] सिंहलकहँकीन्हा ॥
भँवरजानि पै कमल पिरीती । जेहि महँ बिथा प्रेमकीबीती ॥
औजें समुद्र प्रेमकर देखा । तें यहि समुद्रबूँद बर[18] लेखा ॥
सात[19] समुद्रसतलीन्हसँभारू । जो धर्त्ती[20] कागरू पहारू ॥
जो पैजीव बांध सत बेरा । परजिव जाय फिरैनाहिं फेरा ॥
दो० रंग नाथ हौं जाकर हाथ वहीके नाथ ।
गहे[21] नाथ सोखींचै फिरै न फेरेमाथ ॥
प्रेमसमुद्रजोअतिअवगाहा[22] । जहांन वार न पार न थाहा ॥
जो वह समुद्र गाह यहिं परे । जो अवगाह[23] हंसहोइ तरे ॥
हों पद्मावत कर भिखमङ्गा । दृष्टि[24] नआवसमुद्रऔगङ्गा ॥
जेहिकारण[25] गे[26] कांथरकंथा[27] । जहांसोमिलैजाउँतेहिपंथा[28] ॥
अब यह समुद्र परो होयमरा । प्रेम मोर पानी के करा[29] ॥
मरमा कोइ कतहूँलै जाऊँ । वहकी पंथ[30] कोऊ धरखाऊँ ॥
असमनजानसमुद्रमहँपरयों । जोकोइखायवेग[31] निसतरयों[32] ॥

कमखना १ राह २ मुश्किल ३ किसतरह ४ क़िस्मत ५ खारी ६ दूध ७ दही ८ मीठा पानी ९ शराब १० नामसमुद्र ११–१२ सक्ती १३ क़दम १४ मौत १५ तो भी १६ कूच १७ बराबर १८ खारी मीठापानी दही दूध शराब किलकिलाकूत येसात समुद्रहैं १९ ज़मीन २० पकड़ना २१ गहिरा २२—२३ निगाह २४ वास्ते २५ गरदन २६ गुदड़ी और झोला २७ राह २८ मानिन्द २९ रास्ता ३० जल्द ३१ छूटजाना ३२॥

दो० स्वर्ग[1] शीश[2] धरधरती[3] हिया[4] सो प्रेम समुन्द।
नयन[5] कौड़िया[6] होयरही लैलै उठ तेहि बुन्द॥
कठिन[7] बियोग[8] योग दुखदाहू[9]। जन्मजरतहौं और न पाहू॥
डरलज्जा तहँ दोउ गँवानी। देखै कछू न आग न पानी॥
आग देखि वह आगें धावा। पानिदेखिवहसौंहिं[10] धसावा॥
जस बावर न बुझाये बूझा। कौन भांति[11] जायका सूझा॥
मगर मच्छ डरमने न लेखा। आपहिं चहौं पारभा देखा॥
औनहिंखायवहसिंहसिंदूरा[12]। काठै जाहिअधिक[13] यहभूरा॥
काया[14] माया[15] सङ्ग न आथी। जेहि जिव सौंपा सोई साथी॥
दो० जो कुछ दर्ब[16] अहा सङ्ग दान दीन्ह संसार।
काजानी केहिकी सत दई[17] उतारै पार॥
धन जीवन[18] औताकर जिया। ऊँचजगत[19] महिजाकरदिया॥
दियासो सबजपतपउपराहीं[20]। दियाबराबरकुछजग[21] नाहीं॥
एक दियातें दशगुन लाहा। दियादेखि सबको मुखजाहा॥
दिया करै आगे उजियारा। जहां न दिया तहां अँधियारा॥
दियामँदिर[22] निशि[23] करैउजोरा। दिया नाहिं घरमूसहिंचोरा॥
हातिम[24] करण[25] दियाजोसिखा। दियारहाधर्मन महँ लिखा॥
दियासो काजदोहूँजग आवा। यहांजोदिया वहां सब पावा॥
दो० निरमल[26] पंथ[27] कीन्हतेहि जेहि रेदियाकुछ हाथ।
कुछ नाहिंकोइलै जायही दिया जाय पै साथ॥

खण्डग्यारहवां बोहितखण्ड॥

सत[28] नडोल देखा गजपती[29]। राजादत्त[30] सत[31] दोनों सती॥
आपननाहिंकया[32] पी कंथा। जीवदीन्हअगमन[33] तेहिपंथा[34]॥

आसमान १ शिर २ ज़मीन ३ दिल ४ आँख ५ नाम जानिवर ६ मुशकिल ७ जुदाई ८ जलना ९ सामने १० किसतरह ११ शेरलाल १२ ज्यादा १३ बदन १४ दुनियांदौलत १५ रूपिया १६ ईश्वर १७ ज़िन्दगानी १८ दुनियां १९—२१ ऊपर २० मकान २२ रात २३ नामसखी २४—२५ पाकसाफ़ २६ राह २७ ईमान २८ नामराजा २९ सखावत ३० सचाई ३१ बदन ३२ पहिले ३३ राह ३४॥

निडर चला भर्म डर खोय। साहस[१] जहांसिद्ध[२] तहँ होय॥
निडर चला छांड़िकै राजू। बोहित[३] दीन्हदीन्हसबसाजू[४]॥
चला बेग[५] औ बोहित पेली। धनवह पुरुष[७] प्रेम पथ[८] खेली॥
प्रेम पंथ[९] जो पहुँचै पारा। बहुर[१०] नआयमिलै यहिछारा[११]॥
तेहि पावा उत्तम[१२] कैलासू। जहांनमीच[१३] सदा सुख बासू॥
दो० यहि जीवनकी आशका जैसे स्वप्नतिल आध।
मुहम्मद जीतहि जोमुये ते पुरुष[१४] सिध साध॥
जसबदिनरयनि[१५] चलैगज[१६] भांती।बोहित[१७] चलीसमुद्रकीपांती॥
धावहिंबोहित[१८] मनउपराहीं। सहस[१९] कोसएकपलमहँजाहीं॥
समुद्र अपारस्वर्ग[२०] जनुलागा। स्वर्ग[२१] नखाल[२२] गिनैबैरागा॥
ततखन[२३] एकचाल्ह[२४] दिखराये। जनुधौलागिरि[२५] पर्वतआये॥
उठैहिलोरजोचाल्ह[२६] निराजे[२७]। लहरअकासलागिभुइँबाजे॥
राजासिंते कुँवर सबकहैं। असअस मच्छसमुद्रमहँअहैं॥
तेहिरेपंथ[२८] हमचाहतगवना[२९]। होहुसचेत[३०] बहुर[३१] नहिंअवना॥
दो० गुरुहमारतुमराजा हम चेला तुम नाथ।
जहां पाउं गुरुराखै चेला राखै साथ॥
केवट[३२] हँसे सुनत को बेजा[३३]। समुद्र नजानिकुवांकरसंजा[३४]॥
यहितो चाल्ह[३५] न लागै कोहू। का कहियो जब देखब रोहू॥
सो अबहीं तुम देखे नाहीं। जेहिमुखऐसे सहस[३६] समाहीं॥
राजपंख[३७] तेहिपर मँडराहीं। सहस[३८] कोसतिनकीपरछाहीं॥
तेमच्छ ठोरगहि[३९] लेहीं। सावक[४०] मुख चारालै देहीं॥
गरजेगगन[४१] पंखजो खोलाहिं। डोलै समुद्रडहनजोडोलाहिं॥
तहां[४२] नसूर्यनचांदअसूझा। चढ़ैसोईजेहिअगमन[४३] बूझा॥

बहादुर१ कामिल२ नाव३—१७—१८सामान४ जल्द५ जहाज़६ मर्द ७—१४ राह ८—९—२८—४६ लौटना १०—३१ मिट्टी११ बैकुण्ठ१२ मौत१३ रात १५ हाथी१६ हज़ार १९—३६—३८आसमान २०—४१ ऊँचा २१ नीचा२२ यकायक२३ नाम जानवर २४—२६ ३५नामपहाड़ २५ हिलना २७जाना २९ होशियार ३० मल्लाह ३२बातचीत ३३ मेढक ३४ मांगुरी ३७ पकड़ना ३९बच्चा ४० तायाफ़ मेहरबाकी दूर अन्देशी ४३॥

दो० दसमहँ एकजायकोइ कर्मधर्म सत नेम।
बोहित[1]पारहोयजोतौहोकुशल[2]औखेम॥

बात कहत भइ देश गुहारी। केवटहि[3] चाल्ह[4]समुद्रमहँमारी॥
हस्ती[5] लायसिष्ट[6] सबढीला। दौड़आयइकचाल्हहि[7] लीला॥
केवट[8] लागिलागि सबबली[9]। फिरैनचाल्ह[10]जायबहिचली॥
बोहित[11]सहस[12]जाहिंचहुंओरा।होयकलोल[13]जाहिंतरि[14]बोरा॥
सुनिके आप चढ़ासें[15] राजा। औसबलोगदेशसिलबाजा[16]॥
भालबांस खांड़े[17] बहु परहीं। जानपखाल[18] बाजके चढ़हीं॥
चारालीलजो माछर बाझी। कहांजाय जोजाकर खाझी[19]॥

दो० माछरकरभखहिहदय[20]तेहिसाधोबिष[21]बान।
सबहिंपहुंचकै माराचालहि[22] तजा[23]परान॥

जसधौलागिरि[24] परबत होई। तेही भांति उतरान्यो सोई॥
सबै देश मिलि तैरहिं आना। लिये कुल्हाड़ी लोग जहाना॥
जनुपरबतकहँलागहि चांटी[25]। लेगयेमांस रहीसब कांटी॥
मांजर परी कोसदस बेंड़ी। मांजरिकसजसस्वेत[26]बरेंड़ी॥
नयन[27]सोजानिकोटकीपंवरे[28]।कितअसगहे[29]फिरेतेहिभंवरे॥
रतनसेन से संघी कहैं। असअस मच्छसमुद्रमहँ अहैं॥
राजातुमचाहोताहिंगवना[30]।होइकेसजग[31]बहुरि[32]नहिंअवना॥

दो० तुम राजा औ गुरूहम सेवकऔ चेर[33]।
कीन्हचहैंसबआयसु[34]अबगवनी[35]तहिफेर॥

राजैं कहा कीन्ह मो प्रेमा। जहां प्रेमतहँकुशल[36] क्षेमा॥
तुमखेवो जो खेवहि पारहिं। जैसे आप तरहिंमोहितारहिं॥
मोहिंकुशल[37]करशोचनओता। कुशल[38]होतजोजन्मनहोता॥

नाव १ ख़ैरियत २ नाखुदा अर्थात्मल्लाह ३---८ नामजानवर ४—७–१० हाथो ५ ज़ंजीर ६ ज़बरदस्त ६ नाव ११ हज़ार १२ शेर १३ पानीकेनीचे १४ फ़ौज १५ पहुँचना १६ तलवार १७ नामजानना १८ खुराक १६ पेट २० ज़हर २१ नाम जानवर २२ छोड़ना२३ नामपहाड़२४ चूंटी२५ सफ़ेद२६ आँख२७ क़िलेका दरवाज़ा २८ पकड़ना२६ जाना३० होशियार३१ लौटना३२ गुलाम३३ हुक्म३४ जाना३५ ख़ैरियत३६—३७—३८ ॥

धर्ती[1] स्वर्ग[2] जांत[3] परलोऊ । जोयहिबिचजित्र राखनकोऊ ॥
हों अब कुशल एक पै मांगौं । प्रेमपंथ[4] सतबांधिनखांगौं[5] ॥
जोमनहिये[6] तोपंथहि[7] दिया । समुद्रनडरै देखिमरजिया ॥
तहँलग हेरौं[8] समुद्र ढिढोरौं । जहँलग रतन[9] पदारथजोरौं ॥
दो० सातपताल[10] खोजकै काढ़ौंवेद गरंथ[11] ॥
सातसमुद्र चढ़ि धावौं पद्मावतजेहिपंथ[12] ॥

खण्ड बारहवां सात समुद्र खण्ड ॥

सायर[13] तरे हिये[14] सतपूरा । जोजीसत[15] कायर[16] पुनिसूरा ॥
तहँ सब बोहित[17] पूर चलाईं । जहँ सतपवन[18] पंखजनुलाईं ॥
सतसाथी[19] सतगुरुहम बारू । सत्त गहीले लावै पारू ॥
सती नाक सब आगू पाछू । जहँ जहँ मगरमच्छ औ काछू ॥
उठै लहर जनु उठै पहारा । चढ़ै स्वर्ग[20] औ परै पतारा ॥
डोलहिं बोहित[21] लहरैं खाईं । सहस[22] कोसइक पलमहँ जाईं ॥
राजैं सो सत हिरदय[23] बांधा । जेहिसत टेक करगुरु कांधा ॥
दो० खारिसमुद्र सब नांघा आये समुद्रजहँक्षीर[24] ।
मिले समुद्र वै सातौं बेहर[25] बेहर नीर[26] ॥
क्षीरसमुद्रका बरणौं[27] नीरू । स्वेत[28] स्वरूपपियतजसक्षीरू[29] ॥
उलटहिं माणिक मोती हीरा । दर्ब देखि मन होय न धीरा ॥
मनो अनचाह दर्ब औ भोगू । पंथ[30] भुलाय बिनाशै योगू ॥
योगी मनहिं उहीरिस मारहिं । दर्ब हाथकै समुद्र पसारहिं[31] ॥
दर्ब लेइ जो इस्थिर[32] राजा । जो योगी तेहिके केहि काजा ॥
पंथी[33] पंथ[34] दर्ब रिपु होई । ठग बटपार[35] चोर सँगसोई ॥

ज़मीन १ आसमान २ चक्कीकापिल ३ राह ४—७ कमी ५ दिल ६ देखना ८ लाल जवाहिर तथा पद्मावत ९ सातपाताल १० पोथी ११ राह १२ बहादुर १३ दिल १४ सचाई १५ नामर्द १६ नाव १७ हवा १८ मददगार १९ आसमान २० जहाज़ २१ हज़ार २२ दिल २३ दूध २४ अलग २५ पानी २६ तारीफ़ २७ सफ़ेद २८ दूध २९ राह ३० तैरना ३१ क़ायम ३२ मुसाफ़िर ३३ रास्ता ३४ राहलूटनेवाले ३५ ॥

पंथी[1] सोई दर्ब[2] सो रूसे। दर्ब समेट बहुत अस मूसे॥

दो० क्षीर समुद्र सब नांघा आये समुद्रदधि[3] माहिं।
जोहैं पंथ[4] के बावर[5] नातहिं धूप न छाहिं॥

दधि समुद्र देखत तसदहा[6]। प्रेमक लुब्ध[7] दग्ध[8] पैसहा॥
प्रेमजो डाढा[9] धन वह जीव। दधि[10] जमायमथिकाढैघीव॥
दधि[11] इकबंदजामिसबक्षीरू[12]। कांजी[13] बंदबिनसिहोयनीरू[14]॥
स्वांसडाढ[15] मनमथनीगाढ़ी। हिये[16] ज्योतिबिनफूटिनसाढ़ी[17]॥
जेहिजियप्रेमचंदनतेहिआगे। प्रेमभवन[18] फिरडरनहिं भागे॥
प्रेमकी आग जरै जोकाय। ताकरदुख नहिं मिथ्या[19] होय॥
जोजानहिसत आपहिंजारा। नास्त[20] हिये[21] सत करैनपारा॥

दो० दधि[22] समुद्र पुनिपारभेप्रेमहिकहांसँभार।
भावैपानी शिरपरै भावैपरहि अँगार॥

आयउदधिजल[23] समुद्र अपारा। धर्ती[24] स्वर्ग[25] जरैतेहिझारा॥
आगजोउपजी[26] ओहीसमुन्दा। लंकाजरी वही एकबुन्दा॥
बिरहजोउपजा[27] ओही काढ़ा। खननबुझायजाय तनबाढ़ा॥
जेहिसोबिरहतेहिआगनडीठी[28]। सौंहिं[29] जरैफिरदेहिनपीठी॥
जग[30] महँकठिन[31] खड्ग[32] कीधारा। तेहितेअधिक[33] बिरहकीझारा॥
अगम[34] पंथ[35] जो ऐस नहोई। साधु कहै पावै सब कोई॥
तेहि समुद्र महँ राजा परा। जराचहै पै रोवँ न जरा॥

दो० तलफैतेलकराहजिमि[36] इमि[37] तलफैसबनीर[38]।
वहिजोमलयगिरि[39] प्रेमका सुबुन्दसमुद्रशरीर॥

सुरा[40] समुद्र पुनि राजा आवा। महुवामधु[41] छातीदेखरावा॥

राहचलनेवाले १ अर्थात्माल वा दौलतपास अपनेनराख२ दही ३ राह ४ दीवाने ५ जलताहुवा ६ आशक़ ७ आँच ८ अवटाहुवा ९ दही १०—११ दूध १२ खटाई १३ पानी १४ स्सी १५ दिल १६ बालाई १७ मकान १८ खराव १९ कमहिम्मत २० दिल २१ दही २२ नामसमुद्र २३ ज़मीन २४ आसमान २५ पैदाहोना २६—२७ देखना २८ सामने २९ दुनियां ३० मुशकिल ३१ तलवार ३२ ज्यादा ३३ जहांकोई नपहुँचसके ३४ राह ३५ जिसतरह ३६ इसतरह ३७ पानी ३८ चन्दन ३९ शराब ४०—४१॥

जोतेहिपियेसो भांवर लेय । शीश[१] फिरै पथ[२] पैग[३] न देय ॥
प्रेम सुरा[४] जेहिकेजिय माहां । कित[५] बैठे महुवाकी छाहां ॥
गुड़की पास दाख[६] रस रसा । बेरी[७] बेर मार मन[८] गसा ॥
बिरहिन[९] दग्धकीन्हतनन[१०] भाठे । हाड़ जराय दीन्ह जस काठे ॥
नयन[११] नीर[१२] सों पोते[१३] कया । तस[१४] मधु चुवै बरैजसदिया ॥
बिरह[१५] सुरागे भूंजे मांसू । गिर गिर पड़ैं[१६] रक्त के आँसू ॥

दो० मुहम्मदजो प्रेमकाहिये[१७] दीपतेहि राख ॥
शीश[१८] नदेइपतंग[१९] ज्योंतबलगचाखनवाख ।

पुनिकिलकिला[२०] समुद्रमहँ आई । गाधीरज देखत डरखाई ॥
भा किलकिलअसउठैहिलोरा । जनु अकाश टूटैचहुँओरा ॥
उठै लहर परवत की नाईं । फिर आवै योजन लखताईं ॥
धर्तीलेत स्वर्ग[२१] लहि बाढ़ा । सकल[२२] समुद्रजानोभाठाढ़ा ॥
नीरै[२३] होय तरिऊपर सोई । महा[२४] अरम्भ समुद्रमहँहोई ॥
फिरत नीरयोजन[२५] लखताका । जैसेफिरै कुम्हार का चाका ॥
भापरलौ[२६] नेराना जबहीं । मरैसो ताकहँ परलौ[२७] तबहीं ॥

दो० गयेऔसान[२८] सबनकेदेख समुद्रकी बाढ़ ।
नेरिहोत जनुलीलैरहानयन[२९] असकाढ़ ॥

हीरामन[३०] राजा सों बोला । यही समुद्र आयसतडोला[३१] ॥
सिंहलद्वीप जोनाहिंनिबाहू । यहीठाउं[३२] सांकर[३३] सबकाहू ॥
यहिकिलकिल[३४] अससमुद्रगँभीरू[३५] ।जेहिगुनहोयसोपावैतीरू[३६] ॥
यही समुद्रपंथ[३७] मंझधारा । खांड़े कीअसरेख[३८] हजारा ॥
तीस सहस कोसनकीबाटा[३९] । अससाँकर चलिसकैनचांटा ॥
खांड़े[४०] चाहि[४१] पैंन पैनाईं । बार[४२] चाहि पातर पतराईं ॥

सिर १ राह २ क़दम ३ शराब ४ क्योंकर ५ अंगूर ६ बेरनाम मेवाफ़सली ७ लेना ८ नर्म ९ भट्ठी १० आँख ११ आँसू १२ बदन १३ शराब १४ मोम १५ ख़ून १६ दिल १७ दिल १८ पांव १९ नामसमुद्र २० आसमान २१ सब २२ पानी २३ शोर २४ चारलाख कोस २५ क़यामत २६ [illegible] २७ हैरान २८ आँख २९ नामतोता ३० बहुतख़ास ३१ जगह ३२ मुशकिल ३३ नाम समुद्र ३४ गहरा ३५ किनारा ३६ राह ३७ बारीक ३८ राह ३९ तलवार ४० ज्यादा ४१ पानी ४२ ॥

वही पंथ[1] सब काहू जाना। होय दुसरे बिश्वास नदाना[2] ॥
दो० मरन जियन यहि पंथहि[3] येही आश[4] निराश[5]।
पड़ा सो गयो पतालहि तरा सो गा कैलाश[6] ॥
राजै दीन्ह कटक[7] कहँ बीरा। सपुरुष होहु करहु मनधीरा ॥
ठाकुर जेहिकै शूर[8] भा कोई। कटक शूर[10] पुनि आपहिंहोई ॥
जौलहि सतीन जियसतबांधा। तौलहि देइ कहार न कांधा ॥
प्रेम समुद्र महँ बांधा बेरा। यहि सबसमुद्र बुन्दजेहिकेरा ॥
नाहीं स्वर्ग[11] न चाहों राजू। ना मोहिं नरक सितेंकुछकाजू ॥
चाहों वह कर दरशन पावा। जेहिमोआन प्रेमपथ[12] लावा ॥
काठ काहि गाढ़का ढीला। बूड़नसमुद्र मगर नहिं लीला ॥
दो० कान्ह[13] समुद्रधस लीन्हेंसि भापाछे सब कोय।
कोइ काहू न सँभारे आपन आपन होय ॥
कोइबोहित[14] जसपवन[15] उड़ाहीं। कोई चमकबीज[16] परजाहीं ॥
कोई भल जस धाव तुषारू[17]। कोई जैस बैल गरियारू[18] ॥
कोई हरू[19] जानि रथ हांका। कोई गरू पहाड़भा थाका ॥
कोई रेंगहिं जानहु चांटी[20]। कोई टूटि होहिं सर माटी ॥
कोई खाय पवन[21] कर झोला। कोई गिरहिं पात ज्यों डोला ॥
कोई परहिं भँवर जल माहीं। फिरतरहहिं कोइदियेनबाहीं ॥
राजा कर भा अगमन[22] खेवा। खेवक[23] आगे सुवा परेवा ॥
दो० कोइ दिन मिला सबेरें कोइ आवा पछरात।
जाकर हुत जस साजू[24] सो उतरा तेहिभांत ॥
सतें समुद्र मानसर[25] आये। सतजोकीन्हसहस[26] सिधिपाये ॥
देखिमानसर[27] रूपसुहावा। हिय[28] हुलास[29] पुरइन[30] होयछावा ॥

राह १—१२ नादान २ रास्ता ३ उम्मेद ४ ना उम्मेद ५ नाम बैकुंठ ६ फौज ७ क़ायम ८ बहादुर ९—१० बैकुंठ ११ श्रीकृष्णचन्द्रजी १३ नाव १४ हवा १५ बिजुली १६ घोड़ा १७ भारी १८ हलको १९ चूंटी २० हवा २१ आगे २२ मल्लाह २३ सामान २४ नाम तालाब जिसमें हंस रहता है २५—२७ हज़ार तरह की आराम २६ दिल २८ खुश २९ कमल ३० ॥

गा अँधियार रयन[1] मसि[2] छूटी । भा भिनसार किरन रबि[3] फूटी ॥
अस्तअस्त[4] सबसाथी बोले । अन्धजो अहे नयन[5] बिधि[6] खोले ॥
कमलविकस[7] तसबेहँसी[8] देहीं । भँवर दरश होयहोयरसलेहीं ॥
हँसहिं हंस औ करहिं कुरेरा[9] । चुनहिं रतन[10] मुक्काहल[11] हेरा ॥
जो अस आवसाधि तपयोगू । पूजी आस मानरस भोगू ॥
दो॰ भँवर जो मंसा[12] मानसर[13] लीन्ह कमलरस आय ।
घुनजो हियाव[14] न कैसका भूर काठ तस खाय ॥

खंड तेरहवां सातसमुद्रपार भावसिंहलद्वीपखण्ड ॥

पूँछा राजें कहु गुरसुवा । न जनों आज कहां दिनउवा ॥
पवन[15] बासशीतल[16] लै आवा । कया[17] दहत[18] चंदनजनुलावा ॥
कबहुन ऐसोजुड़ान शरीरू[19] । पड़ाअगिनमहँजानहुनीरू[20] ॥
निकसतआवकिरनरवि[21] रेखा। तिमिर[22] गईनिरमल[23] जग[24] देखा ॥
उठे मेघ अस जानहु आगे । चमकेबीज[25] गगन[26] परलागे ॥
तेहिऊपरजनुशशि[27] परकासा[28] । औसोगचीचहँ[29] भयोगिरासा ॥
औरनखतचहुंदिश[30] उजियारी । ठांवहिंठांव[31] दीपअसबारी ॥
दो॰ और दखिनदिश नेरे कंचन[32] मेरु[33] दिखाउ ।
जैसे बसंतऋतु आवे तैसिबास जग[34] आउ ॥

तुइँ राजा जस बिक्रम[35] आदी । तुइँ हरिचंदबैन[36] सतबादी[37] ॥
गोपिचंद[38] तुइँ जीता योगा । औभरथरी[39] नपूजबियोगा[40] ॥
गोरख[41] सिद्धि दीन्ह तुहिहाथू । तारी गुरू मुछन्दर[42] नाथू ॥
जीति प्रेमतुइँ भूमि[43] अकाशू । दृष्टि[44] परा सिंहल कैलाशू ॥

रात १ सियाही २ सूर्य ३—२१ वाह वाह ४ आँख ५ ईश्वर ६ खिलना ७—८ कुलेलकरना ९ जवाहिर जिसकी पैदाइश खानसेहोतीहै १० मोती ११ हिम्मत बाँधना १२ नामतालाब १३ दिलेरी करना १४ हवा १५ ठंढी १६ बदन १७—१८ जलना १९ पानी २० अँधियारा २२ पाकसाफ़ २३ दुनियां २४ बिजुली २५ आसमान २६ चाँद२७ रोशनी २८ छोटेनखत २९ चारों तरफ़ ३० हरजगह ३१ सोना ३२ नाम पहाड़ ३३ दुनियाँ ३४ राजाबिक्रमाजीत ३५ नामराजा ३६ सचबोलनेवाला ३७ नामराजा३८—३९ दूरी ४० नामयोगी ४१—४२ ज़मीन ४३ निगाह ४४ ॥

वैजो मेघ गढ़[1] लाग अकासा। बजरी[2] कटी कोट[3] चहुँपासा ॥
और नखत वेहिके चहुं पासा। सब रानिन की अहें उडासा[4] ॥
तेहिपरशशि[5] जोगचंहचहि[6] भरा। राज मँदिर सोने नगजरा ॥
दो० गगन[7] सरोवर[8] सहस[9] कमल कुमुद[10] तराई[11] पास।
तुईं रवि[12] उवा भँवर होय पवन[13] मिलाले बास ॥
सो गढ़ देखि गगन[14] तेऊंचा। नयन[15] देखिकरज्ञाननपहुँचा ॥
बिजुरी[16] चक्र फिरैंचहुँ फेरे। औजमकात[17] फिरहिंयम[18] घेरे ॥
धाय[19] जोबाजा[20] कियमनसाधा। मारा चक्र भया दुइ आधा ॥
चांद सूर्य्यऔनखत तराई। तेहिडरअंतरिक्ष[21] फिरेंसबाई[22] ॥
पवनजाय तहँ पहुँचा चहा। मारा तैसो लोटि भुइँ रहा ॥
अगिनउठैजरिबुझै नियाना[23]। धुवांउठा उठिबीच मिलाना ॥
पानि उठा उठिजाय नछुवा। फिरा रोय आय भुइँ चुवा ॥
दो० रावनचहा सौंहि[24] के हेरों[25] उतर दशोगयेमाथ।
शंकरधरा ललाट[26] भुइँ और को योगी नाथ ॥
तहां देख पद्मावत रामा। भँवरनजाय न पंखे[27] नामा ॥
अबसिख[28] एक देउँ तुहि योगी। पहिले दरशनहोयतोभोगी ॥
कंचन मेरु[29] दिखावे जहां। महादेव कर मण्डफ तहां ॥
वहखखण्ड[30] जसपरबतमेरू[31]। मेरुहि[32] लागहोय तसफेरू ॥
माघमास पाछिल पख लागें। श्री पंचमी होय यहि आगें ॥
उघरें महादेव कर बारू[33]। पूजनजाय सकल[34] संसारू ॥
पद्मावत पुनि पूजन आई। हैहै वह दिन दृष्टि[35] मिलाई ॥
दो० तुम गवनो[36] वहमण्डफ कहँ हौंपद्मावत पास।
पूजे आय बसन्त जो पूजे मनकी आस ॥

क़िला १—३ बुर्ज २ महल ४ चाँद ५ छोटेनखत ६ आसमान ७ तालाब ८ हज़ार ९ कोकाबेली १० नखत ११ सूर्य १२ हवा १३ आसमान १४ आँख १५ बिजुली १६ रौंद १७ यमराज १८ दौड़ना १९ पहुंचना २० बीचोबीच २१ सब २२ आख़िर २३ सामने २४ देखना २५ शिर २६ उड़नेवाले जानवर २७ सलाह २८ सोनेका पहाड़ २९—३१—३२ बीहड़ ३० दरवाज़ा ३३ सब ३४ दीदार ३५ जाना ३६ ॥

राजें कहा दरश जो पाऊँ । पर्वत काहि गगन[1] कहँधाऊँ ॥
जेहि परवतपर दरशनलीन्हा । शिरसों चढ़ो पायँकाकीन्हा ॥
मोहिं सो भावै ऊँचे ठाऊँ[2] । ऊँचे लेवों प्रीतम नाऊँ ॥
पुरुष[3] चाहिये ऊँच हियाऊ[4] । दिन दिन ऊँचे राखे पाऊ ॥
सदा ऊँच पैसे ये बारू[5] । ऊँचे से कीजे व्योहारू ॥
ऊँचे चढ़ै ऊँच खँड सूझा । ऊँचे पास ऊँच मति बूझा ॥
ऊँच सङ्ग सङ्गत नित[6] कीजे । ऊँचेलाय जीव बलि[7] दीजे ॥

दो० ॥ दिन दिन ऊँचहोय सो जेहि ऊँचे पर जाव ।
ऊँच चढ़े जो खसिपड़े ऊँच नछांड़े काव ॥

नीच संग नित[8] होय निचाई । जैसे हंस काग की नाई ॥
नीच से कबहुँ नहोय भलाई । नीचहिसों पर होय मुड़ाई[9] ॥
नीचन कबहूँ जिय महँ ताके[10] । नीचनहींकबहूँ मुखभाखे[11] ॥
नीच न कबहूँ आवे काजा । नीचहि अहै न एकौ लाजा ॥
नीचेका सँग कबहुँन कीजे । नीचे पंथ[12] पाउँ नहिं दीजे ॥
नीचे नहिं कीजे व्योहारू । नीचन कबहूँ दीजे भारू[13] ॥
नीचे कर न कीजे साथा । नीचगहे[14] कुछआवनहाथा ॥

दो० होयनीच नहिं कबहूँ जेहि ऊँचे मन भाव ।
नीच ऊँचते हँसी नीचे केर स्वभाव ॥

हीरामन[15] दे बचा[16] कहानी । चला जहां पद्मावत रानी ॥
राजा चला सँवरिसोलता[17] । परवतकहँजोचलापरवता[18] ॥
का परवत चढ़ि देखै राजा । ऊंचमण्डफसोने सबसाजा[19] ॥
अमृत फर सबलागि अपूरे । औ तहंलागि सजीवन[20] मूरे ॥
चौमुख मण्डफ चहूँ[21] केवारा । बैठे देवता चहूँ दुवारा ॥
भीतर मण्डफचारखम्भलागे । जेहि वे छुवे पाप तेहिभागे ॥

आसमान १ जगह २ मर्द ३ हिम्मत ४ दरवाज़ा ५ हमेशा ६—८ कुर्बान ७ गुमना
मी ९ ख़यालकरना १० मुहँमे बोलना ११ राह १२ बोझा १३ पकड़ना १४ नामतोता
१५ कौल १६ चन १७ तोता १८ सामान १९ नामबूटी २० चार २१ ॥

शंख घंटनित[1] बाजहिं सोई। औ बहुहोम जाप तहँहोई॥

दो० महादेव कर मण्डफ सकल[2] यात्रा आव।
जसइच्छामन जेहिकी सो तैसो फलपाव॥

खण्ड चौदहवां गवन मण्डफ खण्ड राजा रतनसेन॥

राजा बावर बिरह बियोगी[3]। चेला सहस[4] तीस सँगयोगी॥
पद्मावत की दरशनआशा। दण्डवतकीन्हमण्डफचहुँपासा॥
पूर्बद्वार[5] होयके शिरनावा। नावतशीश[6] देवपुनि आवा॥
नमो नमो नारायण देवा। कामैं योग सकौंकै सेवा[7]॥
तुइँ दयालु[8] सबके उपराहीं[9]। सेवाकेर आश[10] तुहिनाहीं॥
नामोहिंगुन[11]नजीभरसबाता।तुइँदयालु[12] गुन[13] निरगुन[14]दाता॥
पुरवहु मोरदरश की आशा। हौं मारग[15] जो करों स्वासा॥

दो० तेहिबिधिबिनय[16]नजान्योजेहिबिधिअस्तुतितोर।
कर सुदृष्टि[17] औ कृपा इच्छा पूजै मोर॥

कैअस्तुति जो बहुतमनावा। शब्द[18]कोटिमण्डफमहँआवा॥
मानुष प्रेम भयो बैकुण्ठी। नाहत काहि छार[19] एकमूठी॥
प्रेमहि माहिं बिरह रसरसा। प्रेमके घर मधु[20]अमृतबसा॥
नष्ट[21] धायजो मरै तो काहा। सतजोकरै बैठि तेहिलाहा[22]॥
एकबार जो मनदै सेवा। सेवहिफल प्रसन्न[23] कै देवा॥
सुनिकैशब्द[24]मण्डफभंकारा। बैठो आय पुरबके द्वारा॥
पिंड[25]चढ़ाय छार[26]चितआंटी। माटी होय अन्त जोमाटी॥

दो० माटीमोल न कछुलहे औ माटीसबमोल।
दृष्टि[27]जो माटीसो करै माटी होयअमोल॥

बैठि सिंह छाला होय तपा। पद्मावत पद्मावत जपा॥

हमेशा १ सब २ दुखी ३ हज़ार ४ दरवाज़ा ५ शिर ६ खिदमत ७ दयाकरने वाला ८ ऊपर ९ उम्मेद १० हुनर ११ दयाकरनेवाला १२ दाना १३ नादान १४ अर्थात् उसीतरहका दमबदम ढूंढ़ने वाला हूं १५ तारीफ़ १६ निगाह अच्छी १७ आवाज़ १८ माटी १९ शराब २० बदराह २१ फ़ायदा २२ खुश २३ आवाज़ २४ बदन २५ बिभूति २६ निगाह २७॥

दृष्टि[1] समाधिवहीसों लागी । जेहि दरशन कारण[2] बैरागी ॥
किंगरी गहे[3] बजावे झूरी । भोर सांझ सुनिके नित[4] पूरी ॥
कन्था[5] जरे अगिन जनु लाये । विरहढँढोर[6] जरत न बुझाये ॥
नयनरात[7] निशि[8] मारग[9] जागे । चष[10] चकोरजानुशशि[11] लागे ॥
कुण्डलगहे[12] शीश[13] भुईंलावा । पांवर[14] होउंजहां वैपावा ॥
जटा छोरके बार[15] बहारों । जेहिपथ[16] आवशीशतहँवारों[17] ॥

दो० चारहुचक्र[18] फिरेमनखोजतडंड[19] नरहूंथिर[20] बार ।
होयके भस्मपवन[21] सँगधाऊंजहांसोप्रानअधार ॥

पद्मावत तहंयोग[22] संयोगा । परी प्रेमबश गहे[23] बियोगा[24] ॥
नींद न परी रयन[25] जो आवे । सेजकेवांच जानु कोइलावे ॥
दहे[26] चन्द औ चन्दनचीरू[27] । दग्ध[28] करैतनविरहगँभीरू[29] ॥
कल्पसमान[30] रयनहीबाढ़ी । तिल[31] तिलभरुयुगयुगपरगाढ़ी ॥
गहे[32] बीनमृग[33] रयनविहाये[34] । शशिवाहन[35] नित[36] रहैउनाये ॥
पुनिधुनि[37] संग औरहीलागे । ऐसी बिथा रयन सब जागे ॥
कहांसो भंवर कमल रसलेवा । आय परीहोय घरन परेवा[38] ॥

दो० सोधन[39] विरहपतंग भइजरा चहैतेहिदीप ।
कंत[40] न आवभृंगहोयकोचन्दन तनलीप ॥

परी विरह बन जानौ घेरी । अगम[41] असूझजहांलगहेरी[42] ॥
चतुरदिशा चितवे जनु भूले । सोबन कौन जोमालति फूले ॥
कमल भंवर ओही बन पावे । कोमिलाय तनतपन वुझावे ॥
अंग अंग अस कमल शरीरा । हिय[43] भापियर प्रेमकीपीरा ॥
चहींदरशरवि[44] कीन्हविकासू[45] । भंवरदृष्टि[46] मनलागअकासू ॥

निगाह १ वास्ते २ पकड़ना ३—१२ हररोज़ ४ गुदड़ी ५ जंगल ६ आंखलाल ७ रात ८ राह ९ आंख १० चांद ११ शिर १३ खड़ाऊँ १४ दरवाज़ा १५ राह १६ न्यौछावर १७ चारोंतरफ़ १८ घड़ी १९ क़ायम २० हवा २१ अर्थातफ़क़ीरीका हाल २२ लेना २३ दुःख २४ रात २५ जलना २६—२८ कपड़ा २७ भारी २९ बराबर ३० तिलकेबराबर कम और करनेमेंज्यादा ३१ पकड़ना ३२ शायद ३३ आख़िर ३४ हिरन चाँदके रथका ३५ हमेशा ३६ आवाज़ ३७ कबूतर ३८ पद्मावत ३९ ख़ाविन्द ४० मुश्किल ४१ देखना ४२ दिल ४३ सूर्य ४४ खिलना ४५ निगाह ४६ ॥

पूंछेधाय[1] बारि[2] कहु बाता। तुईंजस कमलकरीरँगराता ॥
केसर बरन[4] रंग भा तोरा। मानहुं मनहिभयोकुछ्फोरा ॥
दो० पवन नपावै संचरी भंवर तेहां नहिं बैठि।
भूलकुरंगिन[5] कसभई जानुसिंह[6] तुइडीठि ॥
धाय सिंह धर[7] खात्यों भारी। कीतस[8] रहत अहे जसबारी ॥
जोबनसुनो कि नवल[9] बसन्ता। तेंहिबन परा हस्तमैमन्ता[10] ॥
अब जोबन बारी[11] को राखा। कुञ्जर[12] बिरहबिथासेशाखा ॥
मैं जानो जातन रस भोगू। जोबनकठिन[13] संतापबियोगू[14] ॥
जोबन गरुआ पेल पहारू। सहिनजायजोबनकरभारू[15] ॥
जोबन असमनमत्त[16] न कोई। नवेहस्त[17] जो आंकुश होई ॥
जोबन भरि भादों जस गङ्गा। लहरें देइ समाय न अङ्गा ॥
दो० परयों अथाह धायहौं जोबन उदधिगँभीर[18]।
तहँचितवोंचारहुदिश[19] को गहि[20] लावेतीर[21] ॥
पद्मावत तुइ समुद्र सयानी। तुइ सर[22] समुद्रनपूजी रानी ॥
नदी समाय समुद्रमहँ आई। समुद्रडोल कहु कहां समाई ॥
अबहीं कमलकरी हिय[23] तोरा। अइहै भँवर जो तोकहँजोरा ॥
जोबन तुरी[24] हाथ गहि लीजे। जहांजाय तहँ जायनदीजे ॥
जोबन[25] जोर माते[26] गजअहे। गहहुज्ञान अंकुश जिमिरहे ॥
अबहिंबार[27] तुइँ प्रेम नखेला। काजानिसकसहोय दहेला[28] ॥
गगन[29] दृष्टि[30] करपाय तराहीं। सूर्य्य देखकर आवत नाहीं ॥
दो० जबलग पीउ मिले तुहि साधि प्रेमकी पीर।
जैसे सीपस्वातिकहँ तपै समुद्र मँझ[31] नीर[32] ॥
दहत[33] धाय[34] जोबन औ जीव। जानहुपराअगिनिमहँ घीव ॥

लौंड़ी १ लड़की २ लाल ३ पीला ४ हिरनी ५ शेर ६ शेरने क्यामाराहै ७ अर्थात् लड़काई में कैसीथी ८ नया ९ हाथी मस्त १०—१२—२६ लड़की ११ मुशकिल १३ दुख १४ बोझ १५ मस्त १६ हाथी १७ समुद्रगहरा १८ चारोंतरफ़ १९ पकड़ना २० किनारा २१ बराबर २२ दिल २३ घोड़ा २४ जवानी २५ लड़की २७ मारी २८ आसमान २९ नज़र ३० बीच ३१ पानी ३२ जलना ३३ दाया ३४ ॥

करवट महीं होत दुइ आधा । सहीनजाय बिरहकी दाधा ॥
बिरहसमुद्र विषहरअस भारा । भँवरमेल जिवलहरनमारा ॥
बिरह नाग होय शिरचढ़डसा । वृही अगिन चन्दनमहँबसा ॥
जोवन पंखी[1] बिरह वियाधू[2] । केहरि[3] भयो कुरंगिन[4] खाधू[5] ॥
कनक[6] पानि[7] कित जोवनकीन्हा । औटनकठिन बिरहवेहदीन्हा ॥
जोवनजलहिबिरहमसि[8] छुवा । भूलहिंभँवर फिरहिंभासुवा[10] ॥
दो० जोवनचन्द उवाजस बिरह भयो सँग राहु ।
घटतहि घटत खीन[11] भय कहेन पारों[12] काहु ॥
नयन[13] जोचक्रफिरे चहुँओरा । चरची धाय[14] समाय न कोरा ॥
कहेसि प्रेमउपजा[15] जो बारी[16] । बांधि सत्तमन डोलन भारी ॥
जेहिजियमनहिंसत्तहोयभारू । परे पहार नहिं बांके बारू ॥
सती जोजरी प्रेम पै लागी । जोसतहिये[17] तोशीतल[18] आगी ॥
जोवन चांद जो चौदस[19] करा । बिरहकीचिनगी सोपुनिजरा ॥
पवन[20] बन्धु सो योगी यती । कामबन्ध सो कामिन[21] सती ।
आव बसन्त फूल फुलवारी । देव बार[22] सबजोहहिंबारी[23] ॥
दो० तुमपुनिजाहुबसन्तलै पूजमनावहुदेव ।
जीवपायजगजन्महै पियपाईकैसेव[24] ॥
जबलगअवध[25] आयनियराई । दिनयुगयुगाबिरहिनकहँजाई ॥
नींद भूंखनिश[26] दिनगइदोऊ । हियेमांझजस कलपै कोऊ ॥
रोमरोमजनु लागहिं चांटे[27] । सूत[28] सूत जनु बेधे कांटे ॥
दग्ध[29] कराह जरे जस घीव । बेग[30] नआवमलयगिरि[31] पीव ॥
कौन देवकहँ जायपरासों[32] । जेहिसुमेरु[33] हिय[34] लायगिरासों ॥

परन्दार जानवर १ बहेलिया २ शेर ३ हिरन ४ खाना ५ सोना ६ पानी ७ मुश्किल ८ सियाही ९ तोता १० बारीक ११ कहि नहीं सकता १२ आंख १३ दाया १४ पैदा होना १५ लड़की १६ दिल १७ ठंढा १८ चाँद चौदहांके बराबर १९ हवा २० औरत २१ दरवाज़ा २२ लड़की २३ खिदमत २४ हद २५ रात २६ बीज २७ सूराख २८ गर्म २९ जल्द ३० चन्दन ३१ पूजन ३२ नाम पहाड़ ३३ दिल ३४ ॥

गुप्त[1] जो फलसासहि परगटैं[2] । अबहोय सुअ्र[3] चहहिंहमघटैं ॥
भइ संयोग[4] जुरा अस मरना । भुखहि गई भोगका करना ॥
दो० योबन चंचल ढीठ है करे न कीजै[5] काज ।
धन कुलवंत जो कुलधरै कीजीवन मनलाज ॥
तेहिं बियोग हीरामन[7] आवा । पद्मावत जानहु जिव पावा ॥
कण्ठ लगाय सुआ[8] सों रोई । अधिकमोह[9] जोमिलेबिछोई[10] ॥
आगउठीदुखहिये[11] गँभीरू[12] ।नयनाहिं[13] आयचुवाहोयनीरू[14] ॥
रही रोय जब पद्मिनि रानी । हँसि पूँछहिं सबसखीसयानी ॥
मिले रहस[15] भा चाहे दूना । कित रोई जो मिले बिछोना ॥
तेहिक उतर[16] पद्मावत कहा । बिछुरनदुखजोहिय[17] भररहा ॥
मिलत हिये[18] आये सुख भरा । वह दुख नयननीर[19] होयढुरा ॥
दो० बिछुरंता जब भेंटे सो जाने जेहि नेह[20] ।
सुक्खसुहेला उगवे दुःखझरेजिमि[21] मेह[22] ॥

खण्ड पंद्रहवां मुलाकात खण्डपद्मावत औहीरामन ॥

पुनिरानी हँसि कुशलै[23] पूँछा । कित[24] गेबनहि कै पिंजरछूँछा ॥
रानी तुम युगयुग सुखपाटू[25] । छाज[26] न पंखी[27] पिंजर ठाटू ॥
जो भा पंख कहां थिर[28] रहना । चाहे उड़ा पंख जो डहना[29] ॥
पिंजर महँ जो परेवा[30] घेरा । आय मँजार[31] कीन्ह तहँफेरा ॥
दिवसक[32] आय हाथ पै मेला । तेहिडर बनो बासकहँखेला[33] ॥
तहां जाय ब्याध नर सांधा । छूट न जाय मींच कर बांधा ॥
वे धर बेचा ब्राह्मण हाथा । जम्बूद्वीप गयों तेहि साथा ॥
दो० तहां चित्र[34] चित्तौरगढ़ चित्रसेन कर राज ।

छिपा १ ज़ाहिर २ हररगमेंभराहैकि दम बदमव ८तोहूं ३ मुलाक़ात४ कामवाला ५ दुख ६ नामतोता ७—८ बहुतपियारा ९ बिछुड़ाहुवा १० दिल ११—१७—१८ भारी १२ आँख १३ पानी १४ खुश १५ जवाब १६ आंशू १९ मुहब्बत २० जिसतरह २१ बादल २२ ख़ैरियत २३ कहां २४ तख़्त २५ सोहना २६ जानवरपरिन्दं २७—३० क़ायम २८ बाज़ू २९ बिल्ली ३१ एकदिन ३२ जाना ३३ तसवीर ३४ ॥

टीका[1]दीन्ह पुत्रकहँ आप लीन्ह शिवसाज[2] ॥
बैठि जो राज पिता[3]कर ठाऊं[4]। राजा रतनसेन तेहि नाऊं ॥
का बरणों[5] धन देश दुवारा । जहँअसनगउपजा[6]उजियारा॥
धन माता औ पिता बखाना । जेहिके वंश अंश[7]असआना॥
लक्षन बतीसों कुल निरमला[8]। बरणि[9] न जाय रूप औकला॥
वेहीं लीन्ह[10]अहा अस भागू । चाहै सोने मिला सुहागू ॥
सुनग देख इच्छा भइ मोरी । है यह रतन[11]पदारथ जोरी ॥
है शशि[12]योग यही पै भानू[13]। तहँतुम्हार मैंकीन्ह बखानू[14]॥
दो० कहां रतन रतनागढ़ कंचन[15] कहां सुमेर ।
दैव जो जोरी दुहुंलिखी मिलीसो कौनहिफेर ॥
सुनिके विरह चिनग वह परी । रतन पाव जो कंचन करी[16] ॥
कठिन[17]प्रेम विरहा दुख भारी । राज छांड़िभा योगि भिखारी ॥
मालति लाग भँवर जस होय । होयबावर[18]निसरा बुधखोय ॥
कहेसि पतंग होय रसलेऊं । सिंहलद्वीप जाय पग[19]देऊं ॥
पुनि वह कोउन छांड़ अकेला । सोरहसहस[20]कुंवर भयचेला ॥
और गिनै को संग सहाई[21]। महादेव मढ़ मेला जाई ॥
सूर्य्य पुरुष[22] दरशन की ताईं । चितवै चन्द चकोरकी नाईं ॥
दो० तुम बारी[23]रस जोगजेहिं कमलहि जसअरघान ।
तस सूरज परकाश[24] कै भँवर मिलायो आन ॥
हीरामन[25]जो कही यहि बाता । सुनिके रतन पदारथ राता ॥
जैसे सूर्य्य देख कै ओपा[26] । तसभाविरहकामदलकोपा[27]॥
सुनिके योगी केर बखानू[28]। पद्मावत मनभा अभिमानू[29]॥
कंचनकरी[30] नकाँचहि लोभा । जो नगजड़ेहोय तसशोभा ॥

राजतिलक १ मरना २ बाप ३ जगह ४ तारीफ़ ५ पैदाहोना ६ अक़बालवाला ७ पाकनाक़ ८ बयानकरना ९—१४ उसका मोललिया हुवा १० जवाहिरलाल ११ चाँद १२ सूर्य १३ सोना १५ सोनेकी अँगुठी १६—२० मुशकिल १७ दीवाना १८ क़दम १९ हज़ार २० फ़ौज २१ मर्द २२ लड़की २३ उजियारा २४ नामतोता २५ उदय होना २६ गुस्साकरना २७ तारीफ़ २८ ग़रूर २९ ॥

कंचन जो कसिये कै ताता । तबजाने वह पीत[१] कि राता[२] ॥
नगकरमर्म[३] सोजड़िया जाना । जड़ैजोअसनगदेख[४]बखाना[५] ॥
कोअस हाथसिंह[६] मुखघालै । को यह बात पिता[७]सोंचालैं ॥
दो० स्वर्ग[८] इन्द्रडरकांपै बासुकि[९] डरै पतार ।
कहँ ऐसो बर[१०] पृथ्वी[११] मोहियोगसंसार ॥

तुइँरानी शशि[१२] कंचन कला । वहनगरतन सूर[१३] निरमला[१४] ॥
बिरह बिजाग[१५] बीजगा कोई । आगजो छुवै जायजर सोई ॥
आगबुझाय धोय जल गाढ़े । वह न बुझायआग अतिबाढ़े ॥
बिरहकी आग सूर[१६]जरकपा । रातहि दिवस[१७] जरै औतपा ॥
खनहि[१८] स्वर्गखनजाय पतारा । थिर[१९] नरहैयहि आगअपारा ॥
धनिसोजीवदग्ध[२०] इमिसहा[२१] । ऐसो जरैदूसर नहिं कहा ॥
सुलगसुलगभीतरहोयश्यामा[२२] । प्रगट[२३] होयनहिंकाढ़ैनामा ॥
दो० काह कहों ओही सों जो दुख कीन्ह निमेट ।
तेहिदिनआगकरोंयहबाहरजेहिदिनहोयसुभेट ॥

सुनाजोअसधन[२४] जाराकया[२५] । तनभासांच[२६] नयन[२७] भामया[२८] ॥
देखौंजायजरैजसभान[२९] । कंचन[३०] जरैअधिक[३१] होयबान[३२] ॥
अब जोजरै सुप्रेम बियोगी[३३] । हत्यामोहिंजेहिकारण[३४] योगी ॥
हीरामन सो कही रस बाता । सुनिके रतन[३५] पदारथ राता ॥
योगी योग सँभारहि छाला । देहौं मुद्र[३६] देहौं जैमाला[३७] ॥
आव बसंत कुशल सो पाऊं । पूजा मिस[३८] मंडफ कहँआऊं ॥
गुरुके बचन फूल हिय[३९] गाथे । देखौं नयन[४०] चढ़ाऊँ माथे ॥
दो० कमल बरण[४१] तुम बरना मैं माना पुनि सोय ।

पीला १ लाल २ भेद ३ देखना ४ तारीफ़ ५ शेर ६ बाप ७ आसमान ८ नाम राजासाँपोंका ९ ख़ाविन्द १० ज़मीन ११ चाँद १२ सूर्य १३—१६ पाकसाफ़ १४ आग १५ दिन १७ कभी १८ क़ायम १९ जलन २० इस तरह २१ सियाह २२ ज़ाहिर २३ औरत तथा पद्मावत २४ बदन २५ सांचा २६ आँख २७ मोम २८ सूर्य २९ सोना ३० बहुत ३१ खरा ३२ दुखी ३३ सबब ३४ जवाहिर ३५ सुख ३६ जिसकेगलेमेंपड़े उसी केसाथ शादीहो ३७ बहाना ३८ दिल ३९ आँख ४० रंग ४१ ॥

चांद सूर्य्य कहँ चाही जोरी सूर्य्य वह होय ॥

हीरामन[१] जो कही रस बाता । पाय पान भयो मुख राता[२] ॥
चला सुवा तब रानी कहा । भा जो पराउ सो कैसे रहा ॥
जो नित[३] चलै सँवारहि पाखा । आज जोरहा कालहकोराखा ॥
नाजनो आजकहां दिनउवा । आयहिमिलैचलहिमिलसुवा[४] ॥
मिलकेबिछुरमरनकीआना[५] । कत[६] आयहुजोचलहिनिदाना[७] ॥
अनरानी[८] जो रहतो रांधा[९] । कैसे रहों बचन[१०] करे बांधा ॥
ताकर दृष्टि[११] ऐसो तुम्ह सेवा । जैसे कुंज[१२] मन सेज परेवा ॥

दो० बसै मीन[१३] जल धरती[१४] अम्बा[१५] बर्ष अकास ।
जो प्रीति पै दोउ महँ अंत[१६] होहिं एक पास ॥

आवासुवा बैठिजहँयोगी । मारग[१७] नयन[१८] बियोग[१९] बियोगी[२०] ॥
आय प्रेमरस कहा संदेशू । गोरख[२१] मिलामिलाउपदेशू[२२] ॥
तुमकहँ गुरू मया[२३] बहुकीन्हा । कीन्हअदेस[२४] आवकहँदीन्हा ॥
शब्द[२५] एकहोयकहाअकेला । गुरुजसभृंग[२६] पतँग[२७] जसचेला ॥
भृंगी[२८] ओही पंख[२९] पै लेइ । एकहि बार चहै जिव देइ ॥
ताकहँ गुरूमया[३०] भलकीन्हा । नवअवतार[३१] ज्ञान[३२] बहुदीन्हा ॥
होय अमर[३३] अस मरकेजिया । भँवरकमलामिलके मधुपिया ॥

दो० आवै ऋतुवसन्त जवतब मधुकर[३४] तबबास ।
योगीयोग जोइमि[३५] सहैसिद्ध[३६] समापततास ॥

खण्डसोलहवां बसन्तखण्ड ॥

दईदई कर सुरत गँवाई । श्रीपंचमी पूजि तब आई ॥
भयोहुलास[३७] नवल[३८] ऋतुमाहां । क्षण नसुहाय धूपऔछाहां ॥

नाम तोता १ लाल २ हररोज़ ३ तोता ४ बराबर ५ कहां ६ जल्द ७ मरानी ८ नज़दीक ९ कौल १० निगाह ११ नामजानवर परिन्द १२ मछली १३ ज़मीन १४ पानी १५ आखिर १६ राह १७ आँख १८ जुदाई १९ दुखी २० नामफ़कीर २१ नसीहत २२ मेहरबानी २३ सलाम २४ बात २५ नामकीड़ा २६—२७—२८ पांखी२९ मेहरबानी ३० नयाजन्म ३१ अक्किल ३२ हमेशाज़िन्दा ३३ भँवरा ३४ इसतरह३५ कामिल ३६ खुशी ३७ नया ३८ ॥

पद्मावत सब सखी हँकारी[1]। जानवन्त[2] सिंहलकी बारी[3] ॥
आज बसन्त नवलऋतुराजा। पंचमहोय जगत[4] सबसाजा ॥
नवल[5] शिंगारबनाहत[6] कीन्हा। शीश[7] परासहिँ सेंदुरदीन्हा ॥
बिकसे[8] कमल फूल बहुबासा। भँवरआयलुब्धे[10] चहुँपासा ॥
पियर पातदुख झरे निपाते[11]। सुखपलहाउपजी[12] होयराते[13] ॥
दो० अवधि[14] आयसो पूजे जो इच्छा मन कीन्ह।
चलहुदेव मढ़ गोहन[15] चहो सो पूजा दीन्ह ॥
फिरे आन ऋतु बाजन बाजे। औशिंगारबारहि[16] सबसाजे॥
कमल करी पद्मावत रानी। होयमालतिजानोबिगसानी[17] ॥
तारामन्द्र[18] पहिर भल चोला।भरिशीश[19] सबनखतअमोला॥
सखीकुमोद[20] सहस[21] दससंगा। सबैसुगन्ध चढ़ाये अंगा[22] ॥
सब राजा रायनकी बारी[23]। बरन बरन[24] पहिरैं सबसारी ॥
सबै स्वरूप पद्मिनी जाती। पान फूल सेंदुर सब राती[25] ॥
करैं कलोल[26] सुरंग रँगीली। औ चोवा चन्दन सब खेली ॥
दो० चहुँदिशि[27] रही बासनाफुलवारी असफूल।
वे बसन्त सोंफूली गावसन्त वहिं भूल ॥
भई अहा पद्मावत चली। छत्तिसकुरि[28] भइगोहन[29] भली ॥
भई गौरि[30] संग पहिर पटोरा।ब्रह्मनिआयसहस[31] अँग[32] मोरा॥
अग्रवारि गजगवन[33] करेई। बैसि पांव हंस गत देई ॥
चन्देलिनिठमकहिंपग[34] ढारा। चल चौहान होय झनकारा ॥
चली सुनारि सुहागसुहाती। औकलवारिप्रेममधु[35] माती ॥
बानिनचलीसिंदुरदियेमांगा। कैथिनिचली समायनआंगा[36] ॥
पटयनिपाहिरि सुरंगतनचोला। औ बरइन मुखखाततमोला॥

बुलाना १ जहाँतक २ लड़की३—१६—२३ दुनियाँ ४ नया५पेड़६ शिर ७ ढाँख ८ खिलना ६—१७ लपिटना १० झरना ११ पैदा १२ लाल १३—२५ हद १४ साथ १५ नामकपड़ा १८ शिर १६ कोकाबेली २० हज़ार २१ बदन २२ रंगबरंग २४ खुशी २६ चारोंतरफ २७ छत्तीसक़ौम २८ साथ २६ गोरब्राह्मण ३० हज़ार ३१ बदन ३२ हाथी को चाल ३३ क़दम ३४ शराब ३५ बदन ३६ ॥

दो० चलीपवन[1] सँगगोहन[2] फूल डारलियेहाथ ।
विश्वनाथ[3] कीपूजा पद्मावत के साथ ॥

ठाठेरिन बहु ठाठर कीन्हा । चलीअहीरिनकाजर दीन्हा ॥
गूजरिचली गोरस की माती । बढ़यनिचली भागकीताती ॥
चली लुहारिन बांके नयना । भाटिनिचलीमधुर[4] अतिबयना[5] ॥
गन्धिन चली सुगन्ध लगाये । छीपिन चली सोचीरहँगाये ॥
रँगरेजिन बहु राती[6] सारी । चली युक्ति सों नाउनिबारी ॥
मालिनि चली हार लियेगाथे । तेलिनि चली फुलायलमाथे ॥
किये शिंगार बहु वेश्याचली । जहँलग मूँदीबिकसी[7] कली ॥

दो० नटनी डोमिन ढारिन सहनायन परकार ।
निरतत[8] नाद[9] बिनोद[10] सोंबिहँसतखेलत नार ॥

कमल सुभाय चलीफुलवारी । फर फूलन की इच्छा बारी ॥
आपआपमहँकरहिंजोहारू[11] । यह बसन्त सबकहँ त्योहारू ॥
चही मनोरा[12] झूमक होई । फरऔ फूल लियो सबकोई ॥
फागखेलि पुनिदाहब[13] होली । सेततखेह[14] उड़ावब झोली ॥
आजछांड़पुनिदिवस[15] नदूजा । खेल बसन्त लेहु कै पूजा ॥
भाआयसु[16] पद्मावत केरा । फेरन आय करव हम फेरा ॥
तसहम कहँ होयहै रखवारी । पुनिहमकहां कहांयहबारी[17] ॥

दो० पुनिरे चलवघर आपने पूज बिशेश्वर[18] देव ।
जेहिको होय खेलनो आजखेल हँसलेव ॥

काहूँगही[19] अम्ब[20] की डारा । कोईबिरहजम्बु[21] अति छारा ॥
कोइनारँग[22] कोइझार[23] चिरौंजी । कोइकटहर[24] बड़हर[25] कोइन्योजी[26] ॥
कोइदाड़िम[27] कोइदाख[28] खरेरी[29] । कोइसदाफर[30] तुरँज[31] जँभीरी ॥

हवा १ साथ २ ईश्वर ३ मीठी ४ बोल ५ लाल ६ खिलना ७ नाचना ८ गाना ९ खुशी १० साहिब सलामत ११ रस्मगाने औ बजानेकी १२ जलाना १३ राख धूर १४ दिन १५ हुकुम १६ बागीचा १७ नामदेवता १८ लेना १९ आँब २० जामुन २१ नाम मेवाफलकी २२—२३—२४—२५—२६—३१ अनार २७ अंगूर २८ खिरनी २९ नाममेवा ३० ॥

कोइ जैफर[1] कोइ लौंग सुपारी। कोइकमरखकोइकोबा[2]छारी॥
कोइबिजोर[3] कोइनरियरचरी[4]। कोइइमलीकोइमहुवा खजुरी॥
कोइ हरफा कोइ चोर करौंदा। कोइ अनार कोइबेरिकसौंदा॥
काहू गही केला की घौरी। काहू हाथ पड़ी निमकौरी॥

दो० काहू पाई नेरेकाहू कहँ गये दूर।
काहूखेलभयोबिष[5] काहूअमृतमूर॥

पुनि बीनहिं सब फूलसहेली। जो जेहिआसपास सबबेली॥
कोइ क्योंड़ा कोइ चम्पनेवारी। कोइकेतकिमालति फुलवारी॥
कोइ सतबर्ग[6] गोंद औकरना[7]। कोइचमेलि[8] नागेसर[9]बरना॥
कोइसुगुलाब[10]सुदरशन[11]कूजा[12]। कोईसोन ज़र्द[13] भलपूजा॥
कोइसोबोलसर[14]पुहुपबकोरी[15]। कोईरूपमँजरी[16] औ गौरी॥
कोइशिंगार हार[17]तेहि पाहां। कोइसेवती[18]कदम[19]कीछाहां॥
कोइ चन्दनफूलहिंजनुफूली। कोइअजान[20]बिरवातरभूली॥

दो० कोइफूलपाव कोइपाती जेहिकहाथ जेहिआंट।
कोइहार चीर[21] उरभानी जहांछुवे तहँ कांट॥

फरफूलन सबडार भिराई। झुण्ड बांध के पंचम गाई॥
बाजत ढोल[22] दुंद[23] औ भेरें[23]। मन्दिरतूर[24] झांझ[25] चहुँफेरें॥
सींगी[26] शंख[27] डफसंगम बाजे। बंसकार[28] महुवर[29] सुरसाजे॥
और कहा जित बाजन भले। भांति भांति सबबाजतचले॥
रथहिंचढ़ी सबरूप सुहाई। लियेबसन्तमड़मँडफसिधाई॥
नवल[30] बसन्तनवल वै बारी[31]। सेंदुर बूका करैं धमारी॥
खनहिं[32] चलहिंखनचांचरहोई। नाचकूद भूला सब कोई॥

दो० सेंदुरखेह[33] उठीतसगगन[34] भयोतसरात[35]।
राति सकल[36] महि[37] धर्तीरातिवृक्षबनपात॥

नाममेवा १—२—३ टुकड़ा ४ ज़हर ५ नामफूल ६—७—८—९—१०—११—१२—१३—१४—१५—१६—१७—१८—१९—२० कपड़ा २१ नामबाजा २२—२३—२४—२५—२६—२७—२८—२९ नया ३० लड़की ३१ कभो ३२ धूर ३३ आसमान ३४ लाल ३५ सब ३६ ज़मीन ३७॥

यहि विधिखेलत सिंहलरानी। महादेव मठ जाय तुलानी[1] ॥
सकल[2] देवता देखन लागे। दृष्टि[3] पाप सब उनके भागे ॥
ये कैलाश सुनैं अप्सरी। कहांते आय टूटि भुइँ परी ॥
कोई कहै पद्मिनी आई। कोइकहशशि[4] औनखततराई[5] ॥
कोई कहै फूल फुलवारी। फूली सबै देखके बारी[6] ॥
एक स्वरूप औ सेंदुर सारी। जानहु दियासकलमहि[7] बारी॥
मुरछ परै जोई मुख जोहे। मानहु मिरग[8] दवारहिं मोहे ॥

दो० कोई पराभँवरहोय बासलीन्हजनु चांप[9]।
कोइपतङ्ग[10] भादीपक कोइअधजर तन कांप ॥

पद्मावत गइ देव दुवारा। भीतर मँडफ कीन पैसारा ॥
देवै संशयभा जिय केरा। भागौंकेहि दिशमण्डफघेरा ॥
एकजुहार[11] कीन्ह औदूजा। तिसरे आयचढ़ायसि पूजा ॥
फर फूलन सब मँडफ भरावा। चन्दन अगरदेव अन्हवावा ॥
भरि सेंदुर आगे भइ खरी। परसि देव पुनिपांयन परी ॥
और सहेली सबै बिवाहीं। मोकहँदेवकितुहुंबर[12] नाहीं ॥
होंनिरगुन[13] जेंकीन्हन सेवा। गुन[14] निरगुन[15] दाता[16] तुमदेवा॥

दो० बरसंयोग[17] मोहिंमिरवहुकलशजातहौंमान।
जादिनइच्छा[18] पूजैबेग[19] चढ़ाऊं आन ॥

इच्छ[20] इच्छविनतीजसजानी। पुनिकर[21] जोरिठाढ़भइरानी ॥
उतर[22] को देय देव सोगयो। शब्द[23] कोटमण्डफ महँभयो ॥
काटिपयारा[24] जैसे परेवा। सोगयोईश[25] उतर[26] कोदेवा ॥
भये जीव विन नाउतओझा। विषभइपूरि कालिभयेगोझा ॥
जोदेखे जनु विषहर[27] डसा। देख चरित पद्मावत हँसा ॥

पहुँचना १ सब २ निगाह ३ चाँद ४ छोटेनखत ५ लड़की ६ ज़मीन ७ हिरन ८, चम्पा ९ पांखी १० सलाम ११ खाविन्द १२ बेहुनर १३—१५ हुनर १४ देनेवाला १६ खाविन्द लायक़ १७ आरज़ू १८—२० जल्द १९ हाथ २१ जवाब २२—२६ आवाज़ २३ छोड़देना २४ देवता २५ साँप २७ ॥

भल हम आय मनावा देवा। गाजन सोय को मानै सेवा[1]॥
को इच्छा पुरवै दुख खोवा। जहिंमनआयसोतनतनसोवा॥
दो० चहुँदिश[2]सखीउठावहिं शीश[3]बिकलनहिंडोल।
धर कोइजीवन जानो मखरे बकत कुबोल॥
ततखन[4] आयसखीबेहँसानी। कौतुक एक न देखहु रानी॥
पूर्व द्वार[5] मठ योगी छाये। नाजनो कौन देशते आये॥
जनुउनयोग तन्त अब खेला। सिद्ध[6] होय निसरे सबचेला॥
उनमहँजो एक गुरू कहावा। जस गुड़दे काहू बौरावा॥
कुँवर बतीसो लक्षण राता[7]। दशयें[8] लषनकहे एक बाता॥
जानोआहिगोपचन्द[9] योगी। कीसुआयभरथरी[10] बियोगी॥
वैपिङ्गल[11]गयेकजरीआरन[12]। ये सिंहलसोवहिं केहिकारन॥
दो० यह मूरत यह मुद्रा हम न देख अव धूत।
जानहुँ होहिंन योगी कोइ राजा के पूत॥
सुनि सुबात रानी रथ चढ़ी। कहँअसयोगिजो देखों मढ़ी॥
लैसँगसखीकीन्हतहँफेरा। योगिआयजनुअपछर[13] नहिंघेरा॥
नयन कचूर[14] प्रेम मधु[15] भरे। भइ सुदृष्टि[16] योगी सो ढुरे॥
योगीदृष्टि[17] दृष्टि सों लीन्हा। नयन[18] रूपनयनहिंजिवदीन्हा॥
जोमधु[19] छकतपरा तेहिपाले। सुधनरही वह एक पियाले॥
पड़ामांतगोरख[20] करचेला। जिवतनछांड़िस्वर्ग[21] कहँखेला[22]॥
किंगरी[23] गही[24]जोहुत बैरागी। मरती बार वही धुन लागी॥
दो० जेहिधन्ध जाकर मन बसे सपने सूझ सुधन्ध।
तेहिकारण[25]तपसीतपसाधहिंकरहिंप्रेमाचितबन्ध॥
पद्मावत जस सुना बखानू[26]। सहस[27] किरादेखेतसभानू[28]॥

खिदमत १ चारोंतरफ २ शिर ३ यकायक ४ दरवाज़ा ५ कामिल ६ बत्तीसहुनर जाननेवाला ७ अंदाजसे बातकरताहै ८ नामयोगी ९—१० नामरानी ११ जंगल १२ इन्द्रलोककीपरियां १३ आंखपियालेकीतरह १४ शराब १५ निगाह १६—१७ आंख १८ शराब १९ नामयोगी २० आसमान २१ जाना २२ नामबाजा २३ पकड़ना २४ वास्ते २५ तारीफ़ २६ हज़ार २७ सूर्य २८॥

मेलिस[1] चन्दनमग[2] खनजागा । अधिको[3] सोतसीर[4] तनलागा ॥
तब चन्दनआखर[5] हिय[6] लिखी । भीख[7] लई तुम योग न सिखी ॥
बार[8] आय तबगा तुइँ सोई । कैसे भुक्ति[9] परापत होई ॥
अबजोसूर[10] अहेशशि[11] राता । आयेचढ़सुगगन[12] पुनिसाता ॥
लिखसो बात सखिनसो कही । यही ठांउ[13] हों बरित[14] रही ॥
परगट[15] हों तोहोयअसभंग[16] । जगत[17] दियाकरहोयपतंगू[18] ॥

दो० जासों चख हेरों[19] सोईठांव जिव देय ।
यहदुखकतहुँननिसरोंकोहत्याअसलेय ॥

कीन्ह पयान[20] सबहिंरथहांका । पर्वत छांड़सिंहल गढ़ताका ॥
बलि[21] भयेसबै देवता बली[22] । हत्यारिन हत्या लै चली ॥
कोअसहितू[23] मुवेगहि बाहीं[24] । जोपै जिय आपन तननाहीं ॥
जौलह जिव आपन सब कोई । बिन जिवकोइ नआपनहोई ॥
भाईबन्धु औ मीत[25] पियारा । बिनजिवघड़ी नराखैपारा[26] ॥
बिनजिवपिण्ड[27] छार[28] करकूरा। छार मिलावै सो हित[29] पूरा ॥
तेहि जिव बिना अमरभाराजा । को उठिबैठि करबसोकाजा ॥

दो० परिकाया[30] भुइँलोटै कहांरेजिव बलिभीव ।
कोउठाय बैठारे बाज[31] पियारेजीव ॥

पद्मावत सो मन्दिर पैठी । हँसत जाय सिंहासन बैठी ॥
निश[32] सोतीसुनि कथाबहारी । भाबिहान सब सखीहँकारी[33] ॥
देवपूज जस आयों काली । स्वप्न एकनिश देख्योंआली ॥
जनुशशि[34] उदयपूर्वदिशलीन्हा। औरवि[35] उदय पश्चिमदिशकीन्हा ॥
पुनि चलि सूर चांद पहँआवा । चांद सूर्य्यदुहुँभयोमिरावा[36] ॥
दिन औ रात जानहुभयएका । रामआय रावन गढ़ छेका ॥

छिड़कना १ शायद २ बहुत ३ ठंडा ४ हर्फ़ ५ दिल ६ भीखमांगना ७ दरवाज़ा ८ रोज़ी ९ सूर्य १० चांद अर्थात् रातकोआवे ११ आसमान अर्थात् क़िला १२ जगह १३ वर्त्ते १४ ज़ाहिर १५ नुक़सान १६ दुनियां १७ पाखी १८ आंखमे देखों १९ कूच २० क़ुर्बान २१ ज़बरदस्त २२ दोस्त २३—२५—२९ मरेकीबांहपकड़े २४ रखनहींसक्ता २६ बदन२७—३० राख २८ पहुँचना ३१ रात ३२ बुलाया ३३ चांद ३४ सूर्य ३५ मुलाक़ात ३६ ॥

तस कुछ कहा न जाय निवेदा। अर्जुन बान राहु को बेधा॥

दो० जनहुँलङ्क सब लूसी[1] हनू[2] बिधांसी[3] बार।
जागउठ्योंअसदेखत कहुसखिस्वप्नबिचार॥

सखीसो बोली स्वप्न बिचारी। काल्ह जो गई देव[4] करबारी॥
पूजि मनायो बहुत बिनाती[5]। परसन[6] आयभयोतुम्हराती॥
सूरज पुरुष[7] चांद तुम रानी। अस बर[8] देव मिलावैआनी॥
पछौं खण्ड कर राजा कोई। सो आवै बर[9] तुमकहँ होई॥
कुछ पुनि जूझ लागतुमरामा। रावन सेते होय संग्रामा[10]॥
चांद सूर्य्य सों होय बिवाहू। बार[11] बिधां सब बेधै राहू॥
जस ऊषा[12] कहँअनरुधमिला। मेट न जायलिखापर[13]बला॥

दो० सुख सुहागहै तुमकहँ पानफूल रसभोग।
आजकाल्हभाचाहैअससपनेकासंयोग[14]॥

खण्डसत्तरहवां सतीखण्ड राजारतनसेन॥

कियै बसन्त पद्मावत गई। राजा तब बसन्त सुध भई॥
जो जागा नबसन्त न बारी[15]। ना सो खेल न खेलन हारी॥
नावहँ की वह रूप सुहाई। गइहिराइ पुनिदृष्टि[16] नआई॥
फूल झड़ी सूखी फुलवारी। दृष्टि[17] परी उकटीसब छारी[18]॥
कैयह बसत बसन्त उजारा। गा सो चांद अथवा लेतारा॥
अबतेहिबिनजग[19]भाअँधिकूपा[20]।वहसुखछांह जरादुखधूपा॥
बिरहदवां[21] को जरत सिरावा। को पीतम सो करै मिलावा॥

दो० हिये[22] देख जो चन्दनमिलके लिखाबिछोह[23]।
हाथमींजशिरधुनरोवे जो निचिन्तअससोय॥

जसबिछोह[24]जलमीन[25]दुहेला[26]।जलहतिकाढ़ अगिन[27] महँमेला॥

लटना १ हनुमान्जी २ दरवाज़ा तोड़ा ३—११ महादेवकेमंडफ़४ आजज़ो५खुश ६ ७ ख़ाविन्द ८—६ लड़ाई १० नामलड़की १२ ज़बर्दस्त १३ तावार १४ बाग़ १५ ह १६—१७ जलजाना १८ दुनियां १६ कुवां २० आग २१—२७ दिल २२ जुदाई २४ मछली २५ भारी २६॥

चन्दन अंक[1] दाग होय परे । बुझहिं न ते आखर[2] परजरे ॥
जेहि शिर आगे होय होय लागी । सब तन दागा सिंह[3] बन दागी ॥
जरे मृग[4] बनखंड वह ज्वाला । औ ती जरहि बैठि तेहि छाला ॥
कितने अंक लिखे जहँ सोवा । मग[5] अंकित तेहि करत बिछोहा ॥
जैसे दुखित कंसा[6] कोतला । माधौं[7] नलहि काम कन्दला ॥
भयो अंक नल[8] जैसो दमावत । नयना[9] मूंद छिपी पद्मावत ॥

दो० आय बसन्ता छिप रहा होय फूलन की भेश ।
केहि विधि पाऊं भँवर होय कवन सो करों उपदेश[10] ॥

रोवत रतन माल जनु चूरा[11] । जहँ होय ठाढ़ होय तहँ कूरा ॥
कहां बसन्त सो कोकिल बैना[12] । कहां कुसुम अलि[13] बेधी नयना ॥
कहां सुमूरति परी जो डीठी[14] । काढ़ि लिहेसि जिव हृदये[15] पैठी ॥
कहँ सो दरशपरश[16] जेहि लहा । जो सो बसन्त करीलहि[17] कहा ॥
पात बिछोह रूख जो फूला । सो महुवा रोवै अस भूला ॥
टपकहिं महुव आंशु तस परहीं । होय महुवा बसन्त ज्यों झरहीं ॥
मोर बसन्त सो पद्मिन नारी । जेहि बिन भयो बसन्त उजारी ॥

दो० पावा नवल[18] बसन्त पुनि बहु आरत[19] बहु चोप ।
ऐसो न जाना अन्त[20] होय पात झरहिं होय कोप ॥

अहो महा विश्वासी देवा । कित मैं आय कीन्ह तू सेवा ॥
आपन नाव चढ़ै जो देइ । सो तो पार उतारै खेइ ॥
सुफल जानि पग[21] टेक्यों तोरा । सुवा का[22] सेमर तू भा मोरा ॥
पाहन[23] चढ़ि जो चहि भा पारा । सो ऐसे बूड़ै मँझधारा ॥
पाहन[24] सेवा[25] कहां पसीजा । जन्मन पलवै जो जल भीजा ॥
बावर सोई सुपाहन पूजा । सकत[26] की मार लई शिर दूजा ॥

हर्फ़ १—२ शेर ३ हिरन ४ शायद मुलाक़ात नहो ५ राजा कंस रानी कोतला के लिये ६ माधोनल रानी कामकन्दला के लिये ७ राजा नल रानी दमन के लिये दुखी ८ आंख ९ तद बीर १० टूटना ११ आवाज़ १२ भँवर १३ नज़र १४ दिल १५ दीदार वा क़दम बोसी १६ जिसका उलटा कांटा होता है १७ नया १८ दुःख १९ आख़िर २० पेर २१ तोता २२ पत्थर २३—२४ ख़िदमत २५ मुशकिल समय का बोझ कौन दूसरा उठाता है २६ ॥

काहे न पूजै सोई निराशा[१]। मुये[२] जीत मनजाकरआशा ॥

दो० सिंह तरेंदाजेहिं गहा[४] पारभयेते साथ।
ते पै बूडे बाराहिं भेंड पूछ जेहि हाथ ॥

देव कहा सुनि बौरे राजा। देवहि अगमन[५] मारागाजा[६] ॥
जो पहिले अपने शिर परी। सो काकाहुक धरधर[७] करी ॥
पद्मावत राजा की बारी[८]। आयसखिनसोमएडफउघारी॥
जैस चांदगोहन[९] सब तारा। पर्यौभुलाय देख उजियारा॥
चमकेदशन[१०] बीज[११] कीनाईं। नयन[१२] चक्रचमकातभवाईं[१३] ॥
हों तेहि दीप पतङ्ग होयपरा। जिवजिमि[१४]काढ़स्वर्ग[१५]लेअरा॥
फेरन जाना वहँ का भई। वहँ कैलाश किकहँअपसई[१६] ॥

दो० अबहूँ मरोंनिसासी[१७] हिये[१८] न आवे सांस।
रुगियाकी को चालै बैदहि जहां उपास ॥

अनहों दोष देउँ का काहू। सुनिकेकया[१९] मया[२०] नहिंताहू ॥
हितू[२१] पियारामीत[२२] बिछोई[२३]। साथंन लाग आपगा सोई ॥
कामैं कीन्हजो काया[२४] पोषी। दोष[२५] न मोहिंआप निरदोषी॥
फाग बसन्त खेल गइ गोरी। मोहितनलाग आगजसहोरी॥
अबअसकाहिछार[२६] शिरमेलों। छारेहनों फाग तस खेलों ॥
कित तप कीन्ह छांडिके राजू। आहुर[२७] गयोंनभासिधिकाजू ॥
पायों न होय योगी यती। अबसर[२८] चढ़ों जगेंजससती ॥

दो० आय पीतमाफिरगया मिलान आय बसन्त।
अबतन होरी लायके जार करों भसमन्त ॥

कुकनों[२९] पंखजैसो सरि[३०]साजा। तस सरिबैठिजराचहिराजा॥
सकल[३१] देवता आयतुलाने[३२]। वहिंकसहोयदेवअस्थाने[३३] ॥

नाउम्मेद १ मरना २ शेर ३ पकड़ना ४ पहिले ५ बिजुली ६—११ दस्तगीरी ७ लड़की ८ साथ ९ दांत १० आँख १२ घूमना १३ जिसतरह १४ आसमान १५ छिपना १६ बेदम १७ दिल १८ बदन १९ मेहरबानी २० दोस्त २१—२२ जुदाई २३ तनपालना २४ क़सूर २५ राख २६ उमर २७ चिता २८—३० नामचिड़िया २९ सब ३१ पहुँचना ३२ मकान ३३ ॥

विरह अगिन वज्रांग[1] असूझा । जरै शूर[2] नवुझाये बूझा ॥
तेहिके जरत जोउठै बिजागी[3] । तीनोंलोक जरहिंतेहिलागी ॥
अबकी घड़ी चिनगतेहिं छूटे । जरहिं पहाड़ पहन[4] सबफूटे ॥
देवता सबै भस्म होय जाहीं । छार समेटे पावत नाहीं ॥
धर्ती[5] स्वर्ग[6] होय सब ताता[7] । हैकोई यहि राखिबिधाता[8] ॥
दो० मुहम्मदाचिनगप्रेमसुनि गगन[9] औमही[10] डिराय ।
धनविरहिनऔधनहिया[11] जहँयहअगिनसमाय ॥
हनुमत वीर लंक जे जारी । पर्वत उही अहा रखवारी ॥
बैठि तहां भा लंका ताका । छठयेमास[12] वही उठ हांका ॥
तेहिकी आग वहू पुनि जरा । लंका छांड़ि पलंका[13] परा ॥
तहां जाय यह कहा सँदेशू । पार्वती औ जहां महेशू[14] ॥
योगी आय वियोगी[15] कोई । तुम्हरे मँडफ़आगतेहिबोई ॥
जरी लँगूर सुराती[16] उहां । निकसजोभाग भये करमुहां ॥
तेहिं वज्रांग जरेहों लागा । वजरङ्गी[17] जरउठातोभागा ॥
दो० रावण लंका मैं दही[18] वै मोहिं डाढ़ी[19] आय ।
गगन पहाड़होतहैरावट[20] कोराखे गहि[21] पांय ॥

खण्डअठारहवांपार्वतीमहेशखण्ड ॥

ततखन पहुँचे आय महेशू । वाहन बैल कुष्टि कर भेशू ॥
कांथर[22] कथा[23] हड़ावर[24] बांधे । मुण्ड माल औ जनेऊकांधे ॥
शेशनाग[25] सोहैकण्ठ[26] माला । तनबिभूतिहस्ती[27] करछाला ॥
पहुँची रुद्र कमलकी कटा । शशि[28] माथेऔशिरपरजटा ॥
चँवरघंट[29] औ डमरू हाथा । गौरा पार्वती धनि साथा ॥
औ हनुमन्त वीर सँग आवा । धरेभेष जनु बन्दर छावा ॥

कराग़ १ बहादुर २ लूक ३ पत्थर ४ ज़मीन ५—१० आसमान ६—६ गर्म ७ [illegible] ८ दिल ११ महीना १२ कहां १३ महादेवजी १४ दुखी १५ लाल १६ [illegible] १७ जलाना १८—१९ राख २० पकड़ना २१ गुदड़ी २२ बदन २३ हाड़ोंकीमाला २४ साँप २५ गरदन २६ हाथी २७ चाँद २८ घंटी २९ ॥

औतेहिकहिननलावहु आगी। ताकर सप्त[1] जरहिंजेहिलागी॥
दो० कीतप करेनपारहि[2] कीरिनसायहि[3] योग।
जियतजीवकसकाढ़सिकहोसोमोसोंबियोग[4]॥
कहेसिकोमोहिंबातहिबिलँभावा। हत्याकेर न तोहिडिरावा॥
जरेदेहु दुख जरों अपारा। निसितिर[5] परोंजाययकबारा॥
जस भरथरी[6] लागपिंगला[7]। मोकहँ पद्मावत सिंहला॥
मैं पुनि तजा[8] राज औ भोगू। सुनि सुनाउँ कीन्होंतपयोगू॥
यहिमठ सेयों[9] आय निराशा। की सुपूजमन पूजन आशा॥
ते यह जिव डाढ़े[10] परदाधा। आधानिकसरहाघट आधा॥
जो अधिजरसोंबिलँब नलावा। करत बिलम्बबहुतदुखपावा॥
दो० एतना बोल कहत मुख उठी बिरहकी आग।
जोमहेश[11] नहिंअमी[12] बुझावतसकल[13] जगतहतलाग॥
पार्बती मन उपजा[14] चाऊ[15]। देखो कुँवरकेर सत भाऊ॥
वहिं यह बीच कि प्रेमहिपूजा। तनमनएक कि मारग[16] दूजा॥
भईस्वरूप जानहुअप्सरा[17]। बिहँसि[18] कुँवरकरआँचरधरा॥
सुनों कुँवर मोसों एक बाता। जस रंगमोर न दूसर राता[19]॥
औबिधि[20] रूपदीन्हहै तोका। उठासुशब्द[21] जायशिवलोका॥
तबहों तोकहँ इन्द्र पठाई[22]। कीपाद्मिनतुइँ अप्सर[23] पाई॥
अबताजि[24] जरनभरनतपयोगू। मोसोमानि जन्म भरभोगू॥
दो० हों अप्सर[25] कैलाशकी जेहि सर[26] पूजनकोय।
मोतजि[27] सँवरजोवहमारिसकौनलाभ[28] तेहिहोय॥
भलाहिंरंगतुहि अप्सर राता[29]। मोहिं दूसरसो भावनबाता॥
मोहिंवहसँवरि मुयेअसलहा[30]। नयन[31] जोदेखिसिपुँछसिकहा॥

क़सम १ निबाहना २ बरबाद ३ दुःख ४ रिहाई ५ नामयोगी ६ नामरानी ७ छोड़ना ८ ख़िदमत ९ जलाना १० महादेवजी ११ अमृत १२ सब १३ पैदाहोना १४ चाहना १५ राह १६ इन्द्रलोककीपरी १७—२३—२५ हँसना १८ लाल १९ ईश्वर २० आवाज़ २१ इन्द्रतक भेजोंगी २२ छोड़ना २४—२७ बराबर २६ फ़ायदा २८—३० लाल २९ आंख ३१॥

अबाहिंताह जिवदियेन पावा । तेहि अस अप्सरठाढ़मनावा ॥
जो जिवदेहों वहकी आशा । नजनो काह होय कैलाशा ॥
हों कैलाश काहि लै करों । सोकैलाश लाग जेहिमरों ॥
वहकी वार[1] जीव निरवारों[2] । शिर उतार न्योछावर डारों ॥
ताकर चाह[3] कहै जो आई । दोउ जगत[4] तेहिदेउँ बड़ाई ॥
दो० वहनमोर कुछआशा हों वह आश करेउँ ।
तेहिनिराश प्रीतम कहँ जिवनदेउँका देउँ ॥
गौरीहँसि महेश[5] सों कहा । निश्चैयहि बिरहानल[6] दहा[7] ॥
निश्चैयहि वह कारन[8] तपा । प्रबल[9] प्रेम न आछे छिपा ॥
निश्चै प्रेम पीर यहि जागा । कसें कसौटी कंचन[10] लागा ॥
वदनपियर जलटपके नयना । प्रकट[11] दोउ प्रेमके वयना[12] ॥
यहिवह जन्म लागके सीझा । चहीन औरहि ओही रीझा ॥
महादेव देवन के पिता । तुम्हरे शरण राम रणजिता ॥
येहूकहँ तस मया[13] करेहू । पुरवहु आश कि हत्या लेहू ॥
दो० हत्या चढ़ायहि कांधहुइ औतिनकेअपराध ।
तिसरेलेहु कि माथे जोरिलिये किये साध ॥
सुनि के महादेव की भाखा[14] । सिद्धि[15] पुरुषराजैं मनलाखा ॥
सिद्धहि अंग[16] न बैठे माखी । सिद्धिपलकनाहिंलावाहिंआंखी ॥
सिद्धिहि अंगहोय नहिं छाया । सिद्धहोयनहिं भूखनमाया[17] ॥
जो जग[18] सिद्धि गुसाईंकीन्हा । प्रकट[19] गुप्त[20] रहै कोचीन्हा ॥
बैल चढ़ा कुष्टी कर भेशू[21] । कहिराजासत आहिमहेशू[22] ॥
चीन्हेसोइ रहै तेहि खोजा । जसबिक्रम[23] औराजाभोजा ॥
केजिवतन्त[24] मन्त[25] सों हेरा । गयोहिराय जो वह भा मेरा ॥

दरवाज़ा १ न्योछावर २ खबर ३ जहान४ महादेवजी५ विरहकीआग६ जलना७ मग्रम ८ ज़बरदस्त ९ सोना १० ज़ाहिर ११ आवाज़ १२ मेहरबानी १३ बातचीत १४ मर्दकामिल १५ बदन१६ दुनियांदौलत १७ दुनियां १८ ज़ाहिर १९ छिपाहुआ २०सूरत २१ महादेवजी २२ राजाविक्रमाजीत २३ तन्त्र२४ देखना या ढूँढ़ना २५ ॥

दो० बिनगुरु पन्थ[1] न पावै भूलासोइ जो मेट।
योगीसिद्धहोय तब जब गोरख[2] सों भेट॥

ततखन[3] रतनसेन घाबरा। छांड़ि डफार पांय लैपरा॥
माता पिता जन्म कित पाला। जो अस फांद प्रेमगै[4] घाला॥
धर्त्ती[5] स्वर्ग[6] मिले हत दोऊ। कितनिरार[7] करदीन्हबिछोऊ॥
पदक[8] पदारथ कर[9] हुतखोवा। टूटहिं रतन[10] रतनतस रोवा॥
गगन[11] मेघ जसबर्षहिं भली। धर्त्तीपूरि सलिल[12] होयचली॥
सायर[13] उबटशिखिरकीपाटी[14]। चढ़ीपानिपाहन[15] हिय[16] फाटी॥
बूँद पानि होय होय सब गिरे। प्रेम फन्द कोऊ जन परे॥

दो० तसरोवै जस जिव जरै गिरै रक्त[17] औमांस।
रोम रोम सब रोवहिं सूत[18] सूत भर आंस॥

रोवत बूड़ उठा संसारू। महादेव तब भयो मयारू[19]॥
कहसि न रोव बहुत तैं रोवा। अब ईश्वर भा दारिद खोवा॥
जो दुख सहै होय सुखओका। दुखबिनसुखनजायशिवलोका॥
अबतू सिद्ध[20] भया सुख पाई। दर्पण[21] कया[22] छूटिगइ काई॥
कहूं बात अबहूँ उपदेशी[23]। लाग पंथ[24] भूले परदेशी॥
जो लहि चोर सेंध नहिं देई। राजा केर न मूसै पेई[25]॥
चढ़ै तो जाय पार वह खूंदी[26]। परै तो सेंध शीश[27] सोंमूंदी॥

दो० कहूं तोहिं सिंहलगढ़हि है खण्ड सात चढ़ाव।
फिरा न कोई जीते जिय स्वर्ग[28] पंथ दे पांव॥

गढ़[29] तसबांक[30] जैसतोरकाया[31]। पुरुष[32] देखि ओहीकी छाया॥
पाई नाहिं जूझ हठ कीन्हे। जे पावा तें आपहिं चीन्हे॥

राह १ नामयोगी २ यकायक ३ गर्दन ४ ज़मीन ५ आसमान ६—११ अलग ७ लाल वा जवाहिर ८ हाथ ९ आंशू १० पानी १२ तालाब १३ घोबीकापाटा १४ पत्थर १५ छाती १६ खून १७ सूराख़ १८ मेहरबानी करनेवाले १९ कामिल २० आईना २१ बदन २२ नसीहत २३ राह २४ पूंजी २५ खाई २६ शिर २७ आसमान २८ क़िला तथा बदन आदमी २९ पेंचदार ३० बदन ३१ मर्द ३२॥

नौ पँवरी[1] ते गढ़ मझियारा[2] । औ तहँफिरहिंपांचकुतवारा[3] ॥
दशौंद्वार[4] गुप्त[5] एक नाके । अगुस[6] चढ़ाव बाट[7] सुठबांके[8] ॥
भेदी जाय कोई वह घाटी । जो लहिभेद चढ़ै होयचांटी[9] ॥
गढ़तरि कुण्ड सुरंगतेहिमाहां । ते पै पंथ कहौं तोहि पाहां ॥
चोर पैठि जस सेंध सँवारी । जुवा पैंत[10] जस लाय जुवारी ॥
दो० जस मरजिया समुद्र धस मारेहाथ आवतससीप ।
ढूँढ़ि लेहु जो स्वर्ग द्वारे चढ़ै सो सिंहलदीप ॥
दशौंदुवार[11] ताल का लेखा । उलट दृष्टि[12] जोलावसो देखा ॥
जायसोजायस्वास[13] मनबन्दी।जसधसिलीन्हकान्ह[14]कालिन्दी[15] ॥
तू मनमाथ मारके स्वासा । जो पै मरहि आप कर नासा ॥
प्रगट[16] लोकचार कहु बाता । गुप्त[17] लावमन जासोंराता[18] ॥
हौंहूँ[19] कहत सबै मति[20] खोई । जो तू नाहिं आहि सबकोई ॥
जीतहि जुरी मरै इकबारा । पुनि को मीच[21] मरै को पारा ॥
आपहिंगुरूसो आपहिं चेला । आपहिंसबऔआपअकेला ॥
दो० आपहिं जीवन[22] मरन पुनि आपै तनमन सोय ।
आपहिं आपकरै जो चाहै कहांसो दूसर कोय ॥

खण्ड उन्नीसवां राजा गढ़ छेंका खण्ड ॥

सिधि गुटका राजैं जो पावा । औभइ सिद्धि गणेशमनावा ॥

१ नौदरवाज़ा तथा नौसूराख़ बदनके आँख २ कान २ मुँह १ नथुना २ गुदा १ लिंग १—१ दरमियान २ पांच कोतवाल यहां मुराद काम क्रोध अहंकार लोभवग़ैरहसे है ३ दसदरवाजे बदनकी कर्मइन्द्री ५ ज्ञानइन्द्री ५—४ छिपाहुवा ५ जहां किसीका दख़लनहो ६ राह ७ बहुतटेढ़ा ८ चोटी ९ दांव १० तथा दसदरवाज़ेबदन आदमीके ११ निगाह १२ योगकी क्रिया बांये पैरकी रग दहने पैरसे पकड़ स्वास को तोंदीके नीचेसे रोक दो अंगुली से होंठ बीच की अँगुली से दोनों नथुने दोनों शहादत की अँगुली से आँख दो अँगुली से कान के सूराख़ बन्द कर ईश्वर का नाम तोंदो से खींच कर ब्रह्मांड को स्वास चढ़ावे १३ श्रीकृष्णजी १४ यमुना १५ ज़ाहिर १६ छिपा १७ लाल १८ मैं—मैं १९ काफ़िर २० मौत २१ जीना २२ ॥

जब शंकर सिधिदीन्ह कुटेका। परी हूल योगिन गढ़ छेका॥
सबै पद्मिनी देखहिं चढ़ी। सिंहल घेर गई उठि मढ़ी॥
जसघरफिरा चोर मतकीन्हा। तेहिबिधिसेंधचाहिगढ़दीन्हा॥
गुप्तचोर जो रहै सो सांचा। परगट होय जीव नहिं बांचा॥
पँवरपँवर[1] गढ़ लाग केवारा। औ राजा सों भई पुकारा॥
योगी आय छेंक गढ़ मेली। न जनों कौन देश कहँ खेली॥
दो० भयो रजायसु[2] देखौ को भिखार अस ढीठ।
बेग[3] बरज तेहि आवहिं जनदुइचार बसीठ[4]॥
उतरबसीठ[5]दुइआय जुहारी[6]। की तुम योगी की बनजारी॥
भयोरजायसु[7]आगेंखेलहिं[8]। गढ़[9]तरुछांड़िअंत[10]होयमेलहिं॥
असलागहिकेहिकेसिख[11]दीन्हें। आयहिमरहिहाथजिवलीन्हें॥
यहां इन्द्रासन राजा तपा। जाहि रिसाय सूर[12] डरछिपा॥
हो बनजारतो बनज[13] बिसाहो। भर ब्योपार लेहु जो चाहो॥
योगी होहुतोयुक्ति[14] सोंमांगहु। भुक्त[15] लेहुलैमारग[16]लागहु॥
यहां देवता आशके हारी। तुम पतंग[17] कोआहिभिखारी॥
दो० तुम योगी बैरागी कहत न मानी कोह।
लेहु मांग कुछ भिक्षा खेलअंतकहँहोह[18]॥
आनजोभीखहां आयोंलिये[19]। कसन लेउँ जो राजा दिये॥
पद्मावत राजा की बारी[20]। हों योगी वह लाग भिखारी॥
खप्पर लिये बार[21] भा मांगों। भुक्ति[22] देइलै मारग[23]लागों॥
सोई भुक्ति परापत पूजा। कहां जाउँ अस बार न दूजा॥
अब धर यहां जीव वहठाऊँ[24]। भस्महोहुँ पै तजों[25] न नाऊँ॥
जस बिनप्रान पिण्ड[26] हैछूँछा। धर्मलाग कहिये जो पूँछा॥

दरवाज़ा १ हुक्म २ जल्द ३ वकील ४—५ सलाम ६ हुक्म ७ जाना ८ किला ९ औरजगह १० सिखाना ११ सूर्य्य १२ माल १३ तदबीर १४ रोज़ी १५ राह १६ पांखी १७ चलेजाउऔरकहीं १८ भीखकेवास्ते १९ लड़की २० दरवाज़ा२१ भीख२२ रास्ता २३ जगह २४ छोड़ना २५ बदन २६॥

तुम सो वसीठ राजा की ओरा । शाख[1] होहुयहभीखनिहोरा ॥

दो० योगीबार आवसो जेहि भिक्षा की आस ।
जो निराश दृढ़आसनकितगवने[2]केहिपास ॥

सुनि वसीठ मन अपने रिसा । यव पीसत घुनजायहिपिसा ॥
योगी ऐस कहै नहिं कोई । सो कहुवात योग[3] तेहिहोई ॥
वहवड़ राज इन्द्र कर पाटा[4] । धर्त्ती परे स्वर्ग[5] को चाटा ॥
जो यह बात जाय तहँ चली । छूटहिं अबहिं हस्ति[6] सिंहली ॥
औ छूटहिं तहँ वज्र के कूटा[7] । बिसरे भुक्त[8] होय सबखूटा[9] ॥
जहँलग दृष्टि[10] न जायपसारी । तहां पसारसि हाथभिखारी ॥
आगेदेखि पांवधरि नाथा । तहां न देखि टूटि जहँ माथा ॥

दो० वहरानी जेहि जुगतमहँ तेहीराज औपाट[11] ।
सुन्दर जाय राजघर योगिहि बन्दर काट ॥

जो योगी सत वन्दर काटा । एके योग न दूसर बाटा[12] ॥
और साधना आवै साधे । योग साधना आपहिं दाधे[13] ॥
सर[14]पहुँचाउ योग कर साथू । दृष्टि[15] चाहिअगमन[16] होयहाथू ॥
तुम्हरे जोर सिंहल के हाथी । हमरे हस्ति[17] गुरू है साथी ॥
हस्तनेस्त[18] वहकरतन्न वारा[19] । परबत करै पांवकी छारा[20] ॥
जोरगिरे[21] गढ़जानवन्त[22] भये । जो गढ़ गर्ब[23] करहिंते नये ॥
अन्त[24]जोचलनाकोउनचीन्हा ॥ जो आवा सोआपन कीन्हा[25] ॥

दो० योगिहिकोह[26] नचाहीतव न मोहिरिसलाग ।
योग तन्त ज्यों पानीकाहि करै तेहि आग ॥

वसीठहिं[27] जायकहीसबबाता । राजा सुनत कोह भा राता[28] ॥
ठांवहिं[29] ठांव कुँवरसवभाखे[30] । केअबलाहिं ये योगी राखे ॥

नाश्मेमाभगी १ कहांजाउँ २ लायक़ ३ तख़्त ४ आसमान ५ हाथी ६ पत्थर के कोने ७ भीखमांगना ८ चारों तरफ़ ९ निगाह १० तख़्त ११ राह १२ जलाना १३ आख़िर १४ नज़रमेंज्यादा १५ पहिले १६ हाथी १७ नाश १८ ढेर १९ राख २० पहाड़ २१ ज [illegible] २२ ग़रूर २३ मरना २४ मुदबीनों की २५ गुस्सा २६ वकील २७ लाल २८ [illegible] २९ सुनाया ३० ॥

अबहूँ बेगहि[1] करो सँयोऊ[2]। तस मारहु हत्या किन होऊ॥
मन्त्रिन[3] कहा रहो मनबूझे। पति[4] नहोय योगिहि सोंजूझे[5]॥
वै मारे तौ काह भिखारी। लाज होय जो मानी हारी॥
ना भल मुये[6] न मारे मोषू[7]। दुहूँ बात तुम्ह लागहिदोषू[8]॥
रहे देहु जो गढ़तर[9] मेली। योगी कित[10] आछेपुनिखेली॥
दो० आछे देहु[11] जो गढ़तरे जनिचालहु यहबात।
नितहिं[12] जोपाहन[13] भखकरहिंअसकेहिकेमुखदांत॥
गये बसीठ[14] पुनि बहुरनआये। राजैं कहा बहुत दिन लाये॥
नजनों स्वर्ग[15] बात धौं काहा। काहुनआयकहीफिरचाहा[16]॥
पंख न काया[17] पवन[18] नपाया।केहिबिधिमिलोंहोउँकेहिछाया॥
सँवर रक्त नयनहि भर चुवा। रोयहँकारेसि[19] मांझी[20] सुवा[21]॥
परी जो आंशुरक्त[22] की टूटी। रेंगचली जस बीरबहूटी॥
वहीरक्त लिख दीन्हीं पाती। सुवाजोलीन्हचोंचभइराती[23]॥
बांधीकंठ[24] पड़ा जस कांथा[25]। बिरहिक[26] जराजायकहँनाथा॥
दो० मसिनयना[27] लिखनीबरन[28] रोयरोयलिखाअकत्थ[29]।
आखर[30] दहे[31] न कोई छुवै दीन्ह परेवा हत्थ॥
औ मुख बचनसोकहेसिपरेवा। पहिले मोर बहुतके सेवा॥
पुनि रसँवारकहेसि अस दूजी। जेउबल[32] दीन्हदेवतनपूजी[33]॥
सो अबहीं तब से बललागा। बल जिवरहा नतनसोजागा॥
भलहिईशहू[34] तुम्हबल दीन्हा। जहँतुम्ह तहांभावबलकीन्हा॥
जोतुममया[35] कीन्ह पग धारा। दृष्टि[36] दिखायबान बिषमारा॥
जो असजाकर आशामुखी। दुख महँ एसन मारै दुखी॥

जल्द १ तदबीर २ सलाहकार ३ बड़ाई ४ लड़ाई ५ मरना ६ नजात ७ पाप ८ क़िलेकेनीचे ९ कितने गये औचलेगये १० रहनेदो ११ हररोज़ १२ पत्थर १३ वकील १४ आसमान तथा क़िला १५ ख़बर १६ बदन १७ हवा अर्थात् ज़ोर १८ बुलाया १९ दरमियानी २० तोता २१ खून २२ लाल २३ गरदन २४ निशान २५ आशिक़ २६ काजल आंखका २७ पलक २८ हाल २९ हर्फ़ ३० जलना ३१ ज़ोर ३२ मौजूद ३३ ईश्वर ३४ मेहरबानी ३५ नज़र ३६॥

नयन[१] भिखारनमानहिं सीखा । अगमन[२] दौरेलीन्हपैभीखा ॥

दो० नयनहिं नयनजो बेधगये नहिं निकसैं वै बान[४] ।

हिये[५] जो आखर[६] तुमलिखी तेसठ घटहिंपरान ॥

ते बिष बान लिखूँ कहँ ताईं । रक्त[७] जो चुवा भीजदुनियाईं ॥

जान सुकारी[८] रक्तपसेऊ[९] । सुखी न जानदुखीकरभेऊ[१०] ॥

गिननपीरातिनकाकरचिन्ता[११] । प्रीतमानिठुर[१२] होहिंअमनिन्ता[१३] ॥

कासों कहूँ बिरह की भाखा । जासों कहों होय जर राखा ॥

बिरह आग तन जरमैं जरै । नयननीर[१४] सायर[१५] सब भरै ॥

पाती लिखी सँवर तुम नासा । रक्तलिखेआखरभयश्यामा[१६] ॥

आखर जरहिं न कोई छुवा । तब दुख देख चलाले सुवा ॥

दो० अय सठमरों छूँछि[१७] गइपाती प्रेमपियारे हाथ ।

भेंटहोत दुखरोय सुनावत जीवजातजो साथ ॥

कञ्चनतार[१८] बांधगये[१९] पाती । लैगासुवा जहां धनराती[२०] ॥

जैसे कमल सूर्य्य की आशा । तोरकंथ[२१] बहु मरै पियासा ॥

बिसरा भोग सेज सुख बासू । जहांभँवर सब तहांहुलासू[२२] ॥

तबलगिधीर सुना नहिं पीउ । सुना तो घड़ी रहै नहिंजीउ ॥

तबलगसुखहिय[२३] प्रेमनजासा । जहांप्रेमकासुख बिश्रामा[२४] ॥

अगरचँदनदुखदहै[२५] शरीरू[२६] । औभाअगिनकया[२७] करचीरू[२८] ॥

कथा कहानी सुनि सुठ जरा । जानो घीव बसन्दर[२९] परा ॥

दो० बिरहन आप सँभारे मैल चीर[३०] शिर रूख ।

पिउपिउ करत रातदिन पापिहा सुखसे सूख ॥

ततखन[३१]गा हीरामन[३२] आई । मरत पियास छांह जनु पाई ॥

भल तुम सुआ कीन्ह है फेरा । गाढ़[३३] न जानहु प्रीतमकेरा ॥

आंख १ आगे २ आंस ३ तीर ४ छाती ५ हर्फ ६ खून ७ कालासांप ८ लालपसीना ९ भेद १० अंदेशा ११ बेदर्द १२ अर्थात् हमेशासे होतेआयेहैं १३ आँखका पानी तथा आंसू १४ तालाब १५ अर्थात् कालेहर्फ १६ खाली १७ सोनेकातार १८ गरदन १९ अर्थात् पद्मावत २० कविन्द २१ खुशी २२ दिल २३ आराम २४ जलना २५ बदन २६—२८ कपड़ा २९—३० आग २९ उमीदवार ३१ नामतोता ३२ मुश्किल ३३ ॥

बातहिं जानो बिषम[1] पहारा । हृदय[2] मिलान होय निरारा[3] ॥
मर्म[4] पानि[5] कर जानि पियासा । जोजल महँ ताकहँकाआसा ॥
कारानी यहि पूँछहु बाता । जन कोइ होय प्रेमकर राता[6] ॥
तुम्हरे दरशनलाग बियोगी[7] । अहासो महादेव मठ योगी ॥
तुम बसंतलै तहां सिधाईं । देव पूज पुनि औ फिर आईं ॥
दो० दृष्टि[8] बान तस मारेहु खाय रहा तेहि ठांव[9] ।
दूसर बार न बोलहि लै पद्मावत नांव ॥
रोम रोम बान वै फूटी । सूतहिं[10] सूतरुधिर[11] मुखछूटी ॥
नयनहि[12] चली रक्तकी धारा । कन्था[13] भीजभयो रतनारा[14] ॥
सूरज बूड़ उठा परभाता[15] । औ मजीठ[16] टेसूबनराता[17] ॥
भयो बसंत राती बनपती[18] । औ जतने सब योगी यती ॥
भूमि[19] जो भीज भयोसबगेरू । औ राती तहँ पंख[20] पखेरू ॥
राती सती अगिन सबकाया[21] । गगन[22] मेघ राती तहँछाया ॥
ईंगुरभा पहाड़ जो भीजा । पै तुम्हार नहिं रोमपसीजा ॥
दो० तहां चकोर औ कोकिलामया[23] हियेतेहिपैठ ।
नयनन रक्त[24] भरायहि तुम फिरकीन्हनडीठ ॥
ऐसो बसन्त तुम्हीं पै खेलहु । रक्त पराये सेंदुर मेलहु ॥
तुम तो खेल मन्दिर कहँ आईं ।वहकासमर्म[25] जसजानगुसाईं[26] ॥
कहेसि मरै को बारहि बारा । एकहि बार होहुँ जरछारा[27] ॥
सर[28] रचकहा आग जो लाई । महादेव गौरी सुधि पाई ॥
आयबुझायदीन्ह पंथ[29] तहां । मरनखेलकर आगम[30] जहां ॥
उलटा पंथ प्रेमकी बारा[31] । चढ़ै स्वर्ग[32] जोपरै पतारा ॥
अबधसलीन्हचहीतेहिआशा । पावैस्वास कि मरै निराशा ॥

टेढ़ा १ दिल २ अलग ३ भेद ४ पानी ५ अर्थात् दीवाना ६ दुखी ७ निगाह ८ जगह ९ सूराख १० खून ११ आँख १२ गुदड़ी १३ लाल १४—१७ भोर १५ लाख १६ जंगलकी बूटी १८ ज़मीन १९ परिन्द जानवर २० बदन २१ आसमान २२ मेहरबानी २३ खून २४ भेद २५ ईश्वर २६ राख २७ चिता २८ राह २९ पहिले ३० दरवाज़ा ३१ आसमान ३२ ॥

दो० पाती लिख सोपठाई लिखा सबै दुखरोय।
धौंजिवरहै कि निसरै कहारजायसु[1] होय॥

कहिके सुवाछोड़ दइ पाती। जानहु दब्ब[2] छूट तसताती[3]॥
गेउं[4] जो बांधाकंचन[5] तागा। राती श्याम[6] कंठ जर लागा॥
अगिन स्वाससुखनिसरैताती। तरवर[7] जरहिं तहांको पाती॥
रोयरोय सुवे कही सोबाता। रक्त कि आंशु भयोमुखराता॥
देख कण्ठ जरलागसो केरा। सो कसजरैबिरह अस घेरा॥
जर जर हाड़ भयेसब चूना। तहां मांसको रक्तबहूना॥
वैं तोहि लागकथा[8] सबजारो। तपत मीन[9] जलरहैन पारो[10]॥

दो० तुहिकारन[11] वहयोगी भस्म कीन्ह तनदाह[12]।
तू असनिठुर[13] निछोही[14] बातन पूँछी ताह॥

कहेसिसुवा मोसों सुनि बाता। चहोंतो आजमिलोंजसराता॥
पैसो मर्म[15] नजानै भोरा[16]। जानै मर्मजो मर के होरा[17]॥
हों जानतहूं अबहूं कांचा। नाजेहि प्रीतिरंगाथिर[18] रांचा॥
नाजेहिभयोमलयगिरि[19] बासा। नाजेहिरबि[20] होयचढ़ेउ अकासा॥
ना जेहिहोय भँवरकर रंगू। नाजेहि दीपक भयोपतंगू॥
ना जेहि किरा भृंग[21] की होई। ना जेहि आप जियेमरसोई॥
ना जेहि प्रेमऔंट इक भयो। नाजेहि हिये मांझ डरगयो॥

दो० तेहिंका का कहिये रहन[22] जोहै प्रीतमलाग।
जो वह सुने लेइ धस का पानी का आग॥

पुनिधन[23] कनक[24] बानमसि[25] मांगी। उत्तर[26] लिखतभीजतनआंगी॥
तस कंचन[27] कहँ चहीसुहागा। जोनिरमल[28] नगहोयसुलागा॥
होंयोगी मठ मण्डफ बहोरी[29]। तहवां कसन गांठतुम जोरी॥

हुक्म १ निहार्इ २ गर्म ३ गरदन ४ सोना ५ लालवाकाला ६ पेड़ ७ बदन ८ मछली ९ बेक़रार १० वास्ते ११ जलाना १२ बेदर्द १३—१४ भेद १५ नादान १६ मर के जलना १७ क़ायम १८ चन्दन १९ सूर्य्य २० नामकीड़ा २१ तिसको रहनेकेवास्तेक्या कहूँ २२ पद्मावत २३ क़लम २४ सियाही २५ जवाब २६ सोना २७ पाकसाफ़ २८ जाना २९॥

गा बिषभार[1] देखके नयना। सखिनलाजकाबोलों बयना[2] ॥
खेल मिसें[3] मैं चन्दन घाला। मग[4] जागेसि तोदेवों जैमाला॥
तबहुँ न जागा गातू सोई। जागे भेट न सोये होई॥
अबशशि[5] होयचढ़ै आकासा। जो जिवदेय सो आवै पासा॥
दो० तबलगिभुक्ति[6] न लैसका रावनसिय इकसाथ।
कौन भरोसे अब कहौं जीव पराये हाथ॥
अबजो सूर[7] गगन[8] चढ़ आवै। राहुहोय तौ शशि[9] कहँ पावै॥
बहुतेहिं ऐसो जीवपर खेला। तू योगी किनमाहँ अकेला॥
बिक्रम[10] धसा प्रेमके बारा[11]। सम्पावत[12] कहँ गयो पतारा॥
सुदीपच्छ[13] खण्डरावत[14] लागी। गगन[15] पूर होयगा बैरागी॥
राजकुँवर[16] कंचनपुर[17] गयो। मिरगावत[18] कहँ योगी भयो॥
साधुकुँवर[19] खण्डावत[20] योगू। मधु[21] मालतिकहँकीन्हबियोगू[22]॥
प्रेमावत[23] कैसुरसर[24] सांधा। ऊषा[25] लगिअनिरुध[26] बरबांधा॥
दो० हौं रानी पद्मावत सात स्वर्ग पर बास।
हाथचढ़ौं सो तेहिंके प्रथम[27] करै अपनास॥
हौंपुनि अहौं ऐस तुम राती[28]। आधी भेट पिरीतम पाती॥
तौहूँ जो प्रीतिनिबाहै[29] आंटा। भँवरन देख केतमहँ कांटा॥
होहु पतङ्ग आवगहु[30] दिया। लेहसमुद्रधसहोय मरिजिया॥
रात[31] रंगजिमि[32] दीपक बाती। नयन[33] लावहोयसीपसेवाती॥
चात्रिक[34] होहु पुकारपियासा। पियोनपानिस्वातिकी आसा॥
सारसहो बिछुरी जस जोरी। रयनि[35] होयजलचकइचकोरी॥
होहुचकोरदृष्टि[36] शशि[37] पाहां। औरबि[38] होहुकमलवहमाहां॥
दो० होहुँ ऐस तुहिराती सकेसि तोप्रीति निबाह।

बेहोश १ आवाज़ २ बहाना ३ शायद ४ चाँद ५—३ भीख ६ सूर्य्य ७ आसमान ८ राजाबिक्रमाजीत १० दरवाज़ा ११ नामरानी १२—१४—१८—२०—२३ राजाभोज १३ नामजगह १५—१७ नामराजा १६—१९—२४ भँवर २१ दुखी २२ बेटीबाणासुर २५ बेटाश्रीकृष्णचन्द्रजी २६ पहिले २७ लाल तथा खुश २८ निबाहकरना २९ पकड़ना ३० सुर्ख ३१ जिसतरह ३२ आँख ३३ पपीहा ३४ रात ३५ निगाह ३६ चाँद ३७ सूर्य्य ३८॥

राहुवेध अर्जुन[1] होय जीत दुरपदी व्याह ॥

राजा यहां तैसे तप भूरा । भाजर विरह छार कर कूरा ॥
जिवगँवायसो गयो विमोही । भाविन्नजिवजिवदीन्हेसिओही॥
कहांपिङ्गला[2] सुखमन[3] नारी । सुन्नसमाध लाग गइ तारी ॥
बूँद समुद्र जैसो हो मेरा । गा हेराय तस मिलै न हेरा ॥
रंगहि पान मिला जसहोय । आपहिं खोय रहाहोय सोय ॥
सुवे आय देखा भानाशू । नयन रक्त भर आये आंशू ॥
सदा प्रीतम गाढ़[4] करेई । वह नभूल भूला जिव देई ॥

दो० मूर[5] सजीवन आनके औ मुखछिड़का नीर[6] ।
गरुड़पंख जस झारै अमृत बरसा कीर[7] ॥

सुवाजिया अस बासजोपावा । लीन्हेसि श्वासपेटजिवआवा॥
देखिसि जाग सुवाशिरनावा । पातिदीन्ह मुखबचनसुनावा ॥
शब्द[8] सुनाय अमीसुखमेला । गुरूबुलाय बेग[9] चलचेला ॥
तोहिअलि[10] कीन्हआपभाकेवा[11]। हों पठवागुरुबीच[12] परेवा ॥
पवन[13] श्वास तोसों मनलाई । जोवै[14] मारग[15] दृष्टि[16] बिछाई ॥
जस तुम काया कीन्होंदाहू[17] । सोसब गुरुकहँभयोअगाहू[18] ॥
तपावन्ल[19] छाला[20] लिखदीन्हा।बेग[21] चलावचहूँसिधि[22] कीन्हा॥

दो० बेगचल आवो अस कहेउ जीव बसे तुमनाउँ ।
नयनहि[23] भीतर पन्थ[24] हैहिरदय[25] भीतरठाउँ[26] ॥

सुनि पद्मावत की असमया[27] । भावसन्तउपजी[28] नइकया[29] ॥
सुवाका बोल पवन होयलागा । उठासोय हनुमत होयजागा ॥
चांदमिलन कहँदीन्हेंसिआशा । सहस[30] किरानसूर्यपरकाशा॥
पाति लीन्ह लैशीश[31] चढ़ावा । दृष्टि चकोर चांद जसपावा ॥

नाम भाईराजायुधिष्ठिर १ रग २—३ जुल्म ४ नामबूटी ५ पानी ६ तोता ७ बोल ८ जल्द ९ भँवर १० कतको ११ चिट्ठवानी १२ हवा १३ ढूंढ़ना १४ राह १५ निगाह १६ जलाना १७ ख़बर १८ दिनमिला १९ ख़त २० जल्द २१ कामपूरा २२आँख २३ राह २४ दिल २५ जगह २६ मेहर,बानी २७ पैदाहोना २८ वदन २९ हज़ार ३० शिर ३१ ॥

आश पियासा जो जेहि केरा । जो भिझकार वही सोहेरा[1] ॥
अब यहि कौन पानि मैं पिया । भैलन पांख पतङ्ग मरजिया ॥
उठा फूल हिरदय न समाना । कन्था[2] टूकटूक भर आना ॥
दो० जहांप्रीतमवैबसहिं यहिजिवबलि[3] तेहिबाट[4] ।
जो सो बुलावै पांवसों हमतहँ चलैंललाट[5] ॥
जो पन्थ मिला महेशहि[6] सेई । गयो समुद्र ओही धसलेई ॥
जहँवहकुण्डविषम[7] औगाहा[8] । जायपरा तहँ पाव न थाहा ॥
बावर अन्ध प्रेम कर लागू । सौंह[9] धसा कुछसूझनआगू ॥
लीन्हेसिधसजोश्वासमनमारा। गुरू मुछन्दर नाथ सँभारा ॥
चेला परीन छांड़हि पाछू । चेला मच्छ गुरू जस काछू ॥
जसधसलीन्ह समुद्र मरजिया । उघरे नयन बरै जस दिया ॥
खोज लीन्हसोस्वर्ग[10] दुवारा । बज्र[11] जो मूँदे जाय उघारा ॥
दो० बांकचढ़ाव स्वर्ग[12] गढ़ चढ़तगयोहोयभोर ।
भइ पुकार गढ़ऊपर चढ़े सेंध दै चोर ॥
राजैं सुनि योगी गढ़ चढ़े । पूँछी पास पांडित जो पढ़े ॥
योगी गढ़ जो सेंध देआवहिं । बोलहुशब्द[13] शुद्धजसपावहिं॥
कहहिं वेद पण्डित पढ़ बेदी । योग भँवर जसमालतिभेदी ॥
जैसे चोर सेंध शिर मेलहिं । तस ये दोउ जीव पर खेलहिं॥
पन्थ[14] नहिंचलहिंवेदजसलिखी। स्वर्गजाय शूली चढ़सिखी॥
चोर होय शूली पर मोषू[15] । देजो शूरी तेहि नहिं दोषू[16] ॥
चोर पुकार बेध घर मूसा । खोलोराज भँडार मँजूसा[17] ॥
दो० जसयहि राजमँदिरकहँ दीन्हरयन होयसेंध ।
तेसो इन्ह कहँ मोषहोय मारहुशूली बेध ॥

देखना १ गुदड़ो २ न्योछावर ३ राह ४ माथा ५ महादेवजी ६ टेढ़ा ७ ख़बर८ सामने ६ आसमान १० पत्थर ११ आसमान १२ कहोक्यादण्ड १३ राह १४ नजात१५ पाप १६ सन्दूक १७ ॥

खण्डबीसवां मन्त्रीखण्ड गन्धर्वसेन ॥

रांध जो मन्त्री बोले सोई । एसोजोचोर सिद्ध[1] पै कोई ॥
सिद्ध निशङ्करयनदिनभोहीं[2] । ताका[3] जहां तहां अपसोहीं[4] ॥
सिद्ध निडरपै अपने जीवा । स्वर्ग देख वो नावहि ग्रीवा[5] ॥
सिद्ध जाय पै जिव बधतहां । औरहिं मरन पंख असकहां ॥
सिद्ध अमर[6] काया[7] जसपारा । जरहिं मरहिं परजाय न मारा ॥
चढ़ा जोकोप गगन[8] उपराहीं । थोरे साज मरे ते नाहीं ॥
जम्बुक[9] जूझचढ़े जो राजा । सिंह[10] साजके चढ़ैसोछाजा ॥
दो० छरहि[11] कांज कृष्ण करसाजा राजा चढ़ैरिसाय ।
सिद्धगिद्धजहँदृष्टि[12] गगनमहँबिनछरकुछनबिसाय ॥
आवहु करहुकदर[13] मससाजू । चढ़हिं बजायजहांलगिराजू ॥
होहसँजोवल[14] कुँवरजोभोगी । सब दलछेंकधरहुअबयोगी ॥
चौबिसलाख छत्रपति[15] साजे । छपनकोटि दर[16] बाजनबाजे ॥
बाइससहस[17] सिंहली चाले । गिरि[18] पहाड़ पेई सब हाले ॥
जगत बराबर वै सब चांपा । डराइन्द्रबासुकि[19] हिय[20] कांपा ॥
पदमकोटिरथसाजेआवहिं । गढ़होयखेह[21] गगन[22] कहँधावहिं ॥
जनु भौचाल जगत महँ परा । कुर्महि[23] पीठ टूटि हिय डरा ॥
दो० छत्रहिस्वर्ग[24] छायगा सूरय भयो अलोप ।
दिनहि रात असदेखी चढ़ाइन्द्रहोयकोप ॥
देखकटक[25] औमनमत[26] हाथी । बोले रतनसेन के साथी ॥
होत आव दल बहुतअसूझा । असजानव कुछ होयहैजूझा ॥
राजा तुईं योगी होय खेला । यहीदिवस[27] कहँहमभयेचेला ॥
जहांगाढ़[28] ठाकुर[29] कर होई । सङ्ग न छांड़े सेवक सोई ॥

मर्दकामिल १ फिरना २ देखना ३ पहुँचना ४ गर्दन ५ हमेशाज़िन्दा ६ वदन ७ आसमान ८ सियार ९ शेर १० फ़रेब ११ निगाह १२ लशकर तय्यार हो १३ मुक़ाबिला १४ राजा १५ फ़ौज १६—२५ हज़ार १७ पहाड़ १८ नामराजासांपोंका १९ दिल २० राख २१ आसमान २२—२४ कछुवा २३ मस्त २६ दिन २७ मुसीबत २८ मालिक २९ ॥

जो हम मरन दिवसमनताका। आजआय पूजी वह साका॥
पर जिव जाय जायनहिंबोला। राजा सत सुमेरु नाहिं डोला॥
गुरू केर जो आयसु[1] पावहिं। सौंहैं[2] होहिंऔचक्र[3]चलावहिं॥
दो० आजकराहिं रण भारथ सत बाचादै राख।
सत्तगुरूसत कौतुक[4] सत्तभरें पुनि शाख॥
गुरू कहा चेला सिध होहू। प्रेम बार[5] कै करो न कोहू[6]॥
जा कहँ शीश[7] नायके दीजै। रंग न होय जूझ जो कीजै॥
जेहिं जिय प्रेमपानि[8] भासोई। जेहि रंग मिलै वही रंगहोई॥
जो पै जाय प्रेम सों जूझा[9]। कितत पमरहि सिद्धजेहिबूझा॥
यहिसतबहुतजूझ[10]नहिंकरिये। खड्ग[11] देख पानी कै दुरिये॥
पानी कहा खड्ग की धारा। लौट पानि सोई जो मारा॥
पानी से ते आग का करई। आय बुझाय पानी जो परई॥
दो० शीश[12]दीन्हमैंआगमन[13]प्रेमपानिशिरमेल।
अबसो प्रीति निबाहूँ चलों सिद्धहोय खेल॥
राजें छेंक धरा सब योगी। दुखऊपर दुखसहैं बियोगी[14]॥
नाजिय धड़क हिये[15] डरकोई। नाजियमरन जिवन कसहोई॥
नागफांस उन्हमेली ग्रीवां[16]। हर्ष[17]नबिसमो[18]अबकोजीवां॥
जोजिव दीन्हसोलेव निरासा। बिसरेनहिंजो लहतनश्वासा॥
कर[19]किंगरीतेहि तन्तबजावा। यही गीत वैरागी गावा॥
भलहिंआनगये[20] मेलीफांसी। हिये[21] नशोचऐसीरिसनासी॥
मैंगयें फांद वही दिन मेला। जेहि दिनप्रेम पन्थ कै खेला॥
दो० परगट[22] गुप्त[23] सकल[24] महँपूररहासोनाउँ।
जहँदेखों वह देखों दूसर नहिं कहुँ जाउँ॥

हुक्म १ सामने २ नामहथियार ३ तमाशा ४ दरवाज़ा ५ गुस्सा ६ शिर ७ पानी ८ लड़ाई ९ लड़ाई १० तलवार ११ शिर १२ पहिले १३ दुखी १४ दिल १५—२१ गरदन १६—२० खुशी १७ दुःख १८ हाथ १९ ज़ाहिर २२ छिपाहुआ २३ सब २४॥

जबलग गुरुमें अहान चीन्हा । कोटि अन्तरपट[1] बिच हुत दीन्हा ॥
जो चीन्हा तौ और न कोई । तन मन जिव यौबन सब सोई ॥
होंहों कहत धोख अन्तराहीं । जो भा सिद्ध कहां परछाहीं ॥
मारे गुरू कि गुरू जियावा । और को मार मरै सब आवा ॥
सूरी मेल हस्ति[2] गुरु परू । हौं नहिं जानौं जानै गुरू ॥
गुरू हस्ति पर चढ़ै सो पेखा[3] । जगत[4] जो नास्त[5] नास्त सब देखा ॥
अंधि मीन[6] जस जल महँ धावा । जल जीवन[7] जल दृष्टि[8] न आवा ॥

दो० गुरू मोर मोरे हिये दिये तुरङ्गहि[9] ढाठ ।
भीतर करहि डुलावै बाहर नाचै काठ ॥

सो पद्मावत गुरू हौं चेला । योग तन्त जेहि कारन[10] खेला ॥
तज[11] वह बार[12] न जानौं दूजा । जेहि दिन मिलै यात्रा पूजा ॥
जीव काढ़ भुइँ धरौं ललाटू[13] । वहि कहँ देउँ हिया[14] महँ पाटू[15] ॥
को मोहिं ले सो छुवावै पाया । नौ अवतार[16] देइ नइ काया[17] ॥
जीव चाहि[18] सो अधिक[19] पियारी । मांगै जीव देउँ बलिहारी ॥
मांगै शीश[20] देउँ मैं ग्रीवां[21] । अधिक तरै जो मारै जीवां ॥
अपने जिव कर लोभ न मोहीं । प्रेम बार होय मांगौ ओहीं ॥

दो० दरशन वह का दिया जस हौं सुभिखारी पतङ्ग ।
जो करवट[22] शिर सारी मरत न मोरौं अङ्ग ॥

पद्मावत कमला शशि[23] ज्योती । हँसै फूल रोवै तब मोती ॥
परजापतें[24] हँसी औ रोजू[25] । लायेदूत होय नित[26] खोजू ॥
जबहिं सूर्य्य[27] कहँ लागा राहू । तबहिं कमल[28] मन भयो अगाहू[29] ॥
बिरह अगस्त[30] जो बिसमो[31] भयउ सरवर[32] हरष[33] सूखसबगयउ ॥

करोरों परदाका बीच १ हाथी २ देखना ३ दुनिया ४ नाशहोनेवाला ५ मछली ६ ज़िन्दगी ७ निगाह ८ घोड़ेकीवाग ९ वास्ते १० छोड़ना ११ दरवाज़ा १२ शिर १३—२० दिल १४ तपन १५ नयाजन्म १६ बदन १७ ज्यादा १८—१९ गरदन २१ शिरउतारना २२ चांद २३ बाप पद्मावत २४ रोना २५ हररोज़तलाश २६ तथा राजारतनसेन २७ तथा पद्मावत २८ खबर २९ आग ३० तेज ३१ तालाब ३२ खुशी ३३ ॥

परगट[1] ढारसकै नहिं आंशू। घुटघुट मांसगुप्त[2] होयनाशू॥
जसदिनगांझरयनिहोयआई। बिगसतकमल गयो मुरझाई॥
राता[3] बदन गयोहोय सेता[4]। भवँत भँवर रहिगई अचेता॥
दो० चितहि[5] जोचित्र[6] कीन्हधन[7] रोंरोंअङ्गसमीप।
सहस[8] सालदुखआहभर मुरछ[9] परीकामीप॥
पद्मावत संग सखी सयानी। गनकेनखतपीरशशि[10] जानी॥
जानेहुमर्म[11] कमलकर[12] कोई। देख बिथाबिरहिन की रोई॥
बिरहा कठिन काल की कला। बिरहन सही कालपर भला॥
काल काढ़लैजीव सिधारा। बिरह काल मारे पर मारा॥
बिरह आग पर मेलै आगी। बिरहघावपर घावबिजागी[13]॥
बिरह बानपर बान पसारा। बिरहरोग पर रोग सँचारा॥
बिरहसाल[14] परसाल नवेला। बिरहकाल परकालदहेला[15]॥
दो० तनरावनहोयशिरचढ़ाबिरहभयोहनुमन्त।
जारे ऊपर जारै तजै[16] न कै भसमन्त॥
कोइकुमोद[17] परसहिंकरपाया।कोइमलयागिरि[18] छिड़कहिंकाया॥
कोइमुखशीतल नीर[19] चुवावै। कोइ अंचलसों पवनडुलावै॥
कोइमुखअम्रतआनानिचोवा।जनुबिषदीन्हअधिक[20] धन[21] सोवा॥
जोवहिंश्वास[22] खनहिखनसखी। कबजिव फिरै पवनऔपँखी॥
बिरहकालहोयहिये[23] जो पैठा। जीव काढ़ लै हाथे बैठा॥
खनक मवनबांधाखनखोला। गहेसि[24] जीभमुखजायनबोला॥
खनहिबीज[25] की बाननमारा। कँपकँप नारिमरै बिकरारा[26]॥
दो० कतहूं बिरहन छांडै भाशशिगहन[27] गिराश।
नखतचहूँदिशि रोवहिं अँधरेधरतअकाश॥

ज़ाहिर १ छिपा २ लाल ३ सफ़ेद ४ याद ५ तसवीर ६ पद्मावत ७ हज़ार ८ बेहोशीदूरहोतो ९ चाँद तथा पद्मावत १० भेद ११ कोकाबेलो १२—१७ आग १३ सुराख़ १४ भारी १५ छोड़ना १६ चन्दन १८ ठंढापानी १९ बहुत २० पद्मावत २१ हरघड़ी २२ दिल २३ रुकना २४ बिजुली २५ बेकरार २६ चाँदगहन २७॥

घड़ीचारइमि[१]गहनगिराशी। पुनिविधि[२]हिये[३]ज्योतिपरकाशी
निसस[५] ऊभभरलीन्हेश्वासा। भइअधार[६] जीवनकीआशा
विनवहिं सखी छूटशशि[७]राहू। तुम्हरीज्योतिज्योतिसबकाहू
तूँशशिवदन[८]जगत[९]उजियारी। कैहरलीन्ह कीन्ह अँधियारी
तूगजगामिनि[१०]गर्व[११]गहेली। अबकसअससतछांड़दहेली[१२]
तूहर लंक[१३] हेराई केहर[१४]। अब कसहार करेसि है हर
तू कोकिलबैनी[१५] गजमोहा। कौनब्याधहोय गहीनिछोहा[१६]
दो० कमलकरी तूपद्मिन गइ निशि[१७] भयो बिहान।
अबहुँन सम्पुट खोलिसि जोरिउठा जगभान[१८]॥
भाननाउँ सुनिकमल बिकासा। फिरकै भँवरलीन्ह मधुवासा
शरदचन्द्र[१९]मुखजीभ उघेली। खंजननयन[२०] उठी करकेली
विरह न बोल आव मुखमाई। मरमर बोल जीवबरियाई[२१]
डोलविरहद्दारुण[२२]हिय[२३]कांपा। खोलनजायविरहदुखझांपा
उदधि[२४]समुद्रजसतरँग[२५]दिखावा। चष[२६]घूमहिंमुखबातन आवा
यहशठ लहरलहर परधावा। भँवरपरा जिव थाह नपावा
सखीआन बिष देवतो मरनू। जीव न पेट मरन का डरनू
दो० खनै[२७] उठै खनबूड़ै अस हिय कमल सकेत[२८]।
हीरामनहिं बुलावहि सखीकहन जिव लेत॥
चेरी धाय सुनत खन धाई। हीरामन लै आय बुलाई
जनहु वैद्य औषधलैआवा। रोगियें रोग मरतजिव पावा
सुनतअशीशनयनधनखोली। विरहबैनकोकिलजिमि[२९]बोली
कमलहिविरहविथाजसबाढ़ी। केसर[३०] बरनपीर हिय काढ़ी

इमतरह १ ईश्वर २ दिल ३ रोशनी ४ बेहोश ५ कठुखाया ६ चाँद ७ चाँदके मुंह ८ दुनियां ९ हाथीकोचाल १० गरूर ११ भारी १२ कमर १३ चीता १४ आवा[ज] १५ बेदर्द १६ रात १७ सूर्य १८ कातिककी पूरनमासीका चाँद १९ ममोलाकीआँख २[०] भारी २१ मुशकिल २२ दिल २३ नामसमुद्र २४ लहर २५ आँख २६ कभूं २७ बन्द २[८] जिमतरह २९ पीला ३० ॥

कित कमलहि भाप्रेम अँगूरू। जो पै गहन लेह दिनसूरू[1] ॥
पुरयन छाँहि कमल की करी। सकल[2] बिथामुनिअसतुमहरी॥
पुरुष गँभीर[3] न बोलहिं काहू। जोबोलहिं तो और निबाहू ॥
दो० एतना बोल कहतमुख पुनि होइगई अचेत।
पुनिकै चेत सँभारी वही बकत मुखलेत ॥
और दग्ध[4] का कहों अपारा।सतीजोजरैकठिन[5]असझारा॥
होय हनुमन्त पैठहै कोई। लङ्का दाह[6] लाग तन सोई ॥
लङ्काबुझी आग जो लागी। यहिनबुझैलसआंचबिजागी[7]॥
जनहु अगिनके उठहिं पहारा। वैसब लागहिं अंगअँगारा ॥
कट कुट मांस सराग[8] पुरोवा। रक्तकी आंशु मांस सबरोवा ॥
खनक[9] बार मांस अस भूँजा। खनहिंचपायसिंह[10] असगूँजा॥
यहरी दग्ध हत अतममरीजे। दग्ध न सही जीवपर दीजे ॥
दो० जहँलगचन्दनमलयागिरि[11] औ सायर[12] सबनीर[13]।
सबमिल आय बुझावहिं बुझहि न आगशरीर ॥
हीरामन जो देखेसि नारी। प्रीति बेलउपजी[14] हिय[15] बारी॥
कहेसिनतुमकसहोहुदहेली[16]। उरझी प्रेम प्रीतिकी बेली ॥
प्रीतिबेल जन उरझै कोई। उरझा मुयें न छूटै सोई ॥
प्रीति बेल ऐसे तन डाढ़ा। पलहत सुखबाढ़त दुख बाढ़ा॥
प्रीति बेलकी अमर को बोई। दिन दिनबढ़ै क्षीण[17] नहिंहोई॥
प्रीतिबेल संग बिरह अपारा। स्वर्ग[18] पतार जरै तेहिझारा॥
प्रीति अकेल बेल जहँ छावा। दूसर बेल न सरवर[19] पावा ॥
दो० प्रीतिबेल उरझायजब तबसुजान सुखसाख।
मिले प्रीतमआयके दाख[20] बेल रस चाख ॥
पद्मावत उठि टेके पाया। तुमहुँतो देखौ प्रीतम छाया ॥

सूर्य १ सब २ अच्छे लोग ३ जलन ४ मुशकिल ५ जलाना ६ आग ७ सीख ८ कभी ९ शेर १० चन्दन ११ तालाव १२ पानी १३ पैदा १४ दिल १५ भारी १६ घटना १७ आसमान १८ बराबरी १९ अंगूर २० ॥

कहतलाज औौर हिये[१]न जीव । इकदिश[२]आगदुसरदिशपीव ।
तुमसो मोर खेवक[३] गुरु देवा । उतरों पार तेही विधि खेवा ।
सूर[४] उदयगढ़ चढ़त भुलाना । गहने गहा कमल कुँभलाना ।
औौ हत होय मरों नहिं सूरी । यह शठ मरों जो नेरहि दूरी ।
घट महँ वकत वकत भा मेरू[५] । मिलहिनमिलहिपरातसफेरू ।
दमनहिं[६]नलहिं[७]जोहंसमिलावा । तब हीरामन नाउँ कहावा ।

दो० मूर[८] सजीवन दूर है सालै[९] शक्ती बान ।
प्राण मुक्ति[१०]अबहोतहै बेग[११]देखावहिआन ॥

हीरामन भुइँ धरा ललाटू[१२] । तुमरानीयुगयुग[१३]सुखपाटू[१४] ।
जेहिके हाथ जरी औौ मूरी[१५] । सो योगी अब नाहीं दूरी ।
पिता तुम्हार राज कर भोगी । पूजे बिप्र[१६] मरावै योगी ।
पँवर[१७]पँवर कुतवाल सो बैठा । प्रेमक लुब्ध[१८]सुरँगहोयपैठा ।
चढ़त रयनिगढ़ होयगा भोरू । आवत बार[१९] धराके चोरू ।
अब लैगये देय वह शूरी । तेहिसोअगाह[२०] बिथातुमपूरी ।
अबजिव तुम काया[२१]वहयोगी । काया रोग जान पै रोगी ।

दो० रूप तुम्हार योगी आपन पिंड कमावा फेर ।
रहा हेराय खंड तेहि आपै कालन पावत हेर ॥

हीरामन जो बात यहि कही । सूर्य्यकीगहन चांद पुनिगही ।
सूर्य्यकीदुखजोशशि[२२]होयदुखी । सोकित दुखमानै करमुखी ।
अबजो योगि मरै मोहिं नेहा[२३] । मोहिंवहसाथ धर्तगगनेहा[२४] ।
रहै तो करों जन्म भर सेवा । चलैतो यहजिव साथपरेवा ।
कौनसो कर[२५]लैगहि[२६]गुरुसोई । पर काया[२७] प्रवेश जो होई ।
पलटसो कौन पंथ[२८]बिधिखेला । चेला गुरू गुरू होय चेला ।

छाती १ इकतरफ़ा २ मल्लाह ३ सूर्य्य ४ मुलाक़ात ५ रानीदमन ६ नाम राजा ७ नाम बूटी ८ सुराख़ ९ आख़िर १० जल्द ११ शिर १२ हमेशा १३ तख़्त १४ जड़ १[५] आक़बत १६ ड्योढ़ी १७ प्रेमका भराहुआ १८ दरवाज़ा १९ ख़बर २० वदन २१ चांद २[२] मुहब्बत २३ ज़मीन–आसमान २४ हाथ २५ पकड़ना २६ बदन २७ राह २८ ॥

कौन खण्ड अस रहा लुकाई। आवै काल हेर[1] फिर जाई॥
दो० चेला सिद्ध[2] सो पावै गुरुसों करै[3] अछेद।
गुरू करै जो कृपा कहै सो चेला भेद॥
अनरानी तुम गुरु वह चेला। मोहिं पूँछहु कै सिद्ध नवेला[4]॥
तुम चेला कहँ परशन भई। दरशन देय मँडफ चलगई॥
रूप गुरू कर चेलहि डीठा[5]। जितसमायहोयचित्र[6]सोपैठा॥
जीव काढ़लै तुम अपसई[7]। वह भा काया जिव तुम भई॥
कया जो लाग धूप औ सेऊ[8]। कया न जान जानिपै जीऊ॥
भोग तुम्हार मिला वह जाई। जो वहबिथासो तुमकहँआई॥
तुम वहकी घट वह तुम माहां। काल कहां पावै वह छाहां॥
दो० अस वह योगी अमर[9] भा परकाया परवेश।
आवकाल गुरुतनदेखी फिर सोकरै अदेश[10]॥
सुनि योगीकी आमर करनी। न्योरी[11] बिरहबिथाकीमरनी॥
कमलकरीहोय बिकसा[12] जीव। जनु रविउदय छूटगासीव[13]॥
जो भा सिद्धको मारै पारा। नींबूरसते होय जो छारा[14]॥
कहो जाय अब मोर सँदेशू। तजो[15]योगअब होहुनरेशू[16]॥
जन जानहु हौं तुमसों दूरी। नयनहिं मांझ गड़ी वहशूरी॥
तुम प्रस्वेत[17] घटै घट केरा। मोहिंघटजीवघटतनहिंबेरा[18]॥
तुम कहँ पाट[19] हिये[20] मैं साजा। अब तुम मोर दुहूँ जगराजा॥
दो० जोरीजियहिंमिलगलरहैमरहिंतोएकहिंदोउ।
तुमपैजियजनहोयकुछ मोजियहोयसोहोउ॥

खण्डइक्कीसवांशूलीखण्डरतनसेन॥

बाँधतपा[21] आनी जहँशूरी। जुरेआय सब सिंहल पूरी॥

देखना १—५ कमाल २ दुईनराखै ३ नया ४ तसवीर ६ छिपना ७ जाड़ा ८ हमेशा ज़िन्दा ९ सलाम १० आखिर ११ खिलना १२ सूर्य्य के उदय जाड़ा जाय १३ राख१४ छोड़ना १५ बहादुर १६ पसीना १७ देर १८ तख़्त १९ दिल २० योगी २१॥

पहिले गुरुदेव कहँ आना। देखरूप सबकोउ पछताना॥
लोगकहैं यहि होयन योगी। राजकुँवर कोउ अहै बियोगी[1]॥
काहू लाग भयो है तपा। हिये[2] सुमाल केर मुखजपा॥
जस मारेकहँ बाजा तूरू[3]। शूरीदेख हँसा मन्सूरू[4]॥
चमके दशन[5] भयोउजियारा। जो जहँतहां बीज[6] असमारा॥
योगी केर करो पै खोजू[7]। मग[8] यहिहोयन राजा भोजू॥

दो० सब पूँछहिं कहु योगी जात जन्म औ नाउ।
जहाँ ठाँव रावकरहँसा सोकहु केहभाउ॥

का पूँछौ अब ज़ात हमारी। हम योगी औ तपा भिखारी॥
योगी ज़ात कौन हो राजा। गारिन कोहमार[9] नाहिं लाजा॥
निलज भिखारलाजजेहिंखोई। तेहिकी खोज परै जन कोई॥
जाकर जीव मरे पर बसा। शूरीदेख सो कसनाहिं हँसा॥
आज नेहसों होय निबेरा[10]। आजभूमि[11] तज[12] गगन[13] बसेरा॥
आज कया[14] पिंजर बँद टूटा। आजहिंप्रान परेवा[15] छूटा॥
आज नेह सो होय नियारा[16]। आज प्रेमसँग चलापियारा॥

दो० आजअवध[17] सर[18] पहुँची गयेजाउँसुखरात[19]।
बेग[20] होहु मोहिं मारहुजन चालहु यह बात॥

कहहिंसँवरि जेहिचाहेसि सँवरा। हमतुमकरहिंकेतिकरभँवरा॥
कहेसि वही सँवरों हर फेरा। मुयेजीत आहों जेहि केरा॥
औ सुमिरों पद्मावत रामा। यहिजिवन्योछावरतेहिनामा॥
रक्त की बूँद कया[21] जब परहीं। पद्मावत पद्मावत कहहीं॥
रहै तो बूँद बूँद महँ ठाऊँ[22]। परहुँ तो सोई लै लै नाऊँ॥
रोम रोम तन तासो ओधा[23]। सूतहि[24] सूत बेध जिवसोधा॥
हाड़हिहाड़ शब्द[25] सो होई। नस नस माहँ उठै धुनिसोई॥

दुखी १ दिल २ नाम बाजा ३ नाम मर्द कामिल ४ दांत ५ बिजुली ६ तलाश७ शायद ८ गुस्सा ९ जुदाई १०—१६ ज़मान ११ छोड़ना १२ आसमान १३ बदन १४ उड़नेवाला १५ हद १७ बराबर १८ लाल १९ जल्द २० बदन २१ जगह २२ बेधना २३ सुराख़ २४ आवाज़ २५॥

दो॰ खाय बिरह गाताकर गूद मांस किये हान।
हों पुनि सांचा होयरहा वहकीरूप समान[1] ॥
योगिहि जबहिं गाढ़[2] असपरा। महादेव कर आसन टरा ॥
औ हँसि पार्बती सों कहा। जानहुसूर[3] गहन असगहा ॥
आज चढ़े गढ़ ऊपर तपा[4]। राजैं गहा सूर तब छिपा ॥
जग देखैगा कौतुक[5] आजू। कीन्ह तपा मारे कहँ साजू ॥
पार्बती सुनि पाँयन परी। चलौ महेश[6] देखैं इक घरी ॥
भेष भाट भाटिन कर कीन्हा। औ हनुमन्तबीर सँगलीन्हा ॥
आय गुप्त[7] कै देखन लागे। वह मूरत कस सती सभागे[8] ॥
दो॰ कटक[9] असूझदेखके आपन राजागर्ब[10] करेय।
दईकी दिशा[11] न देखै वह काकहँ जय[12] देय ॥
आसनलिये रहा हो तपा। पद्मावत पद्मावत जपा ॥
मन समाध तासों धुन लागी। जेहिं दरशन कारण बैरागी ॥
रहा समाय रूप वह नाऊँ। और न सूझबार[13] जहँजाऊँ ॥
औ महेश[14] कहँकरो अदेशू[15]। जेहियहपन्थ[16] दीन्हउपदेशू ॥
पार्बती पुनि सत्य सराहा। औ फिरमुखमहेशकरजाहा[17] ॥
हिये[18] महेश[19] भईजोमहेशी[20]। कित शिरनावहिं ये परदेशी ॥
मरतेहुँ लीन्ह तुम्हारा नाऊँ। तुमचित कीन्ह रहीयहठाऊँ[21] ॥
दो॰ मारतही परदेशी राखलेहु यहि बीर।
कोइ काहूकरनाहीं जो हो चलैन तीर ॥
लै सँदेश सोटा[22] गा तहाँ। शूली देहिं रतन को जहाँ ॥
देख रतन हीरामन रोवा। राजा जिव लागनहठ खोवा ॥
देख रोदन[23] हीरामन केरा। रोवहिं सब राजा मुखहेरा[24] ॥
माँगहिंसबबिधिना[25] सों रोई। की उपकार[26] छुड़ावै कोई ॥

समाना १ मुशकिल २ सूर्य्य ३ योगी ४ तमाशा ५ महादेवजी ६—१४—१६ छिपकर ७ सतीकी तरह क़ायम ८ फ़ौज ९ ग़रूर १० ईश्वरकी तरफ़ ११ जीत १२ दरवाज़ा १३ सलाम १५ राह १६ देखना १७ दिल १८ मेहरबानी २० जगह २१ तोता २२ रोना २३ देखना २४ ईश्वर २५ कोशिश २६ ॥

कहि सँदेश सब बिपतिसुनाई । बिकल बहुत कुछकहीनजाई ॥
काढ़ प्रान बैठ लिये हाथा । मरैतो मरों जियों इक साथा ॥
सुनि सँदेश राजा तब हँसा । प्रानप्रान घट घट महँ बसा ॥

दो० हीरामन औ भाट दसौंधी भये जिवपर इकठाउँ ।
चल सो जाय अब देख तहँ जहँ बैठो रहिराउँ ॥

राजा रहा दृष्टि[१] के औंधी । रहिनसका तब भाट दसौंधी ॥
कहेसि मेलकै हाथ कटारी । पुरुष न आछे बैठि पिटारी ॥
कान्ह कोप कै मारा कंसू । गोकुल मांझ बजावा बंसू ॥
गन्धर्बसेन जहां रिस बाढ़ा । जाय भाट आगे भा ठाढ़ा ॥
ठाढ़ देख सब राजा राऊ । बायें हाथ दीन्ह बरभाऊ[२] ॥
बोला गन्धर्बसेन रिसाई । कैस योगि कसभाट असाई[३] ॥
योगी पानि आग तू राजा । आगहिपानिजूझ[४] नहिंछाजा ॥

दो० आग बुझाई पानि सो जूझ न राजा बूझ ।
लीन्हे खप्पर बार[५] तुहिं भिक्षा देहि न जूझ ॥

योगि न होय आहि सो भोजू । जानहु भेद करो सो खोजू ॥
भारथ[६] होय जूझ[७] जो ओधा । होहिं सहाय[८] आयसबयोधा ॥
महादेव रण घण्ट बजावा । सुनिकैशब्द[९] ब्रह्मचलिआवा ॥
वासुकि[१०] फण पतार सों काढ़ा । अष्टोकली[११] नागभा ठाढ़ा ॥
छप्पनकोटि बसन्दर[१२] बरा । सवालाख पर्बत फुरहरा[१३] ॥
चढ़े अस्त्र[१४] लै कृष्ण मुरारी । इन्द्र लोग सबलाग गुहारी ॥
तैंतिस कोटि देवता साजा । औ छानबे मेघ दल गाजा ॥

दो० नव्वे नाथ चलिआवहिं औ चौरासी सिद्ध ।
आज महाभारथ चलै गगन[१५] गरुड़[१६] औगिद्ध ॥

भइअज्ञा[१७] को भाट औभाऊ[१८] । बायें हाथ दिये बरभाऊ[१९] ॥

निगाह१ आखिरकार २ बेमदद ३-१ल्लड़ाई ४ दरवाज़ा ५ भारी लड़ाई ६ मारना ७ मदद ८ आवाज़ ९ नाम राजा सांपोंका १० नाम हाथी ११ आग १२ मौजूद १३ हथियार १४ आसमान १५ नाम राजा पक्षी १६ हुक्म १७ सलाम १८ ॥

को योगी अस नगरी मोरे। जो दै सेंध चढ़ै गढ़ चोरे॥
इन्द्र डरै नित नावै माथा। जानत कृष्ण शेष जे नाथा॥
ब्रह्मा डरैं चतुरमुख[1] जासू। औ पाताल डरै बल[2] बासू[3]॥
धरति डरै औ मंडफ मेरू[4]। चन्द्रसूर्य्यऔगगन[5]गँभीरू॥
मेघ डरहिं बिजुली जेहि डीठी[6]। कूर्म[7] डरै धरती जेहिं पीठी॥
चहौंतोसबमाकौं[8] धर केशा। औरकोगिनत[9] अनेगनरेशा[10]॥

दो० बोला भाट नरेश सुनि गर्ब[11] न छाजा जीव।
कुंभकरणकी खोपड़ी बूड़त बाचा[12] भीव[13]॥

रावण गर्ब बिरोधा[14] रामू। ओही गर्ब भयो संग्रामू[15]॥
तसरावण असको बरबंडा[16]। जेहिंदशशीश[17]बीसभुजदंडा॥
सूरज जेहि की तपै रसोई। निज बसन्दर धोती धोई॥
सूक[18]सुनेटा[19]शशिमसयारा[20]। पवन[21]करैनित बार[22]बोहारा॥
मीच[23] लाय कै पाटी बाँधा। रहा न दूसर सपने काँधा॥
जो अस बज्रटरहि नहिंटारा। सोउमरदोउतपसी[24]करमारा॥
नाती पूत कोटि दश अहा। रोवन हार न एको रहा॥

दो० ओछ जान के काहूजनकोइगर्ब[25]करेय।
ओछी पार दई[26] है जीत पत्र जो देय॥

अबजो भाट तहाँ हत आगे। बिनय[27]उठा राजा रिसलागे॥
भाट अहै ईश्वर की कला। राजा सबराकहँ[28] अरकला॥
भाट मीच पै आपन दीसा। ताकहँ कौन करै रिस रीसा॥
भयो रजाय[29] सुगन्धब सेनी। काहि मीचके चढ़ा नसेनी[30]॥
कह आनी बानी अस पढ़ै। करासि न बुद्ध[31] भेंट जो कढ़ै॥

चारमुँह १ राजादैत्य २ नाम राजा साँपोंका ३ नाम पहाड़ ४ आसमान ५ निगाह ६ कछुआ ७ फेंकवादेना ८ गिनती ९ राजा १० ग़रूर ११ बचना १२ नामपहलवान १३ सज़ादेना १४ लड़ाई १५ ज़बरदस्त १६ शिर १७ नाम गुरू राचसोंका १८ चोप-दार १९ चाँद मशालची २० हवा २१ दरवाज़ा २२ मौत २३ श्रीराम लक्ष्मण २४ ग़रूर २५ कमज़ोर कीतरफ़ २६ अर्ज़ २७ मुकाबिलानचाहो २८ हुक्म २९ सीढ़ी ३० अक़िल ३१ ॥

जातभाटकितऔगुन[1] लावस। बायें हाथ राजबरभावस[2]॥
भाट नाउँ का मारों जीवां। अबहूँ बोल नायके ग्रीवां[3]॥
दो० तुइरे भाट वै योगी तोहि यह कहांक संग।
कहांचढ़ै असपावा कहां भयो चित भंग॥
जो सत पूँछेसि गन्ध्रब राजा। सत पै कहूँ परै नहिं गाजा[4]॥
भाटहि काहि मीचसों डरना। हाथ कटार पेट हन मरना॥
जम्बूद्वीप चितावर देशू। चित्रसेन बड़ तहां नरेशू[5]॥
रतनसेन यहि ताकर बेटा। कुलचौहान जाय नाहिं मेटा॥
खांड़े अचल[6] सुमेरु सुभारू। टरै न जो लागै संसारू॥
दान सुमेरु देतनहिं खांगा[7]। जो यहमांग न औरहि मांगा॥
दाहिन हाथ उठायों ताही। औरकोअस बरभावोजाही॥
दो० नाउँ महापात्र मुहिं तेहेंकि भिखारी डीठ[8]।
रिसलागे खरिबात कहि खरिपैकहै बसीठ[9]॥
ततखन[10] सुनिमहेश[11] मनलाजा। भाटकिरानि[12] कैबिनवा[13] राजा
गन्ध्रबसेन तू राजा महा। हौं महेश मूरत सुनि[14] कहा॥
पै जोबात होय भल आगे। कहा चही काभा रिस लागे॥
राजकुँवर यहिहोहिं न योगी। सुनि पद्मावतभयो वियोगी[15]॥
जम्बूद्वीप राजघर बेटा। जोहै लिखा सो जाय न मेटा॥
तूरे सुवें जाय वह आना। औजाकर बिरोक[16] तेंमाना॥
पुनियहबात सुनीशिवलोका। कर सुविवाह धर्म है तोका॥
दो० मांग भीख खप्पर लिये मुये न छांड़े बार[17]।
बूझदेखजो कनककचरी[18] भीखदेह नाहिंमार॥
औहट[19] होहरे भाट भिखारी। का तू मोहिं देइ अस गारी॥
को मोहिंयोग[20] जगतहोइपारा। जासों हेरों[21] जाय पतारा॥

बेहुनर १ सलाम २ गर्दन ३ बिजुली ४ राजा ५ तलवार बहादुर ६ कमी७ शोख८ वकील ९ उसीवक्त१० महादेवजो ११ मानिन्द १२ तारीफ़ १३ कहामान १४ दुखी १५ गुस्सा १६ दरवाज़ा १७सोनेकी कटोरी १८ दूरहो १९ लायक २० देखना २१ ॥

योगीयती आव जित कोई। सुनत त्रास[1] मान भा सोई॥
भीखलेहु फिर मांगो आगे। यहिसब रयनि[2] रहै गढ़लागे॥
जसचहिइच्छ[3] चहूँतेहिदीन्हा। नाहिं बेध शूली जिवलीन्हा॥
जेहि असमाधहोयजिवखोवा। सो पतंग दीपक तस रोवा॥
सुर नर मुनि गुनिगन्धब देवा। तेहिको गिने करहिं नितसेवा॥

दो० मोसों को सरवर[4] करै अरे सुनि झूठेभाट।
क्षार[5] होय जोचालों गज[6] हस्तिन[7] केठाट॥

योगी धर मेले सब पाछे। उरये माल[8] आये रण काछे॥
मंत्रिन[9] कहा सुनो हो राजा। देखहुअब योगिनकर काजा॥
हमजोकहातुमकरहुनजूझा[10]। होतआवदर[11] जगतअसूझा॥
खन[12] इकमहँ झुरमटहोबीता। दरमहँ चढ़े जोरहै सोजीता॥
कै धीरज राजा तब कोपा। अङ्गद[13] आय पांवरण रोपा॥
हस्ति[14] पांचजोअगमन[15] धाये। ते अङ्गद धर सूँड़ि फिराये॥
दीन्हउड़ाय स्वर्ग[16] कहँ गये। लौटन फिरें तहहिं के भये॥

दो० देखतरहे अचम्भो योगी हस्ती बहुरन आय।
योगीकर अस जूझब भमि[17] नलागत पाँय॥

कहहिं बात योगी हम पाये। क्षिन इक मांह चहतहैं धाये॥
जोलहिधावहिंअसकाखेलहु। हस्तिहिंकेर जूह[18] सब पेलहु॥
जोगज[19] पेल होयरण आगे। तस बगमेल करहु सँग लागे॥
हस्तिकीजूहआयअँगसारी[20]। हनुमत तबै लँगूर पसारी॥
जोहिसो सेन[21] बीचरणआई। सबै लपेट लँगूर चलाई॥
बहुतकटूट भये नौ खण्डा। बहुतक जायपरे ब्रह्मण्डा[22]॥
बहुतकभुवन[23] सोहअत्रीखा[24]। रहे जो लाख भये ते लेखा॥

डर १ रात २ चाहना ३ बराबरी ४ राख ५ हाथी मस्त ६ हाथी ७ पहलवान ८ सलाहकार ९ लड़ाई १० फ़ौज ११ पल १२ बालि का बेटा १३ हाथी १४ पहिले १५ आसमान १६—२२ ज़मीन १७ हलका १८ मस्तहाथी १९ मुक़ाबिला २० फ़ौज २१ फिरना २३ बीच २४॥

दो० बहुतकपरे समुद्रमहँ परतनपावा खोज।
जहां गर्व[1] तहँ पीरा जहां हँसी तहँ रोज[2] ॥

फिर आगे का देखै राजा। ईश्वर[3] केर घण्टरण बाजा॥
सुनाशंख जो विष्णु अपूरा। आगे हनुमत केर लँगूरा॥
लीन्हें फिरैं लोक ब्रह्मण्डा। स्वर्ग पतारलोवा मृतमण्डा[4]॥
बलि[5] बासुकि[6] औ इन्द्रनरेंदू[7]। राहु नखत सूरय औ चन्दू॥
जामवन्त दानव राक्षसपुरे। अहतो बज्र[8] आय रण जुरे॥
जेहिकर गर्व[9] करतहतराजा। सो सब फिरि बैरीहोइसाजा॥
जहँवां महादेव रणखड़ा। शीशनाय नृप[10] पांयन परा॥

दो० केहिकारण[11] रिसकीजिये हौंसेवक औ चेर।
जेहि चाही तेहि दीजिये बारि[12] गुसाईं केर॥

जबमहेश[13] उठकीन्हबसीठी[14]। पहिले कडु अन्तहोय मीठी॥
तूगन्धर्व राजा जग पूजा। गुण चौदहशिख देइको दूजा॥
हीरामन जोतुम्हार परेवा[15]। गाचितौर औ कीन्हेसि सेवा॥
तेहि बुलाय पूँछो वह देशू। औपूँछो योगिहि जस भेशू॥
हमरेकहत रोष नाहिं मानो। जो वह कहै सोई परमानो[16]॥
जहांबारितहँआवबरओका। कर बिवाह धर्म बड़ तोका॥
जो पहिले मन माननकांधे। परखै रतन गांठ तब बांधे॥

दो० रतन छिपाये ना छिपै पारखहोय सो पेष।
घाल कसौटीदीजियो कनक[17] कचोरीभेष॥

हीरामन जो राजैं सुना। रोष[18] बुझाय हिये[19] महँ गुना॥
आज्ञाभई बोलावहु सोई। पण्डितहूते दोष[20] नहिं होई॥
एककहतसहसक[21] दशधाये। हीरामनहिं बेग लै आये॥

ग़रूर १ रोना २ महादेवजी ३ ज़मीन ४ नामराजादैत्य ५ नामराजासांप ६ राजा ७ पत्थर ८ ग़रूर ९ राजा १० वास्ते ११ लड़को १२ महादेवजी १३ वकालत १४ जानवरपरिन्द १५ यक़ीन १६ सोनेकीकटोरी १७ गुस्सा १८ दिल १९ क़सूर २० हज़ार २१ ॥

खोला आगे आन मँजूसा[1]। मिलानिकसिबहुदिनकरूसा ॥
अस्तुतिकरतमिलाबहुभांती[2]। राजैं सुना हिये भइ शांती[3] ॥
जानो जरत अगिन जलपरा। होयफुलवार रहस हियभरा ॥
राजैं मिल पूँछी हँस बाता। कसतनपियरबरनमुखराता[4] ॥
दो० चतुर[5] वेद तुम्ह पण्डितपढ़े शास्त्र वो वेद।
कहांचढ़े योगीगढ़ आन कीन्ह घर भेद ॥
हीरामन रसना[6] रस खोला। दैअशीश औ अस्तुतबोला ॥
इन्द्रराज राजेश्वर महा। सुनिहिय[7] रिसकुछजायनकहा ॥
पै जो बात होय भल आगे। सेवक निडर कहै रिस लागे ॥
सुवा सुफल अमृत पैखोजा। होय न बिक्रम[8] राजा भोजा ॥
हों सेवक तुम आदि[9] गुसाईं। सेवा करों जियों जब ताईं ॥
जो जिव दीन्ह देखावा देशू। सोपै जिय महँ बसै नरेशू[10] ॥
जो वह सँवरै एकै तोहीं। सोईपंख जगत रतिमोहीं[11] ॥
दो० नयन[12] बैन औ श्रवण सबही तोर प्रसाद।
सेवामोर यही नित बोलों आशिरबाद ॥
जोअससेवक जेहि तप[13] कसा। तेहिक जीभ पै अमृतबसा ॥
तेहिं सेवक के करमहिं दोषू[14]। सेवा करत करै पति रोषू[15] ॥
औजेहिदोषनिदोषहिं[16] लागा। सेवक डरा जीव लै भागा ॥
जो पक्षी कहवां थिर[17] रहना। ताकै जहांजाय जो डहना[18] ॥
सप्तद्वीप[19] फिर देखेउँ राजा। जम्बूद्वीप जायतब बाजा[20] ॥
तहँ चितौर देखो गढ़ ऊँचा। ऊँचराज शिर तोपहँ पहुँचा ॥
रतनसेन यह तहां नरेशू। सो आन्यो योगी कर भेशू ॥
दो० सुवासुफल लै आनीहैं तेहि गुण मुख रात[21]।

पिंजरा १ बहुततरह २ तसल्ली ३ लाल ४ चार ५ जबान ६ दिल ७ राजाविक्रमाजीत ८ सबसे पहिले ९ राजा १० लालमुहँ ११ आँख ज़बान कान १२ मेहनत की १३ क़सूर १४ गुस्सा १५ बेक़सूर १६ क़ायम १७ बाज़ू १८ सातोंमुल्क १९ पहुंचना २० लाल २१ ॥

कथा[1] पीत सो तासों सँवरों विक्रम बात॥

पहिले भयो भाट सत भाखी। पुनि बोला हीरामन साखी॥
राजा भा निश्चय[2] मन माना। बांधा रतन छोड़ कै आना॥
कुल पूँछा चौहान कुलीना। रतनन बांधे होय मलीना॥
हीरा दशन पान रँग पागी। बिहँसत बदन बीजबरतागी॥
मुन्द्रा[3] श्रवण वीन सों चांपे। राज बैन[4] उघरे सब झांपे॥
आना काटर एक तुखारू[5]। कहा सुफेरिभयो असवारू॥
फेरा तुरी[6] छतीसो खुरी। सबहिं बखानी[7] सिंहलपुरी॥

दो० कुँवर बतीसोलक्षनासहस[8] किरान जसभान[9]।
काह कसौटी कसिये कञ्चन[10] बारह बान॥

देखसूर्य्य[11] कर कमल[12] सँयोगू। अस्त[13] अस्तबोलासबलोगू॥
मिला सोवंश अंश उजियारा। भाविरोक[14] औतिलकसँवारा॥
अनिरुद्धको जोलिखजयमारा। को मेटै बाणासुर हारा॥
आजमिली अनिरुधकहँऊखा। देव इन्द्र दीन्ह शिरदूखा॥
खड्गसूर[15] भुइँ सरवर[16] केवा। बनखण्ड भँवरहोय रसलेवा॥
पच्छिम कावार[17] पूर्वकीवारी[18]। लिखीजोजोरीहोयनन्यारी[19]॥
मानुषसाज लाख मन साजा। सोईहोयजोविधि[20] उपराजा॥

दो० गये बाजन जो बाजत जिय मारणरणमाहँ।
फिर बाजनते बाजे मंगलचार उनाहँ॥

बोल गुसाईं कर मैं माना। कहिसो जगतउतर[21] कहँ आना॥
माना बोल हरष[22] जिव बाढ़ा। औ बिरोक[23] भा टीका गाढ़ा॥
दोनों मिले मनावा भला। पुरुष आप आप कहँचला॥
लीन्ह उतारी जो हत योगू। जो तप करै सो पावै भोगू॥

बदन १ यकीन २ कानकी वाली ३ सरदारी की बातें ४ घोड़ा ५-६ तारीफ़ ७ हजार ८ सूर्य्य ९ सोनाख़ालिस १० तथा रतनसेन ११ तथा पद्मावत के लायक़ १२ वाह वाह १३ टीका १४-२३ सूर्य्य १५ तालाब १६ लड़का १७ लड़की १८ अलग १९ ईश्वरनेपैदाकिया २० जवाब २१ खुशी २२॥

वह मन चित जो एकै अहा। मार लीन्ह न दूसर कहा॥
जो अस कोई जिव परछेवा[1]। देवताआय करहिं तेहिसेवा॥
दिन दश जीवन जो दुख देखा। भायुगयुगसुख जहांनलेखा॥
दो० रतनसेन काबरनों[2] पद्मावत कर ब्याह।
मन्दिरबेग[3] सँवारो मन्दिर तोरा छाह॥

खण्डबाईसवांब्याहराजारतनसेनऔरपद्मावत॥

लगन धरी औरचा बिवाहू। सिंहल निवत फिरा सबकाहू॥
बाजन बाजे कोटि पचासा। भाआनँद सगरे कैलासा॥
जेहिदिनका नित देवमनावा। सोइ दिवस[4] पद्मावत पावा॥
चांद सूर्य्य मन माथे भागू। औगावहिंसब नखत[5] सुहागू॥
रचरचमाणिक[6] माड़ौ छावहिं। औभुइँराति[7]बिछावबिछावहिं॥
चन्दन खम्भरचे चहुँ पांती। माणिकदिया बरहिंदिनराती॥
घर घर मन्दिर रचे दुवारा। जहँतक नगर गीत झंकारा॥
दो० हाट बाट सब सिंहल जहँ देखी तहँ रात[8]।
धन रानी पद्मावत जाकर ऐसि बरात॥
रतनसेन कहँ कपड़ा आये। हीरा मोति पदारथ लाये॥
कुँवर सहस[9] सँग अहे सभागे। बिनय[10] करैं राजा पहँलागे॥
जेहिलग तुम साधा तप योगू। लेहु राज मानो सुख भोगू॥
मज्जन[11]करहु बिभूतउतारो। करोअस्नानचित्र[12] समसारो॥
काढ़हु मुन्द्रा[13] फटक अभाऊ। पहिरोकुण्डलकनक[14]जड़ाऊ॥
छोरहु जटा फुलायल लेहू। झारहु केश मुकुट शिरदेहू॥
काढ़हु कथा[15] चिरकुट लावा। पहिरो राता दगला सुहावा॥
दो० पांवरि[16]तजहु देहुपग पैरी आवा बांक तुखार[17]।

खेलना १ तारीफ़करना २ जल्द ३ दिन ४ तथा सहेलियां ५ जवाहिर ६ लाल ७ ८ हज़ार ९ अर्ज़ १० नहाना ११ तसवीर १२ वाली ना चीज़ १३ सोना १४ गुदड़ी १५ खड़ाऊँ १६ घोड़ा १७॥

बांध मौर धरि छत्र शिर बेग[१] होहु असवार॥

साजा राजा बाजन बाजे। मदनसहाय दोउ दलगाजे॥
औ राता[२] सोने रथ साजा। भइ बरात गोहन[३] सबराजा॥
बाजत गाजत भा असवारा। सबसिंहलने कीन्ह जुहारा[४]॥
चहुँदिश यशअल नखततराई[५]। सूरज चढ़ा चांद की ताई॥
सब दिन तपै जैस हिय[६] माहां। तैसि रात पाई सुख छाहां॥
ऊपर छत्र राति[७] तस छावा। इन्द्रलोक सब सेवा आवा॥
आज इन्द्र अप्सर[८] सों मिला। सब कैलास होहिं सिंहला॥

दो० धरती स्वर्ग[९] चहूँ दिश पूररही मशयार।
बाजत आवै मँदिर कहँ होहिं मंगलाचार॥

पद्मावत धौराहर[१०] चढ़ी। धौंकसरबि[११] जाकहँशशि[१२] करी॥
देख बरात सखिनसों कहा। यहमहँ कौनसो योगी अहा॥
कैसो योग लै ओर[१३] निबाहा। भयो सूर[१४] चढ़ चांद बिवाहा॥
कौन सिद्ध सो ऐसो अकेला। जे शिर लाय प्रेमसो खेला॥
कासों पिता बचनअसहारी। उतर[१५] नदीन्हदीन्हतेहिबारी[१६]॥
काकहँ दई ऐसो जिव दीन्हा। जेजिह मारजीत रणलीन्हा॥
धन पूरुष अस नवै न नाये। औस[१७] परसहो देश पराये॥

दो० को बरबन्द[१८] बीर अस मोहिं देखे कर चाव[१९]।
पुनि जायहि जनवासहि सखीरी बेग[२०] देखाव॥

सखी देखावहिं चमकहि बाहू। तू जसचांदसूर्य्य तोरनाहू[२१]॥
छिपा न रहै सूर्य्य परकाशू। देखकमल मनभयोविकाशू[२२]॥
वह उजियार जगत उपराहीं। जगउजियारसोतेहिपरछाहीं॥
जस रवि[२३] देखउठै परभाता[२४]। उठा छत्र देखहिं सब राता॥
वही मांभ भा दूलह सोई। और बरात संग सब कोई॥

जल्द १ लाल२—७ साथ ३ सलाम ४ छोटेसितारे ५ दिल ६ इन्द्र लोककीपरी ८ आसमान ९ महल१० सूर्य्य ११—१४—२३ चाँद १२ आखिरतक१३ जवाब१५ लड़को १६ इतमीनान १७ ज़बर्दस्त १८ चाह १९ जल्द२० खाविंद२१ खिलाना२२ भोर २४॥

सहसहिं[१]किरनरूपबिधि[२] गढ़ा। सोने के रथ आवै चढ़ा॥
मन माथे दरशन उजियारा। सौंह[३]निरखनहिंजायनिहारा॥
दो० रूपवन्त जस दरपण धन तू जाकर कन्त।
चाही जैसो मनोहरा मिला सो मनभावन्त॥
देखा चांद सूर्य्य जससाजा। सहसहिं[४]भावमदन[५]तनगाजा॥
हुलसे नयन दरश मद माते। हुलसे अधर[६] रंग रस राते॥
हुलसा बदन[७]उपररबि[८]आई। हुलसाहिया[९]कंचुक[१०]नसमाई॥
हुलसे कुच[११] कसनी बँद टूटी। हुलसेभुजबलियां[१२]करफूटी॥
हुलसी लंक कि रावण राजू। रामलषणदर[१३]साजाहिंसाजू॥
आज चांद घर आवा सूरू[१४]। आज शृंगारहोय सब चूरू॥
आज कटक[१५] जो राहत कामू। आजबिरहकरहोयसँग्रामू[१६]॥
दो० अंग अंग सब हुलसे कोइ कतहूँ न समाय।
ठांवहिं ठांव बिमोही गइ मुरछा गत आय॥
सखी सँभार पियावहिं पानी। राजकुँवर काहे कुँभिलानी॥
हमतो तोहि देखावा पीव। तू मुरझान कैस भा जीव॥
सुनहु सखी सब कहै बिवाहू। मोकहँ जैसो चांद कहँ राहू॥
तुम जानहु आवै पिउ साजा। यहधमधममोकहँ सबबाजा॥
जते बराती औ असवारा। यह सब मोरे चालन हारा॥
सो आगम[१७] देखत हों झखी। आपन रहन न देखों सखी॥
होय बिवाह पुनि होयहै गौना। गवनबतहांबहुर[१८]नहिंअवना॥
दो० अब सो मिलन कितहै सखी पराबिछोवा टूट।
तैसि गांठ पिउ जोरब जन्म न होय है छूट॥
आय बजावत बैठ बराता। पान फूल सेंदुर सब राता[१९]॥
जहँ सोने कर चित्र[२०] सँवारी। आन बरात तहां बैठारी॥

हज़ार १—४ ईश्वर २ सामने देखना ३ काम पैदा हुवा ५ होंठ ६ मुँह ७ सूर्य्य ८—१४ दिल ९ अँगिया १० छाती ११ चूड़ी १२ फ़ौज १३—१५ लड़ाई १६ दूरअँदेशी १७ लौटके १८ लाल१९ तसवीर २० ॥

मांझ[1] सिंहासन पाट[2] सँवारा । दूलह आन तहां बैठारा ॥
कनक[3] खंभ लागे चहुँ पाती । माणिक[4] दियाबरहिं दिनराती ॥
भयोअचल ध्रुव[5] योग पखेरू । फूलबैठ थिर[6] जैस सुमेरू[7] ॥
आज दईहीं कीन्ह सुभागा । जस दुखकीन्ह नेगसबलागा ॥
आजसूर[8] शशि[9] केघरआवा । चांद सूर्य्यदुहुँ भयो मिलावा ॥
दो० आज इन्द्रहोय आयोसैं बरात कैलाश ।
आजमिलीमोहिंअप्सरा[10] पूजीमनकीआश ॥
होय लाग ज्योनार पसारा । कनक[11] पत्र परसे पनवारा ॥
सोन थार मणि माणिक जरे । राय[12] रङ्क सब आगे धरे ॥
रतन जड़ाऊ खोरा[13] खोरी । जन जन आगे सौसौजोरी ॥
गडुवन हीर पदारथ लागे । देख विमोहे पुरुष सभागे ॥
जानहुँ नखत करहिं उजियारा । छिपगये दीपकऔमसयारा ॥
भइ मिल चांदसूर्य्य की कला । भा उदोत[14] तैसीनिरमला[15] ॥
जेहिंमानुषकहँज्योति[16] नहोती । तेहिभइज्योतिदेखवहज्योती ॥
दो० पांति पांति सब बैठी भांति भांति ज्योनार ।
कनक[17] पत्र दोने तरे कनकपत्र पनवार ॥
पहिले भात परोसे आना । जनहुँ सुवास कपूर बसाना ॥
झोलहिं[18] माड़ा औ घी पोई । उजियर देख पाप गयोधोई ॥
लुचई पुरी सुहारी पूरी । एकतो ताती औ सुठकँवरी ॥
खंडराखाड़ जो खण्डे खण्डे । बरी[19] अकोतर सोकहँहण्डे ॥
पुनि सँधान[20] आनेवहुसांधी । दूध दही कि मुरन्दा[21] बांधी ॥
पुनि बावन प्रकार जो आये । नहिं असदेख न कबहूँ खाये ॥
पुनिजावरे[22] पीझावर[23] आई । घृत खांड़ का कहौं मिठाई ॥

बीचोबीच १ तख्त २ सोना ३-११—१७ जवाहिरात ४ नामनखत जिसेकुतुब कहतेहैं ५ कायम ६ नामपहाड़ ७ सूर्य्य ८ चाँद ९ इन्द्रपरी १० राजाकोभाई १२ कटोरा कटोरी १३ रोशनी १४ साफ़ १५ रौनक़ १६ बारीक माड़ी १८ एकक़िस्मका खाना १९ अचार बहुत तरहका २० लड्डुआ २१ खीर २२ मुरब्बा २३ ॥

दो० जेवँतअधिक सुवासिकमुहँमहँ परतबिलाय ।
सहस[1] स्वाद सों पावै एक कौर जो खाय ॥

जेवन आवा बीन न बाजा ।.बिनबाजाहिं नहिं जेवैं राजा ॥
सब कुँवरन पुनि खैंचा हाथू । ठाकुर जेवँ तो जेवैं साथू ॥
बिनयकरहिंपण्डितबिचवाना । काहेनाहिं जेवहिं यजमाना ॥
यह कैलास इन्द्रकर बासू । जहां न अन्न न माछरमांसू ॥
पान फूल आछी[2] सब कोई । तुम कारण[3] यह कीन्हरसोई ॥
भूख तजन[4] अमृत है सूखा । धूपतो सीरक[5] नींबी रूखा ॥
नींदतो भुइँजनु सेज सपेती[6] । छांड़ो का चतुराई येती ॥

दो० कौन काजकहि कारण बिकलभयो यजमान ।
होय रजायसु[7] सोई बेग[8] देहिं हम आन ॥

तुम पण्डित जानहु सब भेदू । पहिले नाद भयो तब वेदू ॥
आदिपिता[9] जोबिधि[10] अवतारा । नादसंगजिव[11] ज्ञानसँचारा ॥
सो तुम बरज[12] नेकका कीन्हा । जेवन संगभोगबिधिदीन्हा ॥
नयन[13] बैन नासक दुइश्रवना । यहिचारहुँसँगजेवन अवना ॥
जेवन देखा नयन सिरानी । जीभहिस्वादभुक्त[14] रसजानी ॥
नासक सबै बासना पाई । श्रवनहिंका सँवरत पहुनाई ॥
तेहिं का होय नाद पै पोषा[15] । तबचारहुँकरहोयसँतोषा[16] ॥

दो० औसबसुनहुँ शब्द[17] इक जिनहिंपड़ा कुछसूझ ।
नाद सुनानि पण्डित बरज कहोसो तुमकाबूझ ॥

राजा उतर[18] सुनहु अब सोई । महि[19] डोलै जो वेद न होई ॥
नाद वेदमद[20] पैंड़[21] जो चारी । काया[22] महँते लेहु बिचारी ॥
नाद हिये[23] मनउपजीकाया[24] । जहँमदतहां पैंड़[25] नहिंछाया ॥

हज़ार १ खुसाक २ वास्ते ३ छोड़ना ४ ठण्ढारहै धूपलगनेपरभी ५ सफ़ेद बिछौ-ना ६ हुक्म ७ जल्द ८ ब्रह्मा ९ ईश्वर १० बदनमें जानआई ११ रोक १२ आंख मुँह—नाक—कान १३ खुराक़ १४ आसूदगी १५ क़रार १६ बात १७ जवाब १८ ज़मीन १९ मस्ती २० शरीयत २१—२५ बदन २२—२४ दिल २३ ॥

होय अनमद जूझ सोकरिये। जानवेद आंकुश शिरधरिये॥
योगी होय नाद सो सुना। जेहि सुनि कामजरै चौगुना॥
किये जोपरम[१] तन्तमनलावा। घूम मांत सुनि और नभावा॥
गये जो धर्म पन्थ[२] है राजा। ताकहँ पुनि जोसुनै तोछाजा[३]॥
दो० जस मदपिये घूम कोउ नाद सुनै पै घूम।
तेहिते बरजे नेकहैं चढ़ै रहस[४] के दूम॥
भइ ज्योनार फिरा खड़वानी[५]। फिरा अरगजा[६] कुहकहँबानी॥
फेरे पान फिरा सब कोई। लाग्यो ब्याहचार सब होई॥
माड़ो सोनकि गगन[७] सँवारा। बन्दनवार लाग सब बारा[८]॥
सजापाट[९] छत्र के छाहां। रतन[१०] चौक पूरी तेहिमाहां॥
कंचन[११] कलशनीर[१२] भरिधरा। इन्द्र[१३] पासआनीअप्सरा[१४]॥
गांठ दुलहिन दूलहकी जोरी। दुहूँ जगत जो जायनछोरी॥
वेद पढ़ैं पण्डित तेहि ठाऊँ। कन्या तुला राशि लै नाऊँ॥
दो० चांद सूर्य्यदोउनिरमल[१५] दोउसेयोग[१६] अनूप।
सूर्य्य[१७] चांद[१८] सो भला चांद सूर्य्यके रूप॥
दोहूँ नाऊँ लै गावहिं बारा[१९]। करहिं सोपद्मिनिमंगलचारा॥
चांद[२०] केहाथ दीन्हजयमाला। चांदआनसुरय[२१] गये[२२] घाला॥
सूरजलीन्ह चांद पहिराई। हारनखत[२३] नेरहिं सो पाई॥
पुनिधन[२४] भरअंजुलजललीन्हा। यौबनजन्मकंतकहँ दीन्हा॥
कन्तलीन्हदीन्हो धन हाथा। जोरी गांठ दुहूँ इक साथा॥
चांदसर्य्य दुइ भांवर लीन्हीं। नखतमोत न्योछावर कीन्हीं॥
फिरहिं दोउ सतफेर गुते[२५] के। सातहिंफेर गांठ सो एके॥
दो० भइ भांवर न्योछावर राजचार सब कीन्ह।

मेहनत १ राह २ तारीफ़ ३ रागसुननेमे दूनी कैफ़ियत होतीहै ४ शरबत ५ अतर ६ आसमान ७ दरवाज़ा ८ तख़्त ९ जवाहिरात १० सोना ११ पानी १२ तथाराजा१३-१८ तथा पद्मावत १४-१८ पाकसाफ़ १५ मिलना १६ लड़की १९ तथा पद्मावत२०-२४ सूर्य तथा रत्नसेन२१ गरदन २२ तथा सहेलियां २३ गीतवाले २५॥

दायजकहूँ कहांलग लिखनजायतत दीन्ह ॥

रतनसेन जो दायज पावा। गन्धबसेन आय कँठलावा ॥
मानुषचिन्तआनकुछ निन्ता। करै गुसाइन मनमहँ चिन्ता ॥
अब तुम सिंहलद्वीप गुसाईं। हम सेवक आहैं सेवकाईं ॥
जसचितोरगढ़ तुम्हरो देशू। तस तुम यहां हमार नरेशू[1] ॥
जम्बू द्वीप दूरका काजू। सिंहलद्वीप करहु नित राजू ॥
रतनसेन बिनवा[2] करजोरी। अस्तुति योग जीभकहँ मोरी ॥
तुमगुसाइँ जे छार[3] छुड़ाई। कीमानुष अति दीन्ह बड़ाई ॥

दो० जोतुम दीन्ह सोपावा जिवों जन्म सुखभोग।
नाहत खेह[4] पाय की हों योगी केहि योग ॥

धौराहर[5] पर दीन्हां बासू। सात खण्ड जहँवां कैलासू ॥
सखी सहस[6] दश सेवा पाई। जनहुँ चांदसँग नखततराई[7] ॥
कैमएडल शशि[8] केचहुँपासा। शशि सूरहि[9] लैचढ़ीं अकासा ॥
चलसूरज दिन अथवैजहां। शशि निरमल[10] तूपावसि तहां ॥
गन्धबसेन धौराहर[11] कीन्हा। दीन्ह नराजहि योगिहि दीन्हा ॥
मिलीजाहिंशशि[12] केचहुँपाहां। सूर्य्य[13] न चापै पावै छाहां ॥
अब योगी गुरुपायो सोई। उतरा योग भस्मगा धोई ॥

दो० सातखएड धौराहर[14] सात रंग नग लाग।
देखत का कैलासहिं दृष्टि[15] पाप सबभाग ॥

सातखएड सातां कैलासा। काबरणों[16] जस उत्तम बासा ॥
हीरा ईंट कपूर गिलावा। मलयागिरि[17] चन्दनसबलावा ॥
चूना कीन्ह औट गज मोती। मोतिहिचाह[18] अधिकतेहिज्योती ॥
बिश्वकर्महिं सैं हाथ सँवारा। सात खण्ड सातहिं चौपारा ॥
अतिनिरमल[19] नहिंजायबिशेखा। जसदरपनमहँदरशनदेखा ॥

राजा १ अर्ज़करना हाथजोड़के २ धूर ३—४ महल ५—११ हज़ार ६ छोटे सितारे ७ पद्मावत ८ रतनसेन ९ साफ़ १० चाँद तथा पद्मावत १२ तथा राजा ख़िलवत न करसका १३ महल १४ निगाह १५ तारीफ़ १६ चन्दन १७ ज्यादा १८ पाक़साफ़ १९ ॥

मुई नाच जनहुँ समुद्रहिलोरा । कनक[1] खम्भजनुरचोहिंडोरा ॥
रतन पदारथ[2] होय उजियारा । भूले दीपक औ मसियारा ॥
दो० तहँ अप्सर पद्मावत रतनसेन के पास ।
सातस्वर्ग[3] हाथजनुआये औसातोंकैलास ॥
पुनि तहँ रतनसेन पगधारा । जहां रतननौ सेज सँवारा ॥
पुतरी गढ़ गढ़ खम्भनकाढ़ी । जनु सजीव सेवा सब ठाढ़ी ॥
काहू हाथ चन्दन की खोरी[4] । कोइ सेंदुर कोइ गहेसिंधोरी ॥
कोइ कुंकहि केसर लिये रहैं । लावै अंग[5] रहस जनु चहैं ॥
कोई लिये कुमकुमा चोवा । धन कवचहे ठाढ़मुखजोवा[6] ॥
कोइ बीरा कोइ लीन्हे बीरी । कोइपरमलअतिसुगँधसमीरी[7] ॥
काहु हाथ कस्तूरी[8] मेदू[9] । भांतिहि भांतिलागसब भेदू ॥
दो० पांतिहि पांति चहूँदिश सब सोंधीकरहाट ।
मांझ[10] रचा इन्द्रासन पद्मावत कहँ पाट[11] ॥

खण्डतेइसवां मुलाक़ात पद्मावत वा राजारतनसेन ॥

सात खण्ड ऊपर कैलासू । तहँवाँ नारसेज सुख साजू ॥
चार खम्भ चारहुँ[12] दिश धरे । हीरा रतन[13] पदारथ जरे ॥
माणिक[14] दिया जड़े औ मोती । होयउजियाररहातेहिज्योती ॥
ऊपर राता[15] चँदवा छावा । औमुइँसुरँग बिछावबिछावा ॥
तेहिमहँ पलंगसेज सुख दासी । कीन्हबिछावन फूलहिबासी ॥
दोहुँदिशगेंदवा[16] औगलसोई । काची पाट[17] भरी धुन रोई ॥
फूलहिं भरे ऐसो केहि योगू । को तहँ पौढ़ मानरस भोगू ॥
दो० अति सुकमार सेज सो डासी[18] छुवै न पावै कोय ।
देखत नवै खनहिं खन पांव धरत कस होय ॥

सोना १ जवाहिरात २ आसमान ३ कटोरी ४ बदन ५ देखना ६ हवा ७ मुश्क ८ अम्बर ९ बीचोंबीच १० ताज़ ११ चारोंतरफ़ १२ जवाहिरात १३---१४ लाल १५ तकिया १६ रेशम १७ बिछौना १८ ॥

राजैं तपत सेज जो पाई। गांठछोरिधन[१] सखिनछिपाई॥
अहै कुँवर हमरे अस चारू[२]। आजकुँवरकर करबशिंगारू॥
हरद उतारि चढ़ावब रंगू। तबनिशि[३] चांदसूर्य्यसोसंगू॥
जनु चातक[४] मुख बूँद सेवाती। राजाचक चौहत्त तेहिंभांती॥
योग छूटि जनु अप्सर साथा। योग हाथकर भयो बिहाथा॥
वै चतुरा[५] कर लै अपसई[६]। मित्र अमोल छीन लैगई॥
बैठा खोय जरी औ बूटी। लाभ न पाव मूल भइ टूटी॥

दो० खाय रहा ठग लाडू तन्त मन्त बुधि खोय।
धौराहर[७] बनखँड[८] भयो ना हँसि आव न रोय॥

अस तप करतभयो दिनभारी। चार पहर बीते युग चारी॥
परीसांझ पुनि सखीसो आई। चांदरहा अपनी जोतराई[९]॥
पूँछहि गुरू कहांरे चेला। बिनशशि[१०] रेकससूर[११] अकेला॥
धातकमाय सिखे तूँ योगी। अबकसजसनिरधातबियोगी[१२]॥
कहां सो खोयहु बिरवा लोना। जेहिंते होय रूप औ सोना॥
कस हर्तार पार नहिं पावा। गंधक कहां करकटा[१३] खावा॥
कहां छिपायहु चंदहमारा। जेहिबिनरयनि[१४] जगतअँधियारा॥

दो० नयनकौड़ियाहिय[१५] समुद्र गुरूसो तेहिमहँज्योति।
मन मरजिया न होय परे हाथ न आवै मोति॥

का पूँछौतुम धात निछोही[१६]। गुरुजोकीन्हअंतरपट[१७] ओही॥
सिधि गुटका जो मोसों कहा। भयो रांग सत हिये न रहा॥
सोन रूप जासों दुख खोलों। गयो भरोस तहां का बोलों॥
जहँ लोना बिरवा की जाती। कहिकोसँदेश आनकोपाती॥
कि जो पार हरतार करेजे[१८]। गन्धकदेखअबहिंजिवदीजे॥
तुम जोरकी सूर[१९] मयंकू[२०]। पुनिबिछोयसो लीन्हकलंकू॥

पद्मावत १ रस्म २ रात ३ पपोहा ४ होशयारी ५ छिपजाना ६ महल ७ जंगल ८ छोटे नखत ९ चाँद १० सूर्य ११ दुखी १२ जोड़ना १३ रात १४ दिल १५ बेदर्द १६ छिपाना १७ कलेजा १८ सूर्य १९ चाँद २० ॥

जो यहि घड़ी मिलावै मोही । शीश देउँ बलिहारी ओही ॥

दो० होय अबरक़ ईंगुरुहुआ फेर अगिन महँ दीन्ह ।
काया[1] पीतर होय कनक[2] जो तुम चाहो कीन्ह ॥

काविसायजो गुरुअसबूझा । चकाब्यह[3] अभिमन[4] ज्योंजूझा ॥
विप जो दीन्ह अमृत देखराई । तेहिंरेनिछोहें[5] को पतियाई ॥
मरे सुजान होय तन सूना । पीर न जानै पीर बहूना[6] ॥
पार न पाव जो गंधक पिया । सो हरतार कहो किमजिया ॥
हम सिधिगुटका जानहिं नाहीं । कौन धात पूँछहु तेहि पाहीं ॥
अब तेहि बाज[7] रांगभा डोलों । होय सार[8] तो बरगी[9] बोलों ॥
अबरक़कै तन ईंगुरु कीन्हा । सोतन फेरअगिनमहँदीन्हा ॥

दो० मिल जो प्रीतम बिछुरहि काया[10] अगिन जराय ।
कैसु मिलै तन तप बुझै कै अब मोहिं बुझाय ॥

सुनिकैवात सखी सब हँसी । जानहुँरयनि[11] तरई[12] परगसी[13] ॥
अबसो चांदगगन[14] महँ छिपा । लालचकैकितपावस तपा[15] ॥
हमहुँ न जाने धौं सो कहां । करबखोजऔबिनवब[16] तहां ॥
औ अस कहव आहि परदेशी । करमाया[17] हत्या जनलेशी ॥
पीर तुम्हार सुनत भा छोहू[18] । देव मनाय होयअस ओहू ॥
तूँ योगी तप कर मन जिता । योगिहि कौन राजकी कथा ॥
वह रानी जहँवां सुख राजू । बारहअभरण[19] करैसोसाजू ॥

दो० योगी दृढ़[20] आसनकर इस्थिर[21] धरमन ठांव ।
जो न सुने तौ अब सुनि बारह अभरण नांव ॥

प्रथमै[22] मज्जन[23] होय शरीरू । पुनि पहिरै तनचंदन चीरू ॥
साज मांग शिर सेंदुर सारा । पुनिललाटरचितिलकसँवारा ॥

बदन १ सोना २ नाम क़िला ३ बेटा अर्जुन ४ बेदर्द ५ अलग ६ बिदून उसके ७ फ़ौलाद ८ निपतया ९ बदन १० रात ११ छोटेनखत १२ खिलना १३ आसमान १४ योगी १५ अर्ज़ करना १६ मेहरबानी १७—१८ ज़ेवर १९ मज़बूत २० क़ायम २१ पहिले २२ नहाना २३ ॥

पुनि अंजन दोउ नयनहि करे। पुनि सोकाननकुण्डल पहरे ॥
पुनि नासक भल फूलअमोला। पुनिराता[1] मुखखायतमोला ॥
गथें[2] अभरण पहिरे जहँ ताईं। औ पहिरेकर[3] कँगनकलाईं ॥
कटि[4] छुद्रावल[5] अभरण पूरा। पांयन पहिरे पायल[6] चूरा ॥
बारह अभरण यही बखाने। ते पहिरे बारहुँ अस्थाने ॥

दो० पुनिसोरहों शिंगार जस चारहुँ योगकुलीन।
दीरघ[7] चारचारलघु[8] चारसुभ्र[9] चहुँखीन[10] ॥

पद्मावत जो सँवारी लीन्हा। पून्यो[11] रात दईशशिकीन्हा ॥
करिमज्जन[12] तनकीन्ह नहानू। पहिर्यो चीरगयो छिपभानू ॥
रचि[13] पत्रावल[14] मांग सेंदूरी। भरिमोतिनऔमाणिक[15] पूरी ॥
चंदन चीर पहिर बहु भांती। मेघ घटा जानहुँ बक[16] पांती ॥
श्री[17] जो रतन मांग बैठारा। जानहुँगगन[18] टूटिनिशि[19] तारा ॥
तिलक ललाट[20] धरातसदीठा। जनहुँ दुइजपरनखतन बैठा ॥
कानन कुंडल खूँट[21] औखूंटी[22]। जानहुँ परी कचीची[23] टूटी ॥

दो० पहिर जड़ाऊ ठाढ़भइ कहिन जाय तस भाव।
मानहुँ दरपन गगन[24] भा तोशशि[25] तारदेखाव ॥

बांक नयन औ अंजन रेखा। खंजन[26] जानुशरदऋतुदेखा ॥
जो जो हेर[27] फेरचष[28] मोरी। लरै शरद महँ खंजन जोरी ॥
भौंहैं धनुष धनुष पै हारा। नयनसांध जनु बाणन मारा ॥
करनफूलनासक अतिशोभा। शशि[29] मुखआयसूकजनुलोभा ॥
सुरँग अधर[30] औलीन्ह तँबोरा। सोहै पान फूलकर जोरा ॥
कुसुमगेंदअससुरँगकपोला[31]। तेहिपरअलक[32] भुवंगिन[33] डोला
तिलकपोल अल पंकज बैठा। बेधा सोई जोवह तिलदीठा ॥

लाल १ गरदन २ हाथ ३ कमर ४ करधनी ५ पायजेब वा छड़े ६ बड़े ७ छोटे ८ मोटे ९ पतला १० पूरनमासो ११ उबटन १२ सूर्य्य १३ नामदाया १४ जवाहिर १५ बगुला १६ टीका १७ आसमान १८—२४ रात १९ माथा २० बाली २१ करनफूल २२ नाम छोटे नखत २३ चाँद २५—२९ ममोला २६ देखना २७ आँख २८ होंठ ३० गाल ३१ बाल ३२ नागिन ३३ ॥

दो० देख शिंगारअनूप[1] विधि विरह चलातवभाग ।
कालकष्ट वह उनवा सब मोरे जिय लाग ॥

का वरणों अभरण[2] औ हारा । शशि पहिरे नखतनकीमारा ॥
चीर चार औ चन्दन चोला । हीर हार नगलाग अमोला ॥
तेहिं झांपी रोमावल कारी । नागिनि रूप डसी हत्यारी ॥
कुच[3] कंचुकी[4] श्रीफल उभे । हुलसहिंचहहिंकंत हियचुभे ॥
वाहहिं वाहू[5] ताड़[6] सलोनी[7] । डोलत बांहभावगत लोनी ॥
तरवन कमल कली जनु बाधे । बसा[8] लंक[9] जानहु दुइआधे ॥
छुद्रघंट[10] कटि[11] कंचन तागा । चलतेउठहिं छतीसो रागा ॥

दो० चरा[12] पायल[13] अनवटविछिया पांयनपरी बियोग[14] ।
हिये[15] लायटुकहमकहसमंद[16] नहिंतुमजानऔभोग ॥

अस वारह सोरह धन[17] साजी । छाजन[18] और वहीपै छाजी ॥
विनवहिं सखीगहर[19] काकीजे । जेंजिव दीन्हताहि जिवदीजे ॥
सँवरिसेज धन मन भइ शंका । ठाढ़ तेवान टेक कर लंका[20] ॥
अनचिन्हापियकाँपोंमनमाहां । का मैं कहब गहब[21] जोबाहां ॥
वारि वैसगइ प्रीति न जानी । तरुण[22] भई मैंमन्त[23] भुलानी ॥
यौवनगर्व[24] न कुछ मैं चेता । नेह न जानु श्याम[25] के सेता ॥
अब जो कंत पूँछहि सबबाता । कसमुख होय पीत कै राता[26] ॥

दो० हों सुवारि औ दुलहिन पियसोतरुण[27] औतेज ।
नाजानों कस होय है चढ़त कन्त की सेज ॥

सुनिधनडर हिरदय तब ताईं । जौलहि रहस मिलानहिंसाईं ॥
कौन कली जो भँवरन राईं । डारन टूटि पुहुप[28] गरुवाईं ॥
मात पिता जो व्याहै सोई । जन्म निवाह कंत सँग होई ॥

ये मिसाल १ ज़ेवर २ छाती ३ अँगिया ४ नामज़ेवर ५—६—१२—१३ खूबसूरत७ भँवर ८ कमर ९—११—२० करधनी १० दुखी १४ दिल १५ मुलाकात १६ पद्मावत१७ सोहना १८ देर १९ पकड़ना २१ जवान २२—२७ मस्त २३ जवानी का ग़रूर २४ काला या सफ़ेद २५ लाल २६ फूल २८ ॥

भरे यमद्वार[१] चहै जहँ रहा। जाय न मेटा ताकर कहा ॥
ताकहँ बिलंब न कीजे बारी। जोपियआयसु[२] सोइपियारी ॥
चलहु बेग[३] आयसु भा जैसे। कन्त बोलावै रहै सो कैसे ॥
मानन कर थोरा कर लाडू। मान करत रस मानै चाडू[४] ॥
दो० साजन लिये पठाई आयसु[५] जाय न मेट।
तनमन यौबनसाज सब देइचली लै भेट ॥
पद्मिन गवन[६] हंस गये दूरी। हस्ति[७] लाजमेलाहिशिरधूरी॥
बदन[८] देख घटचन्द छिपाना। दशन[९] देखकेबीज[१०] लजाना॥
खंजन[११] छिपे देख कै नैना। कोकिलछिपी सुनतमधुबैना[१२] ॥
ग्रीव[१३] देखकर छिपा मयूरू। लंक[१४] देखकर छिपासेंदूरू[१५]॥
भौंहधनुष जोछिपा अकारा[१६]। बेनी[१७] बासुकि[१८] छिपापतारा॥
खड्ग[१९] छिपी नासिका बिशेखी। अमृतछिपा अधर[२०] रसदेखी॥
पहुँचिहिं छिपाकमल पौनारी। जंघछिपा कदली[२१] होयबारी ॥
दो० अप्सर रूप छिपाई जोहिचलै धन[२२] साज।
जहँलग गर्बगहैल जगसबैंछिपी मनलाज ॥
मिलीसो गोहन[२३] सखीतराई[२४]। लीन्हचांद सूर्य्य[२५] पहँआई॥
परश रूप चांद देखराई। देखत सूर्य्य गयो मुरझाई॥
सोरहकिरनदृष्टि[२६] शशि[२७] कीन्हा।सहस[२८] किरनसूर्यकहँलीन्हा ॥
भारबि[२९] अस्त तराई[३०] हँसी। सूर्य्यन रहाचाँद परगसी[३१] ॥
योगी आहि न भोगी कोई। खाय करकटा[३२] गयोपरसोई॥
पद्मावत निरमल[३३] जसगङ्गा। नाहिं युक्ति योगी भिखमङ्गा॥
आय जगावहिं चेला जागहु। आवा गुरू पांय उठलागहु॥
दो० बोलहिं शब्द[३४] सहेली कानलागगहि माथ।

मरनेके दमतक १ हुक्म २ जल्द ३ गुस्सा ४ हुक्म ५ चाल ६ हाथी ७ मुँह ८ दाँत ६ बिजुली १० ममोला ११ मीठीबोलो १२ गर्दन १३ कमर १४ चीता १५ आसमान १६ चोटो १७ नागराजा साँपोंका १८ तलवार १९ होंठ २० केला २१ पद्मावत २२ साथ २३ छोटे नखत २४—३० सूर्य्य २५—२६ निगाह २६ चांद २७ हज़ार २८ खिलना ३१ टुकड़ा रोटी ३२ पाक ३३ आवाज़ ३४ ॥

गोरख[1] आय ठाढ़ भा उठरे चेला नाथ ॥

गोरख शब्द शुद्ध भा राजा । रामा सुनि रावनहोय गाजा ॥
गही[2] बांह धन सेजवां आनी । अंचलओट रही छिपरानी ॥
सकुची डरी मुरी मन वारी । गहु न बांहरे योगि भिखारी ॥
ओहट[4] हो योगी तोर चेरी । आवे बास करकटा[5] केरी ॥
देखि विभूत छूत मुहिं लागा । कांपै चांद राहु सो भागा ॥
योगी तोर तपसी कै कया[6] । लागी चहै अंग मोर छया[8] ॥
वार[9] भिखार न मांगेसि भीखा । मांगेआयस्वर्ग[10] चढ़शीखा ॥

दो० योगि भिखारी कोई मन्दिर न पैसे[11] पार ।
मांगलेहु कुछभिक्षा जाय ठाढ़हो बार ॥

अन तुम कारण[12] प्रेम पियारी । राजछांड़िके भयों भिखारी ॥
नेह तुम्हार जो हिये[13] समाना । चितौर सो निसरयोंकै आना ॥
जसमालतिमहँभँवरवियोगी[14] । चढ़ावियोग चल्योंकै योगी ॥
भँवर खोज जसपावै केवा[15] । तुम कारणमैं जिवपरछेवा[16] ॥
भयों भिखार नारितुम लागी । दीप पतँग कै अँगयों आगी ॥
एकबार मरि मिलै जो आये । दूसरबार मरै कित जाये ॥
कितनेहिमीच[17] जोमरकेजिया । भँवर कमल मिलकैरसपिया ॥

दो० भँवर जोपावैकमलकहँ वहुआरत[18] वहुआस ।
भँवर होय न्योछावर कमल देय हसवास ॥

अपने मुहँ न वड़ाई छाजा । योगी कतहुँ होहिं नहिंराजा ॥
हौंरानी तू योगि भिखारी । योगिहिभोगिहि कौनचिन्हारी ॥
योगीसबै छन्द अस खेला । तू भिखार केहिमाहँ अकेला ॥
पवनबांध[19] अपसवहिं[20] अकासा ॥ मंसहिं जहांजाहिं तहँवासा ॥
येही भांति सृष्टि[21] वहु छरी । यहीभेष रावण सिय[22] हरी ॥

योगी१ पकड़ना २ पद्मावत ३ दूरहो ४ मुखा टुकड़ा रोटी ५ वदन ६—७ छाया ८ दरवाज़ा ९ आसमान१० पैठनसके११ वास्ते १२ दिल१३ दुखी १४ कमल१५ दुख१६—१७ मौत १८ मांसरोकके १९ छिपना २० दुनियां २१ सीताजी २२ ॥

भँवरहिं मीच[1] नेर जो आवा। केतकि बास लेयकहँ धावा॥
दीपक ज्योति देखि उजियारी। आय पंख ह्वैपरा भिखारी॥
दो० रयनि[2] जोदेखेचन्दमुखमसि[3] तनहोयअलोप[4]।
तुहूँयोग अस भूला होय राजाके रूप॥
अनधन[5] तूशंशेर[6] निश[7] माहां। हों दिनेर[8] जेहिके तूछाहां॥
चांदहि कहां ज्योति औकला। सूर्य्यकीज्योतिचांदनिरमला[9]॥
भँवर बास चम्पा नहिंलेई। मालति जहां तहां जिव देई॥
तुमहुत भयों पतंगकी किरा[10]। सिंहलद्वीप आय उड़परा॥
सेयों महादेव कर बारू[11]। तजा[12] अन्न भा पवनअहारू॥
तुम सों प्रीतिगांठमैं जोरी। कटै न काटै छुटै न छोरी॥
सिया[13] भीखरावणकहँदीन्ही। तूअसनिठुरअन्तरपट[14] दीन्ही॥
दो० रंगतुम्हारेरात्यों चढ्यों गगन[15] ह्वै सूर[16]।
जहँशशिशीतल कहँ तपोमन इच्छाधनपूर॥
योगि भिखारकरेसि बहुबाता। कहेसि रंग देखों तुहि राता[17]॥
कपरारँगे रंग नहिं होई। हिये[18] औट उपजै रँगसोई॥
चांदकी रंग सूर्य्य जो राता। देखीजगत साँझपरभाता[19]॥
दग्ध[20] बिरह नितहोयअँगारू। दहक आंच दग्धे संसारू॥
जो मजीठ औटै बहु आंचा। सो रंग जन्म न डोलैरांचा॥
जरै बिरह जो दीपक बाती। भीतर जरि ऊपर ह्वै राती॥
जर पलास कोइला के भेस। तब फूला राता ह्वै टेसू॥
दो० पान सुपारी खैर तहँ मिलै करै चकसून[21]।
तबलग रंग न राची जबलग होय न चून॥
धन[22] याका सुरङ्गका चूना। जेहि तननेह दग्ध[23] तेहि दूना॥
हौंतुम नेह पियरभा पानू। पेड़ी हुतसन रास बखानू॥

मौत १ रात २—७ सियाही ३ गायब ४ अपद्मावत ५ चाँद ६ सूर्य ८—१६ पाकसाफ़ ९ मानिन्द १० दरवाज़ा ११ छोड़ना १२ श्रीसीताजी १३ ओट १४ आसमान १५ लाल १७ दिल १८ भोर १९ जलाना २० रेज़ा २१ पद्मावत २२ जलन २३॥

सुनितुम्हार संसार बड़ौना[१]। योगलीन्ह तनकीन्हगड़ौना[२] ॥
करहिं जोकिंगिरीलै बैरागी। नेवती[४] होय विरहकी आगी ॥
फेरफेर तन कीन्ह भुजोना[५]। औट रक्तरंग हिरदय अवना ॥
सूख सुपारी भा मनमारा। शिरसरोत जनु करवट[६] सारा ॥
हाड़ चून भे विरहैं दही। जानै सोइ जोदग्ध[७] इमि[८] सही ॥

दो० कै सुजानि वहुपीरा जेहिं दुख ऐसो शरीर।
रक्त पियासे जे अहहिं काजानै पर पीर ॥

योगिहिवहुतछन्द[९] औराहीं। वूँद सेवाती जैसे पराहीं ॥
पड़हिंभूमि[१०]परहोयकचूरू[११]। पड़हिं कदलि[१२] परहोयकपूरू ॥
पड़हिंसमुद्र खारजल ओहीं। पड़हिं सीप सब मोती होहीं ॥
पड़हिं मेरु[१३]पर अमृत होई। पड़हिं नागमुख विषहोय सोई ॥
योगी भँवर निठुर ये दोऊ। केहि आपनभे कहो सो कोऊ ॥
एकठांव[१४]यहिथिर[१५]नरहाहीं। रसलै खेल[१६] अन्तकहँ जाहीं ॥
होयगृही पुनिहोय उदासी। अन्तकाल दोनों बिश्वासी[१७] ॥

दो० तासोंनेह जोदृढ़[१८]कराहिं थिरआछहिसहदेश।
योगी भँवर भिखारी दूररहहिं आदेश[१९] ॥

थलथलनगनहोहिंजेहिज्योती।जलजलसीपनउपजहिंमोती ॥
वनवन वृक्ष न चन्दन होई। तनतन विरह न उपजै[२०] सोई ॥
जहँउपजा सो औटमरगयो। जन्म निरार[२१] न कबहूँ भयो ॥
जलअम्बुज[२२] रवि[२३] रहैअकासा। जोप्रीति जानहुँ इकपासा ॥
योगीभँवरजोथिर[२४]नरहाहीं। जेहि खोजहिं तहँ पावै नाहीं ॥
मैंतो पावा आपन जीव। छाड़ सेवात जाय नहिं पीव ॥
भँवरमालती मिलैजोआई। सोतज[२५] आनफूल कितजाई ॥

वड़ाई १ गड़ौता २ हाय ३ मिहिमान ४ भूजना ५ शिरकटाना ६ जलन ७ इस तरह ८ मकर करना ९ ज़मीन १० नरकचूर ११ केला १२ पहाड़ १३ जगह १४ क़ायम १५ जाना १६ बेखबर १७ मज़बूत १८ सलाम १९ पैदा २० अलग २१ कमल २२ सूर्य २३ क़ायम २४ छोड़ना २५ ॥

दो० चम्पाप्रीति जो तेलहै दिनादिन आकर बास।
गलगलआप हेराय जो मुयहिं न छाड़ै पास॥

ऐसैं राजकुँवर नहिं मानो। खेलसार[1] पांसा तब जानो॥
कच्ची बारहिबार फिरासी। पक्की तौ फिर थिर नरहासी॥
रहैन आठ अठारह भाखा। सोरह सत्रह रहै सो राखा॥
सतयें धरे सो खेलनहारा। ढारा ग्यारा जासु न मारा॥
तूलीन्हेसि आछे मन ढुवा। औ यगसार चहेसि पुनि छुवा॥
हौंतूनेह रच्यों तोहि पाहीं। दसों दांव तोरे हिय[2] माहीं॥
तव चौपर खेलौं कै मया[3]। जो तरहेल[4] होय सो तिया॥

दो० जेहिमिलबिछुरनऔतपन अन्त[5] तन्ततेहिनन्त।
तेहिमिल कंचन[6] कोसहै परबिन मिलै न चन्त॥

बोलेंबचननारि सुनिसांचा। पुरुषका बोल सत्त औ बांचा॥
यहि मनलाग्योतुहिंअसनारी। दिनतोहिंपासऔरनिश[7] सारी॥
मैं पर बारहिबार मनायों। शिरसो खेल निपट जिवलायों॥
भल भांती मैं रचना राची। मारेसि तोहि सबै कै कांची॥
पाकउठायों आशक रीता। हौं जीतहि हारा तूँ जीता॥
मिलकेयुगनहिंहोहुँनिरारी[8]। कहां बीच दोती[9] दिन हारी॥
अबजिवजन्मजन्मतुहिपासा। चढ़्यों योग आयों कैलासा॥

दो० जाकर जिवबासि जेहिसे तेहि पुनि ताकरटेक[10]।
कनक[11]सुहागनबिछुड़हि औटामिलहिं जो एक॥

बेहँसीधन[12]सुनिकेसतबाता। निश्चै[13] तू मोरे रँग राता[14]॥
निश्चै भँवर कमल रसरसा। जोजेहि मनसो तेहि मनबसा॥
जब हीरामन भयो सँदेशी। तूहुत मँडफ गयो परदेशी॥
तोररूप तस देखेउँ लोना[15]। जनु योगी तू मेली टोना॥

चौपर १ दिल २ मेहरबानी ३ जो मेरे साथ बाजी हारजाय ४ आखिरको सुख ५ सोना ६—११ रात ७ अलग ८ दो तीन का क्या कामहै ९ मददगार १० पद्मावत हँसी १२ यकीन १३ मस्त १४ खूबसूरत १५॥

सिधि गुटका जोदृष्टि[1] कमाई । पारे मेल रूप व्रस[2] याई ॥
भुक्ति[3] देन कहँ मैंतुहि डीठा[4] । कमल नयनहोयभँवरजोबैठा॥
नयनपुहुप[5] तू अलि[6] भासोभी । रहाबेध तस उड़सिनलोभी ॥

दो० जाकर आशहोयजेकहँ तहँ पुनिताकर आस ।
भँवरजो दाढ़ा[7] कमलका कसनपाव रसवास ॥

कौन मोहनी धौं हुत तोही । जोतोहिबिथासोउपजी मोही ॥
बिन जलमीन[8] तपै जसजीउ । चातक[10] भयोंकहतपिउपीउ॥
जरयोंबिरह जस दीपक बाती । मग[11]जोवतभइसीपसेवाती ॥
डारडार ज्यों कोयल भई । भयोंचकोर नींद निश[12]गई ॥
मोरे प्रेम प्रेम तुहुँ भयो । राताहेम[13] अगिन ज्यों तयो ॥
हीरादिपहिं[14] जोसूर[15]उदोती । नाहतकितपाहन[16] कहँयोती ॥
रविपरकाशें कमल बिकासा । नाहतकितमधुकरकितबासा ॥

दो० तासों कौन अँतरपट[17] जो अस प्रीतम पीव ।
न्योछावर करि आपहूँ तन मन योबन जीव ॥

हँसि पद्मावत मानी बाता । निश्चै तू मोरे रँग राता ॥
तूराजा धनिकुल उजियारा । असकै चरच्यों मर्म[18]तुम्हारा॥
पै तू जम्बूद्वीप बसेरा । काजानेसि कस सिंहल मेरा ॥
काजानेसिसुमानसर[19]केवा[20] । सुनिसुभँवरभाजिवपरछेवा[21] ॥
नातू सुनी न कोई डीठी[22] । कैसें चित्र[23] होय चित पैठी ॥
जौलहिअगिनकरैनहिंभेदू[24] । तौलहिऔट चुवहिनहिंमेदू[25] ॥
कहँ शंकर तू ऐसो लखावा । मिलाअलख[26]तसप्रेमचखावा ॥

दो० जेहिके सत सँघाती ताकर डर सो अमेट ।
सोसत कहु कैसे भा दुहूँ भांत सो भेट ॥

सत्य कहूँ सुनि पद्मावती । जहँ सतपुरुष तहां सरस्वती ॥

निगाह १ पारा मिलाके चांदी किया २ भीख ३ देखना ४ फूल ५ भँवरा ६ आशिक़ ७ पैदा होना ८ मछली ९ पपीहा १० राह ११ रात १२ लालहोना १३ चमक १४ सूर्य १५ पत्थर १६ ओट १७ भेद १८ नाम तालाब १९ कमल २० जानपर खेला २१ देखना २२ तसवीर २३ सोला २४ अतर २५ ईश्वर २६ ॥

पायों सुवा कहे वह बाता। भा निश्चै देखत मुख राता[१] ॥
रूपतुम्हार सुन्योंअस नीका। नाजेहिंचढ़ा काहुँ कहँटीका ॥
चित्र कियों पुनि लैलै नाऊँ। नयनहि लाग हिये[२] भाठाऊँ ॥
हौं भा सांच सुनत वह घड़ी। तुम होयरूपआय चितचढ़ी ॥
हौंभा काठ मूर्ति मन मारे। जहँजहँ कर सब हाथ तुम्हारे ॥
तुमजो डोलावहु सोई डोला। मवन सांस जोदीन्ह तोबोला ॥

दो० कोइसोवैकोइ जागै असहौं गयोंबिमोहि[३]।
परगट गुप्त[४] न दूसर जहँ देखों तहँतोहि ॥

बिहँसी[५] धन सुनके सतभाऊ। हौं रामा तू रावण राऊ ॥
रहि जो भँवर कमलकीआसा। कस न भोग मानै रसबासा ॥
जस सत कहा कुँवर तू मोही। तसमनमोर लागपुनि तोही ॥
जबहुत कहिगा पंख सँदेशी। सुन्यों कि आवाहै परदेशी ॥
तबहुत तुम बिन रहै न जीउ। चातक[६] भयोंकहतपिउपीउ ॥
भयों चकोर सो पन्थ[७] तिहारे। समुद्रसीप जस नयनपसारे ॥
बिरह भयों दहि[८] कोयलकारी। डारडार जिमि पीउपुकारी ॥

दो० कौनसोदिन जबपिउमिलै बहुमनराता[९]जासु।
वहदुख देखै मोरसब हौंदुख देखों तासु ॥

कहि सतभाव भई कँठलागू। जनुकंचन[१०]औमिलासुहागू ॥
चौरासी आसनपर योगी। खटरस बन्दक चतुरसोभोगी ॥
कुसुम[११] मालअसमालतिपाई। जनु चम्पागहि[१२] डारनवाई ॥
कलीबेध[१३] जनु भँवर लुभाना। हना[१४] राहुअर्जुन के बाना ॥
कंचन[१५] कली जड़ी नगज्योती। बरमा सों बेधा जनु मोती ॥
नारँगजानि कीर[१६] नख दिये। अधर[१७]आम्बरसजानहुलिये ॥

लाल १ दिल २ दीवाना ३ ज़ाहिर वा छिपा ४ हँसी ५ पपीहा ६ राह ७ जलना ८ दीवाना ९ सोना १० कुसुमकी बोड़ीकी तरह छाती ११ पकड़ना १२ कलीमें भँवराने सूराख़ किया १३ तीर निशाने पर मारा १४ सोने की कलीसा बदन मोती की तरह बरमासे बेधा १५ तोता १६ होंठ १७ ॥

कौतुककेल करहिं दुख नसा। कन्दहि[1] कुरलहि जनु सर[2] हँसा॥

दो० रही बसाय बासना चोवा चन्दन मेद[3]।

जो अस पद्मिन रावी[4] सो जानै यह भेद॥

रतनसेन सो कन्त सुजानू। खटरस पण्डित सोरह बानू॥
तस ह्वै मिले पुरुष औ गोरी। जैसी बिछुड़ी सारसजोरी॥
रचीसार[5] दोनो इक पासा। ह्वै युग युग आवहिं कैलासा॥
पिय धनगहि दीन्हीगलबाहां। धन बिछुड़ी लागी उरमाहां॥
तेऊक रस नव केलकरेहीं। चोक लाय अधरन[6] रसलेहीं॥
धन[7] नवसात सात औपांचा। पूरुष[8] दश तेरह किमबांचा॥
लीन्हविधांस[9] बिरह धनसाजा। औ सबरचन जीतहतराजा॥

दो० जनहुँ औटकै मिलगये तस दोनों भये एक।

कंचन[10] कसत कसौटी हाथ न कोऊ टेक[11]॥

चतुरनारिचितअधिक[12] चहूँटी। जहांप्रेम बाढ़ी किम छूटी॥
कुरला काम कीर[13] मनुहारी। कुरलाजहँतहँसोनसुनारी[14]॥
कुरला होय कंतकर[15] तोखू। कुरला गहै पांवधन मोखू[16]॥
तेहिकुरला[17] सोसुहाग सभागी। चंदन जैस श्यामकँठलागी॥
गेंद गोंदकै जानहुँ लिये[18]। गेंदचाहि धनकोमल[19] भये॥
दाड़िम[20] दाख[21] बेलरसचाखा। पियके खेल धनजीवनराखा॥
भयो बसन्तकली मुख खोली। बैन[22] सुहावन कोकिलबोली॥

दो० पिउपिउकरतजीभधनसूखीबोलीचातक[23] भांति।

परीसो बूँदसीपजनु मोतीहिय[24] परीसुख शांति॥

भयोजूझ जस रावण रामा। सेज विधांस[25] बिरहसंग्रामा[26]॥

कुलेल १ तालाब २ अतर ३ भोगना ४ चौपड़ ५ होंठ चूसना ६ पद्मावतहारी ७ राजा जीता ८ लूटना ९ सोना १० पकड़ना ११ बहुत १२ मस्तीमें कामका तोताआया १३ जोगमें सोना सुनारके हाथमें आया १४ ग़लबा किया ख़ाविन्दने १५ ग़लबाकरके पैर औरतका वास्ते फ़राग़तके पकड़ा १६ ग़लबा १७ जैसे गेंदेने गोंदके फूलको गोद में लिया १८ गेंदासे नर्म १९ अनार २० अंगूर २१ आवाज़ २२ पपीहा २३ दिल २४ लूटना २५ लड़ाई २६॥

लीन्हलंक[१] कंचन गढ़[२] टूटा। कीन्हशिंगार अहासब लूटा॥
औ योवनमेमन्त[३] बिधांसा। बिचला बिरहजीवलै नासा॥
टूटी अङ्ग अङ्ग सब भेशा। छूटी मांग भंग भये केशा॥
कंचुक[४] चूर चूर भइ तानी। टूटि हार मोती छहरानी॥
बारी[५] ताड़ सलोनी टूटी। बांहू कँगन कलाई फूटी॥
चन्दन अङ्ग छूट तसभेटी[६]। बेसर टूटि तिलक गा मेटी॥

दो० पुहुप[७] शिंगार सँवारसब यौबन नवलबसन्त।
अरगज[८] ज्योंहियलायके मरगज[९] कीन्होंकन्त॥

बिनय करै पद्मावत बाला। सुधन[१०] सुराहीपियोपियाला॥
पिय आयसु[११] माथेपर लेऊँ। जो मांगै नय नय शिर देऊँ॥
पैपिय बचन[१२] एक सुनिमोरा। चाखौ पिय मधु[१३] थोराथोरा॥
प्रेम सुरा सोई पै पिया। लखैन कोऊ कि काहू दिया॥
चुवा दाख[१४] मधु जो इकबारा। दूसरबार लेत बेसँभारा॥
एकबार जो पीके रहा। सुखजीवन सुख भोजनलहा॥
पान फूल रस रंग करीजे। अधर[१५] अधरसों चाखाकीजे॥

दो० जो तुम चाहो सो करो नाजानों भल मन्द।
जो भावै सोहोयमोहिं तुमापिय चहूँ अनन्द॥

सुनि धन[१६] प्रेम सुराके पिये। मरनजिवनडररहिनहिंहिये[१७]॥
जहँ मधु तहां कहां निसतारा। कीसुधुमरहा की मतवारा॥
सो पीजानि पिये जो कोई। पै नअघाय जाय पर सोई॥
जाकहँ होय बार इकलाहा[१८]। रहै न वह बिन ओही चाहा॥
अर्ब दर्ब सब देइ बहाई। कै सब जाव न जाय पियाई॥
राताहिदिवस[१९] रहै सबभीजा। लाभ[२०] नदेख नदेखी छीजा[२१]॥

कमर १ सोनेकाक़िलातथाबदन २ मस्त ३ अँगिया ४ नामज़ेवर ५ राजाके मुलाक़ातसे ६ फूल ७ ख़ुशबू ८ दलमल ९ शराब मुहब्बत सुराहीसे कम कम पियो १० हुक्म ११ बात १२ शराब १३ अंगूर १४ होंठ १५ पद्मावत १६ दिल १७ फ़ायदा १८—२० दिन १९ नुक़सान २१॥

भोर होत तब पलहु शरीरू। पाय घुमरहा[1] शीतल[2] नीरू॥

दो॰ एकवार भरदेहु पियाला वारवार को मांग।
मुहम्मदकिमन पुकारे ऐसोदांवजेहिखांग[3]॥

भयो विहान उठा रवि[4] साईं। चहुँदिशि आईंनखततराईं[5]॥
सबनिश[6] सेजमिलाशशि[7] सूरू[8]। हारचीर बलियां[9] भइ चूरू॥
सुधन[10] पान चन भइ चोली। रंगरँगीलनिरँग[11] भइ डोली॥
जागतरयनि[12] भयो भिनसारा। भइ वेसँभार[13] सोत बेकरारा॥
अलक[14] तुरंगिनिहिरदय[15] परी। नारँग[16] छुइनागिनविषभरी॥
लरी[17] मुरी हिये[18] हारलपेटे। सुरसरि[19] जनुकालिन्दी[20] भेंटे॥
जनुप्रयाग[21] आरयल[22] विचमिली। बेनी[23] भइसो रोमावली॥

दो॰ नाभी लाभेते[24] गये काशी कुण्ड[25] कहाव।
देवतामरहिंकलप[26] शिरआपहिंदोष[27] नलाव॥

बिहँसि जगावहिं सखीसयानी। सूर[28] उठाउठि पद्मिनरानी॥
सुनतसूर[29] जनुकमलविकासा[30]। मधुकर[31] आयलीन्हमधुबासा॥
जनहुँमातवस[32] पानी बरसी। अतिविषभरफूलीजनुअरसी॥
नयनकमलजानहुदुइखोले। चितवनमृग[33] सोअतिजनुभूले॥
तनवेसँभार केश औ चोली। चितअचेतजनु बालीभोली॥
कमलमांझजनु केसर[34] दीठी। यौवन हुत सो गँवाई बैठी॥
भयेशशि[35] गहे गहन अस गहे। बिथरे नखत[36] सेजभररहे॥

दो॰ वेलजोराखी इन्द्रकहँ पवन बास नाहिं देहि।
लाग्योआय भँवरतेहि कली वेध रस लेहि॥

हँसिहँसि पूँछैं सखी सरेखी[37]। जनहुकुमुद[38] चन्दनमुखदेखी॥

नशा १ ठंढापानी२ कर्मा ३ सूर्य्य तथा राजा ४—८ सहेली ५ रात६ चाँद७ चूड़ी ६ पद्मावत१० वेरौनक़ ११ रात १२ वेहोश १३ बालकीलटें १४ छाती १५ तथाछातियाँ१६ पँचलरी वा सतलरी १७ छाती १८ गंगाजी तथा छाती १६ यमुना तथा छातीकेबाल २० नामतीरथ २१ नाममुक़ाम २२ त्रिवेनी २३ लालच २४ मणिकर्णिकाकुंड २५ शिर कटाना २६ गुनाह २७ सूर्य २८—२६ खिलना ३० भँवर ३१ मस्तीवर्षी ३२ हिरन ३३ सर्दरंग ३४ चाँद ३५ तथाहारकेमोती ३६ होशियार ३७ कोकाबेली ३८॥

रानी तुम ऐसी सुकुमारा। बास फूल तन जीव तुम्हारा॥
सहिनाहिंसकोहदय[1]पर हारू। कैसे सहो कन्तकर भारू॥
बदन[2]कमलबिकसत[3]दिनराती। सोकुँभलातकहोकेहिभांती॥
अधर[4]कमलजो सहतनपानू। कैसे सहा लाग मुख भानू[5]॥
लङ्क[6] जो पैग देत मुरझाई। कैसे रही जो रावन राई[7]॥
चन्दन चोंप पवन असपीव। भयो चित्र[8]सम कसभा जीव॥
दो० सबअरगज[9]मरगज[10]भयो लोचन[11]बिंब[12]सरोज[13]।
सत्य कहो पद्मावत सखी परीं सब खोज॥
कहों सखी आपन सतभाऊ। होंजोकहतकसरावन[14]राऊ॥
कांपों भँवरपुहुप[15]पर देखे। जनुशशि[16]गहनतैसिमोहिंलेखे॥
आज मर्म[17] मैं जाना सोई। जसपियारपिय औरनकोई॥
डर तबलग अहमिलानपीव। भानु[18]कीदृष्टि[19] छूटगासीव[20]॥
जतखनभानुलीन्हपरकासू[21]। कमलकलीमनकीन्हबिकासू[22]॥
हिये[23]छोह[24]उपजा[25]औसीव[26]। पिय न रिसायलेव पर जीव॥
हतजोअपारबिरहदुखदूखा। जनहुअगस्तउदधि[27]जलसूखा॥
दो० हमहुँ रंग बहु जानब लहरें जेत समुंद।
पिय लैगये चतुराई सक्यों न एको बुंद[28]॥
करि शिंगार तापन कहँ जाऊं। औही देखों ठांवहिं ठांऊं[29]॥
जो जियमहँ तो वही पियारा। तनमहँ सोइनहोयनिरारा[30]॥
नयनहि महँ तो वही समाना। देखों जहां न देखों आना॥
आपहिं रस आपहि पै लेई। अधर[31]सहस लागे रसदेई॥
हिया[32]थारकुच कंचन[33]लाडू। अगमन[34]भेट दीन्हकैचाडू[35]॥

छाती १—३२ मुंह २ खिलना ३ होंठ ४—३१ सूर्य तथा राजा ५ कमर ६ तथा राजको सुहबत ७ तसवीर ८ खुशबू ९ दलमल १० आंख ११ कुन्दरूकीतरहलाल १२ कमल १३ तथा औरत मर्दको सुहबत १४ फूल १५ चांद १६ भेद १७ सूर्य्य १८ निगाह १९ जाड़ा २० रोशनी २१ खिलना २२ दिल २३ मेहरबानी २४ पैदा २५ खिदमत २६ समुद्र २७ दांव २८ जगह २९ अलग ३० सोनेके लड्डुवासी छातियां ३३ पहिले ३४ पियार ३५॥

हुलसी[1] लंक लंक[2] सो लसी । रावन[3] रहस कसौटी कसी ॥
यौवन सभै मिला वह जाई । हौंरी विच हुत गयों हेराई ॥
दो॰ जस कुछ दीजे धरन[4] कहँ आपनलेह सँभार ।
तस शिंगार सवलीन्हेसि कीन्हेसि मोहिंठठार[5] ॥
एरी छबीली तुहिं छव लागी । नेत्र[6] गुलालकंत[7] सँगजागी ॥
चम्प सुदरशन अस भा सोई । सोन ज़र्द जस केसर[8] होई ॥
वैठि भँवर कुच[9] नारँग वारी[10] । लागीनख[11] अछरें रँगधारी ॥
अधर[12] अधरसोंभीजतँवोरी । अलकावल[13] मुरमुरगइमोरी ॥
रायसुनी[14] तुम्हओरत[15] मुहीं । अलि[16] मुखलागभईफुलचुहीं[17] ॥
जैसे शिंगार हारसों मिली । मालतिऐसिसदारहिखिली ॥
पुनि शिंगाररसकिरा[18] नेवारी । कदम सेवती पियहिंपियारी ॥
दो॰ गोंद कलीसम[19] विकसी[20] ऋतु बसंत औ फाग ।
फूलहु फरहु सदा सुख औ सुखसुफल सुहाग ॥
कहि यह बात सखी उठ धाई । चम्पावत[21] कहँ जायसुनाई ॥
आज निरँग[22] पद्मावत वारी । जीव न जाने पवन अधारी ॥
तड़क तड़क गा चंदन चोला । धड़कधड़क डरउठै न बोला ॥
अहे जो कली कमल रस पूरी । चूर चूर होयगई सो चूरी ॥
देखो जाय जैसि कुँभलानी । सुनि सुहागरानी बेहँसानी[23] ॥
ले सँग सवही पद्मिन नारी । आई जहँ पद्मावत वारी ॥
आय रूप सवहीं जो देखा । सोन[24] वरणहोय रहीसोरेखा ॥
दो॰ कुसुम फूल जस मखी निरँग[25] देख सव अंग ।
चम्पावत भइ वारी चँव केश औ भंग ॥
सव रनवास वैठि चहुँ पासा । शशि[26] मंडलजनुवैठअकासा ॥

खुश होना १ कमर २ तथा रांजा ३ धरोहर ४ खाली ५ आंख६ खाविंद ७ पीली ८—२४ छाती ९ लड़की १० नाखून लगनेसे रंग जाता रहा ११ होंटपर पानकीलाली १२ वाल १३ लाल १४ मुर्ख मुँह १५ भँवर १६ नाम चिड़िया १७ वरावर१८—१९ खिलना २० मायपद्मावत २१ वेरंग २२—२५ हँसना २३ चांद २६ ॥

बोली सबहिं बारि कुँभलानी। करहु शिंगार देहु खड़वानी[1] ॥
कमल कली कोमल रँगभीनी। अतिसुकमार लंक[2] की क्षीनी ॥
चांद जैसि धन बैठि गिरासी। सहसकिरन होय सूर्य्य बिकासी ॥
तेहिके झार[3] गहन अस गही। भइ निरंग[4] मुख ज्योति न रही ॥
दर्ब वार कुछ पुण्य करेहू। औ लै बर[5] संन्यासहि देहू ॥
भरके थार नखत गजमोती। वरती[6] कीन्ह चांद की ज्योती ॥

दो० कीन्ह अरगजा[7] मरवन औ सुख दीन्ह नहान।
पुनि भइ चांद जो चौदस रूप गयो छिपभान[8] ॥

पटवहि[9] चेर आन सब छोरी। सारी कंचुक[10] पहिर पटोरी[11] ॥
पहँदया[12] और कंस्या[13] राती[14]। छायल[15] पिंडवाही[16] गुजराती ॥
चकवा[17] चीरमखोना[18] लोने[19]। मोति लाग औ छापे सोने ॥
सुरँग चीर भल सिंहलद्वीपी। कीन्ह जो छापा धन वह छीपी ॥
पेमचा[20] डुरया[21] और बुँदेरी[22]। श्याम[23] सेत[24] पीरी औ हरी ॥
सात रंग सो चित्र[25] चितेरे। भरके दीठ[26] जाहिं नहिं हेरे ॥
चन्दनोता[27] जोखरदुक[28] भारी। बांसपूर[29] झिलमिल[30] की सारी ॥

दो० पुनि अभरण[31] बहु काढ़ा आनो भांति जड़ाउ।
फेरफेर सब पहिरहिं जैस जैस मन भाउ ॥

रतनसेन गये अपनी सभा। बैठे पाट[32] जहां अठ खँभा ॥
आय मिले चितौर के साथी। सबै बिहँसके दीन्ही हाथी ॥
राजाकर भल मानहु भाई। जें हमकहँ यहि भूमि[33] दिखाई ॥
जो हम कहँ नहिं एत नरेशू[34]। तब हम कहां कहां यहि देशू ॥
धनि राजा तुइ राज बिशेखा। जेहिकी रजाय सु सब कुछ देखा ॥
भोग बिलास सभी कुछ पावा। कहां जीभ तस अस्तुति आवा ॥

शरबत १ कमर पतली २ किसके मुलाक़ातके लूकमे ३ बेरंग ४ दरवाज़ा ५ न्योछावर ६ खुशबूदार उबटन ७ सूर्य्य ८ दारोग़ा तोशाखाना ९ अँगिया १० रेशम ११ नाम कपड़ा १२—१३—१५—१६—१७—१८—२०—२१—२२—२९—३० लाल १४ खूबसूरत १९ काला २३ सफेद २४ तसवीर २५ निगाह २६ क़िस्म लहँगा २७—२८ ज़ेवर ३१ तख़्त ३२ ज़मीन ३३ राजा ३४ ॥

अवतुमआयअन्तरपटसाजा। दरशन कहँ न तपावहुराजा॥

दो॰ नयन[1]सेराने भूखगइ देख दरश तुम आज।
आजभयो अवतार[2]नव औसवभेनये काज॥

हँसके राज रजायसु[3] दीन्हा। मैंदरशन कारण[4] तप कीन्हा॥
अपनीयोग लागअस खेला। गुरुभा आप कीन्ह तुमचेला॥
अहकमोर वर्षा[5] ऋतु देखहु। गुरू चीन्हके योग विशेषहु॥
जोतुमतप साधामोहिं लागी। अब जन हिये[6] होहु वैरागी[7]॥
जोजेहिं लाग सहै तप योगू। सो तेहिके सँग मानै भोगू॥
सोरह सहस[8] पद्मिनी मांगी। सबैदीन्ह नहिं काहू खांगी[9]॥
सबक धौरहर[10] सोने साजा। सब अपने अपने घर राजा॥

दो॰ हस्ति[11]घोर औकापर सबहि दीन्ह बड़ साज।
भयेगृहस्त सब लखपती घरघर मानहुराज॥

पद्मावत सब सखी बोलाई। चीर पटोर[12] हार पहिराई॥
शीश[13] सबनके सेंदुर पूरा। शीश पूर सब मांग सिंदूरा॥
चन्दनअगरचित्र[14] समभरीं। नयन चार जानहुँ औतरीं[15]॥
जानु कमलसँग फूली कोई[16]। औ सो चांद सँगतरई[17] उई॥
धन पद्मावत धनतोर नाहू[18]। जेहिंअभरण[19]पहिरासबकाहू॥
बारहअभरण सोरहशिंगारा। तोहिसोहेपियशशि[20]मसयारा॥
शशि सुकलंकी राहुहि पूजा। तुइ निकलंकनकोइसर[21]दूजा॥

दो॰ काहूँ बीन गहाकर[22] काहूँ नाद मृदंग।
सबदिनअनन्दबधावा रहसकूदइकसंग॥

पद्मावत कहि सुनहु सहेली। होंसोकमलतुमकुमदन[23]बेली॥
कलश मानिहोंतेहिदिनआई। पूजा चलो चढ़ावहिं जाई॥
मैंभ्र[24] पद्मावतका जोविवानू। जनुपरभात[25]उठै रतिभानू[26]॥

आंखठंडी १ नई पैदाइश २ हुक्म ३ वास्ते ४ तथा रोना ५ दिल ६ दुखी ७ हज़ार ८ कमी ९ महल १० हाथी ११ क़िस्म कपड़ा १२ शिर १३ तसवीरके बराबर १४ छोटे नखत्र १५–१७ कोकाबेली १६—२३ ख़ाविंद १८ ज़ेवर १९ चांद २० बराबर २१ हाथ २२ बीच २४ भोर २५ लाल सूर्य्य २६॥

आस पास बाजत चौं डोला[1]। ढ्ढ[2] मृदंग[3] झांझडफढोला॥
एक संग सब सोंधी[4] भरी। देव दुवारे उतर भईं खरी॥
अपने हाथ देव अन्हवावा। कलशसहस[5] इकघृत्त[6] भरावा॥
पोता मँडफ अगर औ चन्दन। देवभराअरगज[7] औबिन्दन॥

दो० कै प्रणाम[8] आगे भई बिनय[9] कीन्ह बहु भांति।
रानी कहा चलहु घर सखी होत है राति॥

भइनिश[10] धन[11] जसशशि[12] परकसी[13]।राजेंदेखिभूमि[14] फिर बसी॥
भइकटकई[15] शरदशशिआवा। फेर गगन[16] रबिचाही छावा॥
सुनि धन[17] धनुष भौंहकरफेरी। काम कटाक्ष[18] मकोरत[19] हेरी॥
जानहुँ[20] न कै बीच पै खाचौं। पितासप्त[21] हों आज न बाचौं॥
काल्ह न होय रहे सुख रामा। आज करों रावण[22] संग्रामा॥
सैन[23] शिंगार मुहूँ है सजा। गज[24] गतचालअँचलगतधुजा॥
नयनसमुद्र खड्ग[25] नासिका[26]।सरबर[27] जूझको मोसों जिता॥

दो० हों रानी पद्मावती मैं जीता सुख भोग।
तू सरबर[28] कर तासों जसयोगी तोहियोग॥

हौं अस योगि जान सबकोऊ। बीर[29] शृंगार जिते मैं दोऊ॥
वहँ तो हनू[30] बीर घट माहीं। यहँतोकाम कटक[31] तुम्हपाहीं॥
वहांतोहय[32] चढ़केमहि[33] मंडों। यहांतोअधर[34] अमीरसखंडों॥
वहां तो खड्ग नरन्दहिमारों। यहां तो बिरह तुम्हारसँहारों॥
वहांतोगज[35] पेलोंहोय केहर[36]। यहांतोकुच[37] कामिनकरहेहर॥
वहां तो लूटों कटक[38] खँडारू। यहां तोजीततुम्हारशिंगारू॥
वहां तोकुम्भस्थल[39] गजनाऊँ। यहांतोगजकलशहिकरलाऊँ॥

नाम बाजा १—२—३ सहेली ४ हज़ार ५ घीव ६ खुशबू ७ दंडवत् ८ आजज़ी ९ गत १० पद्मावत ११—१७ चांद १२ रोशनी १३ ज़मीन १४ हुक्म १५ आसमान पर सूर्य्य तथा कोठे पर जाना १६ ग़मज़ा १८ कोरसे देखना १९ भौंह चढ़ाके न बचोगे२० क़सम २१ रावणकी तरह लड़ो २२ फ़ौज २३—३१ हाथी २४ तलवार २५ नाक २६ बराबरी २७—२८ मैदान लड़ाई वा भोग २९ हनूमानजी ३० घोड़ा३२ ज़मीन३३ होंठ३४ हाथी ३५ शेर ३६ औरतकी छातीसे काम३७ फौज ३८ नाम हाथी ३९॥

दो० पड़ा बीच तब धर धर प्रेम[1] राज के टेक।
मानों भोग छहूऋतु मिलदोनों होय एक ॥

खण्डचौबीसवांछहऋतुबारहमास ॥

प्रथम[2] बसन्तनवलऋतुआई। सुऋतु चैत बैशाख सुहाई ॥
चन्दन चीर पहिरधन[3] अंगा। सेंदुर दीन्ह बेहँसि भरमंगा ॥
कुसुमहार औ परवल[4] बासू। मलयागिरि[5] छिड़का कैलासू ॥
सूर सपेती[6] फूलन दासी। धनऔ कन्तमिले सुखबासी ॥
पियसँयोग[7] धन यौवन बारी। भँवरपुहुप सँगकरहिं धमारी ॥
होय फाग भल चाचर जोरी। बिरह जरायदीन्ह जसहोरी ॥
धनशशि[9] सीर[10] तपी[11] पियसूरू[12]। नखतशिंगारहोहिंसबचूरू ॥

दो० जेहि घर कंता ऋतु भली आव बसंता नित्त।
सुखभर आवहिं देवहरे[13] दुःख न जानै कित्त ॥

ऋतु ग्रीषम की तपननहिं तहां। जेठ असाढ़ कन्त घर जहां ॥
पहिरे सुरँग चीर धन भीना। परमल[14] मेदरही तन भीना ॥
पद्मावत तन सीर[15] सुबासा। नैहर राज कंत घर पासा ॥
औ बड़ जूड़ तहां सोनारा[16]। अगर पोत सुख[17] नन्तउहारा ॥
सेत[18] बिछावन सूर सपेती[19]। भोग बिलास कराहमुखसेती ॥
अधर[20] तँबोरकपूर भीउसैना। चन्दनचरच लाव नितबैना ॥
भा अनन्द सिंहल सब कहूँ। भागवन्त कहँ सुख ऋतुछहूँ ॥

दो० दाड़िम[21] दाख[22] लेहिरसबरसहिंआंबछुहार।
हरियरतन सोटा[23] कर जो अस चाखनहार ॥

ऋतुपावस[24] बरसै पिवपावा। सावनभादौंअधिक[25] सुहावा ॥
पद्मावत चाहत ऋतु पाई। गगन[26] सुहावनभूमि[27] सुहाई ॥

प्रेमने बीचबचाव करदिया १ पहिले २ पद्मावत ३ खुशबूदार ४ चन्दन ५ तोशक लिहाफ़ ६—१८ मुलाक़ात ७ फूल ८ चांद ९ ठंडा १०—१५ गर्म ११ सूर्य १२ महादेव जी १३ बहुतखुशबू १४ रात के रहने का मकान १६ फ़र्श १७ सफ़ेद १८ होंठ २० अनार २१ अंगूर २२ तोता २३ बरसात २४ बहुत २५ आसमान २६ ज़मीन २७ ॥

कोकिल बैन पांत बग[1] छूटी । धन[2] निसरी जनु बीरबहूटी ॥
चमकबीज[3] बरसै जल सोना । दादुर[4] मोरशब्द[5] सुठलोना ॥
रँगरातीपिय सँगनिश[6] जागी । गरजे गगन[7] चौंककँठलागी ॥
शीतल बुन्द ऊँच चौपारा । हरियर सब देखै संसारा ॥
मलयसमीर[8] बास सुखबासी । बेल फूल सेज सुख दासी ॥
हरियर भूमि[9] कुसुम्भी चोला । औधनपियसँगरचोहिंडोला ॥

दो० पवन झकोरेहैहरष[10] लागै शीतलबास ।
धनजानी यहिपवनहै पवनसोअपनेपास ॥

आयशरदऋतुअधिक[11] पियारी । नाउँकुवारकातिकउजियारी ॥
पद्मावत भइ पूनो कला[12] । चौदह चांद उई सिंहला ॥
सोरह किरण शृँगार बनावा । नखतभरासूर्य्यशशि[13] पावा ॥
भानिर्मल[14] सब धर्तिअकासू । सेजसँवार कीन्ह बलदासू ॥
श्वेत[15] बिछावनऔ उजियारी । हँसहँसमिलहिंपुरुषऔनारी ॥
सोने फूलहिं पृथवी[16] फूली । पिय धनसोंधनपियसोंभूली ॥
चष[17] अंजनदैखँजन[18] दिखावा । होय सारस जोरी रसपावा ॥

दो० यहिऋतु कन्थापासजेहि सुखतिनके हियमांह ।
धन हँसलागी पियगले धनगल पियके बांह ॥

आयशिशिरऋतु[19] तहांनसीऊ । अगहन पूष जहां घरपीऊ ॥
धन[20] औपियमहँसीव[21] सुहागा । दुहूँअंग[22] एकै मिललागा ॥
मनसो मन तनसो तन गहा । हिय[23] सोहियबिचहारनरहा ॥
जानहुँ चन्दन लाग्यो अंगा । चन्दन रहे न पावे संगा ॥
भोगकरहिं सुख राजा रानी । वहँलेखे सब सृष्टि[24] जुड़ानी ॥
जूझ[25] दुहूँ यौवन[26] सों लागा । बिचहुतसीव[27] जीवलैभागा ॥

बगुला १ पद्मावत २ बिजुली ३ मेंढक ४ आवाज़ ५ रात ६ आसमान ७ हवा ८ ज़मीन ९—१६ खुश १० बहुत ११ पूर्णमासीका चाँद १२ चाँद १३ साफ़ १४ सफ़ेद १५ आँख १७ ममोला १८ जाड़ेकामौसिम १९ पद्मावत २० जाड़ा २१—२७ बदन २२ छाती २३ सारीदुनियां २४ लड़ाई २५ जवानी २६ ॥

दुहु घट मिल एकै कै जाहीं । ऐसेमिलहिंतवहीँनअघाहीं॥

दो० हंसा केलकरहिंज्यों सरवर[1] कँदनहि[2] दोउ ।
सेव पुकारे पारभा जस चकवाक बिछोउ ॥

ऋतुहेमन्त सँगपियोपियाला । मानहुँ फागुनसुखसेवसाला ॥
सूर सपेती[3] महँ दिन राती । दगल चीरपहिरहिंबहुभांती ॥
घरघर सिंहल कै सुख भोजू । रहा न कतहूँ दुखकर खोजू ॥
जहँधनपुरुष शीतनहिं लागा । जानहुँ काग देख सर भागा ॥
जाय इन्द्रसों कीन्ह पुकारा । हों पद्मावत देश निसारा ॥
यहि ऋतु सदासंग मैं सोवा । अब दरशनते भराबिछोवा[4] ॥
अब हँसकेशशि[5] सूरह[6] भेटा । अहाजो शीतबीचहुत मेटा ॥

दो० भयो इन्द्रकर आयसु[7] परसे[8]हावहिं भइसोय ।
काहु काहुकी पीरभा कोहि काहुकी होय ॥

नागमती चितौर पँथ हेरा[9] । पिययोगी पुनिकीन्ह नफेरा ॥
नागर नारि काहु बस परा । तैं बिमोह[10] मोसों चित हरा ॥
सुवा काल[11] होय लैगा पीव । पीव नजात जात पर जीव ॥
भयो नरायण बावन किरा । राज करत नलराजा छरा ॥
करण[12] वान लीन्होंकैछंदू । भरथहिं[13] भयोभिलमिला[14] नंदू ॥
मानत भोग गोपिचँद[15] भोगी । लैअपसवां[16] जलंधर योगी ॥
लैकेकंथ[17] भाकुररा[18] लोपी । कठिनबिछोहजियहिकिमिगोपी ॥

दो० सारस जोरी किमहरी मारगयो किन खाग ।
भुरभुर मांजर धन[19] भईबिरहकीलागी आग ॥

पिय वियोग[20] अस बावर जीव । पपिहा जस बोलै पिय पीव ॥
अधिक[21] काम दग्धे[22] सोकामा । हरिलै सुवा गयो पिय नामा ॥
विरह बाणतस लाग न डोली । रक्तपसीज भीजतन चोली ॥

तालाव १ मुखसे कलोल २ तोशक लिहाफ़ ३ अलग ४ चाँद ५ सूर्य ६ हुक्म ७ रामचंद्र ८ राहदेखना ९ मोहलेना १० मौत ११ नाम राजा १२ नाम योगी १३—१५ दुखपाया १४ छिपना १६ स्वाविन्द १७ कौआ १८ नागमती १९ दुख २० बहुत २१ जलना २२ ॥

संगही हीरहार हिय बारी। हरहर प्राण तजी[1] अबनारी॥
खन[2] इक आव पेटमहँ श्वासा। खनहिजायजिवहोयनिरासा॥
पवन डुलावहिं सींचहिं चोला। फिरकेनारिसमुझमुखबोला॥
प्रान पयान[3] होत को राखा। कोयलऔचातृक[4] मुखभाखा॥

दो० आह जो मारी बिरहकी आग उठी तेहि हाग।
हंस जो रहा शरीर महँ पांख जरे तब भाग॥

पाट[5] महादेव हिये[6] निहारू। समझजीवचितचेतसँभारू॥
भँवर कमलसँग होय मिलावा। सँवरनेहमालतिपुनिआवा॥
जैसी पपीहा स्वातिहि प्रीती। टेक प्यासबांधे जिय सेती॥
धर्ती जैसि गगन[7] सो नेहा। पलट फिरै बर्षाऋतु मेहा॥
पुनि बसन्तऋतु आव नवेली। सुरससुमधुकर[8] सारसवेली॥
जनअस जीव करेसि तूबारी। वहतरवर[9] पुनिउठहिंसँवारी॥
दिनदश बिनजल सूखा कांसा। पुनि सोइसरवर सोईहांसा॥

दो० मिलहिंजो बिछुड़े साजन कैकी भेंट कहन्त।
तपन मिरगसर जिनिसहैं तेअद्रापलहन्त॥

चढ़ाअसाढ़गगन[10] घन[11] गाजा। साजा बिरह दुंददलबाजा॥
धूमश्याम धौरी[12] घनधाये। श्वेतध्वजा[13] बक[14] पांति देखाये॥
खड्ग[15] बीज[16] चमकैचहुँओरा। बुन्दबान बरसहिं घनघोरा॥
उनई घटा आय चहुँ फेरी। कंत उबार मदन[17] हौं घेरी॥
दादुर[18] मोर कोकिला पीउ। गिरहिबीज घटरहै न जीउ॥
पुष्य नक्षत्र शिर ऊपर आवा। हौंबिननाह[19] मँदिरकोछावा॥
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मो पिय बिनको आदर देई॥

दो० जेहिं घर कंताते सुखी तेहि गारू तेहि गर्ब[20]।
कंत पियारे बाहरे हम सुख भूला सर्ब॥

छोड़ना १ पल २ कूच ३ पपीहा ४ तालू ५ दिल ६ आसमान ७ भँवर ८ पेड़ ९ आसमान १० बादल ११ भूरी काली सफ़ेद १२ सफ़ेदपताका १३ बगुला १४ तलवार १५ बिजुली १६ कामदेव १७ मेंढक १८ खाविन्द १९ ग़रूर २० ॥

सावन बरस मेह अतवानी[1] । मरन परीहौं विरह झुरानी ॥
लाग पुनरबसु पीउ न देखा । भइ्बादर कहँ कंत सरेखा[2] ॥
रक्त[3] की आंशुपरहिं भुइँ टूटी । रेंग चलीं जनु बीरबहूटी ॥
सखिनरचा पियसंग हिंडोला । हरियरभूमि[4] कुसुम्भी चोला ॥
हिय[5] हिंडोल जसडोलै मोरा । विरहझुलावै देइ झकोरा ॥
बाट[6] असूझ अथाह गँभीरी[7] । जिव बावरभा फिरै भँभीरी ॥
जगजलबूड़ जहां लग ताकी । मोरनाव खेवक[8] बिन थाकी ॥

दो० पर्वत समुद्र अगम बन औ बीहड़घन ढंख ।
किमकर भेटूँ कन्ततुम नामो पांव न पंख ॥

भरिभादौं दुपहर अति भारी । कैसें भरों रयनि अँधियारी ॥
मँदिरसून पिय अन्तहि बसा । सेजनाग भइ दहिदहि डसा ॥
रहौं अकेल गहें इक पाटी । नयन पसार मरों हियफाटी ॥
चमकबीज घन गरजतत्राशा । विरहकालहोय जीवनिराशा ॥
बरसै मघा[9] झकोर झकोरी । मोर दुइनयनचुवैंज्यों ओरी ॥
धन[10] सूखै भर भादौं माहां । अबहुँनआयनसींचेसिनाहां[11] ॥
पुरवा[12] लाग भूमि[13] जलपूरी । आक जवास भईहौं झूरी ॥

दो० जलथलभरे अपूरसब धर्ति गगन[14] मिलएक ।
धनयौवन अवगाह[15] महँ वय बूड़ी पिय टेक ॥

लागकुँवार नीर[16] जसघटा । अबहुँ आवरे प्रीतमलुटा[17] ॥
तुहि देखों पियपलुहेकया[18] । उतराचीत[19] बहुरकरमया[20] ॥
उये अगस्त[21] हस्त[22] तनगाजा । तुरी[23] पलान चढ़ै रण राजा ॥
चित्रा[24] मीत मीन[25] घरआवा । कोकिल पीव पुकारत पावा ॥
स्वाति बूँद चातक[26] मुखपरी । सीप समुद्र मोति बहुभरी ॥

तूलाहुआ १ होशियार २ लोहू ३ ज़मीन ४—१३ दिल ५ राह ६ गहरी ७ मल्लाह ८ २३ मे[illegible] ९—१२—१६—२१—२२—२४ औरत तथा नागमती १० खाविन्द ११ आस-[illegible] १५ पानी १६ लौटके १७ बदनहराहोजाय १८ मेहरबानी २० घोड़ा [illegible] २६ ॥

सरवर[1] सँवरि हंस चलिआये। सारस कुरलेंखँजन[2] देखाये॥
भई निराश कास बन फूले। कन्त नफिरे बिदेशहि भूले॥
दो० बिरहहस्ति[3] तन शाले[4] घाय करै नितचूर।
आय बचावो बेग[5] पिय गाजहु होय सेंदूर[6]॥
कातिक शरदचन्द उजियारा। जगशीतल मोबिरहिनजारा॥
चौदह किरण चन्द परकाशू[7]। जनहु जरै सबधर्तिअकाशू॥
तन मन सेज करै इकदाहू[8]। सबकहँ चन्दभयोमोहिंराहू॥
चहूँ खण्ड लागे अँधियारा। जो घर नाहीं कन्तपियारा॥
अबहूँ निठुर आव यहिबारा। पर्ब देवारी हो संसारा॥
संग झुमकगावाहिं अँग मोरी। हों झुरवों बिछुरीजेहि जोरी॥
जेहिघरपियसोमनोरथ[9] पूजा। मोकहँ बिरहसौत दुखदूजा॥
दो० सखिमानैं त्योहार सब गाय देवारी खेल।
हौंकाखेलौं कन्त बिन रही छार[10] शिर मेल॥
अगहनदिवस[11]घटानिश[12]बाढ़ी।दुपहररयनि[13] जायकिमिगाढ़ी॥
अबधन दिवस बिरहभाराती। जरोंबिरह जस दीपकबाती॥
कांपाहिया[14] जनावा सीव[15]। तौपै जाय होय सँग पीव॥
घर घर चीर रचे सब काहू। मोर रूप सब लैगा नाहू[16]॥
पलट न बहुरा गाजो बिछोई। अबहूँ फिरै फिरै रँग सोई॥
बज्रांगिन बिरहिनहियजारा। सुलगसुलगदग्धे[17]भइछारा[18]॥
यहदुख दग्ध न जानै कन्तू। यौबन जन्म करै भसमन्तू॥
दो० पियसों कहो सँदेशरा ये भँवरा ये काग।
सोधन बिरहिनजरगईतेहिकधुवांहमलाग॥
पूषजाड़ थर थर तन कांपा। सूर्य्यजुड़ायलंकदिश[19]तापा॥
बिरह बाढ़भा दारुन[20] सीव। कँप कँप मरों लेइ हर जीव॥

तालाब १ ममोला २ हाथी ३ छेदना ४ जल्द ५ शेर ६ रोशन ७ जलाना ८—१७ कामना ९ ख़ाक १०—१८ दिन ११ रात १२—१३ दिल १४ जाड़ा १५ ख़ाविन्द १६ उत्तरतरफ़ १९ टेढ़ा २० ॥

कन्त कहां हो लागों हियरे[१] । पन्थ[२] अपारसूझनहिं नियरे ॥
सूरसपेनी[३] आवै जूड़ी । जानहु सेज हिमंचल[४] बूड़ी ॥
चकई निश बिछुड़े दिनमिला । हौं दिनरात बिरहकोकिला ॥
रयनि अकेल साथनहिं सखी । कैसे जिये बिछोही पखी ॥
विरह सुजान भयो तन जाड़ा । जियतखायओमुयेहिनछांड़ा ॥

दो० रक्तढुरा माँसूगिरा हाड़ भये सब शंख ।
धन[५] सारसहोइ रुरमुई आयसमेटहिंपंख ॥

लाग्यो माघ परै अति पाला । विरहा कालभयो जड़काला ॥
पहलपहलतनरुई जोझांपों।अहलअहलअधिको[६] हिय[७] कांपों॥
आय सूर[८] ह्वै पतरे नाहा[९] । तुहि बिन जाड़ न छूटे माहा ॥
यही माह उपजी रस मूलू । तो सुभँवर मोर यौबन फूलू ॥
नयनचुवहिंजसमहवटनीरू[१०]।तेहिबिनआगलागशिरचीरू[११]॥
टपटप बूँद परहिं जनु ओला । बिरह पवन ह्वै मारै झोला ॥
केहिकशिंगारकोपहिरपटोरा[१२] । ग्रीव[१३] न हार रहे ह्वै डोरा ॥

दो० तुम बिनकन्ताधन हरवी तन[१४] तृनबरभाडोल ।
तेहिपर बिरह जरायके चहै उड़ावा झोल ॥

फागुन पवन झकोरे महा । चौगुन सीव[१५] जायनहिंसहा ॥
तन जस पियर पात भामोरा । तेहि पर बिरहदेइझकझोरा ॥
तरवर[१६] झरहिंझरहिं वनढांखा । भईउपन्त[१७] फूलफरशाखा ॥
करहिं वनाफत[१८] कीन्हहुलासू । मोकहँ जगभा दून उदासू ॥
फाग करहिं सब चांचर जोरी । मोतनलाय दीन्हजस होरी ॥
जो पै पिये जरत अस भावा । जरतमरतमोहिं रोसनआवा ॥
रात दिवस[१९] निरभै जिय मोरें । लग्यों निहार[२०] कन्तजोतोरें ॥

दो० यहतनजारों छार[२१] कै कहों कि पवन उड़ाव ।

छाती १ राह २ तोशकलिहाफ़ ३ पालाकीतरह ४ तथा नागमती ५ बहुत ६ दिल ७ सूर्य्य ८ खाविन्द ९ पानी १० कपड़ा ११ जोड़ा १२ गरदन १३ हलकीतिनकासे १४ जाड़ा १५ पेड़ १६—१८ पैदा १७ दिन १९ तथान्योछावरहों २० राख २१ ॥

मग[1] तेहि मारग[2] कै परै कन्त धरै जहँपांव ॥
चैत बसन्ता होय धमारी। मो लेखे संसार उजारी ॥
पंचम बिरह पनच शर[3] मारी। रक्त रोय सगरे बन ढारी ॥
बूड़उठे सब तरवर[4] पाता। भीज मजीठ[5] टेसुबनराता[6] ॥
बौरे अम्ब फरे अब लागी। अबहुँ सँवरिघरआवसभागी ॥
सहस[7] भाव फूली बन पती। मधुकर[8] फिरैं सँवरि मालती ॥
मोकहँ फूल भये सब कांटे। दृष्टिहरी जनु लागहिं चांटे[9] ॥
भर यौबन[10] भइनारँगशाखा। सो अबबिरह तातहै चाखा ॥
दो० घरन परेवा[11] आवजस आय परो पियटूट।
नारि पराये हाथ है तुम बिन पांव न छूट ॥
भा बैशाख तपन अति लागी। चोला चीर चँदनभाआगी ॥
सूरज जरत हिमंचल ताका॥बिरहबिजाग[12]सौंह[13]रथहांका ॥
जरत बचासि होय पियछाहां। आय बुझाव अँगारहिंमाहां ॥
तोहि दरशनकै शीतल[14] नारी। आयआग सोकर फुलवारी ॥
लागे जरै जरै जस भारू। फिरफिरभूजेसितज्योंनबारू[15] ॥
सरवर[16]हिया[17]घटतनितजाई। तरक तरक कै कै भर आई ॥
बेहिरतहिया[18]करहुपियटेका[19]। दृष्टि[20] मयाकरमिलवहुएका ॥
दो० कमलजोविकसत[21] मानसरबिनजलगयोसुखाय।
अबहुँ बेलफिर पल्हवे जो पिय सींचहु आय ॥
जेठजरोंजग भुनाहि लुवारा। उठहिं बौंडरा परहिंअँगारा ॥
बिरह गाज[22] हनुमत ह्वैजागा। लंका दाह[23] करै तनलागा ॥
चारो पवन झकोरैं आगी। लंका दाह पलंका लागी ॥
दहभइश्यामनदीकालिन्दी[24]। बिरहकीआगकठिनअसमुन्दी ॥
उठै आग औ आवै आंधी। नयन न सूझ मरों दुखबांधी ॥

शायद १ राह २ तोरखींचके ३ पेड़ ४ लाख ५ लाल ६ हज़ार ७ भँवर ८ चींटी ९ जवाना १० कबूतर ११ भारी १२ सामने १३ ठंढा १४ दरवाज़ा १५ तालाब १६ दिल १७ छातीफटना १८ मदद १९ निगाह २० खिलना २१ बिजुली २२ जलाना २३ यमुना २४ ॥

अधजर भई मांस तनसूखा । लाग्यो विरह काल ह्वैभूखा ॥
मांसखाय अबहाड़हि लागा । अबहुँआवआवतसुनिभागा ॥
दो० गिरिसमुद्रशशि[1] मेघरवि[2] सहिनसकेयहआग ।
मुहमद सती सराही जरै जो अस पियलाग ॥
तपै लाग अब जेठ असाढ़ी । भइमोकहँयहिछाजन[3] गाढ़ी ॥
तृण तृण[4] बर भा झूरों खरी । भा बर्षा दुख आगर जरी ॥
बंध नाहिं औ खंड न कोई । नाग[5] न आवकहों कहि रोई ॥
सांठ[6] नांठ लग बात को पूँछा । बिनजिय फिरैमूँजतन छूँछा ॥
भई दुहेली[7] टेक[8] बहूनी । थांमनाह[9] उठ सके न थूनी ॥
बरषहिं मेह चुवहिं नयनाहा । छपर छपर होई बिन नाहा ॥
कोरो कहां ठाठ नव साजा । तुम बिनकंतन छाजनछाजा[10] ॥
दो० अबहूँ दृष्टि[11] मया[12] करनाथ निठुरघरआव ।
मँदिर उजाड़ होतहै नवकै आय बसाव ॥
रोय गँवाई बारह मासा ।सहस[13] सहसदुखइकइकश्वासा ॥
तिल तिल बरषबरषपरजाई । पहर पहर युग युगनसराई[14] ॥
सौंह[15] आव पिय रूप मुरारी । जासों पाव सुहाग सुनारी ॥
सांझ भई झुरझुरपँथ[16] हेरी । कौन सो घरी करी पियफेरी ॥
दहि[17] कुइला भइकन्तसनेहा । तोला मांस रहा नहिं देहा ॥
रक्त न रहा बिरह तन गिरा । रती रती ह्वै नयनहिं ढुरा ॥
पांय लगी जोरै धन[18] हाथा । जोरा नेह जोराये नाथा ॥
दो० बरस दिवस[19] धनरोयकै हारपरी चितझंख ।
मानुष घर घर बूझकै पूँछी निसरी पंख[20] ॥
भई पुँछार[21] लीन्ह बन बासू । बैरिनसौत दीन्हचिलवासू[22] ॥

चाँद १ सूर्य्य २ छावना ३ तिनकाकेबराबर ४ पत्ती ५ रुपया पासनहीं ६ दुबलो ७ बेसहारा ८ ख़ाविन्द ९ छावनी १० निगाह ११ मेहरबानी १२ हज़ार १३ मालूमहोना १४ सामने १५ राह १६ जलना १७ नागमती १८ दिन १९ जानवरपरिन्द २० मोर २१ चिल्लाना २२ ॥

हौंखरि[1] बान बिरहतन लागा । जो अबहूँ आवै घर कागा ॥
हारल[2] भई पंथ मैं सेवा । अब तुहि पठवों कौन परेवा[3] ॥
धौरी[4] पांडुक[5] कहि पियठाऊँ । जो चितरोख[6] न दूसरनाऊँ ॥
जाय बिवाही पिय कँठ लुवा[7] । करै मिलाव सोई गौरवा[8] ॥
कोकिल[9] भई पुकारत रही । महर[10] पुकार लीन्ह लै दही ॥
पेड़ातिलोरी[11] औ जलहंसा[12] । हिरदय[13] बैठिबिरहलगनंसा ॥

दो० जेहि पंखी के नेर होय कहै बिरह की बात ।
सोई पंखजर तरवर[14] जायहोय नहिं पात ॥

कुहुककुहुक जस कोयल रोई । रक्त आंश घुँघचीबन बोई ॥
भइकरमुखी नयन तन राती[15] । कोसिरावबिरहादुख ताती[16] ॥
जहँ जहँ ठाढ़ होय बनबासी । तहँतहँहोइघुँघचिन्हकीरासी ॥
बूँद बूँद महँ जानौ जीव । गूँजागूँज करहिं पिय पीव ॥
तेहि दुखभई पलास निपाती । लोहू बूड़ उठी होय राती[17] ॥
राती बिम्ब[18] भये तेहि लोहूँ । परवर पाक फटे हिय[19] गोहूँ ॥
देखों जहां सोइ कै राता । जहँ सोरतन कहै को बाता ॥

दो० नापावस[20] वह देशरा नाहिं हेवंत न बसन्त ।
ना कोकिल न पपीहरा जेहिसुनिआवैकन्त ॥

फिरिफिरि रोयकोईनहिंडोला । आधीरात बिहंगम[21] बोला ॥
तुइफिरफिरदाहे[22] सबपांखी।केहिगुनरयनि[23] नलावेसिआंखी ॥
नागमती केहि कारन[24] रोई । कासों कहूँजोकन्त बिछोई[25] ॥
मन चित हिये नउतरे भोरे । नयन कजल चष[26] रहेनसोरे ॥
कोइनजाय तेहि सिंहल दीपा । जेहिसेवात कह नयनासीपा ॥
योगीहोय निसरा सो नाहूँ[27] । तबहुन कहा सँदेशन काहूँ ॥

तिनका १ नामचिड़िया २-४—५—६ जानवर परिन्द ३ गलेलगाया ७ तथामर्द ८ नामचिड़िया ९—१०—११—१२—२१ दिल १३ पेंड़ १४ लालआंख १५ जलीहुई १६ लाल १७ कुंदरू १८ छाती १९ बरसात २० जलाना २२ रात २३ वास्ते २४ अलग २५ आंख २६ ख़ाविन्द २७ ॥

तिन पूँछों सब योगी जंगम । कहैंनकोइ निजबातविहंगम ॥

दो० चाखों चक्र उजारभये सकल सँदेशा टेक ।
कहोंविरह दुख आपन बैठसुनहु दँड एक ॥

तासों दुख कहिये हो बीरा । जेहि सुनके लागै पर पीरा ॥
कोहोय भिम[१] दिनको लैं रहा । को सिंहल पहुँचावै चहा ॥
जहां सोकन्त गयेहोय योगी । होंकिंगरी भइ झूर वियोगी[२] ॥
वह सुनके पूरी करु भेटा[४] । होंभइ भस्म नआय समेटा ॥
कथा जो कहै आय पियकेरी । पांवर[५] होहुँ जन्म भर चेरी ॥
वहके गुन सँवरत भइ माला । अबहुँन वहुरा उड़गा छाला ॥
विरह गुरु खप्पर के हिया[६] । पवन अधार रहै सो जिया ॥

दो० हाड़भई झुर किंगरी नसैं भई सब तांति ।
रोमरोम तन धुनउठै कहो विथा तेहिभांति ॥

पद्मावत सों कहो विहंगम[७] । कन्तलुभाय रहे जेहि संगम ॥
तूँ घर वरन भई पिउ हरता । मोतन जप दीन्हीं औवरता ॥
रावन कनक[९] सो तोकहँ भयो । रावट[१०] लङ्क मोहिंकै कियो ॥
तोकहँ चैन सुख मिलै शरीरा । मोकहँ हिये द्वंद दुख पीरा ॥
हमहूँ व्याह तोर सँग पीऊ । आपहिपाय जान पर जीऊ[११] ॥
अबहूँ कर माया जिव फेरो । मोहिं जियाव देहु पिय मेरो ॥
मोहिं भोगसों काज न प्यारी । सौंह दृष्टि[१२] की चाहन हारी ॥

दो० सौत न्होस तू बैरिन मोरकन्त जेहि हाथ ।
आनमिलाव एकवेरकैसे तोरपांय मोरसाथ ॥

रतनसेन की मा सरस्वती । गोपिचन्द जस मैनावती ॥
अँधरी बूढ़ी सुठ दुख रोवा । यौवन[१३] रतन कहांहोयखोवा ॥
यौवन[१४] अहा लीन्ह सो काढ़ी । भइ विनटेक[१५] करैको ठाढ़ी ॥

अर्गीतरफ़ १ नामएकस्थान २ दुर्बी ३ मुलाक़ातकर ४ जूती ५ दिल ६ नामचिड़िया ७ [illegible] ८ सोना ९ राज १० अपना पेर जानके मेरीज़िन्दगीचाह ११ मुखोनिगाह १२ जवानी १३—१४ बेसहारे १५ ।

बिन यौबन भइ आश पराई। कहां सुपतखम्भ होयआई॥
नयन दृष्टि[1] नहिं दियाबराहीं। घर अँधियार पूत जो नाहीं॥
कोरी चला श्रवण[2] की ठाउँ। टेक देह वह टकों पाउँ॥
तुम श्रवण कै कांवर सजी। डार लाय सो काहे बजी[3]॥

दो० श्रवण श्रवणके रुरमुई माता कांवर लाग।
तुमबिन पानि न पावे दशरथ[4] लावै आग॥

लैसुसँदेश बिहंगम[5] चला। उठी आग सगरी सिंहला॥
बिरह बिजाग[6] बीजको ठेगा। धूम[7] सोउठीश्याम भयेमेघा।
भरिगा गगन[8] लूक तसछूटी। कै सोनखत गिरहिं भुइँटूटी
जहँ जहँ भूमि[10] जरी भारेहू। बिरहकिदग्ध[11]भईजनुखेहू
राहु केत जस लंकाजरी। औ उड़चिनग चांदमहँ
जायबिहंगम[13]समुद्रडफारा[14]। जरे मच्छ पानी भा ॥
दाढ़ी[15] बन बीहड़ जल सीपा। जाय नेरभा सिंहल पा॥

दो० समुद्रतीर इक तरवर[16] जाय बैठ तेहि रूख
जबलगकहि नसँदेशा तबलगप्यासनभू

रतनसेन बन करत अहेरा[17]। कीन्हबही तरवर रि फेरा॥
शीतल वृक्ष समुद्र के तीरा। अतिउतंग[18] औ ह गँभीरा॥
तुरी[19] बांधिके बैठि अकेला। साथी और क सबकेला॥
देखतफिरै सो तरवर शाखा। लाग सुनै नकी भाखा॥
पंखिनमहँ जो बिहंगम अहा। नागमती ासों दुख कहा॥
पूँछहिं सबै बिहंगम[20] नामा। अहो मी[21] काहेतुमश्यामा॥
कहेसि मीत मासिकदुइ[22] भये। जम्बद्वी तहां हम गये॥

दो० नगरएक हमदेखा गढ़ ्ीर वह नाउँ।

निगाह १ नामब्राह्मणजोअंधो अंधा मा ब कोकाँवरमें लियेरहताथा २ छोड़ना ३ राजादशरथ ४ नामचिड़िया ५—१३ जहाँ रहकीबिजुलीवहाँबिजुलीक्यादुश्मनीकरे ६ धुवाँ ७ काला ८ आसमान ९ ज़मीन १० लना ११ राख १२ चिल्लाना १४ जलाना १५ पेड़ १६ शिकार १७ ऊँचा १८ घोड़ा १९ नामचिड़िया २० दोस्त २१ दोमहीना २२॥

सोदुखकहूँकहांलग हमडाढ़े[1] तेहिठाउँ[2] ॥

योगी कै निसरा सो राजा। सूननगरजानहुधुन्द[3] बाजा ॥
नागमती है ताकर रानी। जरैबिरह जस कोयल वानी ॥
अबलग जरभइ होयहै छारा[4]। कही नजाय विरहकीझारा[5] ॥
हिया फाट वह जबहीं कुहके। परैआंशु सबहोय होय लूके ॥
चहूँखण्ड छिटकी वह आगी। धर्ती जरतगगन[7]कहँ लागी ॥
बिरह दवान[8]कोजरत बुझावा। चही लाग सोहैरैं धावा ॥
हां पुनि तहां सो दाढ़ लागा। तनभा श्याम जीवलै भागा ॥

दो० कातुम हँसो गर्ब[9] के करहु समुद्र महँ केल।
मतिअन्हाविरहीविशपरहिं दहीअगिनजलमेल॥

ने चितौर राजैं मन गुना। विधि सँदेश मैं कासों सुना ॥
तरवर[10] पर पंखी बेशा। नागमती कर कहै सँदेशा ॥
क मीत मन चेतबसेरू। देव कि दानव पवन परवेरू ॥
रुद्र ह्म शिव बाचा तोहीं। सोनिजबातअन्त कहुमोहीं ॥
कहा नागमती तुह देखी। कहेसिबिरहजस मरोंबिशेखी ॥
हां राउ सोई भा योगी। जेहिकारणवहऐसोवियोगी[12] ॥
जस तू प[13] हों दिन भरों। चाहों कबहिं जाय उड़ परों ॥

दो० पल आंखतेहि मारग[14] लागीदुनहु रहाहिं।
कोउ न देशी आवहिं तेहिक सँदेश कहाहिं ॥

पूँछहि कहा सं न वियोगू[15]। योगी भया नजानहि भोगू ॥
धर्नी संग न पंगे पूरे। पानी बूड़ रात दिन झूरे ॥
तेल बैल जस बं फिरे। परे भँवर महँ सौंह[16] नटरे ॥
तुरी[17] नाउँ दाहिन र हांका। बायें फिरै कुम्हार का चाका ॥
तुहिअसनाहिंजो पंखभुलाना। उड़ै सोआव जगतमहँजाना॥
एक दीप का आयों तेरे। सब संसार पांयतर मोरे ॥

जल्था १ जगह २ अंधियारा ३ राख ४ लूक ५ छाती ६ आसमान ७ आग ८ ग़रूर ९ से ११० महादेव जी ११ दुःखी १२ जानवर पखेरू १३ राह १४ दुख १५ सामने १६ घोड़ा १७॥

दहने फिरै सो अस उजियारा। जसजग चांदसूर्य्यऔतारा॥

दो० मुहमदबायेंदिश[1] तजी एकश्रवण[2] इकआंख।
जबते दाहिनहोय मिला बोल पपीहा पांख॥

हौंध्रुव[3]अचल सोदाहिनलावा। फिरसुमेरु[4]चितोरगढ़आवा॥
देखों तोरे मँदिर घमोई। मात तोर आंधर भइ रोई॥
जस श्रवण[5]बिनअन्धीअन्धा। तसरुरमुई तोहिं चितबन्धा॥
कहेसि मरों को कांवर लेइ। पूत नाहिं पानी को देइ॥
गई प्यास लाग तुहि साथा। पानी देह दशरथ के हाथा॥
पानी न पिये आग पे चाहा। तोहिअसपूतजन्मअसलाहा॥
भागीरथी[6] होहु कर फेरा। जाय सँवारि मरनकी बेरा॥

दो० तूसपूत मन ताकर अस परदेश न लोहि।
अबताईं मुइहोयही मुयहिं जाय गत देहि॥

नागमती दुख बिरह अपारा। धर्ती स्वर्ग जरै तेहिं झारा॥
नगरकोट घर बाहेर सूना। न्योज[7] होय घरपुरुषबहूना[8]॥
तू कामरू परा बश टोना। भूलायोग छरा तोहि टोना॥
वह तुहि कारन मर भइमारा। रही नाकहोय पवनअधारा॥
कहुँ बोलहिंलै मोकहँ खाहू। मांसन काया[9] जोरुच काहू॥
बिरह मयूर[10] नाग वह नारी। तूमँजार[11]करबेग[12]गुहारी[13]॥
मांस गिरा मांजर ह्वै परी। योगी अबहुँ पहुँचलै जरी[14]॥

दो० देखबिरह दुखताकर मैं सो तजा[15] बनबास।
आयोभाग समुद्रमहँ तोह न छांडे पास॥

असपुनिजरा बिरहकरगठा[16]। मेघश्याम भये धूम जो उठा॥
दाढ़ा[17] राहु केतु गा दाधा। सूरज जरा चांद जर आधा॥
औ सब नखत तराई[18] जरीं। टूटहिं लूक धर्ति महँ परीं॥
जरै सो धर्त्ती ठावहिं ठाउँ। दहकपलाश[19] जरे तेहिंदाउँ॥

तरफ़ १ कान २ नामसितारा ३ पहाड़ ४ नाम मातापिताभक्त ५ गंगाजी ६ परमेश्वरनकरे ७ ख़ालो ८ बदन ९ मोर १० बिज्ञी ११ जल्द १२ मदद १३ बूटी १४ छोड़ना १५ ढेर १६ जलना १७ छोटेनखत १८ ढाख १९॥

बिरह दवानल निकसी भारा । दहिदहिपरवतहोहिंअँगारा ॥
भँवर पतंग जरे औ नागा । कोकिलभुजयलऔवनकागा ॥
वन पंखी सब जिवलै उडे । जल पक्षी जलमहँ दुख बुड़े ॥
दो० हमहुँजरत तहँ निकसा समुद बुझायों आय ।
समुद्रजरा पानिभा खारा धूमरहा जगछाय ॥
राजैं कहा रे स्वर्ग सँदेशी । उतरआव मोहिंमिलपरदेशी ॥
पांयटेक तहिं लावों हियरे[1] । परम सँदेश कहो कै नियरे ॥
कहा विहंगम[2] जो वनवासी । कितक गृहीते होहि उदासी ॥
जेहितरु[3] तरितुमआसनकोऊ । कोकिल काग वरावर दोऊ ॥
धर्तीमहँ विप चारा परा । हारल[4] जानि भूमि परिहरा[5] ॥
फिरों वियोगी डारहि डारा । करों चले कहँ पंखसँवारा ॥
जहवां घरी घटत नित जाहीं । साँझजीवहैदिवसहि[6] नाहीं ॥
दो० जो लहिफेरे मुक्त[7] है परों न पिंजरमाह ।
जाउँ वेगथल आपनेहै जेहिबीच निवाह ॥
कहि संदेश विहंगम[8] चला । आग लाय सगरे सिंहला ॥
घड़ी बीत राजा घर आवा । भाअलोप[9] पुनिदृष्टि[10] नआवा ॥
पंखी नाउँ न देखा पांखू । राजा रोय फिराके साखू ॥
जस हेरत[11] वह पंखहेराना । दिनकहमाहिंअसकरवपयाना[12] ॥
जोलहिप्राणपिण्ड[13] इकठाऊँ[14] । एकबार चितोरगढ़ जाऊँ ॥
आवाभँवर मँदिर जहँ केवा[15] । जीवसाथ ले गयो परेवा[16] ॥
तन सिंहल मन चितोरवसा । जिववेसँभरनागिनजिमडसा ॥
दो० जेतनारि हँसपूँछी अमी वचन[17] जिमिनिन्त ।
रसउतरा विप चढ़रहा नावहचिन्तनमिन्त ॥
वरस एक तहँ सिंहल रही । भोग विलास कीन्हजसचही ॥

दिल १ नामचिड़िया २ पेड़ ३ यह चिड़िया पेड़ नहीं छाड़ती पानी पीतेमें भी लकड़ी पंजोंमें लियेरहती ४ जमीनछोड़ी ५ दिन ६ नजात ७ नाम चिड़िया ८ गायब ९ निगाह १० ढूंढना ११ कूच १२ बदन १३ जगह १४ कमल तथा पद्मावत १५ जानवर औरन्द १६ मीठी बात १७ ॥

भा उदास जो सुना सँदेशू। सँवरिचला मन चितोर देशू॥
कमल उदासी देखा भँवरा। थिर[1] नरही मालतिमनसँवरा॥
योगी औ मन पवन परावा। कित थिर रहैजोचित्तउचाहा॥
जो जिव काढ़दे आवन कोई। योगी भँवर न आपन होई॥
चलाकमलमालति[2] हिय[3] घाली। अबकितथिरआछी अल[4] आली॥
गन्ध्रबसेन आय सुनि बारा[5]। कसाजिवभयो उदास तुम्हारा॥
दो० मैं तुमहीं जिवलावा दीन नयनमहँ बास।
जोतुम होहु उदासी यहिका कर कैलास॥
रतनसेन बिनवा कर जोरी। अस्तुति योग जीभिनामोरी॥
सहस[6] जीभ जोहोहिं गुसाईं। कीन जाय अस्तुति जहँताईं॥
कांचकिरा तुम कंचन[7] कीन्हा। तबभारतनज्योतितुम्हदीन्हा॥
गंगजो निरमल[8] नीर[9] कुलीना। नारमिले जल होय मलीना॥
तसहों अहा मलीनी[10] कला। मिलाआयतुमभानिरमला[11]॥
पान समुद्र मिलाहोय सोती[12]। पापहरानिरमल[13] भइज्योती॥
तुम मन आवा सिंहलपुरी। तुमते चढ़ा राज औ कुरी[14]॥
दो० सात समुद्र तुम राजा सरन[15] पांव कोउखाट।
सबैआय शिर नावहिं जहां तुम्हारा पाट[16]॥
औ मोबिनय[17] अबकरोंगुसाईं। तबलगकया[18] जीवतबताईं॥
आवा आज हमार परेवा[19]। पाती दीन्ह आन पति देवा॥
राज काज औ भुइँ उपराहीं। शत्रु[20] भाय असकोऊनाहीं॥
आपनआपनकरहिंसुलीका[21]। एकहि मार एकचहि टीका॥
भई अमावस नखतहि राजू। हमकहँ चन्द चलावहआजू॥
राजहमार जहां चलिआवा। लिखपठई अब होय परावा॥
वहांनेर देहली सुलतानू। होयहै भोर उठै जो भानू[22]॥

क़ायम १ तथापद्मावत २ दिल ३ भँवर ४ दरवाज़ा ५ हज़ार ६ सोना ७ पाकसाफ ८ पानी ९ बेरोशनी १० पाकसाफ़ ११ सोता १२ साफ़ १३ इज्जत १४ बराबरनहीं कोई १५ तख़्त १६ अर्ज़करना १७ बदन १८ क़ासिद १९ दुश्मन २० हद २१ सूर्य्य २२॥

दो० रहहु अमर[1] महि[2] गगन[2] लग औ जो लहहम आव ।
शीश[3] हमारा तहां नित[4] जहां तुम्हारा पांव ॥

राज सभा पुनि उठी सँवारी । अनविनती राखी पत भारी ॥
भाइन मांझ होय जनफूटी । घरके भेद लंक अस टूटी ॥
विरचा लाय न सूखन दीजै । पावै पान दृष्टि[5] सो कीजै ॥
अन राखा तुम दीपक लेसी । पै न रहै पाहुन परदेसी ॥
जाकर राज जहां चलि आवा । वही देश पै ताकहँ भावा ॥
हम दोउ नयन घालके राखहिं । एसो भाखयहि जीभन भाषहिं ॥
दिवस देहु[6] सँकुशल सिधावहिं । दीरघ आयु[7] होय पुनि आवहिं ॥

दो० सबहिं विचार परा अस भा गवनेकर साज ।
सिद्ध गणेश मनावहिं विधि[8] पुरवे मन काज ॥

विनय[9] करै पद्मावत बारी । होंपिय कमल सों गोद नेवारी ॥
मोहिं अस कहां सो मालति बेली । कदम सेवती चम्प चँबेली ॥
औ शृंगार हार जस तागा । पुहुप[10] कली अस हिरदय[11] लागा ॥
हों सुबसन्त करों नित पूजा । कुसुम गुलाल सुदरशन गूजा ॥
वकचन बिनवों रोस बिमोही[12] । सुनि बकावत जाही जूही ॥
नागेसर[13] जो मन है तोरी । पूजन सकै बोलसर मोरी ॥
हों सद बर्ग लीन्ह मैं शरना । आगे कर जो कन्त तुहि करना ॥

दो० केते नारि समुझावै भँवर[14] न काटै बेध ।
कहै मरों पै चित्तोर यज्ञ करों अश्वमेध ॥

गवन चार पद्मावत सुना । उठा धसक जिव औ शिर धुना ॥
गहवर आय नयन भर आंशू । छांडव यहि सिंहल कैलाशू ॥
छांड्यो नैहर चल्यों बिछोही[15] । यहरे दिवस[16] होहूँ तहँ रोई ॥
छांड्यों आपन सखी सहेली । दूरगवन तज चल्यों अकेली ॥

हमेशा ज़िन्दा १ ज़मीन आसमान २ शिर ३ हमेशा ४ निगाह ५ दिनक़रारदो ६ बड़ीउमरहो ७ ईश्वर ८ अर्ज़करना ९ फूल १० छाती ११ तारीफ़सुनि गुस्सानहींआता १२ तोड़ा नागमती १३ राजा राजा १४ अलग १५ दिन १६ ॥

जहां न रहनभयो निज चालू । होतहि कसन तहांभा कालू ॥
नैहर आय काहि सुख देखा । जनु होगयो स्वपन करलेखा ॥
राखतपार सोपिता निछोहा[1] । कितबिवाहके दीन्हबिछोहा[2] ॥

दो० हिये[3] आय दुखबाजा[4] जियजानहु गाछेक ।
मन तेवान के रोवै हर सँडार कर टेक[5] ॥

पुनि पद्मावत सखी बोलाई । सुनिकेगवनमिलीं सब आई ॥
मिलहु सखी हमतहँवां जाहीं । जहां जाय पुनिआवन नाहीं ॥
सात समुद्र पार वह देशू । कितरेमिलनकितआवसँदेशू ॥
अगम पंथ[6] परदेश सिधारी । नजनो कुशलकिबिथा[7] हमारी ॥
पितौनेछोह[8] कीन्हहिय[9] माहां । तहँ को हम राखै गहि बाहां ॥
हम तुम एक मिले सँगखेला । अन्तबिछोह[10] आनगेयँमेला[11] ॥
तुम असहितू सँगात पियारा । जियत जीवनहिंकरोंनिरारा[12] ॥

दो० कन्तचलाई काकरों आयसु[13] जाय न मेट ।
पुनि हममिलहिं किनामिलैं लेहु सहेलीभेट ॥

धन[14] रोवत रोईं सब सखी । हम तुमदेख आपकहँझखी ॥
तुम ऐसी जहँ रही नपाहीं । पुनिहमकाहिजोआहिपराहीं ॥
आदि पिता[15] जो रहा हमारा । वहूँनयाहिदिनहिये[16] बिचारा ॥
छोह[17] नकीन्ह निछोहा[18] ओहू । काहमदोष[19] लगाइक गोहू ॥
मकु[20] गोहूँकर हिया चराना[21] । पैसोपिता ना हिये छोहाना[22] ॥
औहम देखा सखी सरेखे । यहि नैहर पाहुन कर लेखे ॥
तब तेहिपिय नैहर ना चाहा । जेहिससुरारअधिकहोयलाहा[23] ॥

दो० चालनकहँहम अवतरी[24] चलनसिखातहँआय ।
अब सो चलन चलावै को राखै गहि पाय[25] ॥

बेदर्द १ जुदाई २ दिल ३ पहुँचा ४ ईश्वर का नाम ले ठीककरके ५ मुश्किलराह ६ दुखसुखका हाल ७ बेमेहरी ८ दिल ९—१६ जुदाई १० गरदनमें डाला ११ अलग १२ हुक्म १३ पद्मावत १४ आदम १५ मेहरबानी १७ बेदर्दी १८ पाप १९ शायद २० छाती फटी २१ मेहरबान २२ बहुत फायदा २३ पैदा २४ पैरपकड़के २५ ॥

नृपबाड़ि पिय भोजक[1] राजा । गर्व[2] क्रोध वोही पै छाजा ॥
सबफल फूल वही की शाखा । चहै सो तोडै़ चहै सो राखा ॥
आयसु[3] लेहे रहो नितहाथा । सेवा करहु लाय भुँइ माथा ॥
उर पांवर शिरऊभ[4] जो कीन्हा । पाकर तिन सूखीफर दीन्हा ॥
बेवर[5] बोड़ शीश[6] भुँइ लावा । बडफल सुफर वही पै पावा ॥
आँब जो फर के नवै तराहीं । तब अम्रत भा सब उपराहीं ॥
सोइ पियारी पियहिं पिरीती । रहै जो आयसु[7] सेवा जीती ॥

दो० पोथीकाढ़ गवनदिनदेखै कौनेदिन है चाल ।
दिशाशूलऔचक्रयोगिनीसौंहन[8] चलियेकाल ॥

आदित[9] शुक्र पश्चिमदिश राहू । वेफै दक्षिन लंकदिश[10] दाहू ॥
सोम[11] शनीचर पुरुब न चालू । मंगर बुद्ध उतरदिश कालू ॥
आवश[12] चला चहै जो कोई । औषधि कहूँ रोग नाहिं होई ॥
मंगल चलत मेलमुख धनियां । चलै सोम देखै दरपनियां ॥
शुक्रहिं चलत मेल मुखराई । वेफै चलै दक्षिन गुड़ खाई ॥
आदित तँबोल मेल मुखमुंडी । वायबरंग शनीचर खंडी ॥
बुधदधि[13] किये चलहु भोजना । औषधि यहिन आनखोजना ॥

दो० अवसुनि चक्र योगिनीते भुइँ थिर[14] न रहाहिं ।
तीसोदिन[15] सचन्द्रमा आठो दिशाफिराहिं ॥

बारह उनइस चार सताइस । योगिन पच्छमदिशा गिनाइस ॥
नौ सोरह चौबिस औ एका । पूरब दक्षिन कोन तेहि टेका ॥
तीनइ ग्यारह छबिस अठारा । योगिन दक्षिनदिशा विचारा ॥
दुइ पचीस सत्रह औ दसा । दक्षिन पश्चिम कोनबिचबसा ॥
तेइस तीस आठ पन्द्रहां । योगिन होहि पूर्व सामहां ॥
चौदह बाइस उनइस सात । योगिन उतरदिशा कहँजात ॥
बीस अठाइस तेहर पांच । उत्तर पश्चिमकोन तहँ बांच ॥

राजाभोज १ गरूर २ हुक्म ३—७ बलन्द ४ कद्दू ५ सिर ६ सामने ८ इतवार ९ [illegible] १० सोमवार ११ ज़रूरत १२ दही १३ क़ायम १४ दिन १५ ॥

दो० इकइस औ छह योगिन उत्तर पुरब के कोन।
यह गुनचक्रयोगिनी बांच जो चहे सिधि होन॥

परेवा नवे पूर्ब परँ भाये[1]। दुइज दसमी उत्तर अँदाये[2]॥
तीज एकादशअगनू मारी[3]। चौथ दुवादश नैऋत बारी[4]॥
पंचमी तेरस दक्षिन रमेशरी[5]। छठ चौदशपश्चिमपरमेशरी[6]॥
सतमी पून्यो बायब आछैं[7]। अठैं अमावस इशानलाहैं[8]॥
तिथि नक्षत्र गुरबार[9] कहीजे। सुदिन साध प्रस्थान धरीजे॥
सगुन दुघड़ियागिन साधना। भद्रा औ दिशाशूल बाचना॥
बक्र योगिनी गिने जो जाने। परचर जीत लच्छ घर आने॥

दो० सुखसमाध आनन्दघर कीन्हपयाना[10] पीव।
थरथरात तन काँपे धरकधरक जाय जीव॥

मेष सिंहधन पूरब बसी[11]। वृष कन्या मकर यम दिसी[12]॥
मिथुनतुला औकुम्भपछाहां[13]। कर्कमीन बिरछीकउतराहां[14]॥
गवनकरे कहँ उगरे[15] कोई। सनमुखसोम[16] लाभ[17] बहुहोई॥
दहिन चन्द्रमा सुख सरबदा। बायें चन्द्रायत दुख आपदा॥
अदित[18] होय उत्तरकहँ कालू। सोमकाल बायब नहिंचालू॥
भूमि[19] कालपच्छमबुधिनैऋता। गुरु[20] दक्षिनशुक्रअगनेयता॥
पूरब काल शनीचर बसे। पीठ दे कालचले सब हँसे॥

दो० धन नक्षत्र औ चन्द्रमा औ ताराबल सोय।
समय एक दिन गवने लक्ष्मी केतक होय॥

पहिले चाँद पूर्ब दिश तारा। दजे बसे इशान बिचारा॥
तीजे उत्तर सो चौथे बायब। पँचैंसोपश्चिमदिशागिनायब॥
छठयें नैऋत दक्षिन सतें। बसेजाय अग्नेयसो अठें॥

परेवा और नवींकोजानामना१ दुइज दशमी उत्तरमना२ तिथि३—११ आग्नेयमना३ तिथि४—१२ नैऋत्यमना४ तिथि५—१३ दक्षिणबुरा५ तिथि६—१४ पश्चिममना६ तिथि७ १५ बायब्यमना७ तिथि८—३० ईशानमना ८ दिन अच्छा९ कूच१० मेष सिंहधन पूरब अच्छा११ बृष कन्या मकर उत्तर अच्छा १२ मिथुन तुला कुम्भ पश्चिमअच्छा१३ कर्क मीन बृश्चिक उत्तरअच्छा१४ निकलना१५ चांद१६ फायदा१७ इतवार१८ मंगल१९ बीफे२० ॥

नवें चन्द्र जो पृथवी[1] बासा। दशयें चन्द्र जो रहै अकासा॥
ग्यारें चन्द्र पर्व फिर जाय। बहुकलेश में दिवस भँवाय[2]॥
अश्वुन[3] भरन[4] रेवती[5] भली। मृगशिर[6] मूल[7] पुनरवसु[8] बली॥
पुष्य[9] जेष्ठा[10] हस्त[11] अनुराधा[12]। जो सुख चाहै पूजे साधा॥
दो० तिथनक्षत्र औ बारह्कअष्टसातखण्ड[13] भाग।
आदिअन्त[14] बुधसोयह दुखसुखअंकमलाग॥

परेवाछठ एकादश नन्दा[15]। दुइजसत्तमी द्वादश मन्दा[16]॥
तीज अष्टमी तेरस जया[17]। चौथचतुरदश नौमीरिकया[18]॥
पूरन पूनों दशमी पांचें[19]। शुक्रे नन्दे[20] बुध भा नाचें॥
अदितसोहस्तनखतासिधिलहिये[21]। बीफेपुष्य[22] श्रवणशशिकहिये॥
भरणि रेवती[23] बुध अनुराधा। भईअमावस रोहिणि[24] साधा॥
राहु चन्द्र भूमि[25] संपति आये। चन्द्र ग्रहण तब लागसजाये॥
सुनि[26] रकाँगज अज्ञालीजे। सिद्धि योग गुरुपरवा कीजे॥
दो० जेहि नक्षत्रहोय रवि[27] वही अमावस होय।
बीचपरेवा जब मिलै सूर्य्यग्रहण तब होय॥

चलहुचलहुभापिय[28] करचालू। घडीनदेखलेत जिवकालू[29]॥
समुद्रलोक धन[30] चढ़ी बेवाना। जोदिनडरेसोआयतुलाना[31]॥
रोवहिं मात पिता औ भाई। कोउन टेक[32] जोकंत चलाई॥
रोवहिं सब नैहर सिंहला। लै बजाय के राजा चला॥
तजा[33] राज रावनका गयो। छांड़ालंक विभीषण लियो॥
फिरी सखी भेंट तज फेरा। अन्त कन्त सो भयोगुरेरा[34]॥
कोइकाहूका नाहिं नियाना[35]। मया मोह बांधा उरझाना॥

नौमीको चांदका बास ज़मीन पर १ दिन बीते २ नाम नक्षत्र ३—४—५—६—७—८—९—१०—११—१२ मानों मुल्क १३ अव्वल से आखिर तक खुशी १४ परेवा छठ एकादशी सफ़रकरना अच्छा १५ दुइज सप्तमी-द्वादशी बुराहै १६ तीज अष्टमी तेरसजीत १७ चौथ चतुरदशमें हार १८ पूरणमासी दशमी पंचमी अच्छा १९ खुशी २० इतवार को हस्तनक्षत्र अच्छा २१ नामनक्षत्र २२—२३—२४ ज़मीन २५ स्वामका विचार २६ सूर्य २७ रथमैन २८ मौत २९ पक्षामन ३० पहुँचा ३१ रोकना ३२ छोड़ना ३३ मुलाक़ात ३४ आखिर ३५॥

दो० कंचन काया[1] नारि[2] की रही नतोला मांस ।
कन्त कसौटी घालके चूरा[3] गढ़े कि हांस ॥

जो पहुँचाय फिरा सबकोऊ । चलासाथगुनअवगुन[4] दोऊ ॥
औ सँगचला गवनसब साजा । वही दई अस पारै[5] राजा ॥
डोली सहस चली सँग चेरी[6] । सबै पद्मिनी सिंहल केरी ॥
भल पटोर[7] खर[8] वार सँवारी । लाख चारइक भरी पेटारी ॥
रतन पदारथ[9] माणिक मोती । काढ़ भँडार दीन्ह रथजोती ॥
परखसो रतन पारखहिं[10] कहा । इकइकनग सृष्टिबर[11] लहा ॥
सहस पांतितुरयन[12] कीचली । औसौपांति हस्ति[13] सिंहली ॥

दो० लिखनी लाग जो लेखा कहे न पारहिं जोर ।
अर्ब खर्ब औ नीलशंख साहस पदम करोर ॥

देख दर्ब राजा गर्बाना[14] । दृष्टि[15] मांहकोइ औरनआना ॥
जोमैं होब समुद्र के पारा । को है मोहिं जगत[16] संसारा ॥
दर्ब गर्ब लोभ बिष मूरी । दंत[17] न रहे सत्य[18] हो दूरी ॥
दत्त सत्य पै दोनों भाई । दत्तन रहै सत्य पुनि जाई ॥
जहां लोभ तहँ पाप सँघाती । संचै[19] मरे आनकी थाती ॥
सिद्ध[20] दर्ब आगके थापा । कोई जरा जार कोइ तापा ॥
काहू चांद काहुभा राहू । काहू अमृत बिष भा काहू ॥

दो० तस भूला मन राजा लोभ पाप अँध कूप[21] ।
आय समुद्र ठाढ़भा कै दानी के रूप ॥

बोहित[22] भरी चलालै रानी । दान मांग सत देखीदानी[23] ॥
लोभ न कीजे दीजे दानू । दानहि पुण्य होय कल्यानू[24] ॥
दर्ब दान देई बिधि[25] कहा । दान मोक्ष[26] कै दुख नहिंरहा ॥

सोनेकी तरह बदन १ पद्मावत २ नाम ज़ेवर ३ पाप और पुण्य ४ ईश्वर पार लगावे ५ हज़ार डोली लौंडी ६ कपड़ा ७ छाती - हीरा जवाहिर ८ जोहरी १० सारी दुनियांकी क़ीमत ११ हज़ार क़तार घोड़ा १२ हाथी १३ ग़रूर किया १४ निगाह १५ बराबर १६ देना १७ सचाई १८ जोड़ना १९ साधू २० अन्धाकुवां २१ नाव २२ दान देनेवाला २३ भलाई २४ ईश्वर २५ नजात २६ ॥

दान आहि सब द्रव्य कि जरू[१] । दान लाभ कै बाचै मरू[२] ॥
दान करै रक्षा मँझनीरा[३] । दान गहे लै लावै तीरा ॥
दान करन[४] दै दुइ जगतरा । रावन सँचा[५] अगिनि महँजरा ॥
दानमेरु[६] बड़ लाग अकारा[७] । मेत[८] कुबेर बूड़ मँझधारा ॥
दो० चालिस अंश द्रव्य जहँ एक अंश तहँ मोर ।
नाहिं तजरे कि बूडै की निश[९] मूसहिं चोर ॥
सुनि सुदान राजै रिसमानी । कै बौरायस बौरे दानी ॥
साई पुरुष द्रव्य जो सैंतैं । द्रव्यहुतें सुनि बातैं ऐतैं ॥
द्रव्यते गर्ब[१०] करै जो चाहा । द्रव्यते धर्ती स्वर्ग निबाहा ॥
द्रव्यते हाथ आव कैलासू । द्रव्यते अप्सर छांड़ न पासू ॥
द्रव्यते निरगुन होगुनवन्ता । द्रव्यते कुब्जरूप[११] रुपवन्ता ॥
द्रव्यरहै भुइँदिपै लिलारा[१२] । अस मन द्रव्य हियेको पारा ॥
द्रव्यते धर्म कर्म औ राजा । द्रव्यते सुद्धि बुद्धि बलकाजा ॥
दो० कहा समुद्र रेलोभी बड़ी द्रव्य नहिं झांप ।
भयोन काहू आपन मूँद पिटारी सांप ॥
आधे समुद्र आयसो नाहीं । उठी वायु आंधी उपराहीं ॥
लहरें उठीं समुद्र उलथाना[१३] । भूला पंथ[१४] स्वर्ग नियराना ॥
अदिन[१५] आय जो पहुँचै काहू । पहन[१६] उड़ाय वहै सो बाऊ ॥
बोहित[१७] भइ लंकदिशि[१८] ताकी । मारग[१९] छांड़ कुमारग हांकी ॥
जो लै भार निबाहन पारा[२०] । सोका गर्ब[२१] करै कन्धारा[२२] ॥
द्रव्य भार सँग काहिन ऊठा । जें सैंता[२३] ताहीसो रूठा ॥
गहि पखान[२४] लै पंख न ऊड़ा । मोर मोर जेंकीन्ह सो बूड़ा ॥
दो० द्रव्य जो जानहि आपना भूलहिं गर्व मनाहिं ।
जेरि उठाय न लैसकहिं बूड़ चलहिं जलमाहिं ॥

न्योछावर १ अमिल क्षमा २ पानी में बचावे ३ नाम राजा ४ जोड़ना ५ नाम पहाड़ ६ आसमान ७ जमा करना ८ रात ९ ग़रूर १० बदसूरत ११ माथा १२ उलटना १३ राह १४ दुर्दिन १५ पत्थर १६–२४ नाव १७ लंका की तरफ १८ राह १९ जब तक होसका २० ग़रूर २१ मल्लाह २२ जोड़ना २३ ॥

केवट[1] एक बिभीषन केरा। आव मच्छकर करत अहेरा[2]॥
लंकाकर अति राक्षस कारा[3]। आवै चला होय अँधियारा॥
पांच मूड़ दश बाहीं ताही। धड़भा श्याम लंक जब दाही[4]॥
धुवां उठै मुखश्वास सँघाता[5]। निकसै आग कहै जो बाता॥
फेकरे मूँड़ चँवर जनु लाये। निकस दांत मुख बाहेर आये॥
देह रीछकी रीछ डेराई। देखत दृष्टि[6] धाय जनु खाई॥
रातेनयन[7] निडर जो आवा। देख भयावन सब डरखावा॥

दो॰ धर्ती पायँ स्वर्ग शिर जानु सहस्राबाहु[8]।
चांद सूर्य्य औ नखतमहँ अस देखैजनु राहु॥

बोहित[9] बही नमानहि खेवा। राक्षस देखि हँसा जनु देवा॥
बहुते दिनहिबार[10] भइ दूजी। अजगरकेर आय मुखपूजी[11]॥
यहिपद्मिनी बिभीषन पावा। जानहु आज अयोध्या छावा॥
जानहु रावन पाई सीता। लंका बसी राम रन जीता॥
मच्छदेख जैसेंबक[12] आवा। टोयटोय भुइँ पांव उठावा॥
आयनेर होयकीन्हजोहारू। पूँछा क्षेम[13] कुशल ब्योहारू॥
जो बिश्वासघात[14] का देवा। बड़ बिश्वास[15] करैकी सेवा॥

दो॰ कहां मीत तुम भूलेहु औ जायहु केहि घाट।
हों तुम्हार अससेवक लाय देउँ तुहिं बाट[16]॥

गाढ़[17] परे जिव बावरहोई। जो भल बात कहै भल सोई॥
राजें राक्षस नेर बोलावा। आगे कीन्ह पंथ[18] जनु पावा॥
बहुबसाव[19] राक्षसकहँबोला। पैगटेक[20] भूमि[21] सब डोला॥
तूखेवक[22] खेवक उपराहीं। बोहित[23] तीर लाव गहि बाहीं॥
तुहितें तीर घाट जो पाऊँ। नौग्रही[24] तोड़र पहिराऊँ॥

मल्लाह १ शिकार २ काला ३ जलना ४ श्वासके साथ ५ निगाह६ लाल आंख७ नाम राजा जिसके हज़ार हाथथे ८ नाव ६ खुशहुआ १० पेट भरा ११ बगुला १२ ख़ैरियत १३ दग़ाबाज़ १४ यक़ीन १५ राह १६—१८ दुख१७ खुशी १६ खड़ाहुआ२० ज़मीन २१ मल्लाह २२ नाव २३ नाम ज़ेवर २४ ॥

कुण्डल श्रवण[1] देउँ नग लाई । महराकी सौंपौं महराई ॥
तब राक्षस तोर पुरौं आसा । रक्षसाइन की रहै न वासा ॥
दो० राजैं बीड़ा दीन्हों नहिं जानों बिश्वास[2] ।
इक अपनी भुखकारन[3] होयमच्छकर दास ॥
राक्षस कहा गुसांइ बिनाती । भल सेवक राक्षसकी जाती ॥
जीना लंकदही[4] श्री रामा । सेवन छांड़ देह भइ श्यामा[5] ॥
अबहूँ सेवकरे सँग लागे । मानुष भूल होहिं नहिं आगे ॥
सेतबन्ध राघव जहँ बांधा । तेहिते चढ़ो भार[6] ले कांधा ॥
पै अबतुरत दान कुछपाऊँ । तुरतगही वहँ बांध चढ़ाऊँ ॥
तुरत जोदानपान हँसदीजे । थोरा दान बहुत पुनि कीजे ॥
सेवक राय जो दीजे दानू । दान नाहिं सेवा[7] बर मानू ॥
दो० दैवाचा[8] सतनारहा हत निरमल जेहिरूप ।
आंधी बहुत उड़ाय के मारगयो अन्धकूप ॥
जहांसमुद्र मँझधार[10] भँडारू । फिरै पानि पाताल दुआरू ॥
फिरफिर पानि वही ठांवमरै । फेर न निकसै जो तहँ परै ॥
वही ठांव महिरावन पुरी । हलकातर यमकातर[11] चुरी ॥
वही ठांव महिरावन मारा । परे हाड़ जनु पड़े पहारा ॥
परीरीड़ जेहि ताकर पीठी । सेतबन्ध[12] अस आवै दीठी ॥
राक्षस आन तहां के जुड़े । बोहित भँवर चक्र महँ पड़े ॥
फिरेलाग बोहित[13] जसआई । जस कुम्हार घर चाक फिराई ॥
दो० राजैं कहारे राक्षस जान बूझ बौरास ।
सेतबन्ध यह देखै कसनतहां लैजास ॥
सुनिबावर राक्षस तब हँसा । जानहु स्वर्ग[14] टूटि भुइँगसा ॥
को बावर तुम बौरहि देखा । जो बावर भुख लाग सरेखा ॥

कान १ गलहार २ भुक्तप्राप्ति ३ जलाना ४ काला ५ बोझ लेजासक्ता ६ खिदमत ७ खिदमत का हक़ ८ कौन ९ बीचोबीच १० यमफांस ११ पुल १२ नाव १३ आसमान १४ ॥

बावर तुम जो भूख[1] कहँ आनी । तोहि न समझी पंथ[2] भुलानी ॥
पंख जो बावर रहि धर माटी । जीभ चढ़ाय भखै सब चांटी[3] ॥
महिरावन की रीर जो परी । कहो सो सेतु बन्ध बुधि हरी ॥
यहि सो आहि महिरावन पुरी । जहवां स्वर्ग नेर घर दुरी ॥
अब पछताव द्रब्य जस जोरा । करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरा ॥
दो० जोहि जियत महि रावन लेत जगत कर भार ।
जो मरहाड़ न लैगा अस होय परा पहार ॥
वोहित[4] भवहिं भवै सब पानी । नाचै राक्षस आश तुलानी[5] ॥
बूड़हिं हस्ति[6] घोर मानवा[7] । चहुंदिश आय जुरे मँसखवा ॥
ततखन[8] राजपंख[9] इक आवा । शिखर[10] टूटजसडहन[11] डुलावा ॥
परादृष्टि[12] वह राक्षस खोटा । ताकेसि जैसुहस्ति[13] बड़मोटा ॥
आय वही राक्षस पर टूटा । गहि[14] लेउड़ा भँवरजलछूटा ॥
वोहित[15] टूक टूक सब भई । ऐसो न जाना वह कहँ गई ॥
भये राजा रानी दुइ पाटा । दोनों बहे चले दुइ बाटा[16] ॥
दो० काया[17] जीव मिलायके मारकियो दुइ खण्ड ।
तन रोवत धरतीचला जीव चला ब्रह्मण्ड[18] ॥
मुरछ परी पद्मावत रानी । कहँजिव कहँपिव ऐसनजानी ॥
जानु चित्र[19] मूरति गहिलाई । पाटा परी बही तस जाई ॥
जन्मन पवन सही सुकवारा । तेहि सोपरादुख समुद्रअपारा ॥
लक्ष्मी माय समुद्र की बेटी । ताकहँ लच्छ[20] होय जें भेटी ॥
खेलत रही सहेली सेती । पाटाजाय लाग तेहि रेती ॥
कहेसि सहेली देखो पाटा । मूरतिआय लागि बहि घाटा ॥
जो देखहिं त्रिया है श्वासा । फूलमुवा[21] पै मुई न बासा ॥
दो० रंग जो राती[22] प्रेमकी जानहु बीरबहूट ।

भूखेकेपासआये १ राह २ चींटी ३ नाव ४ उम्मेद पूरीहुई ५ हाथी ६–१३ आदमी ७ तुरंत ८ सीमुर्ग ९ पहाड़ १० बाजू ११ निगाह १२ पकड़ना १४ नाव १५ राह १६ बदन १७ आसमान १८ तसवीरं १९ दौलत २० मुरझाना २१ लाल २२ ॥

आयचढ़ी दधि समुद्रमें पै रंग गयो न छूट ॥

लक्ष्मी लक्षण[1] बतीसों लखी । कहेसि न मरीसँभारहु सखी ॥
कागद पातिरी जैसो शरीरा । पवन उड़ाय परी मँझनीरा[2] ॥
लहर झकोर उड़ाहिं जलभीजा । तौह रूप रंग नहिं छीजा[3] ॥
आप शीश[4] लै बैठी कोरा[5] । पवन डुलावे सखि चहुँओरा ॥
यारकी समुझ परा तन जीउ । मांगेसि पानि बोल कै पीउ ॥
पानि पियाय सखी मुखधोई । पद्मिनजान कमल सँग कोई[6] ॥
तब लक्ष्मी दुख पूँछमिलोही । त्रिया समुझ बात कहु मोही ॥

दो० देखरूप तोर आगर लाग रहा चितमोर ।
केहि नगरी की नागर काहि नाउँ धनतोर ॥

नयन पसार चेत धन[7] चेती । देखी काह समुद्रकी रेती ॥
आपन कोउ न देखेसि तहां । पूँछेसि को तुम कोहम कहां ॥
अहे जो सखी कमल सँगकोई[8] । सोनाहीं मोहिं कहा बिछोई[9] ॥
कहाँजगत मन पिया पियारा ।जससुमेरु[10]बिधि[11]गरूसँवारा॥
ताकर गरवी प्रीति अपारा । चढ़ेहिये[12] जनु चढ़े पहारा ॥
रहे न गरवी प्रीतिसो झाँपी । कैसे जियों भार दुख चाँपी ॥
कमलकरी की जोरी नाँहा[13] । दीन्हबहायउदधि[14]जलमाँहा॥

दो० आवा पवन बिछोहका[15] पातिपरा बिकरार ।
तरवर[16] तजी जो चूरकै लागे केहिकी डार ॥

कहनि न जानहिं हमतोर पीउ । हम तू पाइ रहानहिं जीउ ॥
पाटा परी आय तू बही । ऐसो न जानहिं धौं कहँअही ॥
तब सुधि पद्मावत मन भई । सँवरि बिछोह[17] मुरछमरगई ॥
नयनहिं रक्त सुराही ढारा । जनहु रक्त[18] शिर काट पयारा ॥
खनहिं[19] चेत खन होबिकरारा । भा चन्दन बन्दनसब छारा[20] ॥

सबगुन आनने वाली १ पानीमें २ नुकसान ३ शिर ४ गोद ५ कोकाबेली ६ पद्मावत ७ कोकाबेली ८ [illegible] ९—१५—१७ पहाड़ १० ईश्वर ११ दिल १२ खाविन्द १३ समुद्र १४ पेड़१६ [illegible]१८ घबराकर छोड़दिया १८कभी १९ राख २० ॥

बावर होय सो परी पुनि पाटा। देहु बहाय कन्त जेहि घाटा॥
को मोहिं आगदेय रच होरी। जियत न बिछुड़ै सारसजोरी॥

दो० जेहिसर मार बिछोगा देहु वहीशिर आग।
लोगकहैं यहि सर[1] चढ़ीहों सो जरोंपियलाग॥

काया[2] उदधि[3] चितोंपियपाहां। देखोंरतन सोहिरदय[4] माहां॥
जनहु आहि दरपन मम हिया। तेहिमहँ बैठि देखावे पिया॥
नयननीर[5] भीजत मुठ दूरी। अबतेहिलाग मरों सुठझूरी॥
पिय हिरदय महँ भेंट[6] न होई। कोरे मिलाव कहों केहि रोई॥
श्वास पास नित आवे जाई। सो न सँदेश कहै मोहिं आई॥
नयन कौड़िया भइ मँडराहीं। थिरक सार पै आवहि नाहीं॥
मन भँवरा वह कमल बसेरी। कै मरजिया न आये हेरी॥

दो० साथी आथ[7] नियाथ जो सके न साथ निबाहि।
जो जिय जारे पिय मिले भेंटरे जिय जरजाहि॥

सती होय कहँ शीश[8] उघारी। घन[9] महँबीज[10] घावजिमिसारी॥
सेंदुर जरै आग जनु लाई। शिर की आग सँभार न जाई॥
छूट मांग सब मोति पराई। बारहिंबार गिराहिं जनु रोई॥
टूटहिं मोति बिछोह[11] केभरे। श्रावण बूँद गिरहिं जनु झरे॥
फेर फेर कर यौबन[12] करा। जानहु कनक[13] अग्निमहँ जरा॥
अगिन मांग पै देइ न कोई। पाहुन[14] पवन[15] पान सम होई॥
खीन लंक[16] टूटी दुख भरी। बिनरावन[17] केहिबर[18] होयखरी॥

दो० रोवत पंख बिमोही[19] जनु कोकिला अरम्भ[20]।
जाकर कनक[21] लुटा सो बिछुड़ी प्रीतम खम्भ॥

लक्ष्मी लाग बुझावे जीव। नामर बहिन मिलहि तोरपीव॥
पियो पानि होवपवन अधारी। जस हौं तुह समुद्रकी बारी[22]॥

चिता १ बदन २ समुद्र ३ दिल ४ आशू ५ मुलाक़ात ६ जो माल के साथीये ७ शिर ८ बादल ९ बिजुली १० बिरह ११ जवानी १२ सोना १३ मेहिमान १४ हवा पानी देते हैं १५ पतलीकमर १६ तथा राजारतनसेन १७ ताक़त १८ मोहजाना १९ बे-क़रार २० सोना २१ लड़की २२॥

मैं तोहिं लाग लेन पटयाटू । खोजव पितै[1] जहां लग घाटू ॥
हौं जेहि मिलौं ताहि बड़ भागू । राज पाट औ देउँ सुहागू ॥
कहि दुखायके मंदिर सिधारी । भइ ज्योनार न जेवै नारी[2] ॥
जेहि के कन्त कर होय बिछोवा[3] । कातेहि नींद भूख सुख सोवा ॥
जीव हमार पीव लै आहा । दरशन देव लेव चित चाहा ॥
दो० लक्ष्मी जाय समुद्र पहँ ये बातैं सब चाल ।
कहा समुद्र अहे घट मोरे आनमिलावोंकाल ॥
राजा जाय तहां वहि लागा । जहां न कोइ संदेशी कागा ॥
तहां एक परवत[4] हा धूँगा । जहवां सब कपूर औ मूँगा ॥
तहँ चढ़ हेरा[5] कोइ न साथा । द्रव्यसमेट कुछ लाग न हाथा ॥
रहा जो रावण केर बसेरा[6] । गोहराय कोइ मिलै न हेरा ॥
छाड़ मारके राजा रोवा । कै चितौरगढ़ राज बिछोवा[7] ॥
कहां मोर सब द्रव्य भँडारू । कहां मोर सब कटक[8] कँधारू ॥
कहां तुरंग[9] मोर बांकावली । कहां मोर हस्ति[10] सिंहली ॥
दो० कहँ रानी पद्मावत जीव बसे जेहि माहिं ।
मोर मोरके खोयों भूल गर्व[11] औगाहिं ॥
चम्पा भँवरा गुरु जोमिलावा । मांगे राजा बेग[12] न पावा ॥
पद्मिन चाह जहां सुन पाऊँ । परों आग औ पानि धसाऊँ ॥
ढूंढ़ों पर्वत मेरु[13] पहारा । चढ़ों स्वर्ग[14] औ परों पतारा ॥
कहां सो गुरु पाऊँ उपदेशी[15] । अगमपन्थ[16] कर होयसँदेशी ॥
परयों आय यह समुद्र अथाहा । जहां न वार न पार न थाहा ॥
सीता हरण राम संग्रामा । हनुमतमिला जिता तबरामा ॥
मोहिं नकोइ बिनवों[17] केहिरोई । को सहाय उपदेशिक होई ॥
दो० भँवर जो पावै कमलकहँ मनआरत[18] बहु केल ।

खान १ पञ्जावगा २ दुखाई ३ ऊँचापहाड़ ४ देखना ५ मकान ६ अलग ७ फ़ौजभारी ८ घोड़ा ९ हाथी १० [illegible] ११ जल्द १२ कोह १३ आसमान १४ राहबताने वाला १५ मुश्किलराह १६ विनती १७ दुःख १८ ॥

आयपरा कोइ हस्ति[1] तहँ चूरकिये सो बेल ॥

कासों पुकारों का पहँ जाऊँ। गाढ़े मीत[2] होय तेहि ठाऊँ[3] ॥
को यह समुद्र मथे बल बाढ़ा। को मथ रतन पदारथ काढ़ा ॥
कहां सो ब्रह्मा बिष्णु महेशू[4]। कहां सुमेरु[5] कहां वह शेशू ॥
कोअस साज देइ मोहिं आनी। बासुकि[6] दाम[7] सुमेरु[8] मथानी ॥
को दधिसमुद्र मथे जस मथा। करनी सार न कहिये कथा ॥
जौलहि मथन कोइ दे जीव। सूधी अंगुरिन न निकसै घीव ॥
लै नग मोर समुद्र भा बटा। गाढ़ परे तौ लै परगटा ॥

दो० लीलरहा अब ढील[9] है पेटपदारथ[10] मेल।
को उजियार करै जग झांपा चन्द उघेल ॥

ए गुसाइं[11] तू सिरजन[12] हारू। तुइशिरजायहि समुद्र अपारू ॥
तुइअसगगन[13] अन्तरिक्ष[14] राखा। जहांनटेक[15] नथूनिनखांभा ॥
तुइ जल ऊपर धरती राखी। जगत भार लै भार न थाकी ॥
चांद सूर्य्य और नखतहिंपाती। तोरे डर धावहिं दिन राती ॥
पानी पवन आग औ माटी। सबकी पीठ तोरहैं सांटी[16] ॥
सोइ मूरुख औ बावर अन्धा। तोहिंछांड़ चितऔरहि बन्धा ॥
घट घट जगत तोर है दीठी[17]। हौं अन्धा जेहि सूझ नपीठी ॥

दो० पवन[18] हिये[19] भा पानी पानि हिये भइ आग।
आग हिये भइ माटी गोरखधन्धे लाग ॥

तुइँ जिवतन मिल बसदेआऊ। तुहींबिछोवस[20] करेसिमिलाऊ ॥
चौदहभवन[21] सो तोरे हाथा। जहँलगबिछुड़ीआवइकसाथा ॥
सब कर मर्म[22] भेदतोहिपाहां। रोम जमावसि टूटी जाहां ॥
जानेसि सबै अवस्था[23] मोरी। जस बिछुड़ी सारस की जोरी ॥

हाथी १ पियारादोस्त २ जगह ३ महादेवजी ४ पहाड़ ५—८ नामराजासँप्रोंका ६ रस्सी ७ बेडर ९ लालजवाहिर १० ईश्वर ११ पैदाकरनेवाला १२ आसमान १३ बीचोबीच मैलटकाहुआ १४ सहारा १५ कोड़ा १६ निगाह १७ हवा १८ दिल १९ जुदाई २० सात परदाआसमान सातपरदाज़मीन २१ भेद २२ हाल २३ ॥

एक मुई दूसर मुई सो दूजी । रहा न जाय आयु[1] अब पूजी ॥
भूसन तपन दग्ध[2] का मरों । कलपों[3] माथ वेग[4] निस तरों[5] ॥
मरों सो ले पद्मावत नाऊँ । तुइं कर्त्तार[6] करेसि इकठाऊँ ॥

दो० दुख तो प्रीतम देखिये सुख नाहिं सोवे कोय ।
यही ठांउ[7] तन डरपे मिलन बिछोवा[8] होय ॥

कहिके उठा समुद्र महँ आवा । काढ़ि कटार ग्रीव[9] लै लावा ॥
कहा समुद्र पाप अब घटा । ब्राह्मण रूप आय परगटा[10] ॥
तिलक दुवादश मस्तक दीन्हे । हाथ कनकवैशाखी[11] लीन्हे ॥
मुद्राश्रवण[12] जनेऊ कांधे । कनक पत्र[13] धोती तरिबांधे ॥
पांवर[14] कनक जड़ाऊ पाऊँ । दीन्ह अशीश आय तेहि ठाऊँ ॥
कहो कुँवर मोसे सत बाता । काहे लाग करेसि अपघाता[15] ॥
परहँसि[16] मरेसि किकौने लाजा । आपन जिव देइस केहि काजा ॥

दो० जन कटार गर लावसि समझ देख मन आप ।
सकत जीव जो काढ़ेसि महादोष[17] औ पाप ॥

को तुम उत्तर[18] देइ हो पांड़े । सो बोलै जाकर जिवभांड़े[19] ॥
जम्बूद्वीप केर हौं राजा । सोमैं कीन्ह जो करतनछाजा[20] ॥
सिंहलद्वीप राज घर बारी । सो मैं जाय बिवाही नारी ॥
लख बोहित[21] दायज ते भरी । नग अमोल औसबानिरमरी[22] ॥
रतन पदारथ माणिक मोती । हती न खांगीसम्पति[23] ओती ॥
बहल घोड़ हस्ती[24] सिंहली । औसँग कुँवर लाख दुइबली ॥
तेहि गोहन[25] सिंहल पद्मिनी । इक सो एक चाह रुपमनी ॥

दो० पद्मावत जग रूप मन कहँ लग कहूँ उहेल ।
ते समुद्र महँ खोयों हौं का जियों अकेल ॥

उमरतमाम १ जलाना २ गिरकटाना ३ जल्द ४ नजात ५ ईश्वर ६ जगह ७ जुदाई ८ गर्दन ९ ज़ाहिर १० सोनेकीलाठी ११ कानमेंबाली १२ सोनेकीपटरी १३ खड़ाऊं १४ खुदकुशी १५ निन्दामेंहँसी १६ पाप १७ जवाब १८ बदनमेंजान १९ सज़ावार २० साथ २१ माफ़ २२ दौलत २३ हाथी २४ साथ २५ ।

हँसा समुद्र होय उठा अजूरा[1]। जग जो बूड़ सबकहिकहिमोरा॥
तोर होय तोहि परै[2] न बेरा। बूझ बिचार तुहीं कहु केरा॥
हाथ मरोर धुनै शिर मांखी। पै तोहि हिये[3] न उघरे आंखी॥
बहुतें आयगये शिर मारा। हाथ न रहा झूंठसंसारा॥
जोपै जगत[4] होतथिर[5] माया[6]। सैंतत[7] सिद्धि न पावत राया[8]॥
सिद्धे द्रव्य न सैंता गाड़ा। देखा भार चूँब कै छाड़ा॥
पानी की पानी महँ गई। तुइँजोजिया कुशल[9] सबभई॥
दो० जाकरदीन्हजीव औकाया[10] लेहिचाह जबचाव।
धन लक्ष्मी सब ताकर लिये तो का पछताव॥
अनपांड़े[11] पर कहि काहानी[12]। जो पाऊँ पद्मावत रानी॥
तप[13] के पावा मिल के फूला। पुनितेहिखोइसोईपँथ[14] भूला॥
पुरुषन आपन नारिसराहा[15]। मुयेगये[16] सँवरा पै चाहा॥
कहँ असनारि जगत उपराहीं। कहँअसजीवमिलनसुखछाहीं॥
कहँअस रहसभोग अबकरना। ऐसे जिये चाहि भल मरना॥
जहँअसपरीसमुद्र नगदिया[17]। तेहि किम जियाचहै मरजिया॥
जस ये समुद्र दीन्ह दुख मोका। देहत्या झगरों शिवलोका[18]॥
दो० कासैं यहिक नसावा कासैं सँवरा दांव।
जायस्वर्ग[19] परहोयहै यहिकरमोरनियाव॥
जो तुमुवा कित रोवस खरा। ना मुर[20] मरै न रोवै मरा॥
जो मरभा औ छांड़ेसि काया[21]। बहुर[22] न करै मरनकी दाया॥
जो मर भयो न बूड़ै नीरा[23]। बहत जाय लागे पै तीरा[24]॥
तुहों एक मैं बावर भेटा[25]। जैस राम दशरथ कर बेटा॥
वहू नारि कर पड़ा बिछोवा[26]। वही समुद्र महँ फिरिफिरि रोवा॥

रोशनी १ तेरेपासरहिती २ दिल ३ दुनियाँ ४ क़ायम ५ दौलत ६ फ़क़ीरजमान करता ७ राजा ८ खैरियत ९ बदन १०—२१ ऐब्राह्मन ११ नुक़सान १२ मेहनतसे १३ राह १४ तारीफ़ १५ मरनपीछे १६ जवाहिरचिरागकीतरहरोशन १७ ईश्वरकेसामने१८ आसमान १९ हिलना २० फिर २२ पानी २३ किनारा २४ मुलाक़ात २५ जुदाई २६ ॥

पुनि जो राम खोई[1] भा मरा । तब एकांत भयो मिल तरा ॥
तस मर होहु मूँद अब आंखी । लावों तीर[2] टेक[3] बैशाखी ॥
दो० बावर अन्ध प्रेम का लुब्धा[4] सुनत वही भा बाट ।
निमिष[5] एक महँ लेगा पद्मावत जेहि घाट ॥
पद्मावत कहँ दुख तस बीता । जस अशोक बिरवा तरिसीता ॥
कनक[6] लता दुइ नारंग भरी । तेहिकभार उठ सकै नाहिं खरी ॥
तेहि पर अलकभुअंगिनि[7] डसा । शिर परचढ़े हिये[8] परगसा ॥
रहि मरनाल[9] टेक दुख दाढी । आधीकमलभई शशि[10] आधी ॥
नलिन[11] खण्डदुइतस करहाऊँ । रोमावली[12] बिछूक कहाऊँ ॥
रही टूट जिमि कंचन[13] तागू । को पिय मिलवै देइ सुहागू ॥
पान न खावै करै उपासू । फूल सूख तन रही न बासू ॥
दो० गगनधर्ति[14] जल बुड़गये बूड़तहोय निसास ।
पिय पियचातक[15] ज्योंररी मरैसेवात पियास ॥
लक्ष्मी चंचल नारि परेवा । जेहि सत[16] होय छरै कै सेवा ॥
रतनसेन आवै जेहि बाटा[17] । अगमन[18] जायबैठ तेहिघाटा ॥
औ भई पद्मावत रूपा । कीन्हेसि छांह जरै जेहि धूपा ॥
लखसोकमल भँवरहोयधावा । श्वास लीन्ह वह बासन पावा ॥
निरखत[19] आयलक्ष्मीदीठी[20] । रतनसेन तब दीन्हीं पीठी ॥
जो भल होत लक्ष्मी नारी । तज महेश[21] कितहोतभिखारी ॥
पुनि धन[22] फिर आगे ह्वै रोई । पुरुष पीठ कस दीन्ह निछोई[23] ॥
दो० हौं रानी पद्मावत रतनसेन तुहँ पीउ ।
आयसमुद्रमहँ छांडे अबरोयदेतमैंजीउ ॥
मैं हों सोई भँवर औ भोजू[24] । लेत फिरोंमालति कर खोजू[25] ॥

बहुतकोशिशकिया १ किनारा २ लाठीपकड़ ३ मस्त ४ पल ५ सोनेकीडाली तथाछाती ६ यानीनागिनकीतरह ७ छाती ८ कामरपकड़के ९ चाँद १० कमल ११ छातीकेबाल १२ सोना १३ आसमानज़मीन १४ पपीहा १५ सच्चेकोछलती १६ राह १७ पहिले १८ देखना १९ देखा २० महादेवजी २१ पद्मावतरूपलक्ष्मी २२ बेदर्द २३ राजाभोज २४ पता २५ ॥

मालति नारि भँवर अस पीउ। कहँ वह बासरहै थिर [1]जीउ॥
कातुइँ नारि करेसि अस रोई। फूल सोई पै बास न होई॥
भँवर जो सब फूलन कर फेरा। बासन लेइ मालतिहि हेरा[2]॥
जहां पाव मालति कर बासू। वर्तों[3] जिव दै होवै दासू॥
कित वहबास पवन पहुँचावे। नव[4] तनहोय पेट जिव आवे॥
हों वह बासजीव बल देऊँ। और फूलकी बास न लेऊँ॥

दो० भँवर मालतिहि पै चहै काँटन आवै दीठ[5]।
सौंहैं[6] भाल खायेहिये[7] पै फेरै नहिं पीठ॥

तब हँस कह राजा वह ठाऊँ। जहांसो मालति चललैजाऊँ॥
लै सो आय पद्मावत पासा। पानि पियाई मरत पियासा॥
पानी पिया कमल जस तपा। निकसासूर्य्य समुद्रमहँ छिपा॥
मैं पावा पिय समुद्र के घाटा। राजकुँवर मनदिपै ललाटा[8]॥
दशन[9] दिपै जस हीरा ज्योती। नयन कचूर[10] भरेजनु मोती॥
भुजा[11] लंकउर केहर जिता। मूरति कान्ह देखि गोपिता॥
जस नल तपतै दमनहिं[12] पूंछा। तसबिन प्राण पिंड[13] है छूंछा[14]॥

दो० जस तुइँ पदक[15] पदारथ तैस रतन तुहिं योग।
मिला भँवर मालति कहँ करहु दोउ दिश भोग॥

पदक पदारथ खीन जो होती। सुनतहि रतन चढ़ी मुखज्योती॥
जानहु सूर्य्य कीन्ह परकाशू[16]। दिन बहुरा भा कमल बिकासू[17]॥
कमलजोबिहँससूर्य्यमुखदरसा। सूर्य्य कमल दृष्टि[18] सो परसा॥
लोचन[19] कमलश्रीमुखसूरू[20]। भयोअत्यंत[21] दुहूँ रस रूरू॥
मालति[22] देख भँवर[23] गा भूली। भँवर देख मालति बन फूली॥
देखा दरश भये इक पासा। वह वहकी वह वहकी आसा॥

कायम १ देखना २ न्योछावर ३ नयावदन ४ निगाह ५ सामने काँटा ६ छाती ७ शिर ८ दाँत ९ कटोरी १० बाँहु कमर छाती चीता कीसी ११ राना दमन १२ बदन १३ खाली १४ लाल जवाहिर १५ रोशनी १६ खिलना १७ निगाह १८ आँख १९ सूर्य्य २० दोनोंखुश हुये २१ तथा पद्मावत २२ तथा राजा २३॥

कंचन[1] दाह दीन्ह जनु जीव। उगा सूर्य्य छूटगा सीव[2] ॥

दो० पाँयपरी धन पीयके नयनन सो रज मेंट।
अचरजभयोसबनकहँ भइशशि[3]कमलहिभेंट॥

जन काहू कहँ होय बिछोऊ[4]। जस वेमिले मिलै सब कोऊ ॥
पद्मावत जो पावा पीऊ। जनु मरजिये परा तन जीऊ ॥
कै न्योछावर तन मन वारें। पांयन परी घाल कै नारें[5]॥
नव[6] अवतारदीन्हविधि[7] आजू। रही छार[8] मानुष भइ साजू ॥
राजा रोय घाल गरे[9] पागा। पद्मावत के पांयन लागा ॥
तनजियमहँविधि[10]दीन्हविछोऊ। असनगरी तवचीन्ह न कोऊ॥
सोई मार छार[11] के मेंटा। सोइ जियाय करावे भेंटा ॥

दो० मुहमद मीत जो मन वसै तेहीमिला विधि आन।
संपति विपति पुरुष कहँ काहलाभ[12] का हान[13] ॥

लक्ष्मी सों पद्मावत कहा। तुम प्रसाद पायों जो चहा ॥
जो सब खोय जाहिं हम दोऊ। जो देखै भल कहै न कोऊ ॥
जेसब कुँवर आय हम साथी। औजित हस्ति[14] घोरआवाथी॥
जो पावे सुख जीवन भोगू। नाहित मरन भरन दुख रोगू ॥
तवलक्ष्मी गइ पिता[15] के ठाऊँ। जो यहि कर सब बूड़ सोपाऊँ॥
तब सो जरी अमृत[16] लैआवा। जो मरहत[17] सोछिड़काजियावा ॥
एक एक कै दीन्ह सो आंनी। भा संतोष[18] मन राजा रानी॥

दो० आय मिले सब साथी हिलमिल कराहिं अनन्द।
भई प्राप्त सुख संपति गयो छूट दुख धन्ध॥

और दीन्ह बहुरतन पषाना[19]। सोनरूप जोमनहिं न आना॥
जे बहु मोल पदारथ[20] नाऊँ। कातेहि वरन[21] कहूं तुमठाऊँ॥
तेहिकर भाव रूप को कहा। इक इक नग सृष्टि[22] वरलहा॥

मोना ओटाहुआ १ जाड़ा २ चौद ३ जुदाई ४ गरदन ५ नई पैदायश ६ ईश्वर ७-१० राख ८ गलेमें पगड़ी ९ धूर ११ फ़ायदा १२ नुक़सान १३ हाथी १४ वाप १५ संजीवनमूर १६ जोमरगयेथे १७ मन्न १८ पत्थर १९ जवाहिर २० रंग २१ दुनियां का मोल २२ ।

हीर फार बहु मोल जो अही। ते सब नग चुन चुनकेगही[1]॥
जो इक रतन भुनावै कोय। करै सोई जो मन महँ होय॥
द्रव्य गर्ब[2] मन गयो भुलाई। हम[3] समलच्छमनहिंनाहिंआई॥
लघुदीरघ[4] जो द्रव्य बखाना। जो जेहि चहीसोई तेहिमाना॥
दो० बड़ औ छोट दोउसम स्वामि कारजी सोय।
जोचाही जेहि काज कहँ वही काज सो होय॥

खण्ड उनतीसवां समुद्र और लक्ष्मी खण्ड॥

दिन दश रही जाय पहुनाई। पुनि भइ बिदा समुद्र सोजाई॥
लक्ष्मी पद्मावत सो भेंटी। जो सो कहा अपनी सो बेटी॥
समुद्र न दीन्ह पानकर बीरा। भरके रतन[5] पदारथ हीरा॥
और पांच नग दीन्ह बिशेखी। श्रवण[6] सुनी नयन नहिं देखी॥
एक सो अमृत दूसर हंसू। औ तीसर पंखी कर बंसू॥
चौथ दीन्ह सावक[7] सादूरू। पांचों परस जो कंचन[8] मूरू॥
तुरत तुरङ्गम[9] दोउ चढ़ाई। जल मानुष अगवा सँग लाई॥
दो० भेंट[10] समुंदिन[11] तबकियो फिरे नायके माथ।
जलमानुष तबहींफिरे जबसोआयजगनाथ॥

जगन्नाथ दरशन कहँ आये। भोजन रींधा भात पकाये॥
राजैं पद्मावत सों कहा। साँठ[12] नाँठ कछु गाँठ न रहा॥
साँठ[13] होय जासों सो बोला। नष्ट[14] जोपुरुष[15] पातज्योंडोला॥
सांठें[16] रंक चलै भौराई[17]। नष्ट राव[18] सब कहँ बौराई॥
सांठें आव गर्ब[19] तन फूला। नष्टहि[20] बोल बुद्धि बल भूला॥
सांठें[21] जागनींदनिशि[22] जाई। नष्टे[23] कहै होय अँधाई॥
सांठें दृष्टि[24] ज्योति होनयना। नष्ट हिये[25] मुखआव न बैना[26]॥

लेना १ ग़रूर २ हमारे बराबर कोईनहीं ३ छोटे बड़े ४ जवाहिर ५ कान ६ शेरका बच्चा ७ सोना ८ घोड़ा ९ मुलाक़ात १० लक्ष्मी ११ दौलतगई १२ दौलत १३ बेदौलत १४ मर्द १५ कमीना मालदार १६ अकड़के १७ राजा १८ ग़रूर १९ बेदौलत २० मालदार २१ रात २२ ग़रीब २३ निगाह २४ दिल २५ आवाज़ २६॥

दो० गांठें रहें सिर्ब[1] न तन नष्टहिं[2] आगर[3] भूख ।
बिनगांठ[4] वृक्ष निपत्र[5] ज्यों ठाढ़ठाढ़ पै सूख ॥

पद्मावत बोली सुनु राजा । जीव गये धन कौने काजा ॥
रहा द्रव्य तब कीन्ह न गांठी । पुनि कितमिले लच्छ[6] जोनांठी ॥
मूर्खोसांठ[7] गांठ जो करे । सांकर[8] परे सोई उपकरे[9] ॥
जेहि तन पंख जाय जहँ ताका । पैग[10] पहार होय जो थाका ॥
लक्ष्मी रही दीन्ह मोहिं बीरा । भरके रतन पदारथ हीरा ॥
काढ़ एक नग बेग[11] भुजाऊ । बहुरे लच्छ[12] फेर दिन पाऊ ॥
द्रव्य भरोस करे जन कोई । सांठ सोई जो गांठी होई ॥

दो० जोर कटक[13] पुनि राजा घरकहँ कीन्ह पयान[14] ।
दिवसहिं[15] भानु[16] अलोपभावासुकि[17] इन्द्रसकान ॥

चितौर आय नेर भा राजा । फिरा जियत इन्द्रासन गाजा ॥
बाजन बाजे होय अडोरा[18] । आवहिंबहलहस्ति[19] औघोरा ॥
पद्मावत चंडोल जो बैठी । पुनिगईउलटस्वर्ग[20] सोंदीठी[21] ॥
यहि मन ऐंठा रहे न सूधा । बिपति न सँवरैसम्पति लुब्धा[22] ॥
सहस्र[23] बरसदुखसहे जोकोई । घड़ी एक सुख बिसरै सोई ॥
योगिन यही जान मन मारा । तेहुँ न यह मन मरै अपारा ॥
रहे न बांधा बर भा जेही । तलिया[24] मार डार पुनि तेही ॥

दो० मुहम्मदयहि मन अमर[25] है कहुकितमाराजाय ।
कहां सदाशिव आवैं घटते घटत बिलाय ॥

कुँवर जो बहिबहि घाटनलागी । बहु बेक़रार सोय जनु जागी ॥
बिकल अचेत चेत तिन कहा । सङ्ग साथ नहिं दूसर रहा ॥
कहां रहे आये हम कहां । जानी नहीं कि जायहि कहां ॥

दिमागमें १ गरीब २ बहुत ३ बेफ़ायदा ४ बेपत्ता ५ दौलतजातीरही ६ दौलत होगी समय ७ तंगी ८ काम आवे ९ क़दम १० जल्द ११ दौलत १२ फ़ौज १३ कूच १४ दिन १५ सूरज १६ नाम गजासाँप १७ शेर १८ हाथी १९ आसमान २० निगाह २१ दोनन में दीवाना २२ हज़ार २३ संखिया ज़हर २४ हमेशाज़िन्दा २५ ॥

जागहिं दयादृष्टि[1] के आपी। खोलसोनयन दीन्ह बिधिझांपी॥
जेहि के सङ्ग पद्मिनी बांची। बहुत अनन्द[2] बहुतनृत[3] नाची॥
अबमग[4] मिलेआयजगनाथा। सबै आयके नावहिं माथा॥
अति दुख मिले आयके राजा। सोई ते गये उनके[5] काजा॥
दो० सो हीरामन रतन रबि[6] सो पद्मावत लाल।
सो पद्मावत सो कुवँर सो प्रीतम प्रति पाल॥
नागमती कहँ अगम[7] जनावा। गई तपन बर्षा जनु आवा॥
रही जो मुइ नागिनिजसतुचा[8]। जिव पायें तनकी भइ सुचा॥
सब दुख जस केंचुलगा छूटी। होय निसरी जस बीरबहूटी॥
जस भुइँदहि असाढ़ पलहाई। परहिं बूँद औ सोंध बसाई॥
वही भाँति[9] पलही सुखबारी[10]। उठी करलि नइ कोंपसँवारी॥
हुलस गंग जिमि बाढ़े लेई। यौबन लाग हिलोरे देई॥
काम धनुष शर[11] दै भइ ठाढ़ी। भाग्यो बिरह रहै जो बाढ़ी॥
दो० पूछहिं सखी सहेली हृदय[12] देख आनन्द।
आज बदन[13] तुम निरमल[14] कहाँ उवाहै चन्द॥
अबलगसखीपवनरहिताता[15]। आजलागमोहिंशीतलगाता[16]॥
महि[17] हुलसीजसपावस[18] छाहाँ। तसहुलास[19] उपजा[20] जियमाहाँ॥
दशौं दावके गा जो दशहरा। पलटा सोई नाव लै महरा॥
अब यौबन गंगा होय बाढ़ा। औटन कठिन मार सबकाढ़ा॥
हरियर सब देखे संसारा। नई चार[21] जनुभा अवतारा॥
भाग्यो बिरह करत जो दाहू[22]। भा मुख चन्द छूटगा राहू॥
लहिकाहिंनयनहारहिय[23] खिला। को धौं हितू आयके मिला॥
दो० कहतहिं बात सखिन सो ततखन[24] आवा भाट।

मेहरबानी की निगाह १ खुश २ नाच ३ शायद ४ राजा के काम को ५ सूर्य्य ६ आगम ७ चमड़ा ८ उसीतरह ९ बाग़ीचा १० कमान-तीर ११ दिल १२ मुहँ १३ पाक-साफ़ १४ गर्म हवा १५ ठंढाबदन १६ ज़मीन १७ बरसात १८ ख़ुशी १९ पैदाहोना २० नईतरह २१ जलाना २२ दिल २३ तुरंत २४॥

राजा आय नेर भा मँदिर बिछायो पाट[1] ॥
सुनतहि अन राजा कर नाऊँ। भा हुलास सब ठावहिं ठाऊँ ॥
पलटा जनु बरषा ऋतु राजा। जस असाढ़ आवै दर साजा ॥
देव से छत्र भई जगछाहां। हस्ति[3] मेघ उनये जगमाहां ॥
सैन[4] पूर आई घन घोरा। रहस चाव बरषे चहुँ ओरा ॥
धरतिस्वर्ग[5] अबहोय मिलावा। भरहिं पुखर औतालतलावा ॥
उठीमहकमहिं[6] सुनितेहिनामा। ठांवहिं ठांव दूब असजामा ॥
दादुर[7] मोर कोकिला बोले। हतजोअलोप[8] जीभसबखोले ॥
दो० भये असवार प्रथमें[9] मिले चले सब भाय।
नदी अठारह खण्डा मिलीसमुद्रकहँ जाय ॥
बाजत गाजत राजा आवा। नगर चहूँदिश बाजबधावा ॥
बिहँस आय माता सों मिला। रामहि जनु भेंटी कौशिला ॥
साजे मन्दिर बन्दनवारा। औ बहु होय सो मंगलचारा ॥
पद्मावत कर आव बिमानू[10]। नगमातिदहक उठीतसभानू[11] ॥
जनहु छांह महँ धूप देखाई। तैसे झार[12] लाग जो आई ॥
सहीन जाय सौतकी झारा। दुसरे मन्दिर दीन्ह उतारा ॥
भई उहां चौखण्ड बखानी[13]। रतनसेन पद्मावत आनी ॥
दो० पुहुप[14] सुगन्ध संसार महँ रूप बखानन जाय।
हेम सेत[15] उग्रगा जना जगत पात पहिराय ॥
बैठ सिंहासन लोग जोहारा। निधनी[16] निरगुण[17] द्रव्यबोहारा[18] ॥
अगनित[19] दान निछावरकीन्हा। मँगतनदान बहुतकै दीन्हा ॥
तुरी[20] हस्ति[21] लैमहावतमिले। तुलसीलै उपरोहित चले ॥
बेटा भाय कुँवर जेत आवहिं। राजा हँसहँस गले लगावहिं ॥
नेगी गेज[22] मिले अरकाना। पंवरथ बाजे घर मसयाना[23] ॥

तख़्त १ फ़ौज २-४ हाथी३ ज़मीन—आसमान ५ ज़मीन ६ मेंढक ७ ग़ायब ८ पहिले९ डोला १० सूर्य्य ११ आग १२ चारोंतरफ़ मशहूर १३ फुल १४ मिस्ल वर्फ़सफ़ेदबहार केमौसिममें हरेहरे पत्ते लहराते हैं १५ ग़रीब १६ वेहुनर १७ जमाकरना १८ वेहिसाब १९ घोड़ा २० हाथी २१ हक़दार २२ मस्त २३ ॥

मिले कुँवर कापर पहिराये। देकर द्रव्य तिन घरहिं पठाये॥
सबकी दशा[1] भई पुनि दुनी। दान[2] दांग सबैजग सुनी॥

दो० बाजै पाँच शब्द[3] नित सिद्ध[4] बखाने भाट।
छत्तिस गौरीषट[5] दरशन आय जुरवहपाट[6]॥

सब दिन राजा दान देवावा। भई निश नागमती पहँआवा॥
नागमती मुख फेरिके बैठी। सोनहिं करहि पुरुष[7] सोदीठी[8]॥
ग्रीषम[9] जरत छोड़ के जाय। सो मुख कौन देखावे आय॥
जोह जरे परबत बन लागी। उठी झार[10] पंखी उड़भागी॥
अब शाखा देखी औछांहां। कौने रहस पसारेसि बांहां॥
कौन्यो थिरक बैठि तेहि डारा। कौन्यो[11] कली केलिकुरबारा॥
तू योगी होयगा बैरागी। हौंजर छार[12] भयों तुहिलागी॥

दो० काह हँसो तुम मोसों किये और सो नेह।
तुहिं मुख चमके बीजुली मुहिं मुखबरषे मेह॥

नागमती तू पहिल बिवाही। कठिन[13] सुप्रीतिदही जसदाही॥
बहुते दिनन आव जो पीउ। धन[14] नमिलैधन पाहन[15] जीउ॥
पाहन लोह पोढ़ जग दोऊ। सोऊ मिलैं जो होयबिछोऊ[16]॥
भलहिं सेतगंगाजल[17] दीठा। यमुनजोश्याम[18] नीरअतिमीठा॥
काह भयो तन दिनदश[19] दहा। औबरषा शिर ऊपर अहा॥
कोइ कहि पास आश[20] के हेरा। धनवहदरशनिराश[21] नफेरा॥
कण्ठ लायके नारि मनाई। जरी जो बेल सींच पलहाई॥

दो० सहस[22] अठारहशाखफरदाड़िम[23] दाख[24] जँभीर।
सबै पंखमिल आय जोहारे लौट वहीभइभीर॥

शकल १ खैरात और इनआम २ नगारा-शहनाई-करनाल-तुरही-झाँझ ३ तारीफ ४ योगी-जंगम-सेवरा—संन्यासी-ब्राह्मण—दरवेश ५ तख्त ६ मर्द ७ शोख ८ बड़ीगरमी ९ आग १० किसकलीके लिये कुलेल मचातेथे ११ राख १२ सख्तमुहब्बत जली जैसा जलना चाहिये१३ नागमती१४ पत्थर १५ जुदाई १६ सफ़ेदगंगाजल तथा पद्मावत १७ सियाह पानी १८ थोड़ेदिनजली १९ उम्मेद २० नाउम्मेदनकरना चाहिये२१ हज़ार २२ अनार २३ अंगूर २४॥

जो भा मेरु[1] भयो रँग राता । नागमती हँसि पूँछी बाता ॥
कहु जो कन्त परदेश लुभाने । कस धनमिली भोग कसमाने ॥
जो पद्मावत सुठ है लोनी[2] । मोरे रूप कि सरवर[3] होनी ॥
जहां राधिका अप्सर माहां । चन्द्रावल सर पूज[4] न छाहां ॥
भँवर पुरुष[5] असरही न राखा । तजै दाख[6] महुवा रस चाखा ॥
तज नागेसर फूल सुहावा । कमल वसेंधी सो मन लावा ॥
चो[7] अन्हवायभरेअरगजा[8] । तौहु विसायँध वहि नहिं तजा ॥

दो० काह कहूँ हूं तोसों कुछनाहिं तोरे भाव ।
यहां बात मुखमोसों वहां जीव वह ठांव ॥

दुखकिकथाकहिरयनि विहानी । भयो भोर जहँ पद्मिन रानी ॥
भानु[10] देखशशि[11]वदनमलीना।कमलनयनराती[12]तनखीना[13] ॥
रयनि नखत गिनकीन्हविहानू । विमल[14] भई देखी जस भानू ॥
सूर्य्य हँसा शशि[15] रोय डफारा । टूट आंशुजसनखताहिं मारा[16] ॥
रही नराखी होय निसासी । तहँवांजाउ जहांनिशि[17] वासी ॥
हौं कै नेह कुवां महँ मेली । सींचहिलाग झुरानी वेली ॥
भये दुइ नयन रहँट की घरी । भरहिं लै ढारैं छूछी भरी ॥

दो० सुभ्र सरोवर[18] हंस जल घटातो होयविछोय[19] ।
कमल प्रीति नहिं परहरे[20] सूख वेल परहोय ॥

पद्मावत तुइँ जीव पराना । जियते जगत पियार न आना ॥
तुइँजिसकमलवसीहिय[21]माहां । हौंहोयअलि[22]वेधा तोहिं पाहां ॥
मालति कली भँवर जो पावा । सोतज आन फूल कित भावा ॥
मैं हौं सिंहल की पद्मिनी । सरन[23] पूज जम्बू नागिनी ॥
हौंसुगन्धनिरमल[24]उजियारी । वह विष भरी डेरावन कारी ॥
मोरी वास भँवर सँग लागहिं । वहदेखत मानुष डर भागहिं ॥

[illegible] १ खूबसूरत २ बराबर ३—४ मर्द ५ अंगूर ६ चोवा ७ खुशबू ८ [illegible] ९ सूर्य्य १० चाँद ११—१५ लाल १२ पतलीकमर १३ रंजख्याशहुवा सूर्य्य को देखके १४ माला १६ रात १७ तालाब १८ जुदाई १९ छोड़ना २० दिल २१ भँवर २२ बराबरी २३ पाकसाफ़ २४ ॥

हौं पुरुषन[1] की चितवनदीठी[2]। जेहिकेजिय[3] अस आहों पीठी॥
दो० ऊँची ठांव[4] जो बैठै करै न नीचै सङ्ग।
जहांसो नागिन धरगई कालाकरै सोअङ्ग॥
पलही नागमती की बारी[5]। सोने फूल फूल फुलवारी॥
जानवन्त पंख[6] रहि सब दहे[7]। सबै पंख बोलत कहकहे॥
सारो[8] सुवा महर कोकिला। रहसत आय पपीहा मिला॥
हारल[9] शब्द महोक[10] सुहावा। काग कुराहर[11] करहिसोआवा॥
भोगबिलास कीन्ह अतिफेरा। बासहिं रहसहिं करहिं बसेरा॥
नाचहिं पांडुक[12] मोर परेवा। निफल न जाय काहुकी सेवा॥
ह्वै उजियार बैठ जस तपै। खूसट मुख न देखावै छिपै॥
दो० सङ्ग सहेली नागमति अपनी बारी माहिं।
फूलचुनहिं फलतोड़हिं रहसकूदसुख छाहिं॥
जाही जूही तेहि फुलवारी। देख रहस रहिसकी न बारी॥
इते न बातन हिये[13] समानी। पद्मावत सो कहीसो आनी॥
नागमती है अपनी बारी[14]। भँवर मिला रस करै सँवारी॥
सखी साथ सब रहसहिं कूदहिं। और शृंगार हार सब गूँदहिं॥
तुम जोबकावल तुमसो लड़ना। बकचन[15] कहोचहोजसकरना॥
नागमती नागेसर रानी। कमलन आछी अपनी बानी॥
जस सेवती गुलाल चमेली। तैसि एकजन वहू अकेली॥
दो० अब सुदरशन[16] गूजा तब सत[17] बरगै योग।
मिलाभँवर नागेसरसेते वहीदेहि सुखभोग॥
सुनि पद्मावत रिसन सँभारी। सखिन साथ आई फुलवारी॥
दोउ सौतमिल पाट[18] जो बैठी। हियबिरोध[19] मुख बातैंमीठी॥

मर्द १ देखना २ जिसकीहों उसके दिलमें बैठीहूं ३ जगह ४ बागीचा ५ १४ चिड़िया ६ जलना ७ तोता मैना ८ नाम चिड़िया ९-१०-१२ कौवा की बोली ११ दिल १३ तुमको जो कहना या करनाहै सो करो १५ तथा नागमती वा राजा १६ तथापद्मावत १७ तखत १८ दुश्मनी १९॥

बारीबहुरि सो रँग सो आई। पद्मावत हँस बात चलाई ॥
बारी सुफल अहै तुम रानी। है लाई पै लाय न जानी ॥
नागेसर औ मालति जहां। सुगन्ध राव नहिं चाही तहां ॥
रहाजोमधुकर[1] कमल पिरीता। लाग्यो जाय करील की रीता ॥
जहँ इमलीबांकी हिय[2] माहाँ। तहँ न भाव नारँग की छाहाँ ॥

दो० फलहि फूलके फरजहां देखहु मनहि बिचार।
अम्ब लाग जेहि बारी चम्प लाग तेहि बार ॥

अनतुल कही नीकयह शोभा। पै फल सोई भँवर जेहिलोभा ॥
स्याम[3] जाम्ब कस्तूरी चोवा। अम्बजोऊँचहृदय[5] तेहिरोवा ॥
तेहिगुनअसभइ जाम्बनेवारी। लाई आन मांझ केबारी ॥
जल बाढ़े बहिया जो आई। है बांकी इमली शिर नाई ॥
तु कस पराई बारी दोखी। तजें[6] पानि धावहु मुख सूखी ॥
उठे आग दोउ डार अभेरा। कौन साथ तुहिं बैरी केरा ॥
जो देखी[7] नागेसर बारी। लाग मरी अब सूगा[8] सारी ॥

दो० जो सरवर[9] जल बाढ़े रहै सो अपनी ठाउँ।
तज[10] नागेसर को वहि जाउँनतुहिं अँबराउँ ॥

तेहिअँबराउँ[11] लीन्हकाजूरी[12]। काहे भई नींब मुख मूरी[13] ॥
भई बेर कित कुटिल कटीली। तेंदू[14] कीन्ह चाह बकसीली ॥
नारँगदाख[15] न तुम्हरी बारी। देख मराहिं जेहि सूगा[16] सारी ॥
औन सदाफर तुरंज जँभीरा। कटहर बड़हर लोका खीरा ॥
कमलके हिरदय[17] रोवां केसर। तोहू न सर[18] पूजी नागेसर ॥
जहँकटहरकोड[19] वरहिंन पूँछी। बड़ पीपर का बोलहि छूँछी ॥
जो फल देखी सोई फीका। ताकर काह सराहे[20] नीका ॥

फुलवारी खुशरंग देख १ भँवर कमलका आशिक २ दिल ३-५ काली जामुन मुश्क ४ जो मेंजबाबढ़ों तो पानीछोड़दो और मुँह सूखजाय ६ जोमेरे बाग़को नागेसर देखे ७ तोता मैना ८-१६ तालाब ९ नागेसरछोड़ तेरेबाग़ न जाउँ १० बाग़ ११ मुक़ाबिल १२ नींब ऐसी कड़ुवी १३ बैंगन जंगली से बेर कांटादार अच्छाहोगा १४ अंगूर १५ दिल १७ बराबर १८ कटहर बलंद १९ तारीफ़ २० ॥

दो० रहु तू अपनी बारी मोसों जूझ न बाझ।
मालतिउपमन पूजी[1] पुनिकरखोजाखाज॥

जो कटहर बड़हर बड़बेरी। तोहिअसनाहिं जो कोकाबेरी॥
श्याम जान मोर तुरंजजँभीरा। कडुइ नींब तू छाँह गँभीरा॥
नरियर दाख[2] बिही कहँ राखों। गलगलजाउँसौत[3] नहिंभाखों॥
तोरें कहे होय मोर काहा। फरे बृक्ष कोउ ढेल न बाहा॥
नवे सदाफर सो नित फरै। दाड़िम[4] देख फाटहिय[5] मरै॥
जाफर लौंग सुपारि छुहारा। मिर्च होय जो सहै न पारा॥
हौं सुपान रंग पूजन कोई। बिरह जो जरे चून जर[6] होई॥

दो० लाजहि बूड़ मरेसि नाहिं ऊभ[7] उठावसबाहँ।
हौंरानी पिय राजा तो कहँ योगी नाहँ[8]॥

हौं पद्मिनी मानसर[9] केवा[10]। भँवर मराल[11] करहिंमोरसेवा॥
पूजा योग दई हौं गढ़ी। मन महेशके माथे चढ़ी॥
जानी जगत कमल की करी। तोहिअसनहिंनागिनबिषभरी॥
तुइँ सब लिये जगतके नागा। कोयल वेष न छांड़ेसि कागा॥
तू भुजैल हौं हंसकी जोरी। मोहिं तोहिंमोति पोतकीचोरी॥
कंचनकली[12] रतन नग बिना। जहांपदारथ[13] सोहनाहिंपना[14]॥
तुइँतोराहुहौंशशि[15] उजियारी। दिनहिनपूजी[16] निशि[17] अँधियारी॥

दो० ठाढ़ होसि जेहिठाईं मसि[18] लागै तेहि ठाउँ।
तेहि डर रांधन बैठों जनु साँवर होय जाउँ॥

कमल सो कौनसुपारी[19] रोठा। जेहिके हिये सहसदश कोठा॥
रही न झापे आपन[20] गटा। सखति[21] उघेल चहै परगटा॥

बराबर १ अंगूर इसीवास्ते रक्खा है २ सौतका मुँह से नाम न लों ३ अनार ४ छाती ५ खाविंदके बिरहमें जलके चूनाहुई ६ बलन्द ७ खाविन्द ८ नाम तालाव ९ कमल १० हंस ११ सोनेकी अँगूठी १२ लाल १३ पन्ना १४ चाँद १५ बराबर १६ रात १७ सियाही १८ सुपारी सख्तके सामने कमलकी क्या हक़ीक़त १९ कमल अपना गट्टा नहीं छिपासक्ता २० सख्ती उघेरडाली तब ज़ाहिरहो २१ ॥

कमल पत्र दाड़िम[१] तोर चोली । देखेसि सूर[२] देश है खोली ॥
ऊपर राता[३] भीतर पियरा । जारों[४] वही हरद असहेरा ॥
यहां भँवर मुख बातहि लावसि । वहां सूर्य्यकहँहँसहँसलावसि ॥
सबनिशिसतपतपमरेसिपियासी । भोर भये पावसि पिय बासी ॥
सेजना रोय रोय निशि[५] भरसी । तू मोसों का सरवर[६] करसी ॥

दो० सूर्य्यकिरन तेहि रावी सरवर[७] लहर न पूज ।
भँवरयहांतोह पावै धूप[८] देह तोर भूज ॥

सेहों कमल सूर्य्य की जोरी । जोपिय आपन तेहि का चोरी ॥
हों वह आपन दरपन लेखों । करों शिंगार भोर मुख देखों ॥
मोर बिकास[१०] वहक परकासू । तुइँजर मरेसि निहार अकासू ॥
हों वह सों वह मोसोंराता[११] । तिमिर[१२] बिलाय होत परभाता[१३] ॥
कमल के हिरदय[१४] महँ जोगटा । हरियर[१५] हार कीन्ह काघटा ॥
जाकरादिवस[१६] तेही पै आवा । कार रयनि[१७] कित देखै पावा ॥
तुइउदुम्बर[१८] जेहि भीतर माँखी । चाहहिं उठहिं मरन की पाँखी ॥

दो० धूपन देखी विष भरी अमृत सो सर पाव ।
जेहि नागिन डस सो मरैलहर सूर्य्यकी आव ॥

फूलहिं कमल भानु[१९] के उये । पानी मैल होय जड़[२०] छुये ॥
फिरहिंभँवर जिस तोनयनाहाँ । नील विषायँध सब तो पाहाँ ॥
मच्छकच्छदादुर[२१] तोहिंआसा । बक[२२] औपंखबसहिंतोहिंपासा ॥
जेजे पंख बास तोहिं लये । पानी महँ सो विषायँध भये ॥
जो उजियार चांद होय उई । वदन[२३] कलक डोंम लै छुई ॥
औमोहिंतोहिंनिशि[२४] दिनकरबीचू । राहुकेहाथचांदकी मीचू[२५] ॥

अनार १ सूर्य्य २—१६ लाल ३ हल्दी की तरह जलाता हूं ४ रात ५—१० समुद्र ६ ७—८ सूर्य्य में जल ९ खिलना १० खुश ११ अंधियारी १२ भोर १३ दिल १४ हरे कमलगट्टा का हार पहिने से क्या नुकसान १५ दिन १६ गूलर १८ हिलाने से पानी मैला होता २० मेढक २१ बगुला २२ चाँद में सियाही २३ रात २४ मौत २५ ॥

सहस[1] बार जो धोवै कोई। तौहु विषायँध जाय न धोई॥

दो० काहकहूँ वह पियसोंमोहिंशिर धरेसि अँगार।
तेहि के खेल भरोसें तू जीती मैं हार॥

तोर अकेल का जीत्यों हारू। मैं जीता जग केर शिंगारू॥
बदनजित्योंजोशशि[2] उजियारी। बेनी जित्यों भुवंगिनि[3] कारी॥
औ मैं जीते मृगके नैना। कण्ठ जित्यों कोकिलके बैना॥
भौंह जित्यों अर्जुन धनुकारी। ग्रीव[4] जित्योंतमचोर पुछारी[5]॥
नासिक[6] जित्योंपुहुप[7] तिलसुवा। शूक[8] जित्यों बेसर होयउवा॥
दामिनि[9] जित्योंदशन[10] चमकाहीं। अधर[11] रंगरबिजीत्योंसाहीं॥
केहर[12] जित्योंलंक[13] मैं लीन्हीं। जित्यों मराल[14] चालवेदीन्ही॥

दो० पुहुप[15] बासमलयागिरि[16] निरमलअंगबसाय।
नागिनममआशालुबुध[17] मारेसिकेहरकोजाय॥

का तोहिं गर्ब[18] शिंगार पराये। अबहीं लेह लौट सब ठाये॥
हौं सांवर सलोन मोर नैना। श्वेत[19] चीर मुखचातृक[20] बैना॥
नासिक स्वर्ग फूल ध्रुवतारा। भौंहें धनुष गगन[21] काहारा॥
हीरादशन[22] श्वेत[23] अरुश्यामा। छिपै बीज[24] जो बिहँसै रामा॥
बिद्रुम[25] रंगअधर[26] रसराती[27]।जोदामिनि[28] असरबि[29] महँताती।
चाल गयंद[30] गर्ब[31] अतिभरी। बिसालंक[32] नागेसर करी॥
साँवर जहाँ लवनसुठ नीकी। कासरबर[33] तूकरेसि जोफीकी॥

दो० पुहुप[34]बासहौं पवन अहारी कमलमोरनिरहेल[35]।
चहौं केश[36] धर नाऊँ तोर मरन मोर खेल॥

पद्मावत सुनि उतर[37] नहिं सही। नागमती नागिन जिम कही॥

हज़ार १ चांद २ नागिन ३ गर्दन ४ मुर्ग़-मोर ५ नाक ६ फूल ७ नाम नक्षत्र ८ बिजुली ९ दांत १० होंठ ११ चीता १२ कमर १३ हंस १४ फूल १५ चन्दन १६ आरज़ू खाविंदकेपास जानेकी रखती १७ ग़रूर १८ सफ़ेद १९ पपीहा २० आसमान २१ दांत २२ सफ़ेद-काला २३ बिजुली २४ मूंगा २५ होंठ २६ लाल २७ बिजुली २८ सूर्य २९ हाथी ३० ग़रूर ३१ भँवराकीकमर ३२ बराबर ३३ फूल हवाकेसहार ३४ तरुताज़ा ३५ बाल ३६ जवाब ३७॥

वे गहगहि नद वें कहैं कहा । काह कहौं तसजाय न कहा ॥
औ नवल भर यौवन गाजैं । अप्सर[1] जानु अखारैं बाजैं ॥
भा बाहुन बाहुन सों जोरा । हिय सो हिय कोइ बागन मोरा ॥
कुच[2] औ कुच भइ सौंहैं अनी[3] । नवहिं ननाये टूटहिं तनी[4] ॥
कुंभस्थल दो गज मैमन्ता[5] । दोनों उफर परे चौदन्ता ॥
इन्द्रलोक देखन हुत ठाढ़े । लाग बान हिय[6] जाहिं न काढ़े ॥

दो० जनहु दीन्ह ठगलाड़ देख आय तस मीच[7] ।
रहा न कोइ धरहरिया[8] करै जो दोउ महँ बीच ॥

पवन श्रवन[9] राजा के लागा । कहेसि लड़हिं पद्मिन औ नागा ॥
दोनों सौत श्याम औ गोरी । मरहिं तो कहँ पावसि असजोरी ॥
चल राजा आवा तेहि बारी । जरत बुझाई दोनों नारी ॥
एक बार जेहिपिय मन बूझा । सो दूसरे सों काहेक जूझा ॥
ऐसो ज्ञान मन जानन कोई । कबहूँ रात कबहुँ दिन होई ॥
धूप छाँह दोउ इक रंगा । दोनों मिले रहैं इक संगा ॥
जूझब[10] छाँड़हु बूझौ दोऊ । सेव[11] करहु सेवाफल होऊ ॥

दो० गंग यमुन तुमनारि दोउलिखी मुहम्मद योग ।
सेव करहु मिलदोनों तो मानहु सुख भोग ॥

अस कहि दोनों नारि मनाई । बिहँसिदोउतब कण्ठ[12] लगाई ॥
लै दोउ सङ्ग मँदिर महँ आई । सोन पलँग तहँ जायबिछाई ॥
सीझी पांच अमृत ज्योनारा । औ भोजन बावन परकारा ॥
हुलसीनरस दाखिचया[13] खावैं । भोग करत बिहँसीं रहसावैं ॥
सोन मँदिरनगमतिकहँ दीन्हा । रूप मँदिर पद्मावत लीन्हा ॥
मन्दिर रतन रतनके खंभा । बैठा राज जोहारे सभा ॥
सभा सो सबैं सुध्र[14] मनकहा । सोईअस[15] गुरु जोभलकहा ॥

परी इन्द्रलोक १ छाती २ नोकसामने ३ अंगिया के बन्द ४ नाम हाथी मस्त ५ दिल ६ मौत ७ पकड़नेवाला ८ कान ९ लड़ना १० खिदमत ११ गलेलगाया १२ अंगूर १३ सच्ची बात कही १४ वह अच्छा जिसको गुरुपसन्दकरै १५ ॥

दो० बहुसुगन्ध बहुभोगसुख कुरलहिं केलकराहिं।
दोहुसोकेल नितमानी रहसअनन्द दिनजाहिं॥

जाई नागमती नग सेनी[1]। ऊँच भाग ऊँची दिन रेनी॥
कमल सेन[2] पद्मावत जाई। जानहु चन्द्र धर्ति महँ आई॥
पण्डित बहु बुधवन्त बोलाये। राशि वर्ग औ गिरह गिनाये॥
कहेन बड़े दोउ राजा होहीं। ऐसे बूत दसे[3] सब तोहीं॥
नवें खण्डके राजा जाहीं। औ कुछदण्ड[4] होयदलसाहीं॥
खुल भँडार कुछ दान देवावा। दुखी सुखी कर नाम बढ़ावा॥
याचक लोग गुनीजन आये। अरु आनँदके बजे बधाये॥

दो० अति कुछपावा ज्योतिषिनऔ देचले असीस।
पुत्र[5] कलत्र कुटुम्ब सब जीवहिं कोटिबरीस॥

राघव चेतन चेतन महा। आय उरक[6] राजा यहँ रहा॥
चित चिन्ता[7] जानै बहु भेउ[8]। कबिब्यास[9] पण्डित सहदेउ[10]॥
बरनी[11] आय राज की कथा। पिंगल[12] महँसब सिंहलसथा॥
जोकबि सुनै शीश[13] सो धुना। श्रवण[14] नाद वेद कविसुना॥
दृष्टि[15] सो धर्म पन्थ जेहिसूझा। ज्ञान[16] सो परमअर्थमनबूझा॥
योग जो रहै समाधि समाना। भोग जो गुनीकेर गुनजाना॥
बीर[17] सुरसि मारै मन कहा। सोइ शृँगार कन्त जो चहा॥

दो० वेद भेद जस बररुचि[18] चितचिन्ता तसचेत।
राजा भोज[19] चतुरदश भा चेतन सो हेत॥

घड़ी अचेत[20] होय जो आई। चेतनकी सब चेत भुलाई॥
भादों एक अमावस सोई। राजै कहा दुइज कब होई॥

नागमतीसे नगसेन पैदाहुवा १ पद्मावतसे कमलसेन २ बलसे दशगुना ३ आपसमें फरेब ४ बेटा—औरत-खान्दान ५ पास ६ दिलका हाल ७ भेद ८ कविताई में व्यास जो ९ पण्डिताईमें सहदेव १० बयान ११ छंद १२ शिर १३ कानमें वेदनाद की तरह सुना १४ निगाह १५ अक़िलसे मुश्किल बात दरियाफ़्त करता १६ बहादुर १७ नाम पण्डित १८ चौदहविद्या जाननेवाला राजा भोजकी तरह १९ बुरी २० ॥

राघव के मुख निकसा आजू । पण्डितन कहा काल्हबड़राजू ॥
राजैं दुहूँ दिशा फिर देखा । पण्डित बावर[1] कौन सरेखा[2] ॥
भुजा टेक के पण्डित बोला । छांड़हि देश वचन[3] जो डोला ॥
राघव करी जाघनी[4] पूजा । चहैं स्वभाव देखावै दूजा ॥
तेहि ऊपर राघव वर[5] खांचा । दुइज आज तौ पण्डितसांचा ॥

दो० राघव पूज जाघनी दुइज देखायस सांझ ।
वेदपन्थ जेनहिंचलहिं तेभूलहिं वनमांझ ॥

पण्डित कहा परानहिं धोखा । कौनअगस्तसमुद्र जेहिसोखा ॥
सोदिन गयो सांझ भइ दूजी । देखी दुइज घड़ी वह पूजी ॥
पण्डितन राजा दीन्ह असीशा । अब कस ये कंचनऔशीशा ॥
जो यह दुइज काल्हकी होती । आजतेजदेखतशशि[6] ज्योती ॥
राघव दृष्टिबन्द कल्ह खेला । सभा[7] मांझचेटक[8] असमेला ॥
यहि कर गुरू चमारिनि लोना । सिखा कामरू पाठत टोना ॥
दुइज अमावससहँ जो देखावै । दिन इक राहु चांद कहँलावै ॥

दो० असगुणि नहिंचाहिन्नृपसभा जोहिटोनाकरखोज ।
यही छन्द ठगविद्या छला सो राजाभोज ॥

राघव बैन[10] जोकंचन[11] रेखा । कसे बान पीतर अस देखा ॥
अज्ञा[12] भई रिसान नरेशू[13] । मारों काहि निसारों देशू ॥
झूंठ बोल थिर[14] रहै न राचा । पण्डित सोई वेदमति साँचा ॥
वेद वचन[15] मुखसांच जोकहा । सोयुग युगइस्थिर[16] थिररहा ॥
खोट[17] रतन सोई फटकिरा । केहिघररतन जोदारिद[18] हरा ॥
चहैं लक्ष[19] बावर कवि सोई । जहँसरस्वती[20] लक्षकिलहोई ॥
कविता[21] संगदारिद मतिभंगी । काँटे कुटिल पुहुप[22] के संगी ॥

कोन पंडित नादान १ होशियार २ बात ३ भारी पूजा ४ कसम ५ चाँद ६ दरबार ७ जादू ८ राजदरबारमें ऐसा जादूगर न चाहिये ९ बात १० सोना ११ हुक्म १२ राजा १३ इन्सान नहीं रहती १४ वेद के मुकाबिल १५ कायम १६ झूँठा जवाहिर ज़िसकरिकीमत १७ दारिद दूरनहीं करता १८ दौलत १९ मकबाल २० कविदारिद्री होता है २१ फूल २२ ॥

दो० कबिता चेला बिधि[1] गुरू सीप सेवातीबुन्द।
तेहिमानुषकी आश[2] का जो मरजियासमुन्द॥

यहि सो बात पद्मावत सुनी। देश निसारा राघव गुनी॥
ज्ञान दृष्टि[3] धनअगम बिचारा। भलनकीन्ह असगुनीनिसारा॥
जे जाघली[4] पूज शशि[5] काढ़ी। सूर्य्य की ठांव करै पुनि ठाढ़ी॥
कबकी जीभ खर्ग[6] हरवानी। इक दिश आगदुसरदिशपानी॥
जन अयुक्त[7] मुख काढ़े भोरे। यश बहुतें अपयश कै थोरे॥
रानी राघव बेग[8] हँकारा। सूरय गढ़तरि लेहु उतारा॥
ब्राह्मण जहां दक्षिणा पावा। स्वर्गजाय जो होय बोलावा॥

दो० आवा राघव चेतन धौराहर[9] के पास।
एसिनजानीतेहिहृदय[10] बिजुलीबसेअकास॥

पद्मावत जो झरोखे आई। नेहिकलङ्क[11] जसशशि[12] देखराई॥
ततखन[13] राघवदीन्हअशीशा। भयो चकोर चन्दमुख दीशा॥
पहिरेशशि[14] नखतनकीमारा[15]। धरती[16] स्वर्गभयो उजियारा॥
औ पहिरे कर कंकन जोरी। नगजो लागतेहि तीसकरोरी॥
कङ्कन एक काढ़ दै डारी। काढ़त नारटूट गयें हारी॥
जानहुँ चांद टूटले तारा। छूट्यो स्वर्ग काल कर धारा॥
जनहुटूट बिजुली भुइँ परी। उठा चौंध राघव चित हरी॥

दो० परा आइ भुइँकङ्कन जगतभयो उजियार।
राघव बिजुली मारा बेसँभरकुछ न सँभार॥

पद्मावत हँस दीन्ह झरोखां। अब जो गुनीमरैमुहिं दोखा[17]॥
सबै सहेलीं देखी धाईं। चेतन चेत जगावैं आईं॥
चेतन परा न आवै चेतू। सबहिं कहा यहि लाग परेतू॥
कोइकहि कांप[18] कोईसम्पातू। कोई कहि आहि मिरगा[19] बातू॥

ईश्वर १ उम्मेद २ अक़िल ३ भारीपूजा ४ चाँद ५ तलवारतेज़ ६ बेमोक़ा ७ जल्द ८ महल ९ दिल १० बेऐब ११ चाँद १२—१४ तुरन्त १३ माला १५ ज़मीन—आसमान १६ पाप १७ जूड़ी १८ मिरगी का रोग १९॥

कोइ कहि लाग पवन[1] कर झोला । कैसाहिं समुझन चेतन बोला ॥
पुनि उठाय बैठारी छाहां । पूंछहि कौन पीर जिय माहां ॥
की काहू के [illegible] हरा । कै ठग धूत[2] भूत जेहि हरा ॥
दो० कै तोहि काहू दीन्ह[3] कुछ कैरे डसा तोहि सांप ।
कहो सो चित होय चेतन देह तोर कस कांप ॥
भयो सो चित चेतन जब चेता । नयन झरोखे जीव सकेता[4] ॥
पुनि जो बोला सील बुधि खोवा । नयन झरोखा लाये रोवा ॥
बावर फेर शीश[5] पै धुना । आपन कहि न पराई सुना ॥
जानहु लाई काहुँ ठगौरी[6] । खन[7] पुकार खन बांधै बौरी[8] ॥
हौं रे ठगा यहि चितौर माहां । कासो कहौं जाउँ केहि पाहां ॥
यहि राजा शठ बड़ हत्यारा । जे राखा यहि ठग बटपारा[9] ॥
नाकोइ बरजन[10] लाग गुहारी । असयहि नगर होय बटपारी ॥
दो० दृष्टि[11] रही ठगलाडू अलक[12] फांस पर ग्रीव[13] ।
जहां सिखारि न बाचै तहां बचै को जीव ॥
कित धौराहर[14] आय झरोखे । लै गयो जीव दक्षिना के धोखे ॥
स्वर्गसूर[15] शशि[16] करैं अजोरी[17] । तेहि ते अधिक[18] देउँ केहि जोरी ॥
शशि[19] सूरहि[20] जो होत वह ज्योती । दिन पहाड़ह तरयनि न होती ॥
तें हँकार[21] मोहिं कछु न दीन्हा । दृष्टि जो पड़ी जीव हर लीन्हा ॥
नयन भिखार ढीठ[22] सतछुड़ी[23] । लागे तहां बान हिय[24] गड़ी ॥
नयनहिं नयन जो बेध समाने । शीश[25] धुनहिं निसरैं नाहिं ताने ॥
नवहिं न नाये निलज भिखारी । तबहूं बुरी लाग सुखगारी ॥
दो० कित कर सुखी नयन भै जीव हरा तेहि बाट ।
सरवर[26] नीर बिछोह ज्यों तरक तरक हिय फाट ॥
सखिन कहा चेतन वे सँभारा । हिये चेत जिय जाय न मारा ॥

फ़ालिज १ किसी ठग या दगाबाज़ने मन्त्र चलाया २ खिलादिया ३ कुँभलाया ४ सिर ५—२५ काहू ६ कभी ७ चुप ८ राह लूटनेवाले ९ मनाकरनेवाला १० निगाह ११ बाल १२ गर्दन १३ महल १४ सूर्य १५—२० चाँद १६—१९ रोशनी १७ बहुत १८ बो- मान २१ ढीठ २२ ईमान छोड़ानेवाले २३ दिल २४ तालाब का पानी घटमे २६ ॥

जो कोइ पावै आपन मांगा। नाकोइ मरै न काहू खांगा[1] ॥
वह पद्मावत ऐसो सुरूपा। बरन न जाय काहके रूपा ॥
जें चीन्हीं सो गुप्त[2] चलगयऊ। परगट गुप्त[3] जीव बिनभयऊ ॥
तुम अस बहुत बिमोहित[4] भये। धुन धुन शीश जीव दै गये ॥
बहुताहिं दीन्ह नाय के ग्रीवा[5]। उतर[6] न देइ मारके जीवा ॥
तुइ पुनि मरत होय जर मुई। अबाहिं उघेल कानकी रुई ॥

दो० कोइ मांग मार ना पावै कोइ बिन मांगापाव।
तू चेतनऔरहिसमझावैबहुतुहिंकोसमझाव ॥

भयो चेत चित चेतन चेता। बहुर न आयसहों दुखएता ॥
रोवत आय परे हम जहां। रोवत चले कौन सुख तहां ॥
जहवां बहुसासू[7] जिय केरा। कौन रहन पर चलौं सबेरा ॥
अब यहि भीख तहां होयमांगों। एतनादे जग जन्म नखांगों[8] ॥
औ अस कंकन जो पाऊँ दूजा। दारिद हरै आश मन पूजा ॥
देहिली नगर आव तुरकानू। शाह अलाउद्दीं सुलतानू ॥
सोन जरी जेहि की टकसारा। बारह बानी[9] परहिं दिनारा ॥

दो० कमलबखानों[10] जायतहंजहंअलि[11] अलाउद्दीन।
सुनिके चढ़ै भानु[12] होय रतन होय जल मीन[13] ॥

खण्ड बत्तीसवां देहिली गवनराघव चेतन ॥

राघव चेतन कीन्ह पयाना[14]। देहिली नगरजाय नियराना ॥
आय शाहके द्वार[15] जो पहुँचा। देखा राज जगतपर ऊंचा ॥
छतिसलाख तुरुक असवारा। तीससहस[16] हस्ती[17] दरबारा ॥
जहँ तक तपै जगतपर भानू[18]। तहँ लग राज करै सुलतानू ॥
चहूँ खण्ड[19] के राजा आवहिं। ठाढ़झुराहिंजुहार[20] नपावहिं ॥

कमी १ छिपा २ ज़ाहिरवाछिपा ३ आशिक़ ४ गर्दन ५ जवाब ६ अँदेशा ७ कमी ८ बारह तरह ९ पद्मावतकी तारीफ़ १० भँवर ११ सूर्य १२—१८ मछली १३ कूच१४ दरवाज़ा १५ हज़ार १६ हाथी १७ चारों तरफ़ १९ सलाम २० ॥

मननैनान कैं राघव भूरा । नाहिं उबार जिया डर पूरा ॥
जहां भुरान दिये शिर छाता । तहँ हमार को चालै बाता ॥

दो० बारपार नाहिं सूझै लाखन उमर अमीर ।
अब खुरखेह जावमिल आयपरे यहि भीर ॥

बादशाह सब जाना बूझा । स्वर्गपतार[२] हिये[३] में सूझा ॥
जो राजा अस सजग[४] न होई । काकर राज कहांकर कोई ॥
जगत भार वह एक संभारा । तौथिर[५] रहै सकल संसारा ॥
औ असवहक सिंहासन ऊँचा । सब काहूँपर दृष्टि[६] जो पहुँचा ॥
सबदिन राजकाज सुख भोगी । रात फिरै घरघर ह्वै योगी ॥
रावरंक[७] जहंतक सब जाती । सबकी चाह[८] लेइ दिन राती ॥
पंथी[९] परदेशी जब आवहिं । सबकीचाह[१०] दूतपहुँचावहिं ॥

दो० यह बात तहँ पहुँची सदा छत्र सुख छाथ ।
ब्राह्मण एकहारहैठाढ़ा ककन जड़ाऊ हाथ ॥

मया[११]शाह मनसुनत भिखारी । परदेशी कहँ पूँछ हँकारी[१२] ॥
हम पुनि जाना है परदेशा । कौनपन्थ[१३] गवनबकेहिभेशा ॥
देहिलीराज चिन्तमन[१४] काढ़ी । यहिजग जैसि दूधकी साढ़ी ॥
संत[१५] मिलाय छांछके फेरा । मथघिवलीन्ह महिउकहँकेरा ॥
यहि देहिली कित ह्वै ह्वै गये । कै कै गर्ब[१६] खेह[१७] मिल गये ॥
यहि देहिलीकी रही ढिलाई[१८] । साढ़ी काढ़ ढील जब ताई ॥
रावण लङ्क जार सब तापा । रहान यौवन औ तरुनापा[१९] ॥

दो० भीख भिखारी दीजिये का ब्राह्मण का भाट ।
अज्ञा[२०] भई बोलावहु धरती धरा ललाट[२१] ॥

राघव चेतन हत जो निरासा[२२] । ततखन[२३] वेग[२४] बोलावापासा ॥

दायको धूर १ ज़मीन—आसमान २ दिल३ होशियार ४ क़ायम ५ निगाह ६ अमीर ग़रीब ७ ख़बर ८—१० मुसाफ़िर ६ मेहरबानी ११ बोलाना १२ राह १३ अन्देशा १४ नरमी १५ ग़रूर १६ धूर १७ नरमी १८ जवानी १६ हुक्म २० माथा २१ नाउम्मेद २२ फ़ुरनातन३ जल्द २४ ॥

शीश[1] नायके दीन्ह अशीशा। चमकतनग कंकन करदीशा ॥
अज्ञा भई सो राघव पाहां। तुई मंगन[2] कंकन काबाहां ॥
राघव फेर शीश[3] भुईं धरा। युग युगराज भानु[4] की करा ॥
पद्मिनि सिंहलद्वीप की रानी। रतनसेन चितोर गढ़ आनी ॥
कमलन सर[5] पूजी तेहिबासा। रूप न पूजी चन्द अकासा ॥
जहांकमलशशि[6] सूर[7] नपूजा। केहिसर[8] देउँ और को दूजा ॥

दो० सो रानी संसार मन दछना कंकन दीन्ह।
अप्सर[9] रूप देखायके जीवझरोके लीन्ह ॥

सुनिके उतर[10] शाह मन हँसा। जानहुबीज[11] चमकपरगासा ॥
कांच योग जो कंचन[12] पावा। मंगनताहि सुमेरु[13] चढ़ावा ॥
नाउँ भिखार जीभ मुख बांची। अबहिं सँभारबातकहुसांची ॥
कहँ अस नारिजगत उपराहीं। जेहिकेसर[14] सूरजशशि[15] नाहीं ॥
जो पद्मिनि तुईं मन्दिर मोरे। सातोंद्वीप जहां कर[16] जोरे ॥
सप्तद्वीप महँ चुन चुन आनी। सो मोरे सोरहसै रानी ॥
जो उनमहँ देखेसि इक दासी। देख लोन कै लोन बिलासी ॥

दो० चहूँखण्ड[17] हौंचक्कवे[18] जसरवि[19] तपैअकाश।
जो पद्मिनि मोरे मँदिर अप्सर तो कैलाश ॥

तुम बड़ राज छत्रपति भारी। अन ब्राह्मणहों अहोंभिखारी ॥
चारहुँ खण्ड भीखका बाजा[20]। उदयअस्त तुम्हऐसोनराजा ॥
धर्मराज औ सत कुल माहां। झूँठ जो कही जीभगहिबाहां ॥
कुछ जो चार सबकुछ उपराहीं। सो यहि चहूँद्वीप महँ नाहीं ॥
पद्मिनि[1] अमृत[2] हंस[3] सदूरू[4—21]। सिंहलद्वीप भलहिंसोमूरू[22] ॥
सातोंद्वीप देख हौं आवा। तब राघव चेतन कहवावा ॥
अज्ञा[23] होय न राखों धोखा। कहोंसोसबनारिनगुणदोखा[24] ॥

शिर १ मांगनेवाला २ शिर ३ सूर्य ४ बराबरी ५—८—१४ चाँद ६—१५ सूर्य ७ परीइन्द्रलोक ९ जवाब १० बिजुली ११ सोना १२ नाम पहाड़ १३ हाथ १६ चारोंतरफ़ १७ सारीदुनियांका राजा १८ सूर्य १९ पहुँचा २० लालशेर २१ ऑविल २२ हुक्म २३ ऐब—हुनर २४ ॥

दो० महां हस्तनी सिंहनी औ चित्रनि बनबास।
कहांपद्मिनी पद्म[1] शिर भँवरफिरै चहुँपास॥

खण्ड तंतीसवां स्त्री वर्णन॥

पहिले कहों हस्तिनी नारी। हस्ती[2] की परकीरति[3] सारी॥
शिरऔपांयसुभ्र[4] गर्ये[5] छोटी। उर[6] कीखीन[7] लंक[8] की मोटी॥
कुम्भस्थल[9] गजअमितअमाहीं। गवन[10] गयन्द ढालजनुबाहीं॥
दृष्टि[11] न आवे आपन पीउ। पुरुष पराये ऊपर जीउ॥
भोजनवहुत वहुत रतिचाऊ[12]। अछवाई[13] सो थोर सुभाऊ॥
मधु[14] जस मन्दबसाय पसेऊ। औ बिश्वास[15] धरै जसदेऊ॥
डर औ लाज न एको हिये। रहै जो राखें आंकुश दिये॥
दो० गज[16] गतचलैचहूँदिश लायजगतकहँचोख[17]।
कही हस्तनी नारी ये सब हस्तनि के दोख[18]॥
दूसर कहों सिंहनी नारी। करैबहुतबलअल्प[19] अहारी[20]॥
उर[21] अतिसुभ्र[22] खीन[23] अतिलंका[24]। गर्ब[25] भरीमनधरैनशंका॥
वहुत रोष[26] चाहौ पिय हना। आगें घालन काहू गिना॥
अलंकार[27] अपनी वह भावा। देख न सकै शृंगार परावा॥
सिंहकी चाल चलै डरा ढीली। रोवां वहुत जांघ औ फीली॥
मोट मांस रुच भोजन तासू। औ मुख आव विषायँधवासू॥
दृष्टि[28] तराहीं हेरै आगे। जन मथवाह रहै शिर लागे॥
दो० सेजवां मिलत सो स्वामी लावे उरनख वान।
यहि गुण सबै सिंहके वह सिंहन सुलतान॥
तीसर कहूँ चित्रनी नारी। महा चतुर रस प्रेम पियारी॥

कमल १ हाथी २ स्वभाव ३ मोटा ४ गर्दन ५ छाती ६—२१ पतली ७ कमर ८—२४ नाम हाथी ९ चाल १० निगाह ११ चाह १२ सफ़ाई १३ शहद १४ ख़याल १५ हाथी १६ विचार १७ ऐब १८ चौड़ा १९ ख़ुराक २० चौड़ी २२ बारीक २३ ग़रूर २५ गुस्सा २६ सूरत २७ नज़र २८॥

रूप स्वरूप शृँगार सवाई । अप्सर[1] जैसि रहीअछवाई[2] ॥
रोष[3] न जानै हस्ता मुखी । जहँअसनारि कन्त[4] सोसुखी ॥
अपने पुरुषकी जानै पूजा । एक पुरुष के जान न दूजा ॥
चन्द्र बदन[5] रंगकुमुदिनि[6] गोरी । चाल सुहाय हंस की जोरी ॥
खीर[7] खांड़कुछ अलपअहारू[8] । पान फूलसे बहुत पियारू ॥
पद्मिनि चाह[9] घाट दुइ करा[10] । और सबै वह गुणनिरमरा[11] ॥

दो० चित्रिनि जैसु कुमुद[12] रँग और बासना अंग ।
पद्मिनि बासचन्दन जस भँवर फिरहिं तेहिसंग ॥

चौथे कहों पद्मिनी नारी । पद्म[13] गन्धशशि[14] दईसँवारी ॥
पद्मिनि जात पद्मरँग ओई । पदमबास मधुकर[15] सँगहोई ॥
नासुठ लांबी नासुठ छोटी । नासुठ पातर नासुठ मोटी ॥
सोरहों करन रंगहै बनी । सो सुलतान पद्मिनी गुनी ॥
दीरघ[16] चारु बार लघु[17] सोई । सुभ्र[18] चार चहुँखीनी[19] होई ॥
औशशि[20] बदनदेखसबमोहा । चालमराल[21] चलतगतसोहा ॥
खीर अहार न कर सुकवारा । पान फूलके रहै अधारा ॥

दो० मोह किरन मम बूरन औ सोरहों शृँगार ।
अब यह भांति बरनके जस बरनै संसार ॥

प्रथम[22] केश[23] दीरघ[24] शिरसोहैं । औदीरघ[25] अँगुरीकर[26] सोहैं ॥
दीरघ नयन तीख तहँ देखा । दीरघ ग्रीव कण्ठ त्रयरेखा ॥
पुनिलघु[27] दशन[28] होहिंजनुहीरा । औलघुकुच[29] उतंगजम्भीरा ॥
लघु ललाट[30] दुइज परकासू । औ नाभी लघु चन्दन बासू ॥
नासिक[31] खीन[32] खर्ग[33] की धारा । खीन[34] लंक जनुकेहर[35] हारा ॥
खीन पेट जानहु नहिं आंता । खीनअधर[36] बिद्रुम[37] रँगराता[38] ॥

इन्द्रलोककीपरी १ सफ़ाई २ गुस्सा ३ खाविन्द ४ मुँह ५ कोकाबेलो ६-१२दूध ७ थोरीखुराक ८ ज्यादा ९ दोहिस्सा १० पाकसाफ़ ११ कमल १३ चाँद १४ भँवर १५ बड़े १६—२४—२५ छोटे १७ मोटा १८ पतला १९ चाँद २० हंस २१ पहिले २२ वाल २३ हाथ २६ छोटे २७ दांत २८ छाती २९ माथा ३० नाक ३१ पतलो ३२ तलवार ३३ पतली कमर ३४ चीता ३५ होठ ३६ मूंगा ३७ लाल ३८ ॥

शुभ्र कपोल[1] देख मुख शोभा । शुभ्रनितम्ब[2] देख मन लोभा ॥
दो० शुभ्र कलाई अति बनी शुभ्र जंघ गज चाल ।
सोरहशृंगार बरनके करहिं देवता लाल[3] ॥
वहि पद्मिनि चितौर जो आनी । कुन्दन काया[4] द्वादश[5] बानी ॥
कुन्दन कनक[6] ताहि नहिंबासा । वहुसुगन्धजसकमलविकासा[7] ॥
कुन्दन कनक[8] कठोर सोअङ्गा । वह कोमलरँग पुहुप[9] सुरङ्गा ॥
वह छुइ पवन वृक्षजेहिलागा । सोइमलयगिरि[10] भयोसुभागा ॥
काह न मूठ भरी वह देही । अस मूरति केहि दई उरेही[11] ॥
सबै पटंतर[12] चित्र के हारीं । वहक रूप कोइ लखी न पारीं ॥
कया कपूर हाड़ सब मोती । तेहितेअधिक[13] दीन्हविधिज्योती ॥
दो० सूर्य्य किरण जस निरमल[14] तेहिते अधिक शरीर ।
सोंहदृष्टि[15] नहिं जाय कर नयनहिं आवैनीर[16] ॥
शशि[17] मुखजबहिं कहैकछु बाता । उठततन्त सूरजजस राता[18] ॥
दशन[19] दशन सो किरनीफूटहिं । सबजगजानिफुलभरीछूटहिं ॥
जानहुंशशि[20] महँबीज[21] देखावा । चौंधपरचो कुछकहै न आवा ॥
कौंधत रहि जस भादौं रैनी । श्याम रयनि[22] जनुचलेउडेनी[23] ॥
जनु बसन्तऋतु कोकिल बोली । सरस सुनाय सारसर[24] डोली ॥
जनु अम्रितके बचन विकासा[25] । कमल जोबास बासधनवासा ॥
वहि सर शीश जोनाग वेहरा । जाय शंख बेनी कै परा ॥
दो० सबै मनोहर[26] जायमर जो देखै तस चार[27] ।
पहिले सो दुख बरनके बरनोवहकशृंगार ॥
किनहीं रहा काल कर काढ़ा । जाय धौरहर[28] तर भा ठाढ़ा ॥
कित वह आय झरोखेझांकी । नयन कुरंगिनि[29] चितवनबांकी ॥

मोटागाल १ कूल्हा २ लालच ३ बदन ४ खालिस ५ सोना ६—८ खिलना ७—२५ फूल ९ चन्दन १० बनाना ११ टूटी १२ बहुत १३ पाकसाफ़ १४ निगाह सामने १५ पानी १६ चाँद १७—२० लाल १८ दाँत १९ बिजली २१ रात २२ जुगनू २३ तीर २४ उम्मेद २६ काम २७ महल २८ हिरन २९ ॥

बिहँसी शशि[1] तरईं[2] जनुपरीं। कैसो रयनि छटे फुलभरीं॥
चमक बीज[3] जसभादौं रैनी। जगत दृष्टि[4] भररही उड़ेनी[5]॥
कास कटाक्ष[6] दृष्टि[7] बिष बसा। नागिनअलक[8] पलकमहँडसा॥
भौंह धनुष पल[9] काजल बूड़ी। वहभइ धानुक[10] हौंभइ ऊड़ी[11]॥
मारचली सारतहूँ हँसा। पाछे नाग रहा हों डसा॥

दो० काल घाल पीछे रखा गरुड़ न मन्तर कोय।
सोर पीठ वह बैठा कासों पुकारों रोय॥

बेनी[12] छोर झार जो केशा। रयनि[13] होयजग दीपकलेशा[14]॥
शिरहत बिषहर[15] परीभुइंबारा। सगरे देश भयो अँधियारा॥
सकपकाहिं बिष भरे पसारे। लहरहिंभरलहकाहिंअतिकारे॥
जानहुँलोटहिं चढ़े भुअङ्ग[16]। बेधी बास मलयगिरि[17] अङ्ग॥
लरहिं मुरहिंजनु मानहिंकेली। नाग चढ़े मालतिके बेली॥
लहरैं देइ जानहु कालिन्दी[18]। फिरफिर भँवरभयेचितबन्दी[19]॥
चँवर धरत आछी चहुँपासा। भँवर नउड़हिं जोलुब्धे[20] बासा॥

दो० होयअँधेरघन[21] बिजु[22] चमकजबहिंचीरगहिझांप।
केश[23] नाग कितदेख मैं सँवरि सँवरि जियकांप॥

मांग कनक[24] जोसेंदुर रेखा। जन बसन्त राता[25] जग देखा॥
गइ पत्रावल[26] पाटी पारी। औरचि चित्र बिचित्र[27] सँवारी॥
भई उरेह पुहुप[28] सबनामा। जनुबक[29] बिखररहेघनश्यामा[30]॥
यमुना मांझ सरस्वतीमांगा। दुहुँदिश दिये तरंगन[31] गांगा॥
सेंदुर रेख सो ऊपरराती[32]। बीरबहूटिन की जस पांती॥
बलि[33] देवताभयेदेखसेंदूरू। पूजीमांग भोर उठ सूरू[34]॥
भोरसांझरबि[35] होयजोराता[36]। वही देख राता भा गाता[37]॥

चाँद १ छोटे नखत २ बिजुली ३—२२ निगाह ४ जुगनू ५ तिरछी चितवन ६ निगाह ७ बाल ८—२३ पलक ९ तीर अन्दाज़ १० निशाना ११ चोटी १२ रात १३ चिराग़ रोशन १४ सांप १५—१६ चन्दन १७ यमुना १८ दिल फँसाना १९ लपटना २० बादल २१ सोना २४ लाल २५ नाम दाया २६ बहुत अच्छी २७ फूल २८ बगुला २९ बादल सियाह ३० लहर ३१ लाल ३२—३६—३७ कुरबान ३३ सूर्य ३४—३५ बदन ३८॥

दो० बेनीकारी पुहुप[1] ले निकसी यमुना आय ।
पूजइन्द्र आनन्दसों सेंदुर शीश[2] चढ़ाय ॥

पुइजललाट अधिक मनकरा । शंकर देख माथ भुइँ धरा ॥
यहिनितदुइजजगतमहँदीशा । जगत जोहारे देइ अशीशा ॥
शशि जोहायनहिंसरवर छाजे । होयसोअमावसछिपमनलाजे ॥
तिलक सँवारि जो चन्दन रचे । दुइजसांझ जानहुँकच बचे ॥
शशि परकरवट सारा राहू । नखतहिं भरा दीन्ह परदाहू ॥
पारसज्योति ललाटहिं ओती । दृष्टि जोकरै होय तेहिंज्योती ॥
श्री जो रतन मांग बैठारा । जानहु गगन टूटनिशितारा ॥

दो० शशि ओसूर जोनिरमल तेहिकीललाटकीरूप ।
निशि दिनचलहिंनसरवर पावैंतपतपहोहिंअलूप ॥

भौंहें धनुष श्याम जनु चढ़ा । पनच करे मानुष कहँ गढ़ा ॥
चन्द कि मूठ धनुष वहताना । जाकरबीज बरनि बिषबाना ॥
जासों हेर जाय सो मारी । गिरिवर टरहिं सोभौंहहिंटारी ॥
सेतबन्ध जे धनुष विडारा । वहू धनुष भौंहहिं सो हारा ॥
हारा धनुष जो बेधा राहू । और धनुष कोइ गिने न काहू ॥
कित सोधनुष भौंह मैं देखा । लागबान तित आव न लेखा ॥
तितबानहिंभांभरभा हिया । जो अस मार सो कैसे जिया ॥

दो० सोत सोत तन बेधा रोम रोम सब देह ।
नसनससमहँभइसालहिं हाड़हाड़भयेबेह ॥

नयन चित्र वे रूप चितेरे । कमल पत्र पर मधुकर फेरे ॥
समुद्रतरंग उलटहिंजनराती । डोलहिं औ घूमहिं मदमाती ॥
शरद चन्द महँखंजन जोरी । फिरफिर लरहिं अहोरबहोरी ॥

फूल १ सिर २ माथा ३ ज्यादा ४ चाँद ५—८ १४ बराबर ६—१८ नामनखत ८ रोशनी ९ देखनी १० निगाह ११ टीका १२ आसमान १३ सूर्य १५ साफ़ १६ रात १७ गायब १८ निशाना २० बिजुली २१ धनुकबाण २२ अर्जुनकीकमान २३ दिल२४ [illegible] २५—२६—२७ भँवरा २८ लहर २९ लाल ३० पूर्णमासीकाचाँद ३१ ममोला ३२ ॥

चपल[1] बिलोल डोलवहलागी। थिर[2] न रहाहिं चंचल बैरागी॥
निरख[3] अघाहिं न हत्या हते। फिरफिर श्रवणहिं लागेमते[4]॥
अंगश्वेत[5] मुखश्यामसोओहीं। तिरछचलहिं खन सूधनहोहीं॥
सुर[6] नर गन्धर्बलाल[7] कराहीं। उलटे चलहिंस्वर्ग[8] कहँजाहीं॥
दो० अस वै नयन चक्र दुइ भँवर समुद्रउलथाहिं।
जनु जिव घालहिंडोले लै आवहिं लै जाहिं॥
नासिक[9] खड्ग[10] हरीधनकीरू[11]। योगश्रृंगार जिता औ बीरू॥
शशिमुखसौंह[12] खड्गगहिरामा। रावण सो चाहै संग्रामा॥
दुहुँसमुद्रमहँ जनुरचि बीरू[13]। सेतबन्ध[14] बांधा नलनीलू[15]॥
तिलकफूल असनासिक तासू। औसुगन्धदीन्हीं बिधि[16] बासू॥
करनफूल फेरैं उजियारा। जनहुशरदशशि सोहिलतारा॥
सोहिल चाह[17] फूल वह ऊँचा। धावहिं नखत न जाइ पहुँचा॥
नजनो कैसो फूल वह गढ़ा। बिकस[18] फूल सबचाहहिं चढ़ा॥
दो० असवहफूलबासका आगरभा नासका[19] समुन्द।
जेति फूलवह फूलहिं ते सब भये सुगन्द॥
अधर[20] सुरङ्गपानअसखीनी[21]। राती[22] सुरँगअमी[23] रसभीनी॥
आछहिबिहँसत[24] बोलसोराती[25]। जनुगुलाल देखे बिहँसाती॥
माणिक[26] अधर[27] दशन[28] जनुहीरा। बैन[29] रिशालखांड़मुखबीरा॥
काढ़ी अधर[30] डाभसों चीरी। रुधिर[31] चुवै जो खावै बीरी॥
ढारेदशन[32] रसहिं रस कीली। रक्त भरी बहु सुरँग रँगीली॥
जनु प्रभात राति रबि[33] रेखा। बिकसैबदन[34] कमलजनुदेखा॥
अलकभुवङ्गिनअधरहिंराखा[35]। गहैजोनागिन सोरसचाखा॥
अलकभुवङ्गिनअधरहिंआखा। गहैजोनागिन सोरसचाखा॥
दो० अधर[36] अधररसप्रेमकाअलक[37] भुवंगिनबीच।

चंचल १ क़ायम २ देखना ३ कानमें सलाह ४ सफ़ेद ५ देवता ६ आरज़ू ७ आ-
समान ८ नाक ९ तलवार १० तोता ११ सामने १२ पेड़ १३ पुल १४ नामवन्दर १५
ईश्वर १६ ज़्यादा १७ खिलना १८ नाक १९ होंठ २०—२७—३०—३६ पतला २१ लाल
२२—२५ अमृत २३ हँसना २४ मूँगा २६ दांत २८—३२ मीठीबोली २९ खून ३१ भोरके
समय लालसूर्य ३३ मुहँ ३४ जुलफ़ोंकीनागिनोहोठोंतकपड़ीरहती ३५ बाल ३७॥

तब अमृत रसपावै जब नागिन कहँ खीच ॥

दशन[1] श्यामपानहिं रँगपाके । विकसत[2] कमलफूलअतिताके ॥
हँसि चमक मुख भीतर होई । जनु दाड़िम[3] औश्यामनकोई ॥
चमकहिंदशन विहँसजोनारी । बीज[4] चमकजसनिशि[5] अँधियारी ॥
श्वेतश्याम[6] अस चमकतदीठी । श्याम हीरदहुँ पांयत बैठी ॥
कैसो गई अस दशनअमोला । मारै बीज विहँस जो बोला ॥
रतन भीजरँग मसि[7] भइश्यामा । ओही छात पदारथ[8] नामा ॥
कितवै दशन देख रँग भीने । लैगइज्योतिनयनभयेखीने[10] ॥

दो० दशनज्योतिह्वैनयनमग[11] हृदय[12] मांझ सोपैठ ।
प्रगट[13] जगत अँधियारजनु गुप्त[14] वहीमेंदीठ ॥

रसना[15] सुनहिजोकहिरसबाता । कोकिलबैन[16] सुनतमनराता[17] ॥
अमृत कोप जीभ जनु लाई । पान फूल अस बातसुहाई ॥
चातक[18] बैन सुनतहो शांती । सुने सो परै प्रेम मधुमाती ॥
विरवासुख पाव जस नीरू[19] । सुनत बैन तस पलहिशरीरू ॥
बोल सेवात बुन्द जनु परहीं । श्रवन[20] सीप सुखमोतीभरहीं ॥
धनवै बैन[21] जो प्राण अधारू । भूँखे श्रवणहिं[22] दीन्हअहारू ॥
उन्हबैनहिं[23] कीकाहिनआसा । मोहहिंमिरगविहँस तेहिश्वासा ॥

दो० कण्ठ[24] शारदा सोही जीभ सरस्वती काहि ।
इन्द्रचांद रवि[25] देवता सबै जगत सुखचाहि ॥

श्रवन[26] सुनहि जो कुन्दन सीपी । पहिरे कुण्डल सिंहलदीपी ॥
चांद सूर्य्य दुहुँदिश चमकाहीं । नखतहिं भरीनिरख[27] नहिंजाहीं ॥
क्षणक्षण[28] करहिंबीज[29] असकांपी । अमरमेघमहँरहहिंन झांपी ॥
सुक शनीचर दुहुँ दिश मतें । होहिं निरार[30] न श्रवणहि हुतें ॥
कांपत रहहिं बोल जो बैना । श्रवणहिजनु लागहिंफिरनयना ॥

दांत १—४ खिलना २ अनार ३ बिजुली ४ रात ६ सफ़ेद—सियाह ७ मिस्सी ८ लालनाम हीरेको मज़ाधार ६ लाल १० राह ११ दिल १२ ज़ाहिर १३ छिपा १४ ज़बान १५ आवाज़ १६—२१—२३ लाल १७ पपीहा १८ पानी १६ कान २०—२२—२६ गला २४ सूर्य २५ देखना २७ हम्मारत २८ बिजुली २६ अलग ३० ॥

जो जो बात सखिन सो सुना। दुहुँ दिश करहिंशीश वै धुना॥
खूट[1] दोउ ध्रुव तरई[2] खूटी। जानहु परहिं कचपची[3] टूटी॥
दो० बेद पुराण ग्रंथजितसबै सुनै सिख लीन्ह।
नाद[4] बिनोदराग रस बंदक श्रवण वहीबिधिदीन्ह॥
कमल कपोल[5] वहीं अस छाजे। औरन काहि दई अस साजे॥
पुहुप[6] पंग रस अमी सँवारी। सुरँग गेंद नारँग रतनारी[7]॥
पुनि कपोल[8] बायें तिल परा। सोतिलबिरह चिनग के करा[9]॥
जो तिल देख जायजर सोई। बायें दृष्टि[10] काह जन होई॥
जानहुँ भँवर पद्म[11] पर टूटा। जीव दीन्ह औ वहीं न छूटा॥
देखत तिल नयनहिं गा काढ़े। और न सूझै सो तिल छांढ़े॥
तेहिपर अलक[12] मंजरी डोला। छुवैसोनागिन सुरँगकपोला[13]॥
दो० रक्षाकरै[14] मयूर[15] वह नागिन हिय[16] पर लोट।
केहिरे जग[17] कोउ छुइ सकै दुइपरबत[18] की ओट॥
ग्रीव[19] मयूर केर जस ठाढ़ी। कोंड़े[20] फेर कढेरे[21] काढ़ी॥
धनि वह ग्रीव का बरनो करा। बांक तुरंग[22] जानगहि धरा॥
घरन परेवा[23] ग्रीव उठावा। चहै बोल तमचोर[24] सुनावा॥
ग्रीव सुराही के अस भये। अमी पियाला कारन नये॥
पुनितेहि ठांव[25] परी त्रयरेखा[26]। तेहिसोठांउ[27] होय जो देखा॥
कनक[28] तार सोने की करा। साज कमल तेहि ऊपर धरा॥
सूर्य्यकिरनहतग्रीव[29] निरमली[30]। देइ पैग[31] जातहिय[32] चली॥
दो० नागिन चढ़ी कमलपर चढ़के बैठ कमंठ।
कर[33] पसार जोकाल कहँ सोलागै वह कंठ॥
कनकदंड[34] दुइ बनी कलाई। डांड़ी फेर कमल जनु लाई॥

बाली १ नखत २ छोटेनखत जो चाँदके आसपासहोतेहैं ३ गाने-बजाने का शोक़ ईश्वरनेदिया ४ गाल ५—८ फूल ६ लाल ७ मानिन्द ८ निगाह १० कमल ११ बाल १२ लालगाल १३ निगहबानो १४ मोर १५ छाती १६ दुनियां १७ तयाछाती १८ गर्दन १९—२९खराद२० खरीदी २१ घोड़ा २२ कबूतर २३ चिड़िया २४ जगह२५-२७तीन लकीर २६सोना २८ साफ़ ३०क़दम ३१ दिल ३२जानसेगुज़रजाय ३३ सोनेकीदण्डो ३४॥

चँदन गाभकी भुजा सँवारी । जनु सो बेल कमल पौनारी[१] ॥
तेहि डाँड़ी सँग कमल हतोरी । एक कमल की दोनों जोरी ॥
सहजहिं जानहुँ मेंहिदी रची । मुक्ता[२] हललीन्हे जनु घुँघुची ॥
करपल्लव जो हथोरिन साथा । वे सब रक्त भरीं तेहिं हाथा ॥
देखन हिया[४] काढ़ु जिव लेई । हिया काढ़ के जान न देई ॥
कनक[७] अँगूठी औ नग जड़ी । वह हत्यारिन नखतहिं[५] भरी ॥

दो० जैसी भुजा कलाई तेहि विधि जाय न भाख ।
कंकन हाथ होय जेहि तेहि दर्प्पन का साख ॥

हिया थार कुच[८] कनककचूरा[९] । जानहुँ दोउ श्रीफल[१०] जूरा ॥
एक पाट[११] वे दोनों राजा । श्यामछत्र दूनहुँ शिर छाजा ॥
जानहु दुइलट्टू इकसाथा । जग[१२] भा लट्टू चढ़ै ना हाथा ॥
पातर पेट आहि जनु पूरी । पान अधार फूल अस गोरी ॥
रोमावलि तेहि ऊपर भूसा । जानहुँ[१३] दोउ शाम औ रूमा ॥
अलक[१४] भुअंगिन[१५] तेहिपरलोटा। हिय[१६] करएकखेल दुइगोटा ॥
बान[१७] पुकार उठे कुच[१८] दोऊ । नाग शरन वह पावन कोऊ ॥

दो० केसहिं नचाहिं न नाये यौवन गर्व[१९] उठान ।
जो पहिले कर[२०] लावे सो पावे रत[२१] मान ॥

भृंग[२२] लंक[२३] जनुमांझनलागा। दुइखंडनलिन[२४] मांझजनुतागा॥
जब फिर चले देख वह पाछे । अप्सर[२५] इन्द्रकेर जनु काछे[२६] ॥
जोहि चले मन मा पछताऊ । अबहूँ दृष्टि[२७] लाग वह आऊ ॥
वही गवन छिप अप्सर गई । भई अलोप[२८] ना परगट[२९] भई ॥
हंस लजाय समुद्र कहँ खेली । हस्ती[३०] लाज धूर शिर मेली ॥
जगत में स्त्री देखी महूँ । उदय अस्त नारि ना कहूँ ॥
महि मंडल तो ऐसो न कोई । ब्रह्मण्डल[३१] जोहोय तो होई ॥

नाल १ सोना २ अँगुली ३ दिन ४ माना ५ तथानाग ६ सोना ७ छाती ८—१८ सोनेकीकटोरी ९ नारियल १० तख्त ११ दुनियां १२ नामनुल्क १३ बाल १४ नागिन १५ छाती १६ मोर १७ मकर १८ हाथ २० मुख २१ भँभोरी २२ कमर २३ कोकाबेली २४ परी २५ मालीहने २६ निगाह २७ गायब २८ जाहिर २९ हाथी ३० स्वर्गलोक ३१ ॥

दो० बरनों नारि जहां लग दृष्टि[1] झरोखें आय।
औरजो अहैअदृष्टि[2] धन सो मोहिंबरनिनजाय॥

काधन कहों जैसो सुकुमारा। फूलके छुवे होय बिकरारा॥
पखुरी काढ़ैं फूलत सेती। सोई डासी[3] सोर[4] सपेती॥
फूल समूचा रहै जो पावा। ब्याकुलहोय नींदनहिंआवा॥
सहै न क्षीर[5] खांड़ औ घीव। पान अधार रहै तन जीव॥
नस पाननकी काढ़ै हेरी। अधरन[6] गड़ैफांस वहकेरी॥
मकरिक तार ताहिकर चीरू[7]। सोपहिरे जरजाय शरीरू[8]॥
पालँग पांव कि आछे पाटा[9]। नेत[10] बिछाय चलै जोबाटा॥

दो० कहां नयन जो राखों पलक न लाऊँ ओट।
प्रेमक लुब्धा[11] पावे काहि सो बड़का छोट॥

जो राघव धन बरन सुनाई। सुना शाह मुरछा गत आई॥
जनु मूरति वह परगट[12] भई। दरशदेखाय ताहि छिपगई॥
जो जो मँदिर पद्मिनी लेखे। सुनासोकमलकुमुद[13] जोदेखे॥
होय मालती धन[14] चित पैठी। औरपुहुप[15] कोइआवनदीठी॥
मनहोय भँवर भयो बैरागा। कमलछांड़चितऔर नलागा॥
चांदकी रङ्ग सूर्य्य जसराता[16]। और नखत सो पूछन बाता॥
तबअलि[17] अलाउदींजगसूरू[18]। लेउँ नारि चित्तौरके चूरू॥

दो० जोवहमालतिमानसर अलिन[19] मलीन्हीं[20] जात।
चित्तौर महँ जो पद्मिनी फेरवही कहु बात॥

ये जगसूर[21] कहूँ तुम पाहां। और पांचनग चितौर माह्नां॥
एक हंस है पंख अमोला। मोती चुने पदारथ[22] बोला॥
दूसर नग जो अमृत बसा। सब बिष हरै जहांलग डसा॥
तीसर पाहन[23] परस बखाना। लोह छुवै होय कञ्चन[24] बाना॥

नजर १ नजरमेंनहीं २ बिछाना ३ बिछौना ४ दूध ५ होंठ ६ कपड़ा ७ बदन८ तखत ९ ज़ेरअन्दाज़ १० आशिक़ ११ ज़ाहिर १२ कोकाबेली १३ पद्मावत १४ फूल१५ लाल १६ भँवर १७-१९ सूर्य १८-२१ ताम्बुल २० लाल २२ पारसपत्थर२३ सोना२४॥

चौंप खड़े सांदूर[१] अहेरी । जेहि बन हस्त[२] धरे सब घेरी ॥
पानी है सो तहां लागना । राज पंख[३] पंखी गरजना ॥
हर्मिन सेझ[४] कोई भाग न भागा । जैस राचान[५] तैस उड़ भागा ॥

दो० नग अमोल अस पांचों मान समुद्र कह दीन्ह ।
इसकन्दर नहिं पाई जोरे समुद्र धस लीन्ह ॥

मान दीन्ह राघव पहिरावा[६] । दुरा गजमस्त[७] घोर सोपावा ॥
अरु दूसरि कङ्कनकी जोरी । रतन जो लागवह तीस करोरी ॥
लाख दिनार[८] देवाइ जेवा[९] । दारिद हरा समुद्रकी सेवा[१०] ॥
हों जेहि दिवस[११] पद्मिनी पाऊं । तोहि राघव चितौर बैठाऊं[१२] ॥
पहिले कर पांचों नग मूठी । सो नग लेउँ जो कनक[१३] अंगूठी ॥
सरजा वीर पुरुष बरयारू[१४] । ताजन[१५] नाग सिंह असवारू ॥
दीन्ह पत्रि लिखि बेग[१६] चलावा । चितौर गढ़ राजा पहँ आवा ॥

दो० राजैं पत्रि बँचावा किरपा[१७] लिखी अनेग ।
सिंहलकी जो पद्मिनी पठैदेव तेहि बेग ॥

खण्ड चौंतीसवां लड़ाई राजा और बादशाह ॥

सुन अस लिखा उठा जर राजा । जानों देवतड़प घन[१८] गाजा[१९] ॥
का मोहिं सिंह देखावसि आई । कहों तो शारदूल[२०] धर खाई ॥
भलाहिं जो शाह भूमिपति[२१] भारी । मांग न कोउ पुरुषकी नारी ॥
जो सो चक्कवे[२२] ताकहँ राजू । मन्दिर[२३] एक अपन कहँ साजू ॥
अपसर[२४] जहां इन्द्रपै आवें । और जो सुनें न देखे पावें ॥
कंसका राज जिता जो गोपी । कान्ह[२५] न दीन्ह काहु कहँ गोपी ॥
को म्वाहिं ते अस सूर[२६] अपारा । चढ़े स्वर्ग[२७] धसपरे पतारा ॥

दो० कालोहि जीव मराऊं सकल आनका दोस[२८] ।

शिकारी १-२-३ हाथी २ मोगरा ३ नाम जानवर ४ शिकार ५ खिलअत ६ हाथी मस्त ७ कङ्कन कोई दीनार ८ दिवस १० दिन ११ राजपर बैठाऊं १२ सोना १३ जबरदस्त १४ कोड़ा १५ जल्द १६ मेहरबानी १७ बादल १८ बिजुली १९ ज़मीनकामालिक २१ तमाम दुनियाँका राजा २२ किला २३ परी २४ श्रीकृष्णचन्द्र २५ शूरमा २६ आसमान २७ पाप २८ ॥

जो तसबुझै[1] नसमुद्र जल सो बुझाय कित ओस ॥
राजा अस न होहु रिसराता[2]। सुनहु न जूड़ नजर कहुबाता ॥
मैंहों यहां मरे कहँ आवा। बादशाह अस जानपठावा ॥
जो तोहिभार नओरहि लीन्हा। पुनिसोकाल[3] उतर[4] वहिदीन्हा ॥
बादशाह कहँ ऐस न बोलू। चढ़े तौ परै जगत महँ डोलू ॥
सूरहि[5] चढ़त लागनाहिं बारा। दहक आग तेहि स्वर्गपतारा ॥
परबत उड़हिं सूरके[6] फूकें। यहि गढ़ छार[7] होयइक झोकें ॥
धसै सुमेर[8] समुद्रगा पाटा। भूमि[9] डोल शेष फण फाटा ॥
दो० तासों कौन लड़ाई बैठ न चितौर खास।
ऊपरलेहु चँदेरी का पद्मिन इक दास ॥
जोपै घरनि[10] जाय घरकेरी। का चितौर का राज चँदेरी ॥
जेईलेई घर कारन[11] कोई। सो घरदेइ जो योगी होई ॥
होंरनथँभोर[12] नाथ हमीरू[13]। कल्प[14] माथ जेदीन्ह शरीरू[15] ॥
होंसो रतनसेन सकबन्धी[16]। राहु[17] बेध जीते सर बन्धी ॥
हनुमतसरस[18] भार[19] जेकांधा। राघव[20] सम समुद्र जे बांधा ॥
बिक्रम[21] सरस कीन्ह जें शाका। सिंहलदीप लीन्ह जो ताका ॥
जोअसलिखा भयोनाहिंओछा। जियत सिंहकी गहिको मोछा ॥
दो० द्रब्यलेइ तो मानों सेवकरों गहि पांव।
चाहै नारिपद्मिनी तौ सिंहलदीपहि जांव ॥
बोलन राजाआप जनाई[22]। लीन्हउदयगिरि[23] औरछिताई[24] ॥
सप्तदीप[25] राजा शिर नावहिं। औसैन[26] चलीपद्मिनीआवहिं ॥
जाकर सेवकरै संसारा। सिंहलदीप लेत कित वारा ॥
जनजानेसियहगाढ़[27] तोपाहीं। ताकर सबै तोर कुछ नाहीं ॥

प्यासबुझे १ लाल २ दुशमन ३ ज़वाब ४ सूर्य ५ नामबाजा ६ धूर ७ नामपहाड़ ८ ज़मीन ९ औरत १० जोकोई किसीको औरत लेले ११ नामक़िला १२ नामराजा १३ शिर कटाना १४ बदन १५ मशहूर १६ निशानाजीत द्रुपदी व्याही १७ बराबर १८ बोझ १९ श्रीरामचन्द्रजी २० राजा विक्रमादित्य २१ अपनीतारीफ़ २२ नाममुल्क २३ — २४ सातोंमुल्क २५ फ़ौज २६ क़िलाकोघेरे २७ ॥

जेहि दिन आय गढ़ीको छेकी । सरबस[1] लेइ हाथको टेकी[2] ॥
शीश[3] न भार खेहके[4] लागें । सो शिर भार होय दुख आगें ॥
सेवाकर जो जियन तोहिं भाई । नाहित फेर मारव होय जाई ॥
दो० जाकरजीवदीन्हपैंअगमन[7] पावैंशीश जोहारि ।
तेहि करनी[8] सब जानै काह पुरुष का नारि ॥
तुरुक[9] जायकहि मरै नधाई । हो ये इस्कन्दर[10] की नाईं ॥
सुनअमृत कजली[11] बनधावा । हाथ न चढ़ा रहा पछतावा ॥
औतेहि दीपपतँग[12] होयपरा । अगिन भाड़ पांव दै जरा ॥
धर्त्ती लोह स्वर्ग[13] भा तांबा । जीवदीन्ह पहुँचत कर[14] लांबा ॥
यह चितौरगढ़ सोइ पहारू । सूर[15] उठै दहक होय अंगारू ॥
जेंबर इसकन्दर[16] सरकीन्हीं । समुद्र लियो धस जसबे लीन्हीं ॥
जो चढ़[17] आनीजायजिताई । तब काभै सो जीत जिलाई ॥
दो० महूंसमुझ यहि आगमन[18] सजराखागढ़साज ।
कालह होय जेहिआवन सोचल आवै आज ॥
शुरजा[19] पलट शाहपहँआवा । देवन मानै बहुत मनावा ॥
आग जोजरै आगपै सूझा । जरत रहै न बुझाये बूझा ॥
ऐसे साथ न नावै देवा । चढ़ै सुलेमा[20] मानै सेवा ॥
सुनके अस राता[21] सुलतानू । जैसे तपै जेठ कर भानू[22] ॥
सहस[23] किरनरोष[24] तस भरा । जेहि दिश देखै तेहिदिशजरा ॥
हिन्दू देव काह वर[25] खाँचा । सरकन[26] आपआगसोंबांचा ॥
यहिजग[27] आगजोभरमहिंलीन्हा । सोसँगआगदुहूजगकीन्हा ॥
दो० रत्नथंभोर[28] जस जर बुझा चितौर परै सो आग ।
फेर बुझाये ना बुझै जरै दिवस[29] के लाग ॥

मन १ रोकना २ शिर ३—७ भूर ४ तुम्हारिली ५ पहिले ६—१८ कियाहुआ ८ बा-दशाह ९ नामबादशाह १० जहां अमृत है ११ पानी १२ आसमान १३ हाथ १४ सूर्य १५ जैसे सिकन्दरने दुःखपाया १६ जब बादशाह आवैंगे १७ नामपहलवान १८ नाम बादशाह १९ ... २० सूर्य २१ हजार २२ गुस्सा २३ घमण्ड २४ भागना २५ दुनियाँ में आगमें जलाजावेगा २६ नाम क़िला २७ दिन २८ ॥

लिखी पत्रि चारहुँ दिश धाये। जहँ तहँ उमरा बेग[1] बोलाये॥
इन्द्र[2] घाव भाइन्द्र सकाना। डोला मेरु[3] शेष[4] अकुलाना॥
धर्ती डोल कूर्म[5] खर भरा। महनामथ[6] समुद्र महँ परा॥
शाह बजाय चढ़ा जग जाना। तीसकोस भा पहिल पयाना[7]॥
चितौर सौहँ[8] बारगह तानी। जहँ लग सुना कूचसुलतानी॥
उठसरवान[9] गगन[10] लहिछाई। जानहु राते[11] मेघ देखाई॥
जो जहँ तहँ सोता असजागा। आयजोहारकटक[12] सबलागा॥

दो० हस्ति[13] घोर औदर[14] पुरुष जहँ तक बेसरा[15] ऊँट।
जहँ तहँ लीन्ह पलाने कटक[16] सुरह[17] असछूट॥

चलेसहस[18] बेसक सुल तानी। तीष[19] तुरंग बांक कन कानी॥
पखरी[20] चलीजो पांतहिपांती। बरण बरण औभांतहिं भाँती॥
काले[21] कुमैते[22] नील[23] सपेती[24]। खिंग[25] कुरंग[26] बोज[27] दोर[28] कतीती॥
अबलक[29] अबरस[30] लखी[31] शिराजी[32]। चौधर[33] चाल समुँदसबताजी॥
किरमज़[34] नुकरा[35] जरदा[36] भले। रूपकगन[37] बोलसर[38] चले॥
पचकल्यान[39] संजाब[40] बखानी। महि[41] सायरसबचुन२ आनी॥
मुशकी[42] औहिरमजी[43] इराकी[44]। तुरकी[45] कहीभुथार[46] बुलाकी[47]।

दो० शिरऔ पूँछ उठाये चहुँदिशि श्वास उनाहिं।
रोष[48] भरे जस बावरे पवनकीबास[49] उड़ाहिं॥

लोहे सार[50] हस्ति[51] पहिराये। मेघ श्याम[52] जनुगरजतआये॥
मेघहि चाह अधिक[53] बेकारे। भयो असूझ देख अँधियारे॥
जस भादौं निशि[54] आवै दीठी। स्वर्ग[55] जाय हरके तेहिपीठी॥
सोरहलख हस्ती[56] जबचाला। परबत सरस चले जगहाला॥

जल्द १ नामबाजा २ नामपहाड़ ३ नामराजासाँप ४ कछुवा ५उलटपलट ६ कूच ७ सामने ८ खीमा ९ आसमान १० लाल ११ फ़ौज १२—१४—१६ हाथी १३ खच्चर १५ टीड़ो १७ हज़ार कुरसी १८ तेज़ घोड़ा १९ निशान २० घोड़ोंकी ज़ात २१से ४० तक सब दुनियाँ ४१ घोड़ेकीज़ात ४२ से ४७ तक गुस्सा४८ हर ४९ भूल लोहेको ५० हाथी ५१—५६ कालेबादल ५२ बहुत ५३ रात ५४ आसमान ५५ ॥

चले गैंड मातेमद आवहिं। भागहिंहस्ति[१] गन्धजोपावहिं॥
ऊपरजाय गगन[२] शिर घिसा। औधर्ती तरिकहँ धस मसा॥
भा भूचाल चलत गजगामी। जहँ पग धरहिं उठै तहँपानी॥
दो० चलत हस्ति जगकाँपा चाँपा शेष पतार।
कूर्मजे[३] धर्ती लिये रहा बैठ भयो गजभार॥

चलेसो उमर अमीर बखाने। का बरणो जस उनके बाने॥
खुरासान[४] औचला हरेऊ[५]। गोर[६] बँगाल रहानाहिं केऊ॥
रहा न रूम[७] शाम[८] सुलतानू। काशमीर[९] ठट्ठा[१०] मुलतानू[११]॥
जहँलकबड़बड़तुरुवाकीजाती। मांडोवाली[१२] अरुगुजराती[१३]॥
पटना[१४] उड़ेसा[१५] के सबचले। लै गजहस्ति जहां लगभले॥
कनरू[१६] कामत[१७] औ पँड़वाई[१८]। देवगढ़[१९] लेतउदयगिरि[२०] आई॥
चलासो परबत औरकमाऊँ[२१]। घिसया[२२] नगरजहांलगनाऊँ॥
दो० उदय अस्त[२३] लहिदेश जो कोजानैतेहि नाउँ।
सातोंद्वीप[२४] नवोखँड जुरे आय इकठाउँ[२५]॥

धन सुलतान जेहिक संसारा। वहीकटक[२६] असजुरी अपारा॥
सबैतुर्क शिरताज बखाने[२७]। तबल बाज औ बांधे बाने॥
लाखन मीर बहादुर जंगी। चित्र[२८] कमानी तीर खदंगी[२९]॥
जीमा खोल राग सो मढ़े[३०]। लेजम घाल इराकहि[३१] चढ़े॥
चमके पखरी[३२] सारि सँवारी। दरपनचाहि[३३] अधिकउजियारी॥
बरन बरन औ पाँतहिं पाँती। चली सो सेना[३४] भाँतहिं भाँती॥
बीहर बीहर[३५] सब की बोली। बिधि[३६] यहिकहांकहांसो खोली॥
दो० योजन[३७] सत सतकर इक इकहोय पयान[३८]।
अगिलहिं जहां पयानहोय पछलाहिंतहां मिलान॥

हाथी १ आसमान २ कछुवा जिसके ऊपर ज़मीन है ३ नाममुल्क ४ से २२ तक पृथ्वी के सब मुल्क २३ सातों मुल्क २४ जगह २५ फ़ौज २६ बयान २७ तसवीर २८ नामतीर २९ मुकर्रासे मढ़ी ३० घोड़ा ३१ निशान ३२ ज़्यादा ३३ फ़ौज ३४ अलग ३५ ईश्वर ३६ कोस ३७ कूच ३८॥

डोले गढ़ गढ़पति[1] सब कांपे। जीवन पेट हाथ हिय[2] चांपे॥
कांपा रनथंभोर[3] डर डोला। तरवर[4] गयो भुराय तँबोला॥
चूनागढ़[5] औ चंपा सेरी[6]। कांपा माड़ो[7] खेत चंदेरी[8]॥
गढ़ ग्वालियरमहँ परी मथानी। औ कन्धार[10] मथाहोय पानी॥
कालिंजर[11] महँ परा भगाना। भाग उजेगढ़[12] रहा न थाना॥
कांपा बांदा[13] नरदुर्गनी[14]। डररुहतास[15] बिजयागिरि[16] मानी॥
कांप उदयगढ़[17] देवगढ़[18] डेरा। तबसो छिपाय आप कहँघेरा॥
दो० गढ़ गढ़पति जहँतक सबैकांपडोल जसपात।
काकहँ बोल सौंह[19] भा बादशाह करछात॥
चितौर गढ़ औ कंभलनेरी। साजे दोनों जैसि सुमेरी[20]॥
दूतन कहा आय जहँ राजा। चढ़ा तुर्क[21] आवै दर[22] साजा॥
सुनि राजा दौड़ाई पांती। हिन्दूनाउँ जहां लग ज़ाती॥
चितौर हिन्दुनकर अस्थाना[23]। शत्रु[24] तुर्कहठ कीन्ह पयाना[25]॥
आद समुद्र रहे ना बांधा। मैं हों मेड़ भार[26] शिर कांधा॥
पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई। नाहित सबकहँ मार चढ़ाई॥
जौलहि मेड़ रहै सुख साखा। टूटहिं बार[27] जायनहिं राखा॥
दो० सती जो जियमहँ सतधरै जरै न छोड़े साथ।
जहँ बीड़ा तहँ चूनहै पान सुपारी काथ॥
करत जो रहे शाहकी सेवा। तिनकहँ पुनिअस आवपरेवा[28]॥
सबहोय एकमते[29] जो सिधारे। बादशाह कहँ आन जोहारे॥
है चितोर हिन्दुन की माता। गाढ़[30] परें तजजाय[31] न नाता॥
रतनसेन है जूहर[32] साजा। हिन्दुन मांझ आहि बड़राजा॥
हिन्दुन केर पतंग कर लेखा। दौर पराहिं आग जो देखा॥

क़िलादार १ दिल २ नामक़िला ३ पेंड़ ४ नाममुल्क ५ से १८ तक सामने १९ नाम पहाड़ २० बादशाह २१ फ़ौज २२ मकान २३ दुशमन २४ कूच २५ बोझ २६ दरवाज़ा २७ दूत २८ एकसलाह २९ मुशकिल ३० छोड़ना ३१ मौतका सामान ३२॥

कृपाकरहु[१] तौ करहु समीरा[२] । नाहित हमहिं देहुहँस बीरा ॥
पुनिहम जाहिं मरहिं वहठाऊँ[३] । मेट न जाय लाज कर नाऊँ ॥
दो० दीन्ह शाहहँस बीरा और तीन दिन बीच[४] ।
तेहिं शीतल[५] को राखे जिन्हें अगिनमहँ मीच[६] ॥
रतनसेन चितौर महँ साजा । आय बजाय बैठ सब राजा ॥
तोमर[७] बैस[८] पनवार[९] सवाई[१०] । औगोहलौत[११] आय शिरनाई ॥
खत्री[१२] औ बचवान[१३] बघेली[१४] । अगरवार[१५] चौहान[१६] चँदेली[१७] ॥
गहरवार[१८] परहार[१९] सूकरे[२०] । कलहँस[२१] औ ठकुरायजुरे[२२] ॥
आगे ठाढ़ बजावहिं ढाढ़ी[२३] । पाछे ध्वजा मरन की गाढ़ी ॥
बाजहिं संग शंख औ तूरा[२४] । चन्दन खोरी[२५] भरे सेंदूरा ॥
सज संग्राम[२६] बांध सब साका । छांड़ा जियन मरन सब ताका ॥
दो० गगन[२७] धर्ति जोटेका[२८] तेहि कागरू पहार ।
जौलहि जिव काया[२९] महँ परै सोअँगवे[३०] भार ॥
गढ़ तस सजा जो चाहै कोई । बरष सात लग खांग[३१] नहोई ॥
बांकीचाह[३२] बांक गढ़ कीन्हा । औसबकोट[३३] चित्रसम[३४] लीन्हा ॥
खण्ड खण्ड चौखण्ड सँवारे । धरे विषम गोलन के मारे ॥
ठांवहिंठांव[३५] लीन्ह सब बांटी । रहान बीच जोसँचरै[३६] चांटी ॥
बैठे धानुक[३७] कँगुरन कंगुरा । भूमिन[३८] आंटीअंगुरिनअंगुरा ॥
औ बांधे गढ़ गढ़ मतवारे[३९] । फाटै भूमि[४०] होहिं जो ठाढ़े ॥
बिच बिच बुर्ज बने चहुँफेरी । बाजे तबल[४१] ढोलऔभेरी[४२] ॥
दो० भागढ़राज सुमेरु[४३] जस स्वर्ग[४४] छुवैपै चाह ।
समुद्र न लेखैलावै गंग सहस[४५] मुखनाह ॥
बादशाह हठ कीन्ह पयाना[४६] । इन्द्र भँडार डोल भय माना ॥

मेहरबानी १ माफ़ २ जगह ३ तीनदिनकी मोहलत ४ ठण्डा ५ मौत ६ राजपूतों की जात ७ से २२ तक नामबाजा २३—२४—४१—४२ कटोरी२५ लड़ाई२६ आसमान२७ [illegible] २८—३० बदन २९ कमी ३१ पेचदार खाई ३२ किला ३३ तसवीर ३४ जगह ३५ चींटीनामके ३६ चौकीदार ३७ जमीन ३८—४० हाथीमस्त ३९ नाम पहाड़ ४३ आसमान ४४ हजार ४५ कूच ४६ ॥

नब्बे लख सवार जो चढ़ा। जो देखा सो लोहे मढ़ा॥
बीस सहस[1] घुमरहहिंनिशाना। गुल[2] कंचन फेरैं असमाना॥
बैरख ढाल गगन[3] का छाई। चला कटक[4] धर्ती न समाई॥
सहस पांति गजमत्त[5] चलावा। घुसतअकाशधसतभुइँआवा॥
वृक्ष उचार पेड़ि[6] सो लीन्ही। मस्तक झार तार मुख दीन्ही॥
चढ़हिं पहारहिं भय गढ़ लागू। बनखँड खोह नदेखहिं आगू॥
दो० कोउ काहू न सँभारे होत आव दर चांप।
धर्ति आप कहँ कांपे स्वर्ग[7] आप कहँ कांप॥
चलीं कमानैं जेहि मुखगोला। आवहिंचलीधर्ति सब डोला॥
लागे चक्र[8] बज्रके गढ़े। चमकहिं रथ सोने के मढ़े॥
तेहिपर बिषम[10] कमानैं धरीं। सांचे अष्टधात की भरीं॥
सौसौ मनै पियहिं वै दारू[11]। लागहिं जहां सो टूट पहारू॥
माती रहहिं रथहिं पर परीं। शत्रुन[12] कहँ सौहैं[13] उठ खरीं॥
जो लागै संसार न डोलहिं। होय भुइँकम्प जीभजोखोलहिं॥
सहस[14] सहसहस्तिन[15] कीपांती। खांचहिंरथडोलहिंनाहिंमांती॥
दो० नदी नार सबपानी जहां धरैं वै पांव।
ऊँच खाल बनबीहर होत बराबर आव॥
कहों शृंगार जैसि वै नारी। दारू पियहिं जैसि मतवारी॥
उठै आग जो छांड़हिं श्वासा। धुवां सो लागै जाय अकासा॥
सेंदुर आग शीश[16] उपराहीं। पहियातरवन चमकत जाहीं॥
कुच[17] गोलादुइ हिरदें[18] लाई। अञ्चल ध्वजारहहिं छिटकाई॥
रसना[19] लूक रहहिं मुखखोलें। लङ्का जरै सो उनके बोलें॥
अलक[20] जँजीरबहुतगयें[21] बांधे। खींचहिं हस्ती[22] टूटहिंकांधे॥
बीर शृंगार दोउ इकठाऊँ[23]। शत्रुशाल[24] गढ़भंजन[25] नाऊँ॥

हज़ार १ चीटो २ आसमान ३ फौज ४ हाथीमस्त ५ जड़ ६ आसमान ७ तोपैं ८ पहिया ९ भारी १० तथा बारूद ११ दुशमन १२ सामने १३ हज़ार १४ हाथी १५—२२ शिर १६ छाती १७ सीना १८ ज़बान १९ बाल २० गरदन २१ जगह २३ दुशमनको मारने वाली २४ किलातोड़नेवाली २५॥

दो० तिलक पलीता माथे दशन[१] बज्रके बान[२] ।
जेहि हेरहिं[३] तेहि मारहिं चुरकुसकरैंनिदान[४] ॥

ओहि जेहिपंथ चलीवे आवहिं । आवहिंजरत आगतसलावहिं॥
जरहिंजोपरवतलागअकासा ।बनखण्डधकहिंपलास[५]कोपासा॥
गैंड़ा गयंद[६] जर भये कारे । आवैं मृगी[७] रोज[८] भनकारे ॥
कोयल नाग काग औ भँवरा । और जो जरे तिनहिं कोसँवरा॥
जरा समुद्र पानि भा खारा । यमुना श्याम भई तेहि भारा ॥
धूम श्यामअंतरिक्ष[१०] भयेमेघा[११] । गगन[१२] श्यामभाधुवांजोभेघा॥
सूर्य्य जरा चांद औ राहू । धर्ती जरी लंक भा दाहू[१३] ॥

दो० धर्ती स्वर्ग[१४] असूझ भा तबहुँन आग बुझाय ।
उठहिं बज्र जर डंगवे[१५] धूम[१६] रही जग छाय ॥

आवे डोलत स्वर्ग[१७] पतारू । कांपे धर्ति न अँगवेभारू[१८] ॥
टूटहिं परपत मेरु[१९] पहारा । होयहोय धूरउड़ाहिंहोय छारा[२०] ॥
सतखण्डधर्तीभइखँड खण्डा । ऊपर अष्ट भये ब्रह्मण्डा[२१] ॥
इन्द्र आयतेहि खँडहोयछावा । चढ़ सबकटक[२२] घोर दौड़ावा ॥
जेहिपंथ[२३]चलऐरावत[२४]हाथी।अबहिंसोडगरगगन[२५]महँआती।
औ जहँ जामरही वह धूरी । अबहुँ बसे सो हरिचन्द पूरी ॥
गगन छिपा खेह[२६] तस छाई । सूरज छिपा रयनि[२७] होयआई ॥

दो० गयोसिकंदर कजलिबन भयो सो तसअँधियार ।
हाथ पसार न सूझे बेरे लाग ससयार ॥

दिनहिं रात अस परीअचाका । भा रवि[२८] अस्त चन्द्ररथहांका॥
मँदिरन[२९] जगत[३०] दीप परगसी[३१] । पंथक[३२] चलत बसेरे बसी ॥
दिनके पंख जरत उड़ भागे । निशाके[३३] निसरचरे सबलागे ॥
कमल सुकेता कुमदन[३४] फूले । चकई बिछुरा चकमन भूले ॥

तोप १ तार २ दांत ३ बहुत ४ टाप ५ हाथी ६ नाम जानवर ७—८ धुवां ९—१६ ऊँच १० बादल ११ आसमान १२—१४—१७—२१ जलना १३ ढेर १५ बोझ न उठाना १८ नामपहाड़ १९ धूर २० फौज २२ राह २३ नामहाथी २४ खाक २६ गात २७—३३ गुर्द २८ मकान २९ दुनियां ३० रोशन ३१ मुसाफिर ३२ कोकाबेली ३४ ॥

चला कटक[1] अस चढ़ा अपूरी । अगलहिंपानी पिछलहिंधूरी ॥
महि[2] उजड़ी सायर[3] सब सूखा । बनखँड[4] रहे न एको रूखा ॥
गढ़[5] गिरि[6] फूट भये सब माटी । हस्ति[7] हेरान तहांको चांटी[8] ॥
दो० खेह[9] उड़ानी जाहिघर हेरत फिरत सो खेह ।
पियआसहिं अबदृष्टि[10] तोहिंअंजननयनउरेह ॥
यहिबिधिहोतपयान[11] सोआवा । आय शाह चितौर नियरावा ॥
राजा राउ देख सब चढ़ा । आव कटक[12] सब लोहे मढ़ा ॥
चहुँदिशदृष्टि[13] परी गजजूहा[14] । श्यामघटा[15] मेघ जसरूहा ॥
औरो उरु[16] कुछसूझनआना । स्वर्ग[17] लोकघुमरहाहिंनिशाना ॥
चढ़ धौराहर[18] देखहिं रानी[19] । धनतुईं अस जाकरसुलतानी ॥
कै धन रतनसेन तुई राजा । जाकहँतुर्ककटक[20] यहिसाजा ॥
बैरख ढालकेर परछाहीं । रयनि[21] होत आवै दिनमाहीं ॥
दो० अन्ध कूपभा आवै उड़त आव तसछार[22] ।
ताल तलावा पोखर धूर भरी ज्योनार ॥
राजै कहा कीन्ह जस करना । भयोअसूझ सूझ अबमरना ॥
जहँलग राज साज सब होऊ । ततखन[23] भयोसँजोउसँजोऊ[24] ॥
बाजे तबल अकोट जुझाऊ । चढ़ा कोप सब राजा राऊ ॥
करहिंतुखार[25] पवनसों रीसा[26] । कन्ध ऊँच असवार न दीसा ॥
का बरनों अस ऊँच तुखारा । दुइ बेर पहुँचे असवारा ॥
बांधे मोरछांह[27] शिर सारहिं । भीजहिं पूंछ चँवरजनुढारहिं ॥
राग सँधाहा[28] पहुँचो तोपा । लोहे सार पहिर सब कोपा ॥
दो० तैसे चँवर बनाये औ घाले गल झम्प[29] ।
बांधे सेत[30] गजगाह[31] तहँ जोदेखै सोकम्प ॥

फौज १-१२-२० ज़मीन २ तालाब ३ जंगल ४ क़िला ५ पहाड़ ६ हाथी ७ चींटी ८ धूर ९ निगाह १०-१३ कूच ११ हाथियोंका हलका १४ काली घटा छाई १५ वार-पार १६ आसमान १७ महल १८ पद्मावत १९ रात २१ खाक २२ तुरंत २३ सामान २४ घोड़ा २५ गुस्सा २६ मोरछल २७ तेज़-चालाक २८ गलखोद २९ सफ़ेद ३० नाम ज़ेवर ३१ ॥

राज तुरङ्गम[१] बरनौं काहा । आनी छोर इन्द्ररथ बाहा ॥
ऐसो तुरङ्गम परी न दीठी[२] । धनअसवार रहहिंतेहिंपीठी ॥
जान मालका समुद्र थहाये । श्वेत[३] पूँछ जनु चँवरबनाये ॥
बरन बरनपखुरी[४] आनि[५] लोनी[६] । जानहुँ चित्र[७] सँवारे सोनी ॥
माणिक[८] जड़े शीश[९] औ कांधे । चँवर लाग चौरासी बांधे ॥
लागे रतन[१०] पदारथ हीरा । बरहिंदिनाहिं दीपकचहुँफेरा ॥
चढ़हिं कुँवर मनकरहिं उछाहू[११] । आगे घालगिनै नाहिंकाहू ॥

दो० सेंदुर शीश चढ़ायें चन्दन खौरें देह ।
सोतनकाह लगाईं अन्तहोय जोखेह[१२] ॥

गज[१३] मैं मत पुखरी नृपबारा[१४] । देखै जानहुँ मेघ पहारा ॥
श्वेतगयन्द[१५] पीत औ राते[१६] । हरे श्याम घूमहिं मदमाते ॥
चमकहिं दरपन[१७] लोहें सारी । जनु परबतपर परीअँबारी ॥
श्री[१८] मेल पहिराये सूँड़ें । कनक[१९] नभायें पाँयतरौंदें ॥
सोने मेल सो दांत सँवारे । गिरिवर[२०] टरहिंसोउनकेटारे ॥
परबत उलट भूमि[२१] सों मारहिं । परै जोभीरतीरअसझारहिं ॥
ऐस गयन्द[२२] साजे सिंहली । कोटि कूर्म[२३] पीठकलमली ॥

दो० ऊपर कनक मँजूषा[२४] लाग चँवर औ ढार ।
भलपति बैठ भाल[२५] ले औ बैठे धन्कार[२६] ॥

घोड़दल[२७] गजदल दोनोंसाजे । औघनतबल जुझारू बाजे ॥
माथे मुकुट छत्र शिर साजा । चढ़ावजाय इन्द्रअस राजा ॥
आगे रथ सेना[२८] सब ठाढ़ी । पाछे ध्वजा मरनकी काढ़ी ॥
चढ़े बजाय चढ़ा जस इन्दू । देवलोक गोहन[२९] भा हिन्दू ॥
जानहुँ चांद नखतलै चढ़ा । सूर्यकटक[३०] रयनिमस[३१] मढ़ा ॥

[illegible] १ नज़र २ सफ़ेद ३ रंगबरंग निशान ४ बहुत ५ खूबसूरत ६ तसवीर ७ [illegible] ८-१० सिर ९ खुशी ११ धूर १२ हाथी १३—२२ राजाके दरवाज़ा १४ [illegible] १५ लाल १६ आरआईना १७ टीका १८ सोना १९ पहाड़ २० ज़मीन २१ [illegible] सँवारी २४ नेज़ा २५ तीरअन्दाज़ २६ घोड़ेकीफ़ौज २७ फ़ौज २८ [illegible] या मुसल्मानों फ़ौज ३० रातकी स्याही में ३१ ॥

जौलहि सूर[1] जाहि दिखरावा। निकस चांद[3] घर बाहरआवा॥
गगन नखतजसगिनेन जाहीं। निकसआयतसभुइँनसमाहीं॥
दो० देखआनी[4] राजाकी जग होयगयो असूझ।
वाहिं कस होय चहतहै चांदसूर्य्यसों जूझ॥
यहां राज अस साज बनाई। वहां शाहकी भई अवाई॥
अगले दौड़े आगे आई। पिछले पांछ कोस दश ताई॥
शाह आय चितौरगढ़ बाजा[5]। हस्ती[6] सहसबीस सँगगाजा॥
उनई आय दोउ दल गाजे। हिन्दू तुरुक दोउ सम[7] बाजे॥
दोउसमुद्रदधिउदधि[8] अपारा। दोनों मेरु[9] खखण्ड पहारा॥
कोप जो झार दुहूँ दिश मेली। औ हस्ती[10] हस्तहिं सोपेली॥
आंकुश चमकबीजअसबाजाहिं। गरजाहिंहस्तिमेघजनुगाजाहिं॥
दो० धर्ती स्वर्ग दोऊ दल जूहहिं ऊपर जूह।
कोक टरे न टारे दोनों बज्र समूह॥

खण्डपैंतीसवां मुलहराजाऔरबादशाह॥

हस्तिहि[11] सोंहस्ती हठगाजाहिं। जनु परबतपरबतसों बाजाहिं॥
कोउ गयंद[12] न टारे टरहीं। टूटहिं दांत सूँड़ गिर परहीं॥
परबतआय जोपराहिं तराहीं। दल[13] महँचांपखेह[14] मिलजाहीं॥
कोइ हस्ती असवाराहिं लेहीं। सूँड़ समेट पांय तर देहीं॥
कोइअसवारसिंह[15] होयमाराहिं। हनमस्तक सों सूँड़ उताराहिं॥
गर्ब[16] गयंद[17] तनगगन[18] पसीजा। रुधिर[19] चलेधर्तीसबभीजा॥
कोइ मैमत्त सँभाराहिं नाहीं। तबजानैजब गुदशिर[20] खाहीं॥
दो० गगन रुधिर जसबरसे धर्तीभीज मिलाय।
शिरधर टूट बिलाहिं तसपानी बेग[21] बिलाय॥
उठो बज्रजूझ[22] जस सुना। तेहिंते अधिक[23] भयो चौगुना॥

सूर्य्य १ तथाराजा २ आसमान ३ फ़ौज ४—१३ पहुँचा ५ हाथी६—१०—११—१२ बराबर ७ समुद्र दही का ८ पहाड़ ९ धूर १४ शेर १५ गुरूर १६ हाथी १७ आसमान१८ खून १९ भेजाशिरका २० जल्द २१ भारी लड़ाई २२ बहुत २३॥

गाजहिं चन्द्र[1] उठौ उर आगी । मुइँजर चहिं स्वर्ग[2] कहँलागी ॥
चमकहिं बीज होय उजियारा । जेहि शिर परै होय दुइ फारा ॥
मेघनाद[3] अमहुँ दिशगाजा । खड़ग जो बीच बीज[4] अस बाजा ॥
बरसहिं सेल बान होय कांदों । जस बरसै सावन औ भादों ॥
झारहिं कोप परहिं तरवारी । औ गोला ओला जस भारी ॥
जूझे बीर लिखों कहँ ताईं । लै अपसर[5] कैलास सिधाईं ॥

दो० स्वामि[6] काज जो जूझे सोइ गये मुख रात[7] ।
जो भागे सत छांड़के मसि मुख चढ़े बरात[8] ॥

भा संग्राम[10] न भा अस काऊ । लोहे दुहुँ दिश भयो अगाऊ ॥
कन्धहि कोल्हिपुर मुइँपरे[11] । रुधिर सलिल[12] होय सायर[13] भरे ॥
आनन्द ब्याह करें मसखावा । अब भख जन्म जन्म कहँ पावा ॥
चौंसठ योगिन खप्पर पूरा । वृक[14] जम्बुक[15] घर बाजहिं तूरा ॥
गृद्ध चील्ह सब मण्डफ छावहिं । काक कलोल करहिं औ गावहिं ॥
आज शाह हठ अनी[16] बियाही । पाई भुक्ति[17] जैसि मन चाही ॥
जेहिं जस मांसु भखा पराया । तस तेहिकर लै औरहिं खावा ॥

दो० काहू साथ न तन का[18] सकल मुये सब पोष ।
ओछे[19] पूरजू जानत जो नहिं आवत जोप ॥

चांद न टरै सूर[20] सों कोपा । दूसरि छत्र सौंहि[21] के रोपा ॥
सुना शाह अस भयो समूहा[22] । पेले सब हस्तिन[23] के जूहा ॥
आज चन्द्र तोर करौं निपातू[24] । रहै न जगमहँ दूसर छातू ॥
सहस[25] किरन होय किरन पसारा । छेंका चांद[26] जहांलग तारा ॥
दर[27] लोहे दरपन मा आवा । घटघट जानों भानु[28] देखावा ॥
बहु क्रोधित सेना[29] हलधाई । अगिन पहार जरत जनु आई ॥

मस्तवार १ श्मशान २ बादल मा जोत ३ बिजुली ४ इन्द्र लोक की परी ५ मालिक ६ काम ७ सिपाही ८ ईश्वर के सामने ९ लड़ाई १० तलवार की बिजुली मे बहुत लोग जूझके मरिगे ११ पानी १२ तालाब १३ भेड़िया १४ सियार १५ फौज १६-२०—२६ बुराक १७ [illegible] नहीं जाता चाहे सो खाओ १८ ओछा पेट करता—जो दाना है अन्दाज़ रखता १९ सूर्य २० सामने २१ गुम्मा २२ हाथी २३ नाश २४ हज़ार २५ तथा राजा २६ तलवार २८ ॥

खड़्ग[1] बीज सब तुर्क उठाई। ओड़न[2] चन्द्रकमल कर पाई॥

दो० जग मग अनी[3] देखके धाय दृष्टि[4] तेहिलाग।
छुवेहोय जोलोहे मांझ[5] आव तेहि आग॥

सूरज[6] देख चांद मन लाजा। बिकसत[7] कमलकुमुद[8] भा राजा॥
पहिलहिचन्द आवनिशा[9] पाई। दिन दिनेर[10] सो कौनबड़ाई॥
अहैजोनखतचांदसंगतपी। सूर[11] कीदृष्टि[12] गगन[13] महँछिपी॥
की चिंता राजा मन बूझा। जेहिं सो स्वर्ग[14] न धर्तीजूझा॥
गढ़पति उतर लड़ेनहिं धाई। हाथपरे गढ़ हाथ पराई॥
गढ़पतिइन्द्र गगनगढ़काजा। दिवस[15] ननिसररयनि[16] कर राजा॥
चन्द्ररयनिरहिनखताहिंमांझा। सूर्य्यनसौंहिं[17] होयचहिसांझा॥

दो० देखा चन्द्र भोर भा सूरज के बड़ भाग।
चांदफिरा भा गढ़पति सूर्य्य गगन गढ़ लाग॥

कटक[18] असूझअलावलशाही। आवत कोइन सँभारै ताही॥
उदह समुद्र[19] जस लहरे देखी। नयनदेख सुख जाय न लेखी॥
केते बजावत उतरे थांटी। केते बजावत मिलगये माटी॥
केतेहिं नितहिं[20] देइ नवसाजा। कबहुँ न साज घटै तसराजा॥
लाख जाहिं आवहिं नवलाखा। फरै झरै उपनी[21] नइशाखा॥
जो आवै गढ़[22] लागै सोई। थिर ह्वै रहै न पावै कोई॥
उमर अमीर रहे जहँ ताईं। सबही बांट अलंगें[23] पाईं॥

दो० लागकटक[24] चारहुँदिश गढ़ सोपरा इकदाहु[25]।
सूर्य्यगहन भा चांदहिं[26] चांद भयो जस राहु॥

अथवादिवस[27] सूर[28] भाबासा।परीरयनि[29] शशि[30] उवाअकासा॥
चांद छत्र[31] दय बैठो आय। चहुँदिश नखतदीन्हछिटकाय॥

सूर्य्य १—११—१२ ढाल २ हाथ ३ फ़ौज ४—१६ निगाह ५ वीच ६ तथा बादशाह ७ खिलना ८ कोकावेली ९ रात १०—१७ नज़र १३ आसमान १४—१५ दिन १६ सामने १८ दरिया आगका २० हमेशा २१ पैदाहोना २२ क़िला तथा दुनियां २३ हद २४ फ़ौज २५ आग २६ तयारागा २७ दिन २८ सूर्य २९ रात ३० चाँद ३१ तथा रतनसेन ३२॥

नखत अकाशहिं चढ़े दिपाई । ततखत लूका परहिं बुझाई ॥
परहिंमेल[1] जनुपरहिंगिजागी[2] । पहनहिं पहनबाजउठआगी ॥
गोलापर गोला ढरकाहीं । चूनकरत चारहुँदिशआवहिं ॥
उनई घटा वर्ष झर लाई । ओला टपकें परे बुझाई ॥
तुरक न मुरत फेरें गढ़ लागी । एक मरै दूसर होय आगी ॥
दो० नृपति बान[4] सनमुख[5] परहिं सकै न कोई गाढ़[6] ।
उनई शाह सेन[6] सब रही मोर लगठाढ़ ॥
भयो बिहान भानु[7] पुनि चढ़ा । सहस[8] किरन जैसोबिधि गढ़ा ॥
भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी । कोपा कटक[10] लाग चहुँफेरी ॥
बान करोर एक मुख छूटहिं । बाजहिं[11] जहांफोंकलहि फूटहिं ॥
नखत गगन[12] जस देखे घने । तस गढ़ फाटहिं बानहिं हने ॥
बानबेध साही किये राखा । गढ़ भा गरुड़ फुलावै पांखा ॥
उड़गाकीर[13] कठिन[14] हियबाता । तोपें लहें होय मुख राता[15] ॥
पीठ दीन्ह तेहिं बानहिं लागे । चांपत जाहिं पगहिं पगआगे ॥
दो० चार पहर दिन जूझ भा गढ़ न टूट तस बांक ।
गरू होत पै आवैं दिन दिन नाकहिं नाक ॥
ऊंचा कोट[16] जोर अस कीन्हा । घुसा नगर सुरंग तहँ दीन्हा ॥
गरगज[17] बांध कमानें[18] धरीं । बज्र अगिन मुख दारू भरीं ॥
हबशी रूमी और फिरंगी । बड़ बड़ गुनी औरतेहिसंगी ॥
जेहिकी ज्योत जाहिं उपराहीं । जहँ ताकहिं चूकहिं तहँनाहीं ॥
अष्ट धातु के गोला छूटहिं । गिरि पहाड़ चूनहोय फूटहिं ॥
इक बारहिं सब छूटहिं गोला । गरजे गगन[19] धर्तिसबडोला ॥
फूटे कोट[20] फूट जनु शीसा । उड़हिं बुर्ज जायँ सब पीसा ॥

गोला १ आग २ पत्थर ३ राजाकेतीर ४ सामने ५ फ़ौज ६ सूर्य ७ हज़ार ८ [illegible] ९ [illegible] १० पहुँचना ११ आसमान १२ राजाके हवासका तोता उड़गया १३ मुश्किल १४ मुँह लाल १५ ऊंचा क़िला १६ मरहला १७ तोपें १८ आसमान १९ क़िला २० ॥

दो० लंका रावट[1] जस भई दाह पड़ा गढ़ सोय।
रावण भाल[2] जो जर लिखोकहुकिमअजरसो होय॥
राजा केर लाग गढ़ धुई। फूटै जहां सँवारहि सोई॥
बांकी बरसहिं बानक[3] करेइ। रातहिं कोट चित्र[4] कै लेइ॥
गाजे गगन[5] चढ़ा जस मेघा। बरसहिं बज्र[6] सलिलकोठेघा॥
सौसौ मनके बरसहिं गोला। बरसहिं टपक तीरजसओला॥
जानहु परी स्वर्ग हत गाजा[7]। फाटी धर्ति आयजो नाजा[8]॥
गरगज[9] चूर चूर होय परहीं। हस्ति[10] घोरमानुषसंहरहीं[11]॥
सबहिं कहा अब परलै[12] आवा। धर्तीस्वर्ग जूझतस लावा॥
दो० उठो बज्र[13] सनमुख जरे होय इक डंकोइ[14] लाग।
जगत जरे चारहुँ दिशा कोरे बुझावै आग॥
तबहूँ राजा हिये[15] न हारा। राजपँवर[16] पर रचाअखारा॥
सौंह[17] शाह कर बैठक जहां। सामहिं नाच करावै तहां॥
जंत्रपखावज[18] आदिजोबाजा। सुर[19] मन्दिररबाब[20] भलसाजा॥
बीन[21] निपातककमायज[22] गहे। बाजउमरती[23] अतिकहकहे॥
चंग[24] उपंग[25] नाद[26] सुर[27] तूरा। मुहर[28] बंस[29] बाजेभलतूरा[30]॥
हुडुक[31] बाजडफ[32] बाज़गँभीरा। औ बाजेहिंभलझांझमँजीरा॥
तन्त[33] बितन्तशुभ्र[34] घनतारा। बाजहिं शब्दहोय झनकारा॥
दो० जग शृँगार मन मोहन पातुर नाचहिं पांच।
बादशाह गढ़ छेंका राजा भूला नांच॥
बीजा नगर केर सब गुनी। करहिं अलाप बुद्धि चौगुनी॥
प्रथम[35] रागभैरों[36] तेहिकीन्हा। दुसरेमालकोस[37] पुनि लीन्हा॥
रागहिंडोल[38] सो तिसरे गाई। चौथे मेघ मलार[39] सोहाई॥

राख १ माथा २ बांक बनानेवाला ३ तसवीर ४ आसमान ५ कड़ेपत्थरके गोले ६ आसमानसे बिजुलीगिरी ७ पहुँचना ८ मरहला ९ हाथी १० मरना ११ कयामत १२ पत्थर १३ इकतरफ़ १४ दिल १५ ख़ासमहल १६ सामने १७ नामबाजा १८—१९—२० २१—२२—२३—२४—२५—२६—२७—२८—२९—३०—३१—३२—३३ मोटेबहुततार ३४ पहिले ३५ नामराग ३६—३७—३८—३९॥

पँचयें सिरी[1] राग भल किया । छठयें दीपक[2] उठा बरदिया ॥
छओं राग गायें भल गुनी । औ गाईं छत्तिस रागिनी ॥
ऊपर भई सो पुतरी नाचहिं । तर भये तुर्क कमानें[3] खाँचहिं ॥
काढ़ा माथा धुसरा[4] कूसरा । तर भये देख वीर औ ऊसरा ॥
दो० सुनसुन सीस[5] धुनहिं सबकर[6] मलिमलि पछिताहिं ।
कब हम हाथ चढ़हिं यहिके तब यह दुख जाहिं ॥

छओं राग गावैं पातुरनी[7] । पुनि तेहि कीन्ह छियेरागिनी ॥
मालकयान[8] कान्हरा[9] कीन्हीं । राग विहाग[10] किदारा[11] लीन्हीं ॥
ललित[12] बँगाला[13] गीतहिं सोई । आसावरी[14] भयोसबकोई ॥
धनासिरी[15] सोहो[16] सोकीन्हीं । भयोबिलावल[17] मारू[18] लीन्हीं ॥
रामकली[19] गुनकली सोहाई । सारंग[20] औबिभास[21] मुहआई ॥
नित मलार[22] जो सिला सुनाई । स्याम[23] गूजरी पुनिभलगाई ॥
पुरबी[24] औ देसाख[25] कुरारी[26] । टोड़ी[27] गौंड[28] सोभईनिरारी ॥
दो० गौरी[29] गौरा[30] तर वन[31] सिद्ध अलापहिं ऊँच ।
तहांतीर कहँपहुँचहिं दृष्टि[32] जहां नाहिं पहूँच ॥

पतुरिन नाच दीन्ह जोपीठी । पड़गइसौंह[33] शाहकीदीठी[34] ॥
देखत शाह सिंहासन गूँजा । कबलगमिर्गचन्द्र[35] तेहिभूँजा ॥
छांड़हिं बान जाहिं उपराहीं । गर्ब[36] केर शिर सदा तराहीं ॥
बोलत बान लाख भाऊँचा । कोइ कोट[37] कोइ पँवर[38] सोपहुँचा ॥
जहांगीर कन्नौज का राजा । वहक बान पातुरिके लागा ॥
बाजा[39] बान जांघ जस नाचा । जिवगा स्वर्ग[40] पराभुइँसांचा ॥
उड़सा[41] नाच नचिनया मारा । रहसे[42] तुर्क बाज कै तारा ॥
दो० जो गढ़ साजहिं लाख दस कोटि सँवारहिं कोट ।

नामराग १ २ मुसल्मानलोग तोपैंमारतेथे ३ जिसनेभाजाकी फौजसे ५ निकाला वह वहीता ४ गिर ५ हाथ ६ क्यागरज़ ७ नामराग रागिनी ८ से ३१ तक निगाह ३२-३४ सामने ३३ हिरनका बच्चा ३५ गरूर ३६ क़िला ३७ दरवाज़ा ३८ पहुँचा ३९ आसमान ४० मौकूफ़ ४१ खुश ४२ ॥

बादशाह जब चाहैं बनै न एको ओट ॥

राजैं पँवर[1] अकाश चलाई । परा[2] बांध चहुँफेर ललाई ॥
सेतबन्ध[3] जस राघव[4] बांधा । परा फेर भुँइ भार न कांधा ॥
हनुमतहोय सब लाग गुहारा । आवहिं चहुँदिशि चलेपहारा ॥
श्वेतफटक[5] जस लागे गढ़ा । बांध उठाय चहूं गढ़ मढ़ा ॥
खँड खँड ऊपर होय पटाऊ । चित्र[6] अनेक अनेक कटाऊ ॥
सीढ़ी होत जाहिं बहु भांती । जहां चढ़ै हस्तिन[7] की पांती ॥
भागरगज[8] असकहत नआवा । जनहुँउठाय गगन[9] लैलावा ॥

दो० राहुलाग जस चांदहि गढ़ लागा तस बांध ।
सब धड़ लीलठाढ़भा रहा जाय गढ़ कांध ॥

राज सभा सब मंत्री बैठी । देखन जाय मुन्द भइ दीठी[10] ॥
उठा बांध तस सब गढ़ बांधा । कीजे बेग[11] भार जस कांधा ॥
उपजी आगआग जस बोई । अब मत[12] क्षीनआननहिंहोई ॥
भा त्योहार जो चांचर जोरी । खेल फाग अब लाई होरी ॥
समन्द फागमेल[13] शिर धूरी । कीन्ह जो शाका[14] चाही पूरी ॥
चन्दनअगर मलयगिरिकाढ़ा । घरघर कीन्ह सरा[15] रच ठाढ़ा ॥
जून्हर[16] कहँ साजा रनवासू । जेहिंसतहियें[17] कहां तेहिआंसू ॥

दो० पुरुषन खड्ग[18] सँवारी चन्दन खौरीं देह ।
मेहरिनि[19] सेंदुर मेला चहहिं भईजर खेह[20] ॥

आठ बरष गढ़ छेंका रहा । धन सुलतान कि राजा महा ॥
आय शाहअँबराउँ[21] जोलाई । फरे भरे पै गढ़ नाहिं पाई ॥
हठ जोरी तब जून्हर होई । पद्मिन[22] पावन मिन्नत[23] सोई ॥
यहिबिधि ढील दीन्ह तबताईं । देहलीकी अरदासैं[24] आईं ॥

फ़ौजसे बादशाहके तोपैंचलीं १ राजाके क़िलामें भूंचालपड़ा २ पुल ३ श्रीरामचन्द्र जी ४ सफ़ेदपत्थर ५ तसवीर ६ हाथी ७ मरहला ८ आसमान ९ निगाह १० जल्द ११ डरपोक १२ फागखेलीं १३ बहादुरी १४ चिता १५ मौत १६ दिल १७ मरदोंनेतलवारली १८ औरत १९ ख़ाक २० बाग़ २१ शाह समझा कि वेमरे २२ मुशकिल २३ अरज़ी २४ ॥

पक्रम्स हरेव[1] दीन्ह जो पीठी । सो अब चढ़ा सौंह[2] के दीठी ॥
जेहिमुड़माथगगन[3] शिरलागा । थाने उठे आव सब भागा ॥
वहां शाह[4] चितोर गढ़ छावा । यहां देश अब भयो परावा ॥
दो० परत दृष्टि[5] जेहि पंथ[6] में बाढ़ा बेर बबूर ।
निशि[7] अँधियारीजायतबबेग[8] उठेजोसूर[9] ॥
सुनाशाह अरदास[10] जो पढ़ी । चिन्ता आन आनचित चढ़ी ॥
तब आगो मन चीते कोई । जो आपन चेता कछु होई ॥
मन झूठा जिव हाथ पराई । चिन्ता एक भई दुइ ठाई ॥
गढ़ सों उरझ जाय तबछूटा । होय मिलाव कि सो गढ़ टूटा ॥
पाहन[11]कररवि[12]पाहन हीरा । बेधों[13] रतन पान दे बीरा ॥
सुरजा[14]सेतें कहा यहिभेऊ[15] । पलट जाहु अब मानहु सेऊ ॥
कछु तोसों पद्मिन नालेऊँ । जो राकहि[16] छांड़ गढ़ देऊँ ॥
दो० आपनदेशखाहु निहचल[17]और चँदेरी[18] लेहु ।
समुद्र समन्दन[19]कीन्ह तोहि तेपांचोनग देहु ॥
सुरजापलटसिंह[20] चढ़गाजा । आज्ञा[21] जाय कही जहँराजा ॥
अबहूँ हिये[22] समझरे राजा । बादशाह सो जूझन छाजा ॥
जाकर देहिरी पृथ्वी सेई । चहै तो मारे औ जिव लेई ॥
पिंजर महँ तू लीन्ह परेवा[23] । गढ़पति[24] सो बाचै कै सेवा[25] ॥
जबलग जीभ अहे मुखतोरे । सँवर उघेल विनय[26] करजोरे ॥
पुनि जो जीभपकड़ जिवलेई । को खोलै को बोलै देई ॥
आगेजस हमीर[27]मैमन्ती[28] । जो तसकरेसि तोर भायन्ती ॥
दो० देख काल्ह गढ़ टूटै राज वहीकर होय ।
करसेवा शिरनायके घरनघाल बुधिखोय ॥

नाममुल्क १ सामने २ आसमान ३ अलाउद्दीन ४ निगाह ५ राह ६ रात ७ जल्द ८ सूर्य ६—१२ अर्ज़दाश्त १० पत्थर ११ मारडालना १३ नामपहलवान १४ भेद १५ मुलाक़ात १६ यक़ीन १७ नाममुल्क १८ तुहफ़ा १६ शेर २० हुक्म २१ दिल २२ जानवरपरिन्द २३ क़िलादार २४ खिद्मत २५ ताबेदारी २६ नामराजा २७ अहंकारी २८॥

सुरजा[1] जस हमीर[2] मनताका। और निबाही आपन शाका[3]॥
वह असहौं शकबन्दी[4] नाहीं। हौं सो भोज[5] बिक्रम[6] उपराहीं॥
बरस सात महँ अन्न नखांगा[7]। पानि पहार चुवै बिन मांगा॥
तेहि ऊपर जो पै गढ़ टूटा। सत शकबन्दी[8] केर न छूटा॥
सोरह लाख कुँवर हैं मोरे। पतंग परहिं जस दीपअँजोरे[9]॥
जेहि दिन चाँचर चाहोंजोरी। समन्दो[10] फागमेल्ल के होरी॥
दैके घरनि जो राखत जीउ। सो कस[11] आवहिंभोसकपीउ॥

दो० अबहूँ जून्हर[12] साजके कीन्ह चहूँ उजियार।
होरी खेलों रन कठिन कोउनसमेटहिछार[13]॥

अन राजा सो जरै नियाना[14]। बादशाह की सेव[15] न माना॥
बहुतहिं असगढ़कीन्हसँजोना। अंत भई लंका जस रवना॥
जेहि दिन वह छेंकै गढ़घाटी। होय अन्न ओही दिन माटी॥
तू जानेसि जल चुवै पहारू। वह रोवै मन सँवर सिंहारू[16]॥
सोतहि[17] सोत ऐस गढ़ रोवा। कस होइहै जो होइहै धुवा॥
सँवर पहाड़ सो ढारैं आंशू। पै तोहि सूझ न आपननाशू॥
आज काल्ह चाहै गढ़ टूटा। अबहूँ मान जो चाहसछूटा॥

दो० हैं जो पांच नग तोसोंले पांचों कर भेंट।
मकु[18] सो एकगुन मानैसब औगुनकरमेट॥

अन सुरजा को मेटै[19] पारा। बादशाह बड़ अहै हमारा॥
औगुन मेट सकहि पुनि सोई। औजो कीन्ह चहै सो होई॥
नग पांचोका देउँ भंडारा[20]। इसकन्दर[21] सो बाचै दारा[22]॥
जो यह बचन तुहिं माथे मोरे। सेवा[23] करों ठाढ़ कर[24] जोर॥
पै बिन सत्त[25] नअसमनमाना। सत्त बोल बाचा[26] परमाना॥

नामपहलवान १ नामराजा २—५—६ बहादुरी ३ बहादुर ४—८ कमी ७ रोशनी ९ फागखेलों १० क्याकिसीकोमुंह देखावैंगे ११ मौत १२ राख १३ आखिर १४ खिदमत १५ नाश १६ सूराख १७ शायद १८ सचहै १९ खज़ाना २० नाम बादशाह २१—२२ खिदमत २३ हाथ २४ क़सम २५ मज़बूत २६॥

कीन्हजो गुरु[1] लीन्हजगभारू । तेहिक बोल नहिं टरै पहारू ॥
नावत मांभ भँवर हत ग्रीवा । सुरजहिं कहां मुन्द भइजीवा ॥
दो० सुरजैं[2] सततकीन्ह छल बैनहिं[3] मीठी मीठ ।
राजा कर मन माना मानी तुरत बसीठ[4] ॥
हंस कनक[5] पींजर हत आना । औ अमृत नगपरसपषाना[6] ॥
और सुना[7] सोनेकी डांड़ी । शार्दूल[8] रूपेकी कांड़ी[9] ॥
दीन्ह बसीठ सुरजा लै आई । बादशाह पहँ आन मिलाई ॥
ऐ जग सूर[10] भूमि[11] उजियारी । विनतीकरहिकागमसि[12] कारी ॥
बड़ परताप तोर जग तपा । नवों खण्ड तुहिंके न छिपा ॥
कोह[13] छोह दोनों तोहि पाहां । मारेसि धूप जियाव सछाहां ॥
जनमनसूर[14] चांद[15] सोरूसा[16] । गहन[17] गिरासापड़ामँजूसा[18] ॥
दो० भोरहोय जों लागै उठै रोर[19] किये काग ।
मसि[20] छूटै सबरयनि[21] कीकागा[22] जायँअभाग ॥
कर विनती आज्ञा[23] असपाई । कागहिंसे आपहिं मसि[24] लाई ॥
पहिले धनुप नवै जब[25] लागी । काग न लेइ देख सुर[26] भागी ॥
अबहूँ तेहिसुर सौंह[27] नहोहीं । देखहिं धनुषचलहिं फिरओहीं ॥
तेहि कागहिंकीकौन बसीठी[28] । जो मुख फेर चलहिं दै पीठी ॥
जो सरसौंह[29] होहिं संग्रामा[30] । कितबक[31] होतश्वेत[32] वैश्यामा ॥
करहिं न आपन ऊजरकेशा[33] । फिर फिर कहहिं परारसँदेशा ॥
काग नाग पै दोनों बांकी । अपनी[34] चलतश्यामभयआंकी ॥
दो० मेटजाय नाहिं मसि[35] कबहुँ भये श्याम वे अंक ।
सहस[36] बार जो धोवहू तौहू न मेट कलंक[37] ॥

भारी १ नामपहलवान २ बात ३ क़ासिद ४ सोना ५ पारसपत्थर ६ हाथिन्ददस्ता ७ लालशेर ८ पिंजरा ९ सूरज १० ज़मीन ११ कालाकौआ तथा राजा १२ गुस्सा—मेहरबानी १३ सूर्य तथा बादशाह १४ तथाराजा १५ गुस्सा १६ पकड़ाहुवा १७ पिंजरा १८ हाज़िर १९ सियाही २०—२४ रात २१ कौआकीसियाही दूरहोजायगी २२ हुक्म २३ निशानेपर २५ देवता २६ मुक़ाबिल २७ वकालत २८ सामने २९ लड़ाई ३० बगुला ३१ सफ़ेद ३२ बाल ३३ आपहीकालेहोते ३४ सियाही ३५ हज़ार ३६ ऐब ३७ ॥

अब सेवा[1] जो आय जोहारी। अबहूँ देव श्वेत[2] कहि कारी॥
कहो जाय जो सांच न डरना। जहवांशरण[3] नाहिंतहँ मरना॥
काल्ह आव गढ़ ऊपर भानू[4]। जो दै धनुष[5] सौंह हिय बानू॥
पान बसीठ[6] मया कर पाई। लीन्ह पान राजा पहँ आई॥
जस हम भेंट कीन्ह गा कोहू[7]। सेवा मांझ प्रीति अरु छोहू[8]॥
काल्ह शाह गढ़ देखै आवा। सेवा[9] करहु जैसो मन भावा॥
गुन[10] सो चलै सोबोहित[11] बोझा। जहवांधनुषबानतहँ सूझा॥
दो० भा आयसु[12] अस राजघर बेगहि[13] करो रसोय।
तस सँभार रसमिलवहु जेहि सु प्रीति रसहोय॥

खण्ड पैंतीसवां ज्याफ़त बादशाह॥

छागर[14] मेढ़ा बड़ औ छोटी। धर धर आनी जहँ जहँ मोटी॥
हिरन रोझ[15] लगना[16] बनबसी। चत्र[17] कोनछाख[18] औ ससी[19]॥
तीतर बटई लवा न बाची। सारसगुंज[20] पुछार[21] जो नाची॥
धरी परेवा[22] पांडुक[23] हेरी। केहा[24] कदरो[25] उतर[26] बगेरी॥
हारल[27] चरज[28] आय बन्दपरे। बन ककरी[29] जलककरी[30] धरे॥
चकई चकवा केप[31] बिदारे। नकटा[32] लेदी[33] सोन सलारे[34]॥
मोट बड़े सब टोइ टोइ धरे। ऊबर दूबर खड्ग[35] न चढ़े॥
दो० कंठपरी जब भूरी रक्त ढुरा होय आंस।
कितआपनतनपोषा[36] भाखपरावामांस॥
धरे मच्छ पढ़ना औ रोहू। धीमर धरत करै नहिं छोहू[37]॥
संध[38] सुगंध[39] धरे जल बाढ़े[40]। टेगन[41] मुवे[42] टोय सब काढ़े॥
सींग[43] मगोर[44] बीन सब धरे। तरिपा[45] बहुत बांब[46] वनगरे[47]॥
मारेचरक[48] चाल्ह[49] परहासी[50]। जलतज कहां जायजलबासी॥

खिदमत १ सफ़ेद २ पनाह ३ सूर्य ४ कमानतीरधरदे ५ क़ासिद ६ गुस्सा ७ मेहरबानी ८ खिदमत ९ रस्सी १० नाव ११ हुक्म १२ जल्द १३ बकरा १४ पाढ़ा १५ नाम जानवर १६ से ३४ तक तलवार ३५ पालना ३६ दया ३७ क़िस्म जानवर दरियाई ३८ से ५० तक॥

मनहोय मीन[१] चरा सुखचारा । परा जाल को दुख निरवारा ॥
माटी खायमच्छ नहिं बाची । बाचहिं काह भोग सुखनाची ॥
मारे कहँ सब अस के पाले । को उवार तेहि सरवर[२] घाले ॥

दो० यहि दुख कंतहि[३] सारकी अगमन रक्त न देह ।
पंथ[४] भुलाय आय जलपाछे छूटे जगत सनेह ॥

देखत गोहूँ कर हिय फाटा । आनी तहां होय जेहि आटा ॥
तब पीसे जब पहिले धोय । कापर छान माड़[५] भल होय ॥
करल[६] चढ़हि तेहि पाकहिंपूरी । मूठी मांझ रहै सो जोरी ॥
जानहु तत[७] श्वेत[८] अरु उजरी । नयनूचाहि अधिक वहकुदरी[९] ॥
मुख मेलत खनजाहिं बिलाई । सहस[१०] स्वादसोपावजोखाई ॥
लुचई पोय पोय घिव भेई । पाछे चहन खांड़ सो जेई ॥
पूरी सुहारी करे घिव चुवा । छुवत बिलाय डरहिं को छुवा ॥

दो० कहीन जाय मिठाई कहत मीठ सत बात ।
खात अघात न कोई हेवर[११] जाय सिरात ॥

रींधे चावल बरन न जाहीं । बरन बरन[१२] सबसुगँधबसाहीं ॥
राय भोग[१३] औ काजर[१४] रानी । झिनवा[१५] रुदवा[१६] दाउदखानी[१७] ॥
कपूर[१८] काटकजरी[१९] रतनारी[२०] । मधुकर[२१] ढेला[२२] जीरा[२३] सारी ॥
घोखांड़ो[२४] औ कुँवर[२५] बिरासू । रामदास[२६] आवै अतिबासू ॥
कही सो सोधी[२७] लाची[२८] बाकी । सुगटी[२९] बगरी[३०] वरहन[३१] पाकी ॥
कड़हन[३२] चड़हन[३३] बद[३४] मनमिला । औसंभार[३५] तिलक खँडवना[३६] ॥
राजहंस[३७] और हंसी[३८] भोरी । रूप[३९] मंजरी औगुन[४०] गोरी ॥

दो० सोरह सहस[४१] बरन अस सुगँध बासना छूट ।
मधुकर[४२] पुहुप[४३] सुजानके आयपरे सब टूट ॥

मछली १ तालाव २ खाविन्दनेमुखड़ालके पहिलसे खून बदनमें न रक्खा ३ राह भूलके पानीमेंफँसे झूठीदुनियाँके मुहव्वत में ४ रोटो ५ कराही ६ गर्म ७ सफेद ८ मुलायम ९ हज़ार १० वर्फ ११ तरहबतरह १२ क़िस्मचावल १३ से ४० तक हज़ार ४१ भँवरा ४२ फूल ४३ ॥

निरमल[1] मांस अनूप[2] बघारा। तेहिके अब बरनो परकारा[3] ॥
कटवां बटवां मिला सो बासू। सीझा आनो भांति गिरासू ॥
बहुती सोंधी घृतहि बघारा। औ तहँ कङ्कहि[4] पीस उतारा ॥
सेंधा लोन परा सब हांड़ी। काटी कन्दमूल[5] की आंड़ी ॥
सोवा सौंफ उतारहिं धनियां। तेहिते अधिक आवबासनियां ॥
पानि उतारहिं ताकहिं ताका। घृत परेह रहा तस पाका ॥
और लीन्ह मांसू के खांड़ा। लागे चढ़े सो बड़बड़ हांड़ा ॥

दो० छागर बहुत समूची धरी सरागहिं[7] भूँज।
जो अस जेवन जेवैं उठै सिंह[8] अस गूँज ॥

भूँज समोसा घी महँ काढ़े। लौंग मिर्च तेहि भीतर ठाढ़े ॥
औ जो मांसअनूप[9] सो बांटा। भयेफर[10] फूल आंब औ भांटा ॥
नारंग दाड़िम[11] तुरंज जँभीरा। औ हिन्दवाना बालमखीरा ॥
कटहर बड़हर तेउ सँवारे। नरियल दाख[12] खजूर छुहारे ॥
औ जानवन्लखचीचा[13] होहीं। जो जेहि बरन स्वादसोओही ॥
सिरका भेय काढ़ जनु आने। कमलजोभयेरहहिंबिकसाने[14] ॥
कीन्ह मसूरा[15] धन[16] सो रसोई। जो कछु सब मांसू सो होई ॥

दो० बारी[17] आय पुकारी लिये सबैकर छूँछ।
सब रस लीन्ह रसोई अबभोकहँकोपूँछ ॥

काटी मच्छ मेल दधि[18] धोई। औ बघार चहुँ बार निचोई ॥
कड़वे तेल कीन्ह बसे[19] बारू। मेथी घृतसों दीन्ह बघारू ॥
युक्त युक्त सब मच्छ उतारे। आंब चीर तेहिमांझ[20] उतारे ॥
औ परेह[21] तेहि चटपट राखा। सोरस सुरस पाव जो चाखा ॥
भांति भांति तहँ खांड़ा तरे। अंडा तल तल बीहड़[22] धरे ॥
कहँकहँ[23] परा कपूर बसाई। लौंग मिरच तेहि ऊपर लाई ॥

साफ़ १ बेमानिन्द २—९ क़िस्म ३ केसर ४ अदरक वा पियाज़ वगैरा ५ बहुत ६ लोहेकीसीख ७ शेर ८ फल-फूल आंब और बैंगन मांसकेबनायेगये १० अनार ११ अंगूर १२ नाम मेवाफ़सली १३ खिलना १४ मसूरकीखिचड़ी १५ पद्मावत १६—१७ दूध १८ भन्ना १९ बीच २० इससबबसे २१ अलग २२ केसर २३ ॥

घीवटांक महि सोंध सिरावा । पंख[1] बघार कीन्ह अरदावा[2] ॥

दो० घृत परेह[3] रहा तस हाथ पहुँच लहि बोड़ ।
बृद्ध खाय नौ यौवन सौ सेहरी की ओड़ ॥

भांति भांति सीझी तरकारी । कयो भांति कुम्हड़े के फारी ॥
भइ भूँजी लौका परवती । रौता कीन्ह काटके रती[4] ॥
चूक लायके रींधे भांटा । अरवी कहँ भल अरहन[5] बांटा ॥
तुरइ चचेंड़े ढेंढस तरे । जीर धुँगार मेल सब धरे ॥
परवर कुँदुरु भूँजे ठाढ़े । वहुते घीव चुरचुर[6] के काढ़े ॥
कड़ुई काढ़ करेला काटे । अदरक मेल तरे के खाटे[7] ॥
रींधे ठाढ़ सेवके फारे । छौंक साग पुनि सौंध उतारे ॥

दो० सीझी[8] सबतरकारी भा जेवन सब ऊँच ।
धौं कारु चै शाहकहँ केहिपर दृष्टि[9] पहूँच ॥

घृत कराही भीतर परा । भांति भांति[10] सब पाकहिंबरा ॥
एकहि आदि[11] मिर्च सों पीठी । औ जो दूध खांड़ सो मीठी ॥
भई मुँगोछे[12] मिरचहिं परीं । कीन्ह मुँगौरा[13] औ करपरीं[14] ॥
भई मिथौरीं[15] सिरका परा । सोंठ लायके खरसा[16] धरा ॥
मीठ महीव[17] औ जीरा लावा । भीज बरा नैनू जनु खावा ॥
खण्डहि कीन्ह आंब चरपरा । लौंग इलाची सों खँड बरा ॥
कढ़ी सँवारी और फुलौरी । औ खँडवानी[18] लाय बरोरी[19] ॥

दो० पान कतर छौंके रुकौंछ हींग मिर्च औ आदि[20] ।
एक खण्ड जो खावै पावै सहस[21] सवाद ॥

तहरी पाक बोन[22] औ गरी । परी चिरौंजी औ खरहरी[23] ॥
घृत भूँज के पाका पेठा । औ भा अमृतकरम्ब करमीठा[24] ॥

चिड़िया १ गलाना २ वहुत घीडाला ३ कटूकश ४ तलना ५—६ खटाईडालके ७ तरयार ८ निगाह ९ तरहबतरह १० अदरक ११—२० किस्मखानेकी १२—१३—१४ १५—१८—१६ पियाला १६ दही १७ हज़ार २१ नाममेवा २२—२३ शक्करकाकेनामबना के पकाया २४ ॥

चंबक[1] लोहड़ा औटा खोवा । भा हलुवा घिवकरे निचोवा ॥
शिखरन सौंध छनाई काढ़ी । जामा दही दूध सों साढ़ी ॥
और दही के मुरंडा[2] बांधे । औ संधान[3] बहु भांती सांधे ॥
भइ जो मिठाई कही न जाई । मुख मेलतखन जाय बिलाई ॥
मतलड़[4] छाल[5] औरमरकोरी[6] । माठ पेराकें और बुँदोरी ॥

दो० फेनी पापर भूँजे भय अनेक परकार[7] ।
भइजावर भिजयाबरसीभीसबज्योनार ॥

जेत प्रकार रसोंई बखानी । तब भइ सब पानी सो सानी ॥
पानी मूल[8] परेखो[10] कोई । पानी बिना स्वाद नहिं होई ॥
अमृतपानयहि अमृत आना । पानी सो घट[11] रहै पराना ॥
पानी दूध सो पानी घीव । पानि घटै घट[12] रहै न जीव ॥
पानी मांझ[13] समानी ज्योती । पानीउपजै[14] माणिक[15] मोती ॥
पानीमहँ सबनिरमल[16] कला । पानी जो छुवै होयनिरमला[17] ॥
सो पानी मन गर्ब[18] न करेइ । शीश[19] नाय घालें पै धरेइ ॥

दो० मुहम्मद नीर[20] गँभीर जोसोतेहिमिलहि समन्द ।
भरे ते भारी होरहे छूछहिं बाजहिं हुन्द[21] ॥

सीझ रसोंई भयो बिहानू । गढ़ देखे गवने सुलतानू ॥
कमल सुहाय शूर[22] संगलीन्हा । राघव चेतन[23] आगे कीन्हा ॥
ततखन[24] आयबेवान[25] जोपहुँचा । मनसोंअधिक[26] गगनसे[27] ऊँचा ॥
उघरी पँवर[28] चला सुलतानू । जानहुचला गगन[29] कहँभानू[30] ॥
पँवरी सात सात खण्ड बांके । सातों खण्ड गाढ़े दुइनाके ॥
आज पँवर मुख भा निरमरा । जो सुलतान आय पगधरा[31] ॥
जानु उरेह काट सब काढ़े । चित्र[32] मूरतें बिनवहिं ठाढ़े ॥

लोहेकी कराहो १ लाडू२ अचार ३ क़िस्म मिठाई ४—५—६ तरहबतरह ७ खीर८ जड़ ९ देखना १० बदन ११—१२ बीच १३ पैदा होना १४ जवाहिरात १५ पाकसाफ़ १६—१७ ग़रूर १८ शिर १९ पानी २० ढोल२१ बहादुर २२ नामभाट २३ तुरंत २४ हवादार २५ बहुत २६ आसमान २७—२८ दरवाज़ा २८ सूर्य्य ३० क़दम ३१ तसवीर३२॥

दो० लख लख बैठ पँवरया[1] जेहिते नवहिं करोर ।
जेहिं सब पँवर उघारे ठाढ़ भये कर जोर ॥

खण्ड अड़तीसवां किला वर्णन बादशाह ॥

सातौं पँवरी कनक[3] केवारा । सातहुँपर बाजहिं घरियारा ॥
सातहिं रंग सो सातौं पँवरी । तब तहँ चढ़ै फिरैनव भँवरी ॥
खण्डखण्डसाजपलंगऔपीढ़ी। जानहु इन्द्र लोककी सीढ़ी ॥
चन्दन वृक्ष[4] सुहाई छाहां । अमृत कुण्ड भरातेहि माहां ॥
फरेखजीजा[5] दाड़िम[6] दाखा[7] । जो वह पंथ[8] जाय सोचाखा ॥
कनक[9] छत्र सिंहासन साजा । पैठत पँवर[10] मिलालै राजा ॥
चढ़ाशाह चढ़ चितौर देखा । सब संसार पायँतर लेखा ॥
दो० देखा शाह गगन[11] गढ़ इन्द्रलोकके साज ।
कहीराज फिरताकर स्वर्ग[12] करै जो राज ॥
चढ़गढ़ ऊपर सङ्गत देखी । इन्द्रपुरी सो जान बिशेखी ॥
ताल तलावा सरवर[13] भरे । औअम्बराऊँ[14] चहूँदिशिफरे ॥
कुवां बावरी भांतिहि भांती । मढ़मण्डफ तहँतहँचहुँपांती ॥
राय[15] राग घरघर सुखचाऊ । कनक[16] मँदिरनगकीन्हजड़ाऊ ॥
निशि[17] दिनबाजहिंमन्दिरतूरा[18] । रहसकूद सब लोग सँदूरा ॥
रतन[19] पदारथ नग जो बखाने । घूरन महँ देखे भहिराने ॥
मँदिर मँदिर फुलवारी बारी । बारबार[20] तहँचित्र[21] सँवारी ॥
दो० पांसासार[22] कुँवरसबखेलहिंश्रवनाहिं[23] गीतउनाहिं ।
चैन चाउ तस देखा जनु गढ़ छेका नाहिं ॥
देखत शाह कीन्ह तहँ फेरा । जहँ मन्दिर पद्मावत केरा ॥
आसपास सरवर[24] चहुँपासा । मँदिरमांझ[25] जनुलागअकाशा ॥

दरवान १ लाख २ सोना ३-९-१६ पेड़ ४ नाममेवा ५ अनार ६ अंगूर ७ राह ८ दरवाज़ा १०—२० आसमान ११-१२ तालाब १३—२४ बग़ीचा १४ अमीरउमरा १५ रात १७ नामबाजा १८ जवाहिरात १९ तसवीर २१ चौसर २२ कान २३ बीच २५ ॥

कनक[1] सँवार नगाहिं सबजरा। गगन[2] चन्दजनुनखतहिंभरा॥
सरवर[3] चहुँदिशिपुरइन फूली। देखा वारि[4] रहामन भूली॥
कुँवरिलाख दुइबार अगोरे[5]। दुहुँदिश पँवर ठाढ़कर[7] जोरे॥
शारदूल[8] दुहुँ दिश गढ़काढ़े। कलकंजहि[9] जानहुँरिसठाढ़े॥
जानवन्तलिये चित्र[10] कटाऊ। वहँलकपँवर[11] सोलागजड़ाऊ॥
॥ दो० शाह मँदिरअस देखा जनु कैलाश अनूप[12]।
जाकर असधौराहर[13] सो रानी केहिरूप॥
नांघत पँवर[14] गये खण्ड साता। सतयेंभूमि[15] बिछावनराता[16]॥
आंगन शाह ठाढ़भा आय। मँदिरछांहअतिशीतल[17] पाय॥
चहूं पास फुलवारी वारी। मांझ[18] सिंहासन धरा सँवारी॥
जनु बसन्त फूला सबसोने। हँसाहिंफूलबिकसहिं[19] फरलोने[20]॥
जहांजो ठांव दृष्टि महँ आवा। दर्पन भाव दरश देखरावा॥
तहां पाट[21] राखा सुलतानी। बैठ शाह मन जहां सोरानी॥
कमल सुभाय सूर[22] सों हँसा। सूरका मन चांद[23] पहँ बसा॥
॥ दो० सोपै जानै नयन रस हिरदय[24] प्रेम अँगूर।
चन्दजोबसैचकोरचित नयनहिंआवनसूर[25]॥
रानी धौराहर[26] उपराहीं। कराहिंदृष्टि[27] नाहिंकर हिंतराहीं॥
सखी सरेखी[28] साथहिं बैठी। तपैसूर[29] शशि[30] आवनदीठी[31]॥
राजा सेव करै कर[32] जोरे। आज शाह घर आवामोरे॥
नट नाटकपतुरनि औ बाजा। आय अखाड़ सबै महँ साजा॥
प्रेमकलुब्ध बहिरऔअन्धा। नाचकूद जानहु सब धन्धा॥
जानहु काठ नचावै कोई। जोजें नाच न परगट[34] होई॥
परगट कहि राजासों बाता। गुप्त[35] प्रेम पद्मावत राता[36]॥

सोना १ आसमान२ तालाब ३ दरवाज़ा ४-६-११-१४ पेशवाई ५ हाथ७ लालशेर८ डकारना ६ तसवीर १० बेमिसाल १२ महल १३—२६ ज़मीन १५ लाल १६—३६ ठंढा १७ बीचोंबीच १८ खिलना १६ खूबसूरत २० तख्त२१ सूर्य २२—२५-२८ तथा पद्मावत २३ दिल २४ निगाह २७—३१ होशियार २८ चांद ३० हाथ ३२ मस्तहुवा ३३ ज़ाहिर ३४ छिपा ३५॥

दो० गीत नाद जस धन्धा दहक[1] विरहकी आंच ।
मनकीडोरलागतहँठाईजहां सोगहि[2] पुनि[3] खांच ॥

गोरा[4] बादल राजा पाहां । रावत[5] दोऊ दोउ जनुवाहां ॥
आय श्रवण[6] राजाके लागी । मूसि[7] नजाहिंपुरुषजोजागी ॥
बाचा पुरुष[8] तुर्क हम बूझा । परगट मेर[10] गुप्त[11] छल[12] सूझा ॥
तुम नाहिं करो तुर्क सो मेरू[13] । छलपै करहिं अंतके फेरू ॥
वैरी कठिन[14] कुटिल जस कांटा । सोम कोप रहि जारहि आंटा ॥
शत्रु[15] कोट[16] जो पाय अगोटी[17] । मीठी खाँड़ जेंवाये रोटी ॥
हम सो ओछ[18] के पावा छातू । मूल[19] गये सँग रहे न पातू ॥

दो० यहि सो कृष्ण बलराज जस कीन्ह चहै छर बांध ।
हम विचार अस आवहिं मेरहि[20] दीजे न कांध ॥

सुन राजा यहि बात न भाई । जहां मेर तहँ नाहिं अस माई ॥
मन्दहि भल जो करे भल सोई । अंतहि भला भली कर होई ॥
शत्रु[21] जो विष दय चाहै मारा । दीजे नोंन जान विष सारा ॥
विष दीन्हें विषधर होय खाय । लोन देखहों लोन विलाय ॥
मारे खड्ग[22] खड्ग कर लिये । मारै लोन नाय शिर दिये ॥
कवरों[23] विष जो पंडवन[24] दीन्हा । अंतहि दांव पंडवन लीन्हा ॥
जो छल करे वही छल बाजा[25] । जैसे सिंह[26] मँजूसा साजा ॥

दो० राजै लोन सुनावा लाग दोहों जस लोन ।
आय कुहाय मँदिर कहँ सिंह जान औ गोन ॥

राजा की सोरह सै दासी । तिन महँ चुन काढ़ी चौरासी ॥

चलना १ पकड़ना २ रस्सी ३ नाममन्त्री ४ सरदार५ कान६ चोरी होजाना ७ कोल बादशाह ८ ज़ाहिर ९ मेल १०—१३—२०—क्रिपा ११ दग़ा१२सख़्त १४ दुशमन १५—२१ क़िला १६ घेरना १७ तथा बादशाहको वे मुरव्वत पाया १८ जड़ १९ तलवार २२ दुर्योधन २३ राजायुधिष्ठिर आदिक २४ पहुँचना २५ एक ब्राह्मणने शेरको जो पिंजरेमें बन्दथा निकाललिया शेरने उसको खाने चाहा उसने कहा कि भलाई के बदले बदी न करना चाहिये तब तकरार होनेलगी तब एक गीदरने आके पंचाइतकी और कहा कि हम सूरत असली देखें तब फैसलाकरें जब शेर पिंजरेमें चलागया ब्राह्मणने खिड़की बन्द करली गीदरने कहा कि ऐ ब्राह्मण अब घरजाउ यही फैसलाहै २६ ॥

बरण[1] बरण सारी पहिराई ॥ निकस मँदिर ते सेवा आई ॥
जनु निसरीं सब बीरबहूटी । राय[2] मुनी पिंजर हुत छूटी ॥
सबै प्रथमा[3] यौवन सोहैं । नयन बान[4] औ सारँग[5] भौहैं ॥
मारहिं धनुष[6] केर शिर ओही । बनघटघाट धनुष जितओहीं ॥
काम[7] कटाक्ष हनहिं चितहरणी । एक एकते आगर[8] बरणी ॥
जानहुँ इन्द्रलोक ते काढ़ी । पांतहि पांत भई सब ठाढ़ी ॥

दो० शाह पूँछ राघव पहँ सबते कही बैनाहिं ।
तुइ जो पद्मिनी बरणी[10] कहुसो कौन इनमाहिं ॥

दीरघआयु[11] भूमिपति[12] भारी । इन्हमें नाहिं पद्मिनी नारी ॥
यहि फुलवार सो वहुकी दासी । कहँ केतकी भँवर संग बासी ॥
वह सो पदारथ[13] ये सब मोती । कहँ वह दीप पतँग जहँज्योती ॥
ये सब तरई[14] सेव कराहीं । कहँ वहशशि[15] देखत छिपजाहीं ॥
जबलगसूर[16] कीदृष्टि[17] अकाशू । तबलगशशि[18] नहिंकरै प्रकाशू[19] ॥
सुनके शाह दृष्टि[20] तर नावा । हम पाहुन यहि मँदिर परावा ॥
पाहुन ऊपर हेरै[21] नाहीं । हना राहु अर्जुन परछाहीं ॥

दो० तपै बीज जस धर्ती सूख बिरहके घाम ।
कबसोदृष्टि[22] करबरसहि तनतरवर[23] होयजाम ॥

सेव करैं दासी चहुँ पासा । अप्सर[24] जानु इन्द्र कैलासा ॥
कोउ परात कोउ लोटा लाई । शाह सभा सब हाथ धोवाई ॥
कोइ आगे पनवार बिछावहिं । कोई जेवन लैलै आवहिं ॥
कोई माड़[25] जाहिं धरि जूरी । कोई भात परोसहिं पूरी ॥
कोई लैलै आवहिं थारी । कोइ परसहिं बावन परकारी ॥
पहिरजोचीर[26] परोसहिंआवहिं । दुसरी औरबरन[27] देखरावहिं ॥

रंगबरंग १ नाम जानवर २ नौजवान ३ तीर ४ कमान ५—६ तिरछी निगाह ७ ज्यादा ८ बयान करना ९—१० बड़ीउमर ११ जमीनका मालिक १२ जवाहिरात १३ छोटेनखत १४ चांद १५—१८ सूर्य्य १६ निगाह १७ रोशनी १९ नज़र २०—२२ देखना २१ पेड़ २३ इंद्रलोककी परी २४ रोटी २५ कपड़ा २६ रंग २७ ॥

बरन बरन पहिरहिं हर फेरा । आव झुंड जस अप्सर[1] केरा ॥

दो० पुनिसंधान[2] बहुआनी परसाहिं बूकहिं बूक ।
करे संवार गुसाईं[3] जहां परी कछु चूक ॥

जानहु नखत करहिं सब सेवा । बिनशशि[4] सूरहिं[5] भावनजेवा ॥
बहु परकार[6] फिरहिं हरफेरें । हेरा[7] बहुत न पावा हेरें ॥
परी असूझ सबै तरकारी । लोनी[8] बिना लोन सब खारी ॥
मच्छ छुवहिं आवहिं गड़कांटी । जहांकमलतहँ हाथनआंटी[9] ॥
मनलाग्यो तेहिकमल की दंडी । भावै नहिं एको कनहंडी[10] ॥
सो जेवन नहिं जाकर भूखा । तेहिबिनलाग जानुसब रूखा ॥
अन भावत चाखी बैरागा[11] । पंचामृत जानहु बिषलागा ॥

दो० बैठ सिंहासन गूँजे सिंह[12] चरैं नहिं घास ।
जबलग मिरगन[13] पावैं भोजन करैंउपास ॥

पानलिये दासी चहुँ ओरा । अमृत[14] दोनी भरे कचूरा[15] ॥
पानी देहिं कपूर क बासा । सोनहिं पिये दरशकर प्यासा ॥
दरशन पानदेयँ तौ जीऊँ । बिनरसना[16] नयनहिं सो पीऊँ ॥
पपिहा बूँद सेवातिहं अघा । कौन काज जो बरसै मघा ॥
पुनि लोटा कोपर[17] लै आई । कै निराश अब हाथ धुवाई ॥
हाथ जो धोवैं बिरह[18] को रोरा । सँवरिसँवरि मन हाथ मरोरा ॥
बिधि[19] मिलावजासोमनलागा । जोरहिं तोर प्रेम कर तागा ॥

दो० हाथ धोय जब बैठो लीन्ह ऊबके स्वास ।
सँवरा सोई गुसाईं[20] देय निराशहिं[21] आस ॥

भइज्योनारफिरा खण्डवानी[22] । फिराअरगजा[23] कंकहि बानी ॥
नग अमोल सो थारहिं भरे । राजैं सेव[24] आनके धरे ॥
बिन्ती[25] कीन्हघालगये[26] पागा । येजगसूर[27] सीव[28] मुहिंलागा ॥

परी १ अचार २ राजा ३ चाँद ४ सूर्य्य ५ बहुत तरह ६ देखना ७ तया पद्मावत ८ पहुँचना ९ तरकारी १० बेचाहना ११ शेर १२ हिरन १३ शरबत १४ कटोरा १५ अस्नान १६ सिलफ़ची आफ़तावा १७ सताया १८ ईश्वर १९—२० नाउम्मेद २१ शरबत २२ अतर २३ नज़र २४ अर्ज़ २५ गर्दन २६ सूर्य्य २७ जाड़ा २८ ॥

औगुन भरा कांप यहि जीऊ । जहां भानु[1] तहँ रहा न सीऊ[2] ॥
चारहु खण्ड भानु[3] अस तपा । जेहिकीदृष्टि[4] रयनि[5] मसि[6] छिपा ॥
औभानहिं असनिरमल कला । दरश जो पावै सो निरमला ॥
कमल भानु देखे पै हँसा । औ भातेहिं चाहै परकसा ॥
दो० रतन श्यामतहँ रयनि[10] मसि[11] येरवि[12] तिमर[13] सँहार ।
कर सो दृष्टि[14] औ कृपा दिवस[15] देहु उजियार ॥
सुनबिन्ती[16] बेहँसा[17] सुलतानू सहसहि[18] किरणदिपैजसभानू[19] ॥
ऐ राजा तुइँ सांच जुड़ावा । भइसोदृष्टिअबसीव[20] छुड़ावा ॥
भानु[21] की सेवा जो कर जीव । तेहिमसिकहां कहांतेहिसीव[22] ॥
खाउ देश आपन कर सेवा । और देउँ माड़ो तोहिं देवा ॥
लीकपषान[23] पुरुष[24] करबोला । ध्रुव[25] सुमेरु[26] ऊपरनहिंडोला ॥
फेर बसाव[27] दीन्ह नग सूरू । लाभदेखाय लीन्हचहिमूरू[28] ॥
हँस हँस बोलै टेकै कांधा । प्रीति भुलाय चहै छल बांधा ॥
दो० माया बोल बहुत कर शाह पान हँस दीन्ह ।
पहिले रतन[29] हाथकै चहौ पदारथ[30] लीन्ह ॥
माया मोह बिवश भा राजा । शाह खेल शतरँज कर साजा ॥
राजाहै जबलग शिर घामू । हमतुम घड़िक[31] कराहिंबिश्रामू[32] ॥
दर्पन शाह भीत[33] तहँ लावा । देखौं जोह झरोखे आवा ॥
खेलहिं दोऊ शाह औ राजा । शाह क रुष दर्पनरहि साजा ॥
प्रेमक[34] लुब्ध पियादे पाउं । चलै सौंहि[35] ताके कहँ ठाउँ[36] ॥
घोड़ा दय फ़रज़ी बन्द लावा । जेहिं मुहरा रुखचहै सोपावा ॥
राजा पील देइ शह मांगा । शह[37] दै चाहि मरै रथ स्वांगा ॥
दो० पीलहि पील देखावा भयो दुहूँ चौदांत[38] ।

सूर्य १—३—७—१२—१९—२१—जाड़ा २—२०—२२ निगाह४ रात५—१० सियाही ६—११पाकसाफ़ ८ राजा ९ अंधियारा नाशकर १३ अच्छीनज़र १४ दिन १५ अर्ज़ १६ हँसा १७ हज़ार १८ पत्थर २३ मर्द २४ नामनखत २५ पहाड़ २६लालच २७ जड़ २८ तथा राजा २९ तथा पद्मावत ३० एक घड़ी ३१ आराम ३२ दीवार ३३ भराहुआ ३४ सामने ३५ जगह ३६ शहदेके बाजी जीलनाचाहा ३७ मुक़ाबिल ३८ ॥

राजा चहै बुर्द भा शाह चहै शह मात ॥

सूर[1] देख वै तरई[2] दासी । जहँशशि[3] तहांजायपरकासी[4] ॥
सुना जो हम देहली सुलतानू । देखा आज तपै जस भानू[5] ॥
ऊँच छत्र ताकर जग माहां । जगजोछांह सब वहकीछाहां ॥
बैठ सिंहासन गर्वहिं[6] गूँजा । एक छत्र चारहु खँड भूँजा ॥
निरखि[7] नजाय सौंहि[8] वहपाहीं । सबै नवै कै दृष्टि[9] तराहीं ॥
मन माथे वह रूप न दूजा । सब रुपवन्त कराहिं वह पूजा ॥
हमअस कसाकसौटी आरस[10] । तुहूँ देख कस कंचन[11] पारस ॥

दो० बादशाह देहली कर कित चितौर महँ आव ।
देख लेहु पद्मावत जें न रहैं पछताव ॥

विकस[12] जोकुमुद[13] कहीशशि[14] ठाऊँ।विकसाकमलहुनतरवि[15]नाऊं॥
भइनिशि[16] शशिधौराहर[17] चढ़ी।सोरहकिरिनजैसिविधि[18] गढ़ी ॥
बेहँस झरोखे आय सरेखी[19] । निरख[20] शाह दर्पन महँ देखी ॥
होतहि दरश परस[21] भा लोना । धर्ती स्वर्ग भयो सब सूना ॥
रुख मांगत रुख[22] तासों भयो । भा शहमात खेल मिटगयो ॥
राजा भेद न जानै झांपा[23] । भा विषनारि पवनविनकांपा ॥
राघव[24] कहा कि लाग सपारी[25] । लै पौढ़ावहिं सेज सँवारी ॥

दो० रयनि[26] बीत गइ भोरभा उठा सूर[27] तब जाग ।
जो देखै शशि[28] नाहीं रही करा[29] चित लाग ॥

भोजन प्रेम सो जानिजो जेवा । भँवरहिंरुचहिबासरसकेवा[30] ॥
दरशदेखायजायशशि[31] छिपी । उठाभान[32] जसयोगी तपी ॥
राघव चेत शाह पहँ गयो । सूर्य्य देख कमल बिष भयो ॥
छत्रपती मन कहां सो पहुँचा । छत्र तुम्हार जगत पर ऊंचा ॥

सूर्य १—५—१५ नखत २ चांद तथा पद्मावत ३—१४ रोशनी ४ गरूर ६ देखना ७—२० सामने ८ निगाह ९ आईना १० सोना ११ खिलना १२ कोंकाबेली १३ रात १६ महल १७ ईश्वर १८ होशियार १९ पारस पत्थर २१ मुँह २२ छिपा २३ नामभाट २४ सुरीहया २५ रात २६ सूर्य तथा बादशाह २७—३२ चांद तथा पद्मावत २८—३१ ध्यान २९ कमल ३० ॥

पाट[1] तुम्हार देवतन पीठी। स्वर्ग[2] पतालरयनिदिनदीठी[3]॥
छोहते[4] पलहहिं[5] उघटे रूखा। कोहतें[6] महिसायर[7] सब सूखा॥
सकल[8] जगत तुम नावै माथा। सबकर जियन तुम्हारे हाथा॥
दो० दिनन नयन लावहु तुम रयनि भाव नाहिं जाग।
अब निचिन्तअससोये कहँ बिलम्ब अस लाग॥

देख एक कौतुक[9] हों रहा। रहअन्तरपट[10] पै नाहिं अहा॥
सरवर[11] एक देख मन सोई। रहा पानि अब पानि नहोई॥
स्वर्ग[12] आय धर्ती महँ छावा। रहा धर्ति पै धरत न आवा॥
तिन्हमहँपुनि इकमन्दिरऊँचा। करन[13] अहा पैकरनाहिंपहुँचा॥
तेहि मण्डफ मूरत मन देखी। बिनतनबिनजिवजायाबिशेखी॥
पूरनचन्द्र[14] होय जनु तपी। पारसरूप दरश दै छिपी॥
अबजहँ चतुर्दशी[15] जिव तहां। भान अमावस पावै कहां॥
दो० बिकसा[16] कमलस्वर्ग[17] निशि[18] जनहुँलौंकगाबीज।
यहू राहुभा भानहिं[19] राघव मनहिं पतीज[20]॥

अति बिचित्र देखों सो ठाढ़ी। चितकीचित्र लीन्हजिवकाढ़ी॥
सिंहलङ्क[21] कुम्भस्थल[22] जोरू। आंकुश नाग महावत मोरू॥
तेहिऊपरभाकमलबिकासू[23]। फिरअलि[24] लीन्हपुहुप[25] रसबासू॥
दोहुँ खंजन[26] बिच बैठो सुवा। दुइजका चन्द धनुषलै उवा॥
मिर्ग[27] देखायगवन फिर गया। शशि[28] भानाग सूर्य्यभादिया॥
सुठ ऊँचे देखत वह उचका। दृष्टि[29] पहुँचकर[30] पहुँचनसका॥
पहुँचा[31] भयो दृष्टि गत भई। गहि[32] नसका देखत वह गई॥
दो० राघव हेरत[33] जोगयो अछत हिये समाध।
वह[34] तन राघव बाघभा सके न कै अपराध॥

तखत १ आसमान २—१२ निगाह ३ मेहरबानी ४ हराहोना ५ गुस्सा ६ तलाव ७—११ सब ८ तमाशा ९ परदा १० हाथ १३ चौदहींरातका चाँद १४—१५ खिलना १६—२३ आसमान १७ रात १८ सूर्य १९ मुस्काना २० चीताकी कमर २१ हाथी २२ भँवरा २४ फूल २५ ममोला २६ हिरन २७ चांद २८ निगाह २९ हाथ ३० देखतेही चाहा कि आप कोपहुँचाऊँ ३१ पकड़ना ३२ देखना ३३ तदवीरकाम न आई शेरकीतरह गुस्सा किया ३४॥

पहिले पँवर[1] नांघ सो आई। ठाढ़े भये[2] राज पहिराई ॥
सो तुषार[3] तीस गज[3] पावा। दुन्दुभि[4] औ चौघोड़ी[5] देचावा ॥
दूजे पँवर दिया असवारा। तीजे पँवर नग दीन्ह अपारा ॥
चौथे पँवर दै द्रव्य करोरी। पँचयें दुइ हीरा की जोरी ॥
॥ दो० ॥ छठयें पँवर माड़ो दियो सतयें दीन्ह चँदेर।
॥ सात पँवर नांघत नृपति लेगयो बांध गरेर ॥
यहि जग बहुत नदी जल जोड़ा। कौन पार भा कौन न बूड़ा ॥
कौन अन्ध भा आग न देखा। कौन भयो डीठार सरेखा ॥
ब्याध भई राजा कहँ माया। तज कैलास परी भुइँ पाया ॥
जेहि कारन गढ़ कीन्ह अँगूठी। कित छोड़े जो आवे मूठी ॥
शत्रुहि[10] कोउ पाव जो बांधे। छोड़ आप कहँ करै बियाधे[11] ॥
चारा मेल धरा जस माछू। जल से त्रिक समरै जस काछू[12] ॥
शत्रुहि[13] नाग पेटारी मूँदा। बांधा मिरग[14] पैग नहिं खूँदा ॥
॥ दो० ॥ राजा धरा आनके तन पहिरावा लोह।
॥ ऐसो लोह सो पहिरे चेत[15] श्याम की ओह ॥
पांयन गाढ़ी बेड़ी परी। सांकर ग्रीव[16] हाथ हथकड़ी ॥
औ धर बांध मँजूसा[17] मेला। ऐसो शत्रु जनु होय दुहेला[18] ॥
सुनि चितौर महँ पड़ा बखाना[19]। देश देश चारहुं दिश जाना ॥
आज नरायण फिर जग खूँदा[20]। आज सो सिंह[21] मँजूसा मूँदा ॥
आज खसे[22] रावण दशमाथा। आज कान्ह[24] काली फणनाथा ॥
आजहिं प्रात कंस कर ढीला। आज मीन[25] शंखासुर लीला ॥
आज परे पाण्डव[27] बंद माहीं। आज दुशासन[28] उतरी बाहीं ॥
॥ दो० ॥ आज धरा बलराजा मेला बांध पतार।

दरवाज़ा १ घोड़ा २ हाथी ३ डंका ४ बग्घी ५ राजा ६ होशियार ७ जिसलिये ८ घेरना ९ दुशमन १०—१३ दुख ११ कछुवा १२ पिरखँचा हिरन नहीं भागता १४ ग़फलत का फल उठाये १५ गर्दन १६ पिंजरा १७—२९ दुखी १८ बयान १९ सखती २० शेर २१ गिरना २२ श्रीकृष्ण जी २४ मछली २५ नाम दैत्य २६ राजा युधिष्ठिर २७ नाम बहादुर २८ ॥

आज सूर[1] दिनअथवाभाचितौरअँधियार ॥

द्वैन सुलेमां[2] के बँद परा । जहँ लग देव सबहिं सतहरा ॥
शाहलीन्ह गाहिकीन्ह पयाना[3] । जोजहँशत्रु[4] सो तहांबिलाना ॥
खुरासान[5] औ डरा हरेव[6] । कांपा विदुर[7] धरा अस देव ॥
बंध उदयगिरि[8] धौलागिरी[9] । कांपी सृष्टि[10] दुहाई फिरी ॥
उवा सूर भइ सामहि करा । पालाफूट पानि होय ढरा ॥
ढँडवी दाँड दीन्ह जहँ ताईं । आय दण्डवत कीन्ह सवाईं ॥
इंद्रदांड[11] सबस्वर्गहि[12] गई । भूमि[13] जोडोली इस्थिर[14] भई ॥
दो॰ बादशाह देहिली महँ आय बैठ सुख पाट[15] ।
जोहिंजेहिं शीश[16] उठावा धर्त्तीधरी ललाट[17] ॥

हबशी[18] बन्द वान जिवबधा[19] । तेहि सौंपा राजा अगदहा[20] ॥
पीनि पवन कहँ आशा करेई । सो जिय बधिक[21] सांसबहुदेई ॥
मांगत पान आग ले धावा । मुँगरी एक आन शिर लावा ॥
पानी पवन तुइँ पियासोपिया । अब को आन देय पानिया ॥
तब चितौर जिय रहा न तोरे । बादशाह हैं शिर पर मोरे ॥
जोहि हँकारेही[22] उठ चलना । सो कितकरोहोय कर[23] मलना ॥
करे सो मीत गाढ़ बँद जहां । पान फूल पहुँचावे तहां ॥
दो॰ जल[24] अंजलमहँ सोवा समुद्र न सँवराजाग ।
अबधर काढ़ा मच्छ ज्यों पानी मांगत आग ॥

पुनिचल दुइ जन[25] पूंछन धाये । वै सठ दग्ध[26] आय देखराये ॥
तुइँ मेरिपुरी[27] न कबहूं देखी । हाड़ जो बिथरे देखन लेखी ॥
जानी नहिंकि होब अस मुहूं । खोजे खोज न पावब कहूं ॥
अब हम उतर[28] देहुरे देवा । कौने गर्व[29] न मानी सेवा ॥

सूर्य १ नामबादशाह २ कूच ३ दुश्मन ४ नाममुल्क ५ मे ६ तक दुनिया १० आवाज़जानाशी ११ आसमान १२ ज़मीन १३ क़ायम १४ तख़्त १५ शिर १६ माथा १७ हबशी ग़ुलाम क़ैदख़ाना १८ जल्लाद १९ जलाहुवा २० जानमारनेवाले २१ बोलाना २२ हाथ २३ पानीमरेंपियामा २४ आदमी २५ आग २६ यमपुरी २७ जवाब २८ ग़रूर २९ ॥

तुइँ असबहुत गाड़खन मूंदी। बहुर[1] न निकस बारहोयखूंदी॥
जो जस हँसै सो तैसे रोवा। खेलै हँसै अभैं भुइँ सोवा॥
जस अपने मुंह काढ़े धुवां। चाहेसि परा नर्कके कुवां॥
दो० जरेसि मरेसि अब बांधातैसो लाग तोहिदोष[2]।
अबहुँ मांग पद्मिनी जो चाहेसि भा मोष[3]॥
पूंछहिं बहुत न बोला राजा। लीन्हेसि जियेंमीच[4] मनसाजा॥
खन[5] गड़वा चरनहिंले राखा। नित उठ दग्ध[6] होयनौलाखा॥
ठाँव[7] सोसांकर औ अँधियारा। दूसर करवट लेइ न पारा॥
पीछे सांप आय तहँ मेली। बांका आन छुवावाहिं हेली[8]॥
धरहिं सँदासी[9] छूटै नारी। रात दिवस[10] दुखपहुँचैभारी॥
जो दुख कठिन[11] न सहैपहारू। सोअँगवा[12] मानुषशिरभारू॥
जो शिर परै आय सो सहै। कछु न बिसाय काह सों कहै॥
दो० दुख जारै दुख भूजै दुख खोवै सब लाज।
काजहि[13] चाहअधिकदुखदुखीजानजेहिबाज॥
पद्मावत बिन कंत दुहेली[14]। बिन जलकमलसूखजसबेली॥
गाढ़ी प्रीति सो मोसों लाई। देहिलीजाय निचिंत होयछाई॥
कोउ न बहुरा पुनि हर देशू। केहि पूंछहुं को कहै सँदेशू॥
जो कोइ जाय तहां कर होई। जो आवे कछु जान न सोई॥
अगम पंथ[15] पिय तहांसिधावा। जोरेगयोसो बहुर[16] न आवा॥
कुवांढार जल जैसो बिछोवा। डोलभरा नयनहिंधन[17] रोवा॥
लीजर[18] भईनाह[19] बिनतोहीं। कुवां परीधर काढ़ेसि मोहीं॥
दो० नयन डोल भर ढारै हिये[20] न आगबुझाय।
घड़ीघड़ी जियआवे घड़ी घड़ी जिवजाय॥
नीर गँभीर[21] कहां हो पिया। तुमबिन फाटै सरवर[22] हिया[23]॥

फेर १ पाप २ छूटना क़ैदसे ३ मौत ४ तगपिंजरामेंकैदकिया ५ जलाना ६ जगह ७ डोमें ८ संसी ९ दिन १० भारी ११ उठाना १२ दुखकोवहजानैजिसपरपड़े १३ दुखी १४ मुशकिलराह १५ लौट १६ पद्मावत १७ रस्सी १८ ख़ाविन्द १९ छाती २०—२३ पानी गहिरा २१ तालाब २२॥

नावों हेराय विरहके हाथा। चलत सरोवर[1] लीन्ह न साथा॥
चलन जो पंख[2] कंत कर नीरा। नीर कठिन कोउ आव न तीरा॥
कमल सूख पखुरी बेहिरानी[3]। गलगलके मिल छार[4] हेरानी[5]॥
विरह रेत कंचन[6] तन लावा। चून चूनके खेह[7] मिलावा॥
कनक जो कन कन कै बेहिराई[10]। पिय पै छार[11] समेटो आई॥
विरह पवन चहि छार शरीरू। अरहि आनमिलावहु नीरू[12]॥
दो० अबहुं जिआवहु कै मया बिथुरी छार समेट।
नइ काया[13] अवतार[14] नवदर्श तुम्हारे भेंट॥
नयन सीप मोती तस आंसू। तेत[15] तेल परहिं करैं तन नाशू॥
पदक पदारथ[16] पद्मिन नारी। पिअबिन भइ कौड़ीबर[17] बारी॥
सँगले गयो रतन सब ज्योती। कंचन[18] कया कांच भइ पोती॥
बूड़ तहों दुख दग्ध[19] गँभीरा। तुम बिन कंत लावको तीरा[20]॥
हिये[21] विरह होय चढ़ा पहारू। जल यौबन सहसकै न भारू॥
जलमहँ अगिनि सो जान बिछूना। पाहन[22] जरहिं होहिं सब चूना॥
कौने यतन कंत तुम पाऊँ। आज आगमहों जरत बुझाऊँ॥
दो० कौनि खण्डहों हेरो[23] कहां बन्धुहो[24] नाह[25]।
हेरे कतहुँ न पाऊं बसे तु हिरदय मांह॥
नागमती पियपिय रटलागी। निशि[26] दिन तप पैम छ ज्यों आगी॥
भँवर भुजंग कहां हो पिया। हम ठेगा[27] तुम कान न किया॥
भूल न जाहि कमलके पाहां। बांधत विलंब न लागै नाहां[28]॥
कहां सो सूर[29] पासहों जाऊँ। बांधा भँवर छोर कै लाऊँ॥
कहां जाऊँ को कहै सँदेशा। जाऊँ सो तहँ योगिन के भेशा॥
फार पटोर[30] सो पहिरों कंथा[31]। जो मोहिं कोउ देखावै पंथा[32]॥

तालाब १ जानवर परिन्द २ अलग ३—१० चूर ४—७—११ मिलना ५ सोना ६—१८ रेज़ारेज़ा ८ पानी १२ बदन १३ पैदाहोना १४ गर्म १५ लाल जवाहिर १६ मोल १७ आगमारी १६ किनारा २० छाती २१ पत्थर २२ देखना २३ कैद २४ खाविन्द २५—२८ रात २६ दुश्मनी २७ सूर्य २६ सारी ३० गुदड़ी ३१ राह ३२॥

वह पँथ[1] पलकन जाउँ बोहारी। शीश[2] चरणके चलों सिधारी॥

दो० को गुरु अगवा होयसखि मोहिं लावे पंथ मांह।
तन मन धन बल बलकरों जोरे मिलावे नांह[3]॥

के कै कारन रोवै बाला। जनु टूटहिं मोतिन के माला॥
रोवत भई न श्वास सँभारा। नयन चुवाहिं जनु उरतीधारा॥
जाकर रतन परे पर हाथा। सो अनाथ किमि जीवै नाथा॥
पांच[4] रतन वह रतनहि लागी। वेग[5] आव पियरतन सभागी॥
रहीन ज्योति[6] नयन भयेखीनी। श्रवन[7] न सुनों बैन[8] तुमलीनी॥
रसना[9] रसनहिं एको भावा। नासिक[10] औरबासनहिं आवा॥
तचतचतुमबिन अंग[11] मोहिंलागी। पाचौं[12] दगध बिरह अबजागी॥

दो० बिरह सोजारभस्मके। चाहै उड़ावा खेह[14]।
आय सोधत पियमिलवे करलेवे नइनेह॥

पियबिन व्याकुलव्यापी नागा[15]। बिरह तपन श्याम भयेकागा॥
पवन पानि कहँ शीतल पीउ। जेहि देखे पल है[16] तन जीउ॥
कहँसोबासमलयागिरि[17] नाहां[18]। जेहि कलपरत देतगलबाहां॥
पद्मिन ठगनी भइ कित साथा। जेहितें रतन परा परहाथा॥
होय बसंत आवहु पिय केसर। देखे फिर फूलै नागेसर[19]॥
तुमबिन नाहँ[20] रहै हिय[21] तचा। अबनाहिं बिरह गडुर पै बचा॥
अबअँधियारपरामसि[22] लागी। तुमबिन कौन बुझावे आगी॥

दो० नयनश्रवन[23] रसरसना[24] सबैखीन[25] भयेनाहँ[26]।
कौनसो दिन जेहि भेंटके आय करै सुख लाहँ॥

कंभलनीर[27] राय देव पालू। राजा केर शत्रु[28] हिय[29] शालू॥
उनपै सुनी कि राजा बांधा। पाछिल बैर सँवर छल सांधा॥

राह १ शिर २ खाविन्द ३—१८—२०—२६ ताक़तदेखने,सुनने, सूंघने, बोलने, छूने की ४—१२ जल्द ५ रोशनीकम ६ कान ७—२३ आवाज़ ८ ज़बान ९—२४ नाक १० बदन ११ आग-१३ धूर १४ रानी नागमती-१५—१९ हराहोना १६ चन्दन १७ दिल २१ सियाही २२ कमज़ोर २५ नाममुल्क २७ दुशमन २८ दिल दुखदेनेवाला २९॥

शत्रु शाल[1] तब न्योरे सोय । जो घर आव शत्रु[2] की जोय ॥
दूती एक वृद्ध तेहि ठाऊँ[3] । ब्राह्मन जाति कुमोदन नाऊँ ॥
वह हँकार[4] के बीरा दीन्हा । तोरे बल मैं बलजिव कीन्हा ॥
तुइँ कुमदनी कमल के नेरे । स्वर्ग[5] जो चांद बसै तोहिहेरे[6] ॥
चितौर महँ जो पद्मिन रानी । करबल छल सो दे मुहिं आनी ॥
दो० रूप जगत मन मोहन जेहि पद्मावत नाउँ ।
कोटि द्रव्य तुहिं देहों आन करेसि इक ठाउँ ॥
कुमदिन कहा देख हों सोहों । मानुष कहा देवता मोहों ॥
जस कामरू चमारिन लोना । कौनहिं छल पाढ़त के टोना ॥
विषहर[7] नाचहि पाढ़त[8] मारी । औधर मूंदे घाल पेटारी ॥
वृक्ष[9] चलै पाढ़त[10] के बोला । नदी उलट बहि परब्रत डोला ॥
पाढ़त हरि पण्डित मति घेरी । औरकौ अन्ध गूंग औ बहिरी ॥
पाढ़त ऐसे देवतहिं लागा । मानुष का पाढ़त सों भागा ॥
पाढ़त के हठ काढ़त पानी । कहां जाय पद्मावत रानी ॥
दो० दूती बहुत पैंच[11] कै बोली पाढ़त बोल ।
जाकर सत[12] सुमेरु है लागे जगत न डोल ॥
दूती बहुत पकावन सांधी । मोतिन लड़ू[13] खरोरा बांधी ॥
माठ पेराकैं पेठें पापर । पहिर बूझ दूती के कापर ।
लै पूरी भरडाल अछूती । चितौर चली पैंच[14] कै दूती ।
वृद्ध बैस जो बांधे पाऊं । कहां सो यौबन कित बोसाऊं[15] ।
तन बूढ़ा मन बूढ़ न होई । बल न रहा लालच जे होई ।
कहां सो रूप जगत[16] सब राता[17] । कहां सो गर्व[18] हस्ति[19] जस माता ।
कहां सो तीष[20] नयन तन ठाढ़ा । सबै मार यौबन पुनि काढ़ा ।
दो० मुहमद वृद्ध जो नइ चलैं काह चलैं भुइं टोय ।

दुश्मन दुखदेनेवाले ने चाहा कि जैसे बनपड़े १ दुशमन २ जगह ३ बोलाया ४ आसमान ५ नज़र ६ सांप ७ मन्त्र ८—१० पेंड़ ९ कोलमज़बूत ११—१४ ईमान १२ मोतीचूरके १३ लड्डूवा खस्तेदार १५ दुनियां १६ लाल १७ गरूर १८ हाथी १९ कटोली २० ।

यौबन रतन हेरान है मग[1] धर्त्ती महँ होय ॥

आय कुमोदनि चितौर चढ़ी। जोहन[2] मोहन पाढ़त पढ़ी ॥
पूछ लीन्ह रनवास बरोठा। पैठ पँवर[3] भीतर बहु कोठा ॥
जहँ पद्मावत शशि[4] उजियारी। लै दूती पकवान उतारी ॥
हाथ पसार धाय के भेंटी। चीन्हीं नहिं राजाकी बेटी ॥
हौं ब्राह्मण जेहि कुमुदन नाउँ। हम तुम उपजी[5] एकहि ठाउँ[6] ॥
नाउँ पिता[7] कर दूबे बेनी। सो पुरोहित गन्धर्प[8] सेनी ॥
तुम बारी तब सिंहल द्वीपा। लीन्हें दूधि पियायों सीपा ॥

दो० ठाउँ[9] कीन्ह मैं दूसर कुम्भल नीरहि आय।
सुनितुमकहँ चित्तौर महँ कहूँ कि भेटों जाय ॥

सुनि निश्चै[10] नैहरकी गोई[11]। गरे लाग पद्मावत रोई ॥
नयनगगन[12] रबि[13] बिनअँधियारे।शशि[14] मुखआंशुटूटजनुतारे॥
जगअँधियारगहनादिनपरा। कबलगशशि[15] नखतहितसभरा॥
माय बाप कित जन्मी बारी। ग्रीव[16] तोड़ कितजन्मननारी ॥
कितबिवाहदुखदीन्हदुहेला[17]।चितौरपंथ[18] कन्त[19] बंद[20] मेला॥
अबयहिजियनचाहभलमरना। भयो पहार जन्म दुख भरना ॥
निकस नजाय निलज यहजीउ। देखों मँदिर सूनबन्दपीउ ॥

दो० कुहुकजोरोवैशशि[21] नखत[22] नयनहिंरात[23] चकोर।
अबहूँ बोले तहँ कुहुक चातृक[24] कोकिल मोर ॥

कुमुदिन[25] कण्ठलाग सुठरोई। पुनिलै रोगडार[26] मुख धोई ॥
तुईशशि[27] रूपजगतउजियारी।सुखनझांपनिशि[28] होय अँधियारी॥
सुन चकोर कोकिल दुखदुखी। घुँघची भई नयन करमुखी ॥
केतो धाय मरै कोइ बाटा। सोइपावै जोलिखालिलाटा[29] ॥

शायद १ बहुततरहके मन्त्र २ दरवाज़ा ३ चाँद ४—१४—१५ पैदाहोना ५ जगह ६ बाप ७ पद्मावत का बाप ८ दूसरा ख़ाविन्द ९ यक़ीन १० गुइयाँ ११ आसमान १२ सूर्य १३ गर्दन १६ भारी १७ राह १८ खाविन्द १९ क़ैद २० चाँद तथा पद्मावत २१ तथासखी २२ लाल २३ पपीहा २४ नामदूती २५ आफ़ताब २६ चाँद २७ रात २८ माथा २९ ॥

जोविधि[1] लिखा आननहिं होई। कित धावै कित रोवै कोई॥
किनको इच्छा[2] कर औ पूजा। जो विधिलिखाहोयनहिंदूजा॥
जेते कुमोदनि[3] वचन[4] करेई। तस पद्मावत उतर[5] न देई॥
दो० सेंदुरचीर मैलतस सूख रही तस भूल।
जेहिश्रृँगारपियतजि[6] गयाजन्मनपहिरेफूल॥

तब पकवान उघारा दूती। पद्मावत नहिं छुई अछूती॥
मोहिं अपने पियकेर खँभारू[7]। पान फूल कसहोय अहारू॥
मोकहँ फूलभये जस कांटी। बांटदेहु जो चाहेसि बांटी॥
रतनछुवे जेहि हाथहिं सेती। औ नछुओं सो हाथ सकेती॥
दमक रङ्गभय हाथ मजीठी[8]। मुक्ता[9] लेउँ पै घुँघची दीठी॥
नयन करमुखी राती[10] काया। मोतीहोहिं घुँघची जेहिछाया॥
असके ओछ नयन हत्यारे। देखतगा पिउ गहे[11] न पारे॥
दो० कातोर छुवों पकवानमैं गुड़कडुवा घिउरूख।
जेहिमिलहोतसवादरस लैपिय गयो सुभूख॥

कुमुदनि[12] रही कमलके पासा। बैरी सूर्य्य[13] चांदकी आसा॥
वह कुँभलान रहीभै चूरू[14]। बिकस[15] रयनि[16] बातहिंकरभोरू॥
कसतुइँ बारि[17] रहेसिकुंभलानी। सूख बेल जस पाव न पानी॥
अबहीं कमल कली तुम बारी। कोमल[18] बैसउठतपौनारी[19]॥
बेनी[20] तोर मैल शिर रूखी। सरवर[21] मांह रहेसिकससूखी॥
पान बेल विधि[22] कया[23] जमाई। सींचत रही तोह पलहाई[24]॥
कर श्रृँगार मुख फूल तँबोला। बैठ सिंहासन झूलहिंडोला॥
दो० हार चीर नित पहिरो शिरकी करो सँभार।
भोगमानदिन दशलिये यौवनगयेन वार[25]॥

ईश्वर १ चाहना २ नामदूती ३—१२ बात ४ जवाब ५ छोड़ना ६ दुख ७ लाख ८ मोती ९ लालबदन १० पकड़ न सके ११ तथा राजा १३ मुरझाई हुई १४ खिलना १५ रात १६ लड़की १७ मुलायमउमर १८ छातीउठतीहुई १९ चोटी २० तालाब २१ ईश्वर २२ बदन २३ हरी २४ वक्त २५॥

बिहँस जो कुमुदनियौबन कहा। कमल न बिकसा[1] सम्पुटरहा॥
ऐ कुमुदनि यौबन तेहि माहां। जो आछेपिय की सुख छाहां॥
जाकर छत्रसो बाहेर छावा। सो उजार घरकौन बसावा॥
अहा जो राजा रतन अँजूरा[2]। केहकासिंहासनकेहकपटोरा[3]॥
को पलंग को पौढ़ै माढ़े[4]। सोवन हार परा बंद गाढ़े॥
चहुँदिश यह घरभा अँधियारा। सब शृंगारलै साथ सिधारा॥
काया[5] बेल जान तब जामी। सींचन हार आवघरस्वामी[6]॥
दो० तौलहि रहों झुरानी जौलहिआवसो कन्त[7]।
यहीफूल यह सेंदुर होय सो उठै बसन्त॥
जन तुइँ बारि करेसि असजीउ। जौलहि यौबन तौलहिपीउ॥
पुरुष[10] संग आपन कहु केरा। एक कुहायदुसर सों हेरा[11]॥
यौबन जल दिन दिन जसघटा। भँवर छिपान हंसपरगटा[12]॥
शुभ्र[13] सरोवरजो लहि नीरा[14]। बहु आदर पंखी बहुतीरा[15]॥
नीर[16] घटे पुनि पूँछ न कोई। परस[17] जोलीजहाथरहिसोई॥
जबलगकालिंद[18] होयबिरासी[19] पुनिसुरसरि[20] होयसमुद्रपरासी।
यौबन भँवर फूल तन तोरा। बर्धे पँछ जसहाथ मरोरा॥
दो० यौबन[21] कृषणतन करन[22] मया[23] गोतनहिं साथ।
छलके जायहि बानपै[24] धनुष[25] छांड़दुइ हाथ॥
जोपिय रतनसेनमोर राजा। बिनपिय यौबन कौने काजा॥
जोनाहिं जिव तो यौबन कहे। बिन जिव यौबन काहसोअहे॥
जो जिव तौ यहि यौबन भला। आपहि जैसाकरै निरमला[26]॥
कुलकरपुरुष[27] सिंहे[28] जेहिकेरा। तेहिथल[29] कैसिसियारबसेरा॥
हिया[30] फाड़ कूकुर तेहि केरा। सिंह तजिसियार मुखहेरा[31]॥

खिलना १ रोशनी २ कपड़ा ३ मोढ़ा ४ बदन ५ खाविन्द ६—७ लड़की ८ जवानी ९ मर्द १० देखना ११ जाहिर १२ भराहुवा तालाब १३ पानी १४ किनारा १५ पानी १६ मुख १७—१९ यमुना तथा जवानी १८ गंगा तथा बुढ़ापा २० जवानी २१ नामराज़ादानी २२ मुहब्बत २३ तीर २४ कमान २५ साफ़ २६ खाविन्द व्याहाहुवा २७ शेर २८ जगह २९ छाती ३० देखना ३१॥

यौवन नीर[1] घटेका घटा । सतके[2] बेर न जायहिये[3] फटा ॥
सघन[4] मेघके श्याम[5] वरीसहिं । यौवन नयेतरवरे[6] ह्वैदीसाहिं ॥

दो० रावणपाप जो जिवधरा दोउ जगत मुँहकार ।
राम सत्य जो मन धरा ताहि छलै कोपार ॥

कित पावसि पुनि यौवनराता[7] । मैंमत[8] चढ़ा श्यामशिरछाता ॥
यौवन विना वृद्धि हो नाउँ । विन यौवन थाकैसब ठाउँ ॥
यौवन हेरत मिलै न हेरा । तेहिपुनिजाहिंकरहिंनहिंफेरा ॥
अहहिंजोकेशनग[10] भँवरजोबसा । पुनिबक[11] होहि जगत सबहँसा ॥
सेंवर सेवन चेत कर सुवा । पुनि पछतास अंत हो भुवा ॥
रूप तोर जग ऊपर लोना[12] । यहि यौवनपाहुन जलसोना ॥
भोग विलास केर यह बेरा । मानलेहु पुनिको केहि केरा ॥

दो० उठत कोंप जसतरवर[13] तसयौवन तोहिरात[14] ।
तौ लह रङ्ग लहो रच पुनि सो पियरहो पात ॥

कुमुदनि[15] बैन[16] सुनतही जरी । पद्मिन हिये[17] आगजनु परी ॥
रङ्ग ताकरहों जारों रचा । आपन तज[18] जोपराये लचा ॥
दूसर करे जाय दुइ[19] बाटा । राजा दुइ नहोहिं इकपाटा[20] ॥
जेहि जियप्रेम प्रीतिदृढ़[21] होई । सुख सुहाग सों बैठो सोई ॥
यौवन जाउ जाउ सो भँवरा । पियाकीप्रीतिनजायजोसँवरा ॥
यहिजगजोपियकरहिंनफेरा । वहजगमिलहिंजोदिनदिनमेरा[22] ॥
यौवन मोर रतन जहँ पीउ । बल[23] सो पियपर यौवन जीउ ॥

दो० भरथरि[24] बिछोह[25] पिंगला[26] आहकरत जिवदीन्ह ।
हों पापिन जो जियत हों यही दोष[27] हम कीन्ह ॥

पद्मावत सो कौन रसोई । जहँ प्रकार[28] दूसर नाहिं होई ॥
रस दूसर जेहि जीभहि बैठा । सो जाने रस[29] खटा औमीठा ॥

पानी १ ईमान २ छाती ३ बादल ४ खाविन्द ५ पेड़ ६ लाल७ मस्त ९ मुकाम८ सांप १० बगुला ११ खूबसूरत १२ पेड़ १३ लाल १४ नामदूती १५ बात १६ दिल १७ छोड़ना १८ दूसरराह तथा नरक १९ तख्त २० मज़बूत २१ मुलाक़ात २२ कुरबान २३ नामराजा २४ जुदाई २५ नामरानी २६ पाप २७ दुइतरह २८ मज़ा २९ ॥

भँवर बास बहु फूलहिं लेई। फूल बास बहु भँवर न देई॥
तुई रस पुरुष[1] न दूसर पावा। तेहिं जाना जेहिं लीन्ह परावा॥
इकचुल्लू रसभर नहिं हिया[2]। जौ लहि नाहिं फिर दूसरपिया॥
तोर यौवन जस समुद्र हिलोरा। देख देख जिय बूड़े मोरा॥
रंग और नहिं पाई वैसे। जन्म[3] और तुई पावत कैसे॥

दो० देख धनुष तोर नयना मोहिं लागा विष बान।
वेहँस[4] कमल जो मानै भँवर[5] मिलाऊँ आन॥

कुमदनि[6] तुईं वैरिन नाहिं धाई। मोहिंससि[7] बोलछला बेसिआई॥
निरमल जगत नीर[10] करनामा। जोमसि[11] परैहोयसोश्यामा[12]॥
जहँवां धर्म पाप नहिं दीसा। कनक[13] सुहागमांझजससीसा॥
जो मसि परै होयशशि[14] कारी। सो हँसलायदेहोसि मोहिंगारी॥
कापर महँ न छूटमासि अंकू[15]। सोमसिलायमोहिंदेसकलंकू[16]॥
श्याम भँवर मोर सूरज करा। और जो भँवर श्याम मसिभरा॥
कमल भँवर रवि[17] देखे आंखी। चन्दन पास न बैठे मांखी॥

दो० श्याम समुद्र मोर निरमल[18] रतनसेन जगसेन[19]।
दूसर सर[20] जो कहावै सो बिलाय जस फेन॥

पद्मिन पुनि मसि बोल न बैना[21]। सो मसि देख दुहूँ तोरनयना॥
मसि शृंगार सब काजर बोला। मसकबुंदतिलसोंहिंकपोला[22]॥
लोना[23] सोई जहां मासि रेखा। मसिपुतरिन तेहिसेजगदेखा॥
जोमसिघाल नयनदुहुँ लीन्हीं। सो मसि फेर जाय नहिंकीन्हीं॥
मासिमुद्रा[24] दुइ कुच[25] उपराहीं। मसि भँवराजसकमल भवाहीं॥
मसि केशहि[26] मासिभौंह उरेहीं। मसिविनदशन[27] शोभनहिंदेहीं॥
सोकस श्वेत[28] जहांमसिनाहीं। सोकसपिंड[29] न जहँपरछाहीं॥

मर्द १ दिल २ तथा बुढ़ापा ३ हँसना ४ तथा दूसराखाविन्द ५ नामदूती ६ कारख ७ दाग़ ८ पाकसाफ़ ९—१८ पानी १० सियाही ११ काला १२ सोना १३ चाँद १४ दाग़ १५ ऐब १६ सूर्य १७ दुनियाँका देखनेवाला १८ बराबरी २० बात २१ गाल २२ खूबसूरत २३ छाप २४ छाती २५ बाल २६ दांत २७ सफ़ेद २८ बदन २९॥

दो० अस देवपाल राउ तस छत्रधरा शिर फेर ।
चितौर राज विसरगा गयो जो कंभल[1] नेर ॥

सुन देवपाल जो कंभल नेरी । पंकज[2] नयन भौंह धन[3] फेरी ॥
शत्रु[4] मोर पिय कर देवपालू । सो कित पूचासिंह सर[5] भालू[6] ॥
दुखन भरातन जेनन केशा । तेहेक सँदेशासुनावासि वेश्या ॥
सोननदी अस मोर पियगरवा । पाहन[7] होयपरै जो हरवा[8] ॥
जेहि ऊपर अस गरुआ पीउ । सो कस डोलाये डोलै जीउ ॥
फेरत नयन चीर[9] सो छूटी । भइ कूटन कुटनी तस कूटी ॥
नाक कान काटी[10] मसिलाई । मूड़ मूड़के गदहे चढ़ाई ॥

दो० मुहमद गरू जो विधि[11] लिखी का कोई तेहि फूँक ।
जेहिक भार जगथिर[12] रहा उड़ेनपवनके भूँक ॥

रानी धर्म सार[13] पुनि साजा । बन्द मोष जेहिं पावहिं राजा ॥
जहँ तक परदेशी चलिआवा । अन्नदान औ पानि पियावा ॥
योगीयती आवजित कंथी[14] । पूछी पिया जानकोउ पंथी[15] ॥
दानजो देत बांह भइ ऊँची । जाय शाहपहँ बात जोपहुँची ॥
पातुरिइकहुतयोगसुआंगी[16] । शाह[17] उघारे हतवह मांगी ॥
योगिनवेष वियोगिन कीन्हीं । सुनके शब्द[18] मोलततकीन्हीं ॥
पद्मिन पहँ पठई कर योगिन । वेग[19] आनकराविरहवियोगिन ॥

दो० चित्र[20] कला मनमोहन परकाया परवेश ।
आयचढ़ी चित्तौरगढ़होय योगिनकरभेश ॥

खण्ड चालीसवां वेश्यागवन

मांगत राज बार[21] चल आई । फेर चेरि[22] यह बात जनाई ॥
योगिन एक बारहै[23] कोई । मांगै जैसि वियोगिन[24] होई ॥

नामपुल्क १ कमल २ पद्मावत ३ दुश्मन ४ शेरकीबराबरी ५ रीछ६ पत्थर ७ ब-हिशान। ८ लहँगा ९ मियाहो १० ईश्वर ११ क़ायम १२ खैरातख़ाना १३ वेषवाले १४ मुसाफ़िर १५ मक्कार १६ शाहनेबोलाया १७ पद्मावतकोलाव इनाम पावेगो १८ फन्द १९ तसवीर २० दरवाज़ा २१—२३फेरफार २२ दुखी २४ ।।

अबहीं नव[1] यौबनतप लीन्हीं। फारपटोरा[2] कन्था[3] कीन्हीं॥
बिरह बिभूत जटा बैरागी। छाला कांध जाप[4] कँठलागी॥
मुद्रा[5] श्रवण[6] नहीं थिर[7] जीउ। तन त्रिशूल आधारी पीउ॥
छाता छाहँ धूप जनु मरै। पांयन पँवरी[8] भूभुल जरै॥
शृङ्गी[9] शब्द धँधारी करा। जरैसो ठाउँ[10] जहांपग[11] धरा॥
दो० किंगरी गहे वियोग बजावे बारहिबार[12] सुनाउ।
नयनचक्र चहुँदिश[13] निरख[14] धौंदरशनकबपाउ॥
सुनि पद्मावत मँदिर बोलाई। पूँछी कौन देशते आई॥
तरुणबैस[15] तोहिछाज नयोगू। केहिकारणअसकीन्हबियोगू[16]॥
कहेसिविरह दुख जाननकोई। बिरहिन जान बिरहजेहि होई॥
कन्त हमार गयो परदेशा। तेहिकारण[17] हमयोगिन भेशा॥
काकर जिय यौबन और देहा। जो पियगयोभयो सबखेहा[18]॥
फारपटोर[19] कीन्ह मनकन्था[20]। जहँपिउमिलै लेहुँ सो पन्था[21]॥
फिरों करों चहुँ चक्र पुकारा। जटा परी को शीश[22] सँभारा॥
दो० हिरदय[23] भीतर पियबसै मिलै न पूँछे काहि।
सूनजगत सबलागै वह बिनकछू न आहि॥
श्रवण[24] छेदमें मुद्रा[25] मेला। शब्द[26] उनाउकहांपियगेला[27]॥
तेहिं बियोग[28] सिंही[29] नितपूरी। बारबार किंगरी[30] भइ झूरी॥
को मोहिं लैपिय कंठ[31] लगावै। परम अधारी बात जनावै॥
पांवर[32] टूट चलतगा छाला। मन न मरैतन यौबन बाला॥
गयों प्रयाग मिला नाहिं पीउ। करवट[33] लीन्हदीन्हबलजीउ॥
जाय बनारस जास्यों कया[34]। पास्यों पिंड नहायों गया॥
जगन्नाथ चक्रहिंके आय। पुनिसो द्वारका जाय नहाय॥

नवजवान १ सारो २ गुदड़ी ३ माला४ बाला५कान६कायम ७ खड़ाऊँ ८ शृंगीबाना कीतरह आवाज़ मस्ताना ९ जगह १० पैर ११ दरवाज़ा १२ तरफ़ १३ देखना १४ नवजवान १५ दुख १६ वास्ते १७ धूर १८ सारी १९ गुदड़ी २० राह २१ शिर २२ दिल २३ कान २४ बाली २५ आवाज़ २६ जाना २७ दुख २८ शेर २९ नामबाजा ३० गले ३१ खड़ाऊँ ३२ शिरकटाना ३३ तपक्रिया ३४ ॥

दो० जाय केदार दाग तन तहँ न मिला तन[1] आक ।
ढूंढ़ि अयोध्या आय फिर स्वर्गद्वारी झांक ॥

गउमुख[2] हरिहार[3] फिर कीन्हौं । नगरकोटि[4] कितरसनादीन्हौं ॥
ढूँढ़े बाल[5] नाथ कर टीला । मथुरा[6] मथ्यों न सो पिय मेला ॥
सूर्य्य कुण्ड महँ जाश्यो देहा । बद्री[7] मिला न जासों नेहा ॥
रामकुण्ड गोमति[10] गुरु[11] द्वारू । दाहिनिवर्त[12] कीन्ह कै भारू ॥
सेतु[13] बन्ध कैलास[14] सुमेरू[15] । गयोअलखपुर[16] जहांगँभीरू ॥
ब्रह्मवर्त[17] ब्रह्मावर्त[18] परसी । बेनी संगम[19] सीझौं करसी ॥
नीलकंठ[20] सिप्रिप[21] कुरजेटा[22] । गोरखनाथ[23] अस्थान[24] समेटा ॥

दो० पटना पूर्व सो घर घर हाड़ फिरयों संसार ।
हेरत[25] कहूँनपियमिलानाकोइमिलवनहार ॥

बन बन सब हेरयों नव खण्डा । जलजल नदी अठारह गण्डा ॥
चौंसठ तीर्थ कीन्ह सब ठाऊँ । लेत फिरयोंवह पियकर नाऊँ ॥
देहली सब देख्यों तुरकानू । औसुलतान केर बँद[26] बानू ॥
रतनसेन देख्यों बँद माहां । जरै धूप खन[27] पावन छाहां ॥
सब राजा बांधे औ दागी । योगिनजान राजपग[28] लागी ॥
कासोंभोग[29] जहँअन्तनगयऊ । यहदुखलैसो गयो सुखदयऊ ॥
देहलीनाउँ न जानों ढीली । सठबँद[30] गाढ़निकसनाहिंगेली ॥

दो० देख दग्ध[31] दुख ताकर अभो कया[32] नहिं जीउ ।
सो[33] धन कैसे वह जिये जाकर अस बँदपीउ ॥

पद्मावत जोसुना बँदपीउ । परा आगिनि महँ जानहुघीउ ॥
दौर पांय योगिन के परी । उठी आग योगिनपुनिजरी ॥
पांय देहु दुइ नयन न लाऊं । लैचल तहांकन्त जेहिठाऊं ॥
जेहि नयनन तुइँ देखा पीउ । मोहिं देखाय देव बल जीउ ॥

पता १ नामतीर्थ २ से २२ तक नामयोगी २३ मकान २४ ढूंढ़ना २५ कैदखाना २६ कमूं छायानहींपाता २७ पानागन राजानेकिया २८ लेकिन क्या अख्तियार जहाँ दखल गैरका न हो २९ भारीकैदखाना जहाँसे निकलना मुश्किलहै ३० जलना ३१ वदन ३२ औरत तथा पद्मावत ३३ ॥

सत औधर्म देउँ सब तोहीं । पियकी बात कहै जो मोहीं ॥
तुईं मोर गुरू तोर हौं चेली । भूली फिरत पन्थ[1] जें मेली ॥
दण्डएक[2] माया[3] कर मोरे । योगिन होउँ चलों सँग तोरे ॥
दो० सखिन कहा पद्मावतहि प्रगट[4] करोनाभेश[5] ।
योगी जुगवे गुप्त[6] मन लैगुरुकर उपदेश ॥
भीख लेहु योगिन फिर मांगू । कन्त न पाई खीन[7] सुवांगू ॥
यह बड़योग बियोग जो सहा । जैसे पिया राखै तुम रहा ॥
घरही महँ रहु भई उदासा । अंचलखप्पर शृंगी[8] श्वासा ॥
रहै प्रेममन उरझा लटा । बिरह ढँढार[9] परहिं शिरजटा ॥
नयन चक्र लावै लै पन्था[10] । काया[11] कापर सोई कन्था[12] ॥
छालाभूमि[13] गगन[14] शिरछाता । रंगरक्त[15] रहि हिरदै[16] राता[17] ॥
मन माला पहिरे तंत ओहीं । पाँचो[18] भूत भस्म तन होहीं ॥
दो० श्रवण[19] कुण्डलसुनिपियबचन[20] पाँवर[21] पांयपरेह ।
दंडक[22] गोरा[23] बादलहि जाय अधारी[24] लेह ॥
सखिन बुझाई दग्ध[25] अपारा । गइ गोरा बादल[26] केबारा[27] ॥
चरण कमल भुइँ जन्मन धरी । जात तहां लग छाला परी ॥
निकस आय सुन क्षत्री दोऊ । तस काँपे जस काँपन कोऊ ॥
केश छोर चरणन रज झारी । कहां पाँउ पद्मावत धारी ॥
राखा आन पाट[28] सुन बानी । बिरह वियोगन बैठी रानी ॥
चँवर ढार कै चँवर डुलावहिं । माथे छात रजायसु[29] पावहिं ॥
उलटबहा गंगाकर पानी । सेवक बार[30] न आवहिंरानी ॥
दो० काअस कष्ट कीन्हजिय जो तुमकरत न छाज ।
आज्ञा[31] होय बेग[32] सो जीउ तुम्हारे काज ॥

यह १ एकघड़ी २—२२ मेहरबानी ३ ज़ाहिर ४ भेद ५ छिपाद आंखोंकेफ़रेब से ७ नामबाजा ८ भारी ६ राह १० बदन ११ गुदड़ी १२ ज़मान १३ आसमान १४ खून १५ दिल १६ लाल १७ आँख कान नाक ज़बान छूना १८ कान १६ बान २० खड़ाऊँ २१ नाममंत्री २३—२६ सहारा २४ आग २५ दरवाज़ा २७ सोनेकातख्त २८ हुक्म २६ दरवाज़ा ३० हुक्म ३१ जल्द ३२ ॥

अथछहकत्तालीसवाँपद्मावतकागोराबादलसम्बाद ॥

कहौं रोय पद्मावत बाता । नयनहिंरक्त देख जग राता[1] ॥
उलटसमुद्रजस माणिक[2] भरे । रोवसि रुधिर[3] आंसुतसढरे ॥
रतनके रंग नयन पे वारों । रती रती के लोहू ढारों ॥
कमलाहिं ऊपर भँवर उड़ाऊं । लैचलि तहां सूर्य्यजहँ पाऊं ॥
हिय[4] कर हरद वदनके लोहू । जियबलदेउँसो सँवरबिछोहू[5] ॥
परहिं आंसुजस सावननीरू[6] । हरियरिभूमि[7] कुसुंभी चीरू ॥
चढ़ी भुवंगिन[8] लट लटकेशा । भइ रोवत योगिनके भेशा ॥

दो० वीरबहूटी भैचलें लोहू रहहिं न आंस ।
नयनहिं पंथ नसूझै लाग्योभादौंमास ॥

तुमगोरा बादल[10] खँभ दोऊ । जसरण भारत औरन कोऊ ॥
दुखवर्षा अब रही न राखा । मूल[11] पतारस्वर्ग[12] भइशाखा ॥
छायारही सकल[13] महि[14] पूरी । विरह बेल भइबाढ़ खजूरी ॥
तेहिं दुख लेत वृक्ष[15] बन बाढ़ी । शीश[16] उघारे रोवहिं ठाढ़ी ॥
भूमि[17] पूर सायर[18] दुख पाटा । कौड़ी भई फेर हिय[19] फाटा ॥
वेहरि[20] हिये[21] खजूर कर बिया । वेहरिनाहिंमोरपाहन[22] हिया ॥
पियजेहिं बँद योगिन कै धाऊँ । हों बंधूलों पियमकराऊँ[23] ॥

दो० सूर्य्य ग्रहणगरासा कमल न बैठी पाट[24] ।
भूहूँ पंथतहँ गवनब कंत गये जेहि बाट ॥

गोरा[25] बादल दोऊ पसीजे । रोवत रुधिर[26] शीश[27] लहिभीजे ॥
हम राजासो यही कुहाने[28] । तुमनहिं मिलो धरैतुरकाने ॥
जोमति[29] सुनहम आयकुहाये । सोलियान[30] हम माथे आये ॥
जब लगिजिये न भागहिंदोऊ । स्वामिनजियकितयोगिनहोऊ ॥

लाल १ जवाहिर २ खून ३ छाती ४—१९ जुदाई ५ पानी ६ ज़मीन ७—१४-१७ नागिन ८ राह ९ नामसंची १० जड़ ११ आसमान १२ सब १३ पेंड़ १५ शिर १६ तालाब १८ फटना २० दिल २१ पत्थर २२ छोड़ाना २३ तख्त २४ नामसंची २५ खून २६ शिर २७ खफाहोना २८ सलाह २९ आखिर ३० ॥

उयेअगस्त्य[1] हस्ति[2] अबगाजा। नीर[3] घटें घर आवैं राजा॥
बर्षागयो अगस्त्यकी दीठी[4]। परै पलान[5] न तुरंगन[6] पीठी॥
बेधौं राहु छुड़ाऊँ सूरू[7]। रहै न दुखकर मूल[8] अँगूरू॥
दो० वह सूरज तुम शशि[9] बदन आनमिलाऊंसोय।
तसदुखमहँसुखउपजै[10] रयनि[11] सांझदिनहोय॥
लीन्हपान बादल औ गोरा। गहि[12] लै देउँ उपमतुमजोरा॥
तुमसावन्तन[13] सरबर[14] कोऊ। तुमहनुमत[15] अंगद[16] समदोऊ॥
तुम अर्जुन[17] औभीम[18] भुवारा। तुमबलबीर सो मन्दन हारा॥
तुम टारन भारन जग जानी। तुमसोंपुरुषऔकर्ण[19] बखानी॥
तुम असमोरे बादल गोरा। काकर मुख हेरों[20] बँदछोरा॥
जस हनुमत राघव बँद छोरी। तस तुम छोर मिलावहु जोरी॥
दो० जैसे जरत लक्ष घर साहस[21] कीन्हा भीउ[22]।
जरत खम्भ तसकाढ़ो कैपुरुषारथ जीउ॥
राम लषण सम[23] दैत्य सँहारा। तुमहीं घर बलभद्र[24] भुवारा॥
तुम द्रोना[25] औ पिताग्गे गेऊ[26]। तुम लेखो ईश्वर सहदेऊ[27]॥
तुमहयुधिष्ठिरऔदुर्योधन[28]। तुमहुभोज[29] नल[30] दोउसम्बोधन॥
तुमराघव[31] परशुराम[32] औयोधा। तुमपरतज्ञा[33] औहतबोधा॥
तुमहुशत्रुहन[34] भरत[35] कुमारा। तुम कंसहिं[36] चाणूर[37] सँहारा[38]॥
तुमप्रद्युम्न[39] औअनिरुध[40] दोऊ। तुमअभिमन्यु[41] बोलसमकोऊ॥
तुमसर[42] पूजनबिक्रम[43] शाकोतुमहरिचन्द[44] हमीर[45] सत[46] नाके॥
दो० जसअतिसङ्कट पांडवन[47] भयोभीम[48] बँदछोर।
तस परवश[49] पर काहहु राखलेहु ब्रह्म मोर॥

नामनखत१-२ पानी३ निगाह४ चारजामा५ घोड़ा६ सूर्य७ जड़-८ चाँद९ पैदा १० रात११ जोड़ीमिलादो१२ बहादुर१३ बराबर१४-२३ नामशूरबोर१५-१६-१७-१८-१९-२२ २५-२६-२७-२८-२९-३० देखना२० बहादुरी२१ बलभद्रकाघरखराबकिया२४ श्रीरामचन्द्रजी ३१ नाममहाशूरबीर३२-३६-३९-४८कौल३३ भाईश्रीरामचंद्र३४-३५ मारना ३८ बेटाश्रीकृष्ण ३९ पोताश्रीकृष्ण ४० बेटाअर्जुन४१ बराबरी ४२ विक्रमादित्य४३ नामराजा ४४ ४५ सचबोलनेवाले४६ राजायुधिष्ठिर ४७ उसीतरह इसवक्त में मददकरो ४९॥

गोरा[१] बादल बीरा लीन्हा । जसहनुमंतअङ्गदबलकीन्हा ॥
साज सिंहासन ताना छातू । तुममाथे युगयुग अहिवातू ॥
कमलचरण भुइँधर दुख पावहु । चढ़सिंहासनमँदिरसिधावहु ॥
सुनसूरय कमलहि जियजागा । केसर[२] बरनपवन हियलागा ॥
जनुनिशि[३] मुँहअवदीन्ह देखाई । भा उदोत[४] मसि[५] गईबिलाई ॥
चढ़ी सिंहासन झमकत चली । जानहुँचांद दुइजनिरमली[६] ॥
औ संगसखी कुमोद[७] तराई[८] । ढारत चँवर मँदिर लैआई ॥

दो० देखदुइज सिंहासन शंकरधरा ललाट[९] ।
कमल चरण पद्मावत लैबैठारी पाट[१०] ॥

खण्ड बयालीसवां गोराबादल गवन

बादल केर जसोदी माया । आय गही बादल के पाया ॥
बादल राय मोर तुइ बारा । काजानेसिकसहोय जुझारा[११] ॥
बादशाह भूमिपति राजा । सन्मुख कै न हमीरहि छाजा ॥
छत्तिसलाखतुरी[१२] जेहिसाजहिं । बीससहसहस्ती[१३] दलगाजहिं ॥
जबहीं आय चढ़ै दल ठटा । देखत जैसगगन[१४] घनघटा ॥
चमकहिंखड्ग[१५] जोबीज[१६] समाना ॥ घुमरहिंगलगाजहहिं[१७] निशाना ॥
बरसहिंसेल[१८] बान[१९] घनघोरा । धीरज धीर न बांधे तोरा ॥

दो० जहां दलपती[२०] दलमलहिं तहां तोरकाकाज ।
आज गवन तोर आवै बैठमान सुखराज ॥

मातन जानेसिबालक[२१] आदी । हौं बादलासिंह[२२] रन बादी ॥
सुनगजजूह[२३] अधिकजिउतपा । सिंह[२४] जातकहुँरहैनाहिंछिपा ॥
तबलग गाजन[२५] गाज सँडेला । सौंह[२६] शाहसों जुरोंअकेला ॥
कोमोहिं सौंह होय मैमन्ता[२७] । फारौं सूँड़ उखारौं दन्ता ॥

नाममंत्री १ रंग २ रात ३ रोशन ४ सियाही ५ साफ़ ६ कोकाबेली ७ नखत ८ माथा ९ राखुत १० लड़ाई ११ घोड़ा १२ हाथी १३ आसमान १४ तलवार १५ बिजु-ली १६ परहरा १७-२५ गोला १८ तीर १९ बड़ेराजा २० छोटालड़का २१ शेर २२-२४ हाथियोंकाहलका २३ सामने २६ मस्त २७ ॥

जरौं स्वाम[1] सकरे जस टारा । औबल[2] जस दुर्योधन[3] मारा ॥
अङ्गदकोप पांव जस राखा । टेकों कटक[4] छतीसो लाखा ॥
हनुमत सरस जङ्घपर जारौं । दहौं समुद्र स्वाम[5] बँद छोरौं ॥
दो० जो तुम मात जसोदी मोहिं न जानो बार ।
जहँ राजा बलबांधा छोरौं पैठ पतार ॥
बादल गवन जूझ कहँ साजा । तैसहिंगवनआय घर बाजा[6] ॥
लिये साथ गवने कर चारू । चन्द्रबदनरचकीन्ह शिंगारू ॥
मांग मोति भर सेंदुर पूरा । बैठ मयूर[7] बांक तस जूरा ॥
भौंहैं धनुष[8] टकोर परीखी । काजर नयनमारशर[9] तीखी[10] ॥
घाल कचबची[11] टीका सजा । तिलकजोदेखठाउँ जिउतजा ॥
मणि कुण्डलडोलैदुइश्रवना[12] । शीश[13] धुनहि सुनिसुनिपियगवना ॥
नागिनअलक[14] झलकउर[15] हारू । भयोशृंगारकंतबिन भारू ॥
दो० गवन जो आयो पँवर[16] महँ पिय गवने[17] परदेश ।
सखीबुझावहिंकिम[18] अनल[19] बुझैसोकेहिउपदेश ॥
मान गवन जस घूँघट काढ़ी । बिनवै आय बार[20] भइठाढ़ी ॥
तीषी हेर[21] चीर गहि[22] ओढ़ा । कंतनहेर[23] कीन्ह जियपोढ़ा ॥
तबधन[24] कीन्हबेहँस[25] चष[26] दीठी । बादल[27] तबहिंदीन्हफिरपीठी ॥
मुख फिराय मन अपने रीसा । चलतनतिरियाकरमुखदीसा[28] ॥
भामिन[29] भेष नारिके लेखे । कसपिउ पीठ दीन्ह मुँहदेखे ॥
मग[30] पिय दृष्टि[31] समानो चालू । हुलसे[32] पीठ गढ़ाऊँ सालू ॥
कुच[33] तोंबी अब पीठ गड़ोऊँ । गहेसि[34] जोहूककाढ़रिसधोऊँ ॥
दो० रहुँलजाय तोपिय चलैकहोंतो कहि मुहिंडीठ[35] ।
ठाढ़ तेवानी काकरों भारी दोऊ बसीठ[36] ॥

मालिककाकामकरों १ नाममहाशूरबीर २-३ फ़ौज ४ राजा ५ पहुँचा ६ मोर ७ कमान ८ तीर ९ कटीली १० नामनखत ११ कान १२ शिर १३ बाल १४ छाती १५-३३ दरवाज़ा १६ जाना-सिधारना १७ किसतरह १८ आग १९ ड्योढ़ी २० कटीलीनिगाहसेदेखा २१ खींचना २२ देखना २३-२८ औरतबादलकी २४ हँसना २५ आँख २६ नाममंत्री २७ औरतकाशकुनवदसमागया २९ शायद ३० निगाह ३१ पीठदेखतसकीनको ३२ खींचाकिदिलकादुखनिकलजावे ३४ शोख ३५ दोनोंछाती ३६ ॥

लाजकिये जो पिय नहिं पाऊं । तजौंलाजकर[1] जोर मनाऊं ॥
कर हठ कंत जाय जेहि लाजा । घूँघट लाज आव केहिकाजा ॥
तब धन बेहँस[2] कहा गहिफेटा । नारि जो विनवै[3] कंत न मेटा ॥
आज गवनहूँ आई नाहां[4] । तुम न कंत[5] गवनो रन माहां ॥
गवनआव धन मिलन किताईं । कौन गवन जो बिछुड़े साईं ॥
धन न नयन भर देखा पीऊ । पिया न मिल धनसो भरजीऊ ॥
तेहिसब आस भराहे केवा[6] । भँवर न तजै[7] बास रस लेवा ॥

दो० पावनधरा ललाट[8] धन बिनय सुनहु हो राय ।
अलक[9] परा फंदवार है कैसहिं तजै न पाय ॥

छांड़ फेट[10] धन[11] बादलकहा । पुरुष गवनधनफेट न गहा[12] ॥
जो तुहँगवन आयगजगामी[13] । गवन मोर जहँवाँमोरस्वामी ॥
जब लग राजा छूट न आवा । भावै बीर[14] शृंगार न भावा ॥
तिरिया भूमि[15] खड्ग[16] की चेरी । जीत जो खड्ग होय तेहिकेरी ॥
जेहिं घर खड्ग मूठ तहँ गाढ़ी । तहां न अंड न मूछ न दाढ़ी ॥
तब मुँह मूछ जीव पर खेलों । स्वामिकाज इन्द्रासन पेलों ॥
पुरुषके[17] बोल टरै नाहिं पाछू । दशन[18] गयन्दग्रीव[19] नाहिंकाछू ॥

दो० तुहँ अबला[20] धन कुबुध[21] बुध जानै कहाजुझार[22] ।
जेहि पुरुषहि[23] हिय[24] बीररस भावै तेहि न शृंगार ॥

जो तुमचहो जूझ पिय बाजा । कीन्ह शृंगार जूझ मैं साजा ॥
यौवन आय सौंह[25] कै रोपा । पिघला बिरहकामदल कोपा ॥
भयो बीररस सेंदुर मांगा । राता[26] रुधिर खड्ग जसनांगा ॥
भौंहैं धनुष नयन शर[27] सांधे । बरन[28] बीज काजरविष बांधे ॥
दय कटाक्ष[29] सों सान सँवारी । औ मुखसेलभालअनयारी[30] ॥

राय १ हँसना २ अर्ज ३ खाविन्द ४—५ कमल ६ छोड़ना ७ माथा ८ बाल ६ कमर १० औरत ११ पकड़ना१२ हाथीकीचाल१३ लड़ना १४ ज़मीन १५ तलवार १६ मर्द १७ दांतहाथीके १८ गरदन कछुवाकी १९ नादान २० कमअक़िल २१ लड़ाई २२ मर्द २३ दिल २४ सामने २५ लालखून २६ तीर २७ पलक बिजुलीकीतरह २८ तिरछी निगाह २९ नोकीले ३० ॥

अलक[1] फांसग्रिव[2] मेलअसूझा । अधर[3] अधरसोंचाहहिंजूझा ॥
कुंभस्थल[4] कुच[5] दोउ मैमंता । पेलौं सौंह[6] सँभारहु कंता ॥
दो० कोप शृंगार बिरह दल टूटहोय दुइ आध ।
पहिलेमोहिं संग्रामके करहु जूझकी साध[8] ॥
कैसहुँ कंत फिरे ना फेरी । आगपरी चितौर धन केरी ॥
उठी सो धूम नयन गरवानी । लागे परे आंशु भहरानी ॥
भीजेहार चीर[10] हिय[11] चोली । रही अछूत कंत नहिं खोली ॥
भीजेलाग चुवें कठ[12] सुमण्डन । भीजे भँवरकमलशिरफुन्दन ॥
चुइ चुइ काजर अँचरा भीजा । तबहुं न पियके रोवँ पसीजा ॥
छांड़चला हिरदय[13] दयदाहू[14] । निठुरनाहँ[15] आपननहिंकाहू ॥
सबै शृंगार भीज भुइँ चुवा । छार[16] मिलायकन्त[17] नहिंछुवा ॥
दो० रोये कन्त न बहुरे तेहिरोये का काज ।
कन्तधरामनजूझरनधन[18] साजीसबसाज ॥

खण्ड तेंतालीसवां गोराबादलबर्णन ॥

मंते[19] बैठ बादल[20] औ गोरा । सोमत कीजेपरनहिं भोरा[21] ॥
पुरुष[22] न करै नारिमत कांची । जसनौशाबा[23] कीन्हनबांची ॥
चढ़ा हाथ इसकन्दर[24] बैरी । सकत[25] छांड़के भई बँदेरी ॥
सजग[26] जोनाहँमारबल कांधा । बुध[27] कहियेहस्ती[28] कांबांधा ॥
देवलनचलेआयअसआटी । सुरजन[29] कञ्चन[30] दुरजन[31] माटी ॥
कञ्चन जुरै भये दश खांड़ा । फूटनमिलै छार[32] कर भांड़ा ॥
जस तुरकाहिं राजा छलसाजा । तस हमसाजछुड़ावहिं राजा ॥
दो० पुरुष तहांहीं छलकरै जहँबल कैसो न आंट[33] ।

बाल १ गर्दन २ होंठ ३ हाथीमस्त ४ छाती ५ मुक़ाबिल ६ लड़ाई ७ इरादा ८ धुवां९ सारी१० छाती११–१३कुरती १२ चलन१४ खाविन्द१५—१७ धूर १६ औरत१८ सलाह१९ नामसंत्री २० हँसी २१ मर्द २२ नामशाहज़ादी २३ नाम बादशाह २४ उस कोछोड़दिया २५ होशियार २६ अक़िलमन्द २७ हाथी२८ दोस्त २९ सोना ३०दुश- मन ३१ माटी ३२ पहुँचना ३३ ॥

जहां फूल तहँ फूल है जहां कांट तहँ कांट ॥

सोरह से चण्डोल सवारी । कुँवर सजोयल[1] तहँ बैठारी ॥
पद्मावत कर साज बेवानू । बैठ लुहारन जाने भानू[2] ॥
रच बेवान सो साज सँवारा । चहुँदिशि[3] चमरकरहिंसबदारा[4] ॥
साजसबै चण्डोल चलाई । सुरँग उहार मोति बहु लाई ॥
भय सँग गोरा[5] बादल बली । कहत चले पद्मावत चली ॥
हीरा रतन पदारथ[6] भूलहिं । देख बिमान[7] देवता भूलहिं ॥
सोरह से सँग चलीं सहेली । कमल न रहा और को बेली ॥

दो० राज छुड़ावन रानिचलि आपहोय तहँओल ।
तीससहस[8] तुरि[9] खींचसँग सोरहसैचण्डोल ॥

राजाबँद जेहिके सौंपना । गा गोरा[10] तापहँ अगमना[11] ॥
टका लाख दशदीन्हअकोरा[12] । बिनती[13] कीन्ह पांयगहिगोरा ॥
बिनवा[14] बादशाह सो जाई । अब रानी पद्मावत आई ॥
बिनती[15] करै आयहूँ देहिली । चित्तौरकी मोसों है कीली[16] ॥
बिनती[17] करै जहां है पूँजी । सब भँडार[18] की मोसों कूंजी ॥
एक घड़ी जो अज्ञा[19] पाऊँ । राजा सौंप मँदिर महँ आऊँ ॥
तब रखवार[20] गये सुलतानी । देख अकोर[21] भये जसपानी ॥

दो० लीन्ह अकोर[22] हाथ जो जीउदीन्ह तेहिहाथ ।
जो वह कहै करैसो कहीं छांड़ नहिं माथ ॥

लोभ पाप की नदी अकोरा[23] । सत्त[24] न रहै हाथ जो बोरा ॥
जहँ अकोर तहँ नेक[25] न राजू । ठाकुरकेर बिनाशहिं[26] काजू ॥
भा जिउ घिव रखवारी केरा । द्रव्य लोभ चौंडोल न हेरा[27] ॥
जाय शाह आगे शिर नावा । ऐजग सूर[28] चांदचलिआवा ॥

बहादुर १ सूर्य २ चारोंतरफ ३ औरत ४ राजमंत्री ५—१० जवाहिरात ६ चण्डोल७ तीसहज़ार ८ घोड़ा ९ पहिने११ रिशवत—नजराना १२—२१—२२—२३ अर्ज़ १३ १४—१५—१७ कुंजी १६ ख़ज़ाना १८ हुक्म १९ दारोगा २० ईमान २४ राजअच्छा नहीं २५ ख़राब २६ तलाशीलेना २७ सूर्य २८ ॥

औजानवन्तसब नखत[1] तराईं। सोरहसै चण्डोल जो आईं॥
चित्तौर जेत राजकी पुञ्जी। लैसो आय पद्मावत कुञ्जी॥
बिनती करै जोर कर[3] खड़ी। लै सौंपों राजा इक घड़ी॥
दो० यहां वहांकेस्वामी[4] दोहूँ जगत मोहिं आश[5]।
पहिले दरश देखाव नृप[6] तब आऊँ कैलाश॥
अज्ञा[7] भई जाय इक घरी। छूँछ जो घरी फेर विधि[8] भरी॥
चलि बेवान[9] राजापहँ आवा। सँग चौंडोल जगतसब छावा॥
पद्मावत के भेष[10] लोहारू। निकसकाटबँद[11]कीन्हजोहारू[12]॥
उठा कोप जस छूटा राजा। चढ़ातुरङ्ग[13] सिंह[14]असगाजा॥
गोरा बादल[15] खांड़े[16] काढ़े। निकस कुँवर चढ़चढ़भयेठाढ़े॥
तीष[17]तुरङ्गगगन[18]शिरलागा। कौन जुगत कर टेकै बागा॥
जो जिय ऊपर खड्ग सँभारा। मरनहार सो सहसहिं[19]मारा॥
दो० भइ पुकार शाहसों शशि[20]औ नखत सो नाहिं।
छलके ग्रहन गिरासा ग्रहन गिरासी छाहिं॥
लै राजा चित्तौर कहँ चले। छूटो मिरग[21] सिंह[22] करबले॥
चढ़ा शाह चढ़ लाग गुहारी। कटक[23]असूझ परी जगकारी॥
फिर गोरा बादल सो कहा। ग्रहन[24] छूट पुनि[25] चाहै गहा॥
चहुँदिश[26]आवालोपतभानू[27]। अब यह गोय यही मैदानू॥
तुइँ अब राजा लैचल गोरा। हों अब उलट जरों[28] भाजोरा॥
वहँ चौगान तुर्क कस खेला। होय खिलार रनजरों अकेला॥
तब पाऊँ बादल अस नाउँ। जब मैदान गोय लैजाउँ॥
दो० आजखड्गचौगान गहि[29] करोंशीश[30] रन गोय।
खेलों सौंह[31] शाहसो हाल जगत महँ होय॥

सखी-सहेली १ फ़र्ज़ २ हाथ ३ मालिक ४ उम्मेद ५ राजा ६ हुक्म ७ ईश्वर ८ चण्डोल ९ सूरत १० बेड़ी ११ सलाम १२ घोड़ा १३—१७ शेर १४-२२ नाममंत्री १५ तलवार १६ आसमान १८ हज़ार १९ चाँदतथापद्मावत २० हिरन २१ फ़ौज २३ राजा २४ फेर २५ चारोंतरफ़ २६ सूर्य २७ मुक़ाबिल २८ पकड़ना २९ शिर ३० सामने ३१॥

तब बरसामन[१] ह्वै गोरा[२] मिला । तुइँ राजा लैचल बादला[३] ॥
पिता[४] मरै जो सारी साथे । मीच[५] न देय पूतके माथे ॥
मैं अब आयु[६] भरीत्रौ भूँजी । का पछताव आय जो पूँजी ॥
बहुनाहिं मार मरौं जो जूझी । ताकहँ जन राखहु मन बूझी ॥
कुँअरसहस्र[७] संगगोरा[८] लीन्हीं । और बीर बादल[९] सँग कीन्हीं ॥
गोरहि[१०] समुद्रमेघअसगाजा । चला लीन्ह आगे कर राजा ॥
गोरा[११] उलट खेतभा ठाढ़ा । पुरुष[१२] देख चाउ[१३] मन बाढ़ा ॥
दो० आवकटक[१४] सुलतानी गगन[१५] छिपाअसि[१६] सांझ ।
परत आव जग कारी होत आव दिन सांझ ॥
होय मैदान परी अब गोय । खेलहार वहँ काकर होय ॥
यौवन तुरी[१७] चढ़ी जो रानी । चलीजीत अति खेल सयानी ॥
कट[१८] चौगानगोयकुच[१९] साजी । हिय[२०] मैदान चली लै बाजी ॥
हाल[२१] सोकरै गोयलै बाढ़ा । गोली दुहुँ पैचकै काढ़ा ॥
भइ पहार वै दोनों गोरी[२२] । दृष्टि[२३] नेर पहुँचत सुठ दूरी ॥
ठाढ़े बान चलहिं अस दोऊ । सालहिं[२४] हिये[२५] नकाढ़े कोऊ ॥
सालहिं तेहि जानेसिहै ठाढ़ी । सालहिं तासु चहै उठ काढ़ी ॥
दो० मुहमद खेल प्रेमका गाहिर कठिन चौगान ।
शीश[२६] नदीजे गोयजिमि[२७] हलनहोय मैदान ॥
फिर आगे गोरैं तब हांका[२८] । खेलों करों आज रन शाका[२९] ॥
हौं खेलों धौलागिरि[३०] गोरा । टरों न टारे अङ्ग न मोरा ॥
सोहल[३१] जैस गगन उपराहीं । मेघ घटा मोहिं देख बिलाहीं ॥
सहस[३२] शीशशङ्करसम[३३] लेखों । सहसहिं नयनअन्धिभादेखों ॥
चारहुँभुजा चतुरभुज[३४] आजू । कंस[३५] न रहा औरको साजू ॥

आगे १ नाममंची २—३ बापकीजगह राजासाथ है ४ मरनावेटेका न देखैगा ५ उमर ६ हजार ७-३२ नाममंची ८—९—१०—११ मर्द १२ चाह १३ फ़ौज १४ आसमान १५ छिपाती १६ घोड़ा १७ कमर १८ छाती १९ सीना २० हलचल २१ तथाछाती २२ निगाह २३ मुराद २४ दिल २५ शिर २६ बराबर २७ ललकारना २८ बहादुरी २९ नामपहाड़ ३० नामनखत ३१ बराबर ३३ चारहाथ ३४ नामराजादैत्य ३५ ॥

हौं कै भीम[1] आज रण गाजा। पाछें घाल डँकोई[2] राजा॥
होय हनुमत[3] यमकातर[4] धाऊं। आज स्वामि[5] संकरैंनिबाऊं॥
दो० कै नल नील[6] आजहौं देउँ समुद्रमाहिं मेंड़।
कटक[7] शाहकर टेकों कै सुमेरु[8] रण बेड़॥
उनई घटा चहूं दिशा[10] आई। छूटहिं बान[11] मेघ झरलाई॥
डोलै माहिं देवजस आदी[12]। पहुंची तुर्क बाद[13] कहँ बादी॥
हाथन गहे खड्ग[14] हरवानी। चमकहिं सेल बीजके[15] बानी॥
साज बान जनु आवै गाजा[16]। बासुकि[17] डरै शीश[18] जनुलाजा॥
नेजाउठे डरै मन इन्दू[19]। आवहिं पाठ जान कस हिन्दू॥
गोरैंसाथ लीन्ह सब साथी। जस मैमन्त सूंड़ बिन हाथी॥
सबमिलपहिलउठौनी लीन्हीं। आवत आय हांक सबकीन्हीं॥
दो० रुंड मुंड अति टूटहिं सहिबरखतरओं कूंड़।
तुरी[20] होहिं बिनकांधे हस्ति[21] होहिंबिनसूंड़॥
उनवतआय सेन[22] सुलतानी। जानहु परलै आवतुलानी[23]॥
लोहे सेन[24] सूझसब कारे। तिल इक कहूँ न सूझउघारे॥
खड्ग फोलाद तुर्क सब काढ़े। हरीबीज[25] असचमकहिंठाढ़े॥
पीलवान गज[26] पेलसो बांके। जानहुंकालकराहिंजिय[27] भाके॥
जनु यमकात[28] कराहिं सबभवां। जियपैचीन्हस्वर्ग[29] अपसवां॥
सेल सांप जनु चाहै डसा। लीन्ह काढ़जियमुखबिषबसा॥
तिन्ह सामाहिं गोरा[30] रनकोपा। अंगद[31] सरस पाउँ भुइँरोपा॥
दो० सपुरुष[32] भाग न जाने भुइंजो फिरफिरलेइ।
शूर[33] कहैं दो कर[34] स्वामि काज जिउ देइ॥
भइ बगमेल सेल घन घोरा। औगज[35] पेल अकेलसोगोरा॥

नाम महा शूरबीर१ मदद२ महाबीरजा३ नामकोन्हू४ मालिककोबचाऊँ५ नामबन्दर जिन्होंने पुल समुद्रमेंबाँधाथा६—७ फ़ौज८—२२—२४ नामपहाड़९ चारोंतरफ़१०तीर११ पैदाइशी१२ बराबर१३ तलवार१४ बिजुली १५—१६—२५ नामराजा साँप१७ सिर १८ इंद्र१९ घोड़ा२० हाथी२१ पहुँची२३ हाथी मस्त२६ लेनेवाले२७ यमदूत२८ आसमानपर लेजाना २९ नाममंत्री ३० नामबन्दर३१ बहादुर ३२—३३ हाथ ३४ हाथी ३५॥

सहस[1] कुंवर सहसहुँसत बांधा। भारपहार जूझकहँ बांधा॥
लाग मरे गोराके आगे। बाग न मोर घावमुख लागे॥
जैस पतंग आग धँस लीन्हीं। एकमुवे दूसर जिय दीन्हीं॥
टूटहिं शीश[2] उधर धर[3] मारी। टूटहिं कंधहि कंध निरारी[4]॥
कोई परहिं रुधिर[5] ह्वै राती[6]। कोइ घायल घूमहिंमदमाती॥
कोइ घरखेह[7] कीन्ह ह्वै भोगी। भस्म चढ़ायबैठ जस योगी॥

दो० घरीएक भारथ[8] भई भइ असवारहिं मेल।
जूझिकुवँर सब बैठे गोरारहा अकेल॥

गोरे देख साथ सब जूझा। आपन काल[9] नेरे भा बूझा॥
कोपसिंह[10] सामहिं रन मेला। लाखन सों ना मरैअकेला॥
लियो हांक हस्तिन[11] की ठटा। जैसेसिंह[12] बिदारे[13] घटा॥
जेहि शिर देइकोप तरवारू। सैं घोड़े टूटहिं असवारू॥
टूटकंध शिर परैं निरारी[14]। माठमजीठ[15] जानुरण ढारी॥
खेल फाग सेंदुर छिरकावे। चाचर खेल आग रण लावे॥
हस्ती[16] घोड़ धायजोधूका। औतेहिदीन्हसोरुधिर[17] भभूका॥

दो० भइ अज्ञा[18] सुलतानी बेग[19] करहु यह हाथ।
रतन जात है आगे लिये पदारथ[20] साथ॥

सबैकटक[21] मिल गोरा[22] छेंका। गूँजतासिंह[23] जायनहिं टेका॥
जेहिदिश[24] उठै सोइ जनुखावा। पलटासिंह[25] तेहिठाउँनआवा॥
तुर्क बोलावहिं बोलै नाहां। गोरें मीच[26] धरी जियमाहां॥
मुवे पुनि[27] जूझजाज जगदेऊ। जियतनरहा जगतमहँ केऊ॥
जन जानहु गोरा सो अकेला। सिंह[28] की मूछ हाथको मेला॥
सिंह जियतनहिं आप धरावा। मुवे पीछ कोऊ घिसयावा॥
करै सिंहमुँह सौंह[29] जोदीठी। जबलग जिये देयनहिंपीठी॥

हज़ार १ शिर २ धड़फेंकना ३ अलग ४-१४ खून ५ लाल ६ राख ७ लड़ाई ८ मौत ९ शेर १०—१२ हाथी ११-१६ फाड़ना १३ लाख १५ लोहू १७ हुक्म १८ जल्द १९ तथापद्मावती २० फ़ौज २१ नाममंत्री २२ शेर २३-२५—२८ तरफ़ २४ मौत २६ पैवाद-शाह येमेहाथ न आऊंगा २७ सामनेनिगाह २९॥

दो० रतनसेन जो बांधा मसि[१] गोराके गात[२]।
जबलगरुधिर नधोऊँतबलगहोयनरात[४]॥

सुरजा[५] बीर सिंह चढ़ गाजा। आय सौंह[६] गोरा सों बाजा॥
पहलवान सो बखाने बली। मदद मीरहमजा[७] औ अली॥
मददअयूब[८] शीश[९] चढ़ कोपी। महाभारथी नाउँ अलोपी[१०]॥
औ ताया[११] सालार सो आये। जेहिं कवरो पांडव बंद पाये॥
लंधौर[१२] देवधरा जेहि आवे। औ कोमाल[१३] बाद कहँपावे॥
पहुँचा आय सिंह असवारू। जहां सिंह गोरा बरयारू[१४]॥
मारेसि सांग पेटमहँ धसी। काढ़ेसि हुमुकआंतभुइँखसी॥

दो० भाटकहा धनगोरा तुइँ महिरावन राउ।
आंत समेटकर बांधे तुरी[१५] देतहै पांउ॥

कहेसिअंत[१६] अबभाभुइँ परना। अंतकोनित्त[१७] खेह[१८] शिरभरना॥
कहिके गरज सिंह अस धावा। सुरजा शार्दूल[१९] पहँ आवा॥
सुरजें[२०] कीन्ह सांगपर घाऊ। परीखड्ग[२१] जनुपरा निहाऊ[२२]॥
बज्रकी सांग बज्र का डांड़ा। उठी आगतस बाजा खांड़ा॥
जानहुँ बज्र बज्र सों बाजा। सबही कहापरी अबगाजा[२३]॥
दूसर खड्ग[२४] कंधपर दीन्हीं। सुरजेंवह ओड़न[२५] परलीन्हीं॥
तीसर खड्ग कूड़पर लावा। कांधगरज[२६] हतघावनआवा॥

दो० तस मारा हतगोरें उठी बज्रकी आग।
कोउ नेरेनाहिं आवै सिंह[२७] सेंदूरा[२८] लाग॥

तस सुरजा कोंपा बरबंडा[२९]। जान सेंदूर केर भुज डंडा॥
कोप गरज मारेसि तब बाजा। जानहुपरी तुरतशिरगाजा[३०]॥
टाटर[३१] टूट टूट शिर तासू। सैं सुमेरु[३२] जनु टूट अकासू॥

सियाही १ बदन २ खून ३ लाल ४ नाम पहलवान ५—७—८ सामने ६ शिर ९ बड़ेबहादुरोंका नाममिटानेवाले १० नामसिपहसालार ११ नामदेव १२ नामराजा १३ ज़बरदस्त१४—२९ घोड़ा१५ आखिर१६ हमेशा१७ राख १८ शेरसुर्ख १९ नामपहलवान २० तलवार २१—२४ निहाई २२ बिजुली २३—३० ढाल २५ उछलतलवारपर तलवार परी २६ शेर २७ शेरसुर्ख २८ खुपड़ी ३१ पहाड़ ३२॥

धमक उठा सब स्वर्ग[1] पतारू । फिर गइ दीठ[2] फिरा संसारू ॥
भा परलै अस सबही जाना । काढ़ा खड्ग[3] स्वर्ग[4] नियराना ॥
तस मारेसि सैं घोड़े काटा । धर्ती फाट शेष फणनाथा ॥
अनिजो सिंह[5] बरी है आई । शार्दूल[6] सो कौन बड़ाई ॥

दो० गोरापरा खेतमहँ सुर[7] पहुँचावा पान ।
बादल[8] लेगा राजा लैचितौर नियरान ॥

पद्मावत मनरही जो झूरी । सुनत सरोवर[9] हिय[10] गापूरी ॥
अद्रा[11] महँ हुलास[12] जस होई । सुख सुहाग आदरभा सोई ॥
नयनजोकुमुदनि[13] लीन्हअँगूरू । उठाकमल असउगवासूरू[14] ॥
पुरइन पूर सँवारी पाटा[15] । औशिर आनधरा सिरछाता ॥
लाग्यो उदय होय जस भोरा । रयनि[16] गईदिनकीन्हअजोरा[17] ॥
अस्त[18] अस्तकै पाई कला[19] । आगें चली कटक[20] सबचला ॥
देख चांद अस पद्मिन रानी । सखी कुमोद[21] सबै बिकसानी[22] ॥

दो० ग्रहन छूट दिनेर[23] कर शशि[24] सो भयोमिलाव ।
मँदिर सिंहासन साजा बाजानगर बधाव ॥

बिहँसचांद दय मांग सेंदूरू । आरत करन चली जहँसूरू[25] ॥
औगोहन[26] शशि[27] नखततराई । चित्तौरकी रानी जहँ ताई ॥
जनु बसन्त ऋतुफली जो छूटी । की सावन महँ बीरबहूटी ॥
भाआनन्द बाजा पँचतूरा । जगतरात[28] है चला सेंदूरा ॥
अति मृदङ्ग मन्दिर बहुबाजे । इन्द्रशब्द[29] सुन शब्द जोलाजे ॥
देखकन्तजसरबि[30] परकासा[31] । पद्मावतमन कमलबिकासा[32] ॥
कमल पांय सूरयके परा । सूरय कमल आनि शिरधरा ॥

दो० सेंदुर फूल तँबोल सो सखी सहेली साथ ।

आसमान १—४ निगाह २ तलवार ३ शेर ५ शेरमुर्ख ६ देवता ७ नाम मंत्री ८ तालाब ९ छाती १० नामनखत ११ खुशी १२ कोकाबेली १३—२१ सूर्य १४ तख्त १५ रात १६ रोशनी १७ रामरामकर १८ कल १९ फ़ौज २० खिलना २२—३२ सूर्य २३—२५—३० चांद २४—२७ सायर २६ लाल २८ आवाज़ २९ रोशनी ३१ ॥

धन[१] पूजीपियपांयद्वय पियपूजीधनमाथ ॥

पूजा कवन देउँतुम राजा । सबैतुम्हार आवमोहिं लाजा ॥
तन मय यौवन आरति करेऊं । जीव काढ़ न्योछावर देऊं ॥
पन्थ[२] पूरकर दृष्टि[३] बिछाऊं । तुमपग[४] धरो शीश[५] मैंलाऊं ॥
राखत पांय पलक[६] नाहिं मारों । बरनहि[७] सोरज[७] चरनहिंझारों ॥
हिय[८] सोमंदिर तुम्हारेनाहां[९] । नयन पंथ[१०] आवहुतेहिमाहां ॥
बैठोपाट[११] छत्र नव फेरी । तुम्हरे गर्व[१२] गर्वी हों चेरी ॥
तुम जियमैंतनजौलहिमया[१३] । कहे जो जीव करे सोकया[१४] ॥

दो० जोसूर्य्य शिरऊपर तबसो कमलशिरछात ।
नाहित भरी सरोवर[१५] सूखी पुरइनपात ॥

परस पांय राजाके रानी । पुनआरत बादल[१६] कहँआनी ॥
पूजे बादलके भुज दण्डा[१७] । तुरी[१८] केपांउ दाबकर[१९] खण्डा ॥
यह गजगवन[२०] गर्व[२१] सोमोरा । तुम राखा बादल[२२] ओगोरा ॥
सेंदुरतिलकजो आंकुश रहा । तुम राखा माथे तौ रहा ॥
कालश्याम[२३] तुमजियपरखेला । तुमजियआनमँजूसा[२४] मेला ॥
राखाछात चँमर औ दारा । राखा छुद्रघण्ट[२५] झनकारा ॥
होय ध्वजा हनुमत तुम पैठी । तब चितौर लै आये बैठी ॥

दो० पुनि गजमत्त[२६] चढ़ावा नेत[२७] बिछाईखाट ।
बाजलगाजत राजा आय बैठ सुख पाट[२८] ॥

तस राजें रानी कँठलाई[२९] । पिय मरजियानारि जनु पाई ॥
सङ्कै[३०] राजा दुख उगसारा[३१] । जियत जीव नाकरों निरारा[३२] ॥
कठिन[३३] बन्द तुर्कहिं लैगहा । जो सँवरों जिय पेट न रहा ॥
घनगढ़[३४] ऊपर मुहिलै मेला । सांकर औ अँधियारदुहेला[३५] ॥

पद्मावत १ राह २—१० निगाह ३ पांउ ४ शिर ५ पलक ६ धूर ७ दिल ८ खाविन्द ९ तख्त ११—२८ ग़रूर १२ मुहब्बत १३ बदन १४ तालाब १५ नाममंत्री १६—२२ बाजू १७ घोड़ा १८ हाथ १९ हाथीकी चाल २० ग़रूर २१ खाविन्द २३ सन्दूक २४ नामज़ेवर २५ हाथी २६ ज़ेरअन्दाज़ २७ गलेलगाई २९ अकेले में ३० खोलना ३१ अलग ३२ भारीक़ैद ३३ पेचदारक़िला ३४ बहुत ३५ ॥

छिनछिन जीउसडासाहिं[1] आंका। औनित डोमछुधावहिं बांका ॥
पीछे साप रहैं चहुँ पासा । भोजन सोई रहे पर श्वासा ॥
पास न तहँवां दूसर कोई । नजनों पवन पानि कसहोई ॥
दो० आशा तुम्हारी मिलनकी तबसोरहा जियपेट ।
नाहित होत निराश जिय कित जीवनकितभेंट ॥
तुमपिय आय परे अस बेरा । अबदुख सुनोंकमलधन[3] केरा ॥
छोड़ गयोसरवर[4] महँ मोहीं । सरवर सूख गयो बिनतोहीं ॥
केल[5] जो करतहंस उड़गयऊ । भानु[6] निपटसो बैरी भयऊ ॥
गइ तज[7] लहरें पुरयन पाता । मुयो धूप शिर अहो न छाता ॥
भयो मीन[8] तन तड़पै लागा । बिरह आय बैठो होयकागा ॥
कागचोंचतस सालहिं[9] नाहां[10] । जस बँदतोरघालहिय[11] माहां ॥
कहों काग अब तहँ लैजाही । जहवां पिउदेखै मोहिं खाही ॥
दो० काग[12] गिद्ध नहिं ऐसोगढ़ का मारे बहुमंद ।
यह पछतायें सठमरों गयों न पियसँगबंद ॥

खण्डचवालीसवां वृत्तांतदेवपाल ॥

तेहि ऊपर का कहों जो भारी । बिषम[13] पहाड़ परादुखभारी ॥
दूती इक देवपाल पठाई । ब्राह्मन भेष छलै मोहिंआई ॥
कहे तोर हों आहि सहेली । चल लैजाउँ भँवर जहँबेली ॥
तब मैं ज्ञान[14] कीन्ह सत बांधा । वहकर बोल लागि बिषसांधा ॥
कहूँ कमल नहिं करत अहेरा[15] । जो है[16] भँवर करे सें फेरा ॥
पांचभूत[17] आत्मा नेवारयों[18] । बारहि[19] बारफिरतमनमारयों ॥
रोय बुझायों आपन हियरा[20] । कंत न दूर अहै सुठ नियरा ॥

घड़ीघड़ी १ शीशागर्म २ पद्मावत ३ तालाब ४ खुशी ५ सूर्य ६ छोड़ना ७ मछली ८ मुराद ९ खाविन्द १० छाती ११ कौवे और गिद्धकादखलनथागेसाकिलारचाकाथा १२ टेढ़ा १३ विचारा १४ शिकार १५ देखता १६ देखना-सुनना-बोलना-सूंघना-छूना १७ रोकना १८ दरवाज़ा १९ दिलको आग २० ॥

दो॰ फूल बास घिव क्षीर[1] ज्यों नीर[2] मिलाय मिठाइ।
तस नुक्ता[3] घट जेंवरी हिय दुख नाहिं कहाइ॥

सुनि देवपाल राय करचालू। राजा कठिन परा हियसालू[4]॥
दादुर[5] पुनि सो कमलकर भेखा। गीदरमुख न शूरकर देखा॥
अपने रंग जस नाचि मयूरू[6]। तेहि सर साधकरै तम[7] चूरू[8]॥
जबलगिआयतुरुक गढ़बाजा। तबलगि धरिआनो तो राजा॥
नींद न लीन्हरयनि[10] सबजागा। होत बिहान आय गढ़लागा॥
कम्मल[11] नेरअगम[12] गढ़बांका। बिषम[13] पंथचढ़जायनझांका॥
राजा तहांगयो लै कालू। होय सामाहिं रोपा[14] देवपालू॥

दो॰ दोउ लड़े होय सनमुख लोहे भयो असूझ।
शत्रु[15] जूझ[16] तब न्यौरे[17] एक दोउ महँ जूझ॥

खण्ड पैंतालीसवां देवपाल लड़ाई॥

जो देवपाल[18] राउ रण गाजा। मोहिंतुहिं जूझएकाछा[19] राजा॥
मेलेसि आय सांग बिष भरी। मेट न जाय कालकी घरी॥
आय नाभ पर सांग जो बैठी। नाभ बेध निकसी नृप[20] पीठी॥
चला मार तब राजा मारा। टूटकंध धड़ भयो निरारा[21]॥
शीश[22] काटके पैरी[23] बांधा। पावा दाउँ बैर जस[24] सांधा॥
जियत फिरा आयो बल भरा। मांझ बाट[25] होय लोहे[26] धरा॥
कारी घाउ जाय नहिं डोला। रही जीभ यम[27] गहेको बोला॥

दो॰ सुधिबुधि तो सबबिसरी बारपरी मँझ[28] पाट।
हस्ति[29] घोर को क्राकर घर आनी गइ खाट॥

दूध १ पानी २ नुक्तायह कि बदननेखाया और दिलदुखी परन्तु ज़ाहिरनकिया ३ सूराख ४ मेंढक ५ मोर ६ नाज़ ७ चिरोटा ८ बादशाह पहुंचे ९ रात १० नाममुल्क ११ जहाँजाना मुशकिलहे १२ टेढ़ीराह १३ आया १४ दुश्मन १५ लड़ाई १६ आखिर १७ नामराजा १८ अकेले १९ राजा २० अलग २१ शिर २२ शिकारबन्द २३ जैसाबैर किया २४ राह में २५ हथियारबन्द २६ मोतनेपकड़ो २७ मुरदा की तरह तखतपर २८ हाथी २९॥

खण्ड छियालीसवां बैकुण्ठवासी राजा ॥

तौलहि स्वास पेट महँ अही । जौलहि दशा जीउकी रही ॥
काल आय देखलाई सांटी[1] । उठ जियचला छांड़के माटी ॥
काकर लोग कुटुँब घर बारू । काकर अर्थ द्रव्य[2] संसारू ॥
वही घड़ी सब भयो पराबा । आपन सोइ जो परसा खावा ॥
रहि जे हितू[3] साथके नेगी । सबै लागि काढ़न तेहिबेगी[4] ॥
हाथझार जस चलै जुवारी । तजा[5] राज ह्वैचला भिखारी ॥
जबलग जीउ रतन सब कहा । भा बिनजीव न कौड़ी लहा ॥
दो० गढ़सौंपा तेहिं बादल[6] गयेटेकत[7] बसुदेव ।
छोड़ी राम अयोध्या जो भावै सो लेव ॥

पद्मावत पुनि पहिर पटोरा । चलीसाथ पियके ह्वै जोरा ॥
सूरज छिपा रयनि[8] ह्वै गई । पूनूशशि[9] सो अमावस भई ॥
छोरे केश[10] मोतिलर छूटी । जानो रयनि नखत सब टूटी ॥
सेंदुरपरा जोशीश[11] उघारी । आगलागचहिजग[12] अँधियारी ॥
यहीदिवस[13] हौंचाहत नाहां[14] । चलौसाथ पिय दै गलबाहां ॥
सारसपंख नाहिं जिये निरारे[15] । हौं तुमबिन का जियों पियारे ॥
न्योछावर कै तन छहराऊँ[16] । छार[17] हों सङ्गबहुर[18] नाआऊँ ॥
दो० दीपक प्रीति पतंगज्यों जन्मनिबाह करेउँ ।
न्योछावर चहुँपास ह्वै कण्ठलाग जियदेउँ ॥

खण्डसैंतालीसवां सतीहोना पद्मावत और नागमतीका ॥

नागमती पद्मावत रानी । दोउ महासत सती बखानी ॥
दोउ[19] सौत चढ़ खाट जो बैठी । औ शिवलोक परातहँदीठी[20] ॥
बैठो कोई राज औ पाटा[21] । अन्त[22] सबै बैठे पुनि खाटा ॥

छड़ी १ दौलत २ दोस्त ३ जल्दनिकाला ४ छोड़ना ५ नाममंत्री ६ बैकुंठगये ७ मांगिगमी ८ रात ९ पूरनमासीका चाँद १० बाल ११ शिर १२ दुनियाँ १३ दिन १४ खाविन्द १५ अलग १६ छिपराना १७ राख १८ लौट १९ पद्मावत-नागमती २० नज़र २१ तख्त २२ आख़िर २३ ॥

चन्दन अगर काढ़सर[1] साजा। औ गत[2] देय चले लैराजा ॥
बाजन बाजहिं होय अगोता[3]। दोउ कन्तलै चाहैं सोता ॥
एक जो बाजा भयो बिवाहू। अब दुसरे कै और निबाहू ॥
जियतजलै जोकन्त[4] कीआसा। मुये रहस बैठे इकपासा ॥

दो० आज सूर[5] दिनअथयो आजरयनि[6] शशि बूड़।
आजनाच जियदीजिये आज अगिन हमजूड़ ॥

सर[8] रच दान पुराय बहु कीन्हा। सातबार फिर भांवर लीन्हा ॥
एक जो भांवर भयो बियाही। अब दूसर कै गोहन[9] जाही ॥
जियत कन्त[10] तुमहमगललाई। मुये कराठ नहिं छाड़हुसाई ॥
लै सर[11] ऊपर खाट बिछाई। पौढ़ी दोउ कन्त गल लाई ॥
और जो गांठकन्त तुम जोरी। आदि[12] अन्तलहिजायनछोरी ॥
यहजगकाहजोअथहि[13] नयाथी। हमतुमनाह[14] दोहूजगसाथी ॥
लागी कराठ आग दै होरी। छार[15] भईजरअंग[16] न मोरी ॥

दो० राती[17] पियके नेहकी स्वर्ग[18] भयो रतनार[19]।
जोरेउ वासो अथवा रहा न कोइ संसार ॥

वै सहगवन[20] भई जिय आई। बादशाह गढ़ छेंका आई ॥
तबलग सो औसर कै बीता। भयेअलोप[21] राम औ सीता ॥
आय शाह जो सुना अखारा[22]। कैगइरातदिवस[23] उजियारा ॥
छार[24] उठाय लीन्ह इक मूठी। दीन्हउड़ाय पिरथवी[25] झूठी ॥
सगरे कटक[26] उठाई माटी। पुलबांधा जहँ जहँ गढ़घाटी ॥
जोलहि उपर छार[27] नाहिं परै। तौलहि यहतृष्णा[28] नहिंमरै ॥
भा दहवा[29] भाजूझ असूझा। बादल[30] आयपँवर[31] परजूझा ॥

दो० जूहर[32] भई सब स्त्री पुरुष[33] भये संग्राम।

चिता १ दाह २ कड़का ३ खाविन्द ४ सूर्य ५ रात ६ चाँद ७ चिता ८—११
साथ ९ खाविन्द १०—१४ अव्वलसे आखिरतक १२ आयाथा १३ राख १५ बदन १६
लाल १७—१९ आसमान १८ जब खाविन्दके साथ जलगई २० गायब २१ हाल २२
दिन २३ खाक २४ दुनियाँ २५ फौज २६ माटी २७ हवस २८ कोईबाक़ी न रहाउस
भारी लड़ाईमें २९ नाममंत्री ३० दरवाज़ा ३१ मरना ३२ तयाराजा ३३ ॥

बादशाह गढ़ चूरा[१] चितौर भाइसलाम ।

मैं यह अर्थ पण्डितन बूझा । कहाकिहमकुछ और न सूझा ॥
चौदह भुवन[२] जो हतउपराहीं । सो सब मानुषके घट[३] माहीं ॥
तन चितौर मन राजा कीन्हा ।हिय[४] सिंहलबुधिपद्मिनिचीन्हा ॥
गुरूसुवा जेहिपन्थ[५] देखावा । विनगुरु जगत सोनिरगुणपावा ॥
नागमती यह दुनियां धन्धा । बांचा सोई न यहचितबन्धा ॥
राघव दूत सोई शैतानू । माया अलाउदीं सुलतानू ॥
प्रेम कथा यह भांति विचारू । बूझलेहु जो बूझहि[६] पारू ॥

दो० तुरकी अरबी हिन्दवी भाषा[७] जेतीआहि ।
जामें मारग प्रेमका सबै सराहै ताहि ॥

मुहमद कवि यह जोर सुनावा । सुना सो प्रेम पीर का पावा ॥
जोरे लाय[८] रक्त लेगये । प्रेमप्रीति नयनहिं जल भये ॥
औ मैं जान गीत अस कीन्हा । कीयहरीतिजगत[९] महँचीन्हा ॥
कहां सो रतनसेन अब राजा । कहांसुवाअसबुध[११] उपराजा ॥
कहां अलाउद्दीन सुलतानू । कहँराघवजेहिकीन्हबखानू[१२] ॥
कहँ स्वरूप पद्मावत रानी । कुछ न रही जग रही कहानी ॥
धनसोई यश[१३] कीरति[१४] तासू । फूल मरै पै मरै न बासू ॥

दो० कैनजगतयश[१५] बेचा कैनलीन्हयश[१६] मोल ।
जो यह पढ़ै कहानी हम सँवरै दोइ बोल[१७] ॥

मुहमद वृद्धि[१८] बैस जो भई । यौवन[१९] हतसोअवस्था[२०] गई ॥
बल जोगयो कैक्षीण[२१] शरीरू । दृष्टि[२२] गई नयनहिं दैनीरू[२३] ॥
दशन[२४] गयेकैबचा कपोला[२५] । बैन[२६] गये अनरुच दैबोला ॥
बुधि[२७] जोगई दै हिय[२८] बौराई । गर्व[२९] गयो तरिहत शिरनाई ॥

तोड़ा १ सातपरदा आसमान-सातपरदा जमीन २ भीतर ३ छाती ४ राह ५ दुनियां ६ बूझसको ७ बोलो ८ खून जिगर पैकर ९ दुनियांमेंनिशानी १० अक्लिवताई ११ तारीफ १२ नेकनामी १३—१५—१६ करनी १४ दुआयखैर १७ बूढ़ीउमर १८ जवानी १९ उमर २० दुबला बदन २१ निगाह २२ पानी २३ दांत २४ गाल २५ आवाज़ २६ अक्लि २७ दिल २८ गरूर २९ ॥

श्रवण[1] गये ऊँच जो सुना। स्याही गये शीश भा धुना॥
भँवर गये केशहि[3] दे भुवा। यौवन[4] गयो जीत लै जुवा॥
जोलहि जीवन यौवन साथा। पुनि सो मीचु[5] पराये हाथा॥
दो० वृद्धि जो शीश[8] डुलावै शीश धुनहि तेहि रीस[6]।
बूढ़ी आयु होहु तुम कै यह दीन्ह अशीस॥

[..]र २—[..]० बाल ३ जवानी ४ मौत ५ बढ़ा ६ गुस्सा ८ उ[..]

इति श्री पद्मावत भाषा मलिक मुहम्मद जायसीकृत समाप्तः॥

भगवद्गीतानवलभाष्यकाविज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणसंपन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर करायाहै वही उक्तभगवद्गीता यज्ञवत्वेदांत व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धिसे पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठन करनेकी सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं—और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिले इसप्रकार संपूर्ण भारतनिवासी श्रीमद्भगवत्पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्ततधर्म्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासी भगवद्भक्तयनुरागी श्रीमान्मुन्शी नवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धन व्ययकर फ़र्रुख़ाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीसे इसमनोरंजन वेदवेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तक को श्री शंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरलदेशभाषामें तिलक रचाय नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करा दियाहै कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यह विचारहुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्वग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतर उत्तमता उससमय परहोगी कि इसशंकराचार्य्य कृतभाष्य भाषा के साथ और इसग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी जितनीमिलें शामिल की जावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायका भी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्य्य जी की शंकरभाष्यका तिलक व श्री आनन्दगिरि कृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलक भी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थित है ॥

व सद्यः शौच व्यवस्था जगदुत्पत्ति प्रपंच विस्तार व बुद्धयादि समवाय व प्रायश्चित्त करणदोष व नरकादि नामस्वरूप व अतिपातक और पातकादि लक्षणभेद व सकाम सुरापानादि महापातक प्रायश्चित्तकथन व स्वर्णापहारादि प्रायश्चित्त व अवकृष्टवध प्रायश्चित्त कथन और प्रत्येक बातोंके स्वरूप व नियमादि वर्णनकियेगये हैं परन्तु यह विस्तृतग्रन्थ संस्कृतमें होनेके कारण सर्व साधारणके देखने में न आताथा इस कारण भारतवासी पुरुषोंके उपकारार्थ यन्त्रालयाध्यक्ष श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोरने बहुतसाधन पारितोषिक की रीतिपर देकर आगरा निवासी मर्यादाप्रियपण्डित दुर्गाप्रसाद शुक्लसे सरल साधारण भाषामें अनुवाद कराय स्वयन्त्रालय में मुद्रितकराया आशा है कि जो कोई मर्य्यादाप्रिय पुरुष इसको दृष्टिगोचरकरेंगे वे प्रसन्नहोकर इसको ग्रहण करेंगे और यन्त्रालयाध्यक्षको धन्यवाददेंगे—

मनुस्मृतिसटीकका विज्ञापनपत्र ॥

सम्पूर्ण धर्मशास्त्रोंका अग्रणी व सकल धर्मानुरागियोंसे पूजित यह मनुस्मृतिग्रन्थ जिसकी मान्यता व मर्यादा का विस्तार अच्छेप्रकार संसारमेंहै—यद्यपि इसग्रन्थ के बहुतसे अनुवाद ब्रज, यामिन्यादि भाषाओं में कियेगयेहैं परंतु उनमेंसे कोई भी ऐसानहींहै जिससे प्रत्येक वार्ताओं का समाधान सब कोई सुगमतासे समझकर उसके तात्पर्य्यको जानलेवै इसकारण सम्पूर्ण धर्म कर्मानुरागियों व विद्यारस विलासियोंके उपकारार्थ व अलीगढ़की भाषा संवर्द्धिनी सभाकी सहायतार्थ सकलकर्म धर्म धुरीण मर्य्यादा लवलीन पुण्यपीन गुणिगणप्रवीन सर्वैश्वर्य्य भूषित दोषादूषित उत्तमवंशी दुष्टाशयध्वंशी श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोर (सी,आई, ई,) ने बहुतसाद्रव्य व्ययकरके धर्मशास्त्राग्रगण्य सकलगुणिगण मण्डली मण्डन महामहोपाध्याय श्रीपण्डित मिहिरचन्दजीसे अन्यधर्मशास्त्रग्रंथों के तात्पर्य्यों से संबलित व सारोंसे मिश्रित और सकलटीकाओंके रहस्यों से युक्त उक्तग्रंथ का पदच्छेद अन्वय तात्पर्य्य व भावार्थ से भूषित अच्छे प्रकार देशभाषामें विवरणकराय मन्वर्थभास्करनाम तिलक मूलश्लोकों सहित लक्ष्मणपुरस्थ स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रकाशितकिया—संसारमें यावत् कर्म धर्म चतुर्वर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, व चतुराश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ व संन्यासादिके हैं सविस्तार इसमें वर्णन कियेगये हैं—इसके सिवाय और भी सारे जगत्का वृत्त अर्थात् जगदुत्पत्ति

स्वर्ग भूम्यादि सृष्टि वर्णन देवगणादिकोंकी सृष्टि धर्माधर्म विवेक मनुजी की उत्पत्ति व यक्षगन्धर्वादिकों की उत्पत्ति व मेघ, पशु, पक्षी, कृमि, कीट, जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज, वनस्पति, गुल्मलता वृक्षादिकों की उत्पत्ति, दिनरात्रि प्रमाण व युगोंका प्रमाण व्रतादिकोंके करनेका नियम व फल, देशोंका कथन मनुष्योंके जातकर्म व नामकरण व चूड़ाकरण यज्ञोपवीतादिकी क्रिया कथन वेदके अध्ययन करनेका ढंग व नियम वइन्द्रियोंके संयमोंके उपायोंका कथन आचार्य उपाध्याय व गुरुआदिका वर्णन पितृकर्ममें श्राद्धादि करनेका नियम भक्ष्याभक्ष्य वस्तुओंके भोजन करनेकानियम निषेध व प्रायश्चित्त ऋणलेने देने के नियम व दायभागादि दीवानी फौजदारीके मुक़द्दमोंका यथाविधि निपटारा करना यह सब वार्त्तायें अच्छेप्रकारसे इसमें दर्शाईगई हैं जिनसे प्रत्येक मनुष्योंके कार्य होतेचले आते हैं और भी बहुतसी राजनीति सम्बन्धी वार्त्तायें जो कि राजाओंको करना योग्यहै वह सब इसमें उत्तमरीति से सविस्तर वर्णन कीगई हैं—उत्तम वार्त्ता तो यह है कि केवल इसी पुस्तकके अवलोकन करनेसे सम्पूर्ण कर्म धर्म नीति आदि की रीतें मनुष्य सहजमें जानलेंगे द्वितीय ग्रन्थ के देखनेकी आवश्यकता न पड़ेगी—आशाहै कि जो विद्वद्वर धर्मशास्त्र व मर्यादाप्रिय महाशय इसको अवलोकन करेंगे वे परमानन्दितहो कृपाकटाक्ष से ग्रंथकर्त्ता व यंत्रालयाध्यक्षको आशीर्वाददेंगे और कदाचित् ऐसे बृहद् ग्रन्थके मुद्रण करनेमें कोई अशुद्धि रहगईहो तो उसका अपराध क्षमा करेंगे ॥

अलिफ़लैला अर्थात् सहस्ररजनीचरित्र ॥

इस अपूर्व पुस्तकमें एकहज़ार क़िस्से हैं जिनके पढ़ने से दुनियां की सम्पूर्ण बातोंका परिणाम देखने में आताहै और हरएक क़िस्सा मनको खूबही रमाताहै जो जिस रंगमें माताहै उसको वही दरशाताहै—खूबीका बयान कहांतक करें देखनेही से आनंद सरसाताहै ॥